

धनुष तकली पर कातते हुए

# सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

७४

(१६ अप्रैल - १० अक्तूवर, १९४१)



प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार जुलाई १९८१ (आपाढ़ १९०३)

© नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, १९८१

कापीराइट नवजीवन ट्रस्टकी सौजन्यपूर्ण अनुमतिसे

निदेशक, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली-११०००१ द्वारा प्रकाशित और जितेन्द्र ठाकोरमाई देसाई, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद-३८००१४ द्वारा मुद्रित

## भूमिका

इस खण्डमें १६ अप्रैलसे १० अक्तूबर, १९४१ तक की सामग्री दी गई है। इस दौरान व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा, जो अक्तूबर १९४० में विनोबा मावेके सत्या-ग्रहसे आरम्म हुई थी, पूर्ववत् विना किसी उद्देग-कोलाहलके चलती रही। ब्रिटिश सरकारने भारतीय लोकमतकी कोई परवाह किये बिना जिस युद्धमें इस देशको घसीट लिया था उसका विरोघ करने के अघिकारपर कांग्रेस आग्रह करती रही। उघर ब्रिटिश सरकार भी इस विरोधके स्वरको दवाने के लिए हर सम्भव उपाय करती. रही। समी महत्त्वपूर्ण कांग्रेसी नेता जेल मेजे जा चुके थे और इस युद्ध-विरोधी व्यक्तिगत सिवनय अवज्ञाकी प्रगतिके समाचार तथा गांधीजी के तत्सम्बन्धी वक्तव्योके प्रकाशनको रोकने की पूरी व्यवस्था-सरकारने कर रखी थी। साथ ही युढको राष्ट्रीय समर्थनकी छवि देने के उद्देश्यसे २१ जनको उसने वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्के विस्तार और राप्ट्रीय प्रतिरक्षा परिपद्के गठनकी घोषणा को। किन्तु गांघीजी की दृष्टिमें सरकारके इस कार्यसे कांग्रेसकी स्थितिमें कोई अन्तर नहीं पड़ता था और न उससे उसकी कोई माँग ही पूरी होती थी (पृ॰ १९८)। ब्रिटेनके इरादोंमें मारतीय नेताओंकी शंका ज्यों-की-त्यो कायम रही, और शीघ्र ही उस शंकाकी पुष्टि भी हो गई। ९ सितम्बरको कामन्स समामें चिंचलके वक्तव्यसे ज्ञात हुआ कि उन्होंने राष्ट्रपति रूजवेल्टके साथ मिलकर स्वतन्त्रता और लोकतन्त्रकी दुहाई देते हुए जो अटलाण्टिक घोपणा-पत्र जारी किया था उसकी परिविमें मारत-जैसे देश शामिल नही थे। किन्त गांघीजी इसपर कोई टिप्पणी करने को तैयार न थे, क्योंकि ". . . मेरा मौन मेरे मुहिसे निकले किन्ही भी शब्दोंसे कही अधिक मुखर है" (पृ० ३५०)।

यद्यपि सिवनय अवज्ञाका वाह्य प्रमाव बहुत कम हुआ था और मारत-मन्त्री एमरीका तो यह दावा भी था कि आन्दोलन निष्फल हो गया है (पृ० १७), किन्तु गांघीजी उसकी प्रगतिसे पूर्णतः सन्तुष्ट थे (पृ० ३२९)। जैसा कि उन्होंने 'टाइस्स ऑफ इंडिया' को दिये गये वक्तव्यमें कहा, उन्होंने इस आन्दोलनसे "अचानक कोई चमत्कार घटित हो जाने की" आज्ञा नहीं की थी और न उनकी यही घारणा थी कि उसका "युद्ध-प्रयत्नोंपर कोई खास असर" पड़ेगा। इसकी परिकल्पना संसार जिन "भयावह और विकट परिस्थितियोंका सामना" कर रहा था उनके बीच "अहिंसाकी जित्तमें अदम्य आस्थाकी एक मीन घोपणा" और "एक स्वतन्त्र राष्ट्रके नामपर" चलाये जानेवाले युद्धके विरुद्ध "एक नैतिक और इस दृष्टिसे एक ज्ञानदार रोषप्रदर्शन" के रूपमें की गई थी। इन मन्तव्योंको ध्यानमें रखते हुए "आन्दोलनको मर्यादित और विलकुल अनपकारी बनाये रखने के लिए असाघारण सावघानी बरती जा रही" थी (पृ० ३-४)। एक कांग्रेसी कार्यकर्ताको उन्होने बताया कि उनका

अग्रह संख्यापर नहीं, बिल्क गुणवत्तापर था और वे मावी सत्याग्रहींसे अपने पास कार्य-विवरण पुस्तिका रखने की आशा करते थे, जिसमें रचनात्मक कार्यक्रमको क्रिया- निवत करने की बृष्टिसे प्रति-दिनके कार्योको लिपिवड करना अपेक्षित था। "दैनन्दिनीको देख जाने के बाद ही" वे किसीको सत्याग्रहमें शरीक होने की अनुमति देने को तैयार थे (पृ० ६८-६९)। और अन्य प्रेस वक्तव्यमें गांघीजो ने स्थित स्पष्ट करते हुए कहा कि "... जैलोंको मरने की जल्दी मचाने की कोई जरूरत नहीं है।" आन्दोलनकी उपयोगिता तो यह थी कि "मर्यादित सिवनय अवज्ञाके माध्यमसे लोग अनुशासन, कष्ट-सहन और आत्य-बिलदानको आवश्यकताको ठीक तरहसे समझें", क्योंकि "सत्याग्रहका हर सच्चा उदाहरण जनमानसको व्यापक रूपसे प्रमावित करता है।" इसीलिए उन्होंने "सविनय अवज्ञाकी नींव" रचनात्मक कार्य-विषयक शर्तपर जोर देते हुए कहा कि "जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, कांग्रेसियोंको मेरी ओरसे अधिक सल्तीको अपेक्षा रखनी चाहिए" (पृ० १६६)।

सत्याग्रहके संचालनमें गांघीजी की इस जागरूकताका मुख्य कारण उनकी यह चिन्ता थी कि "आज जब अंग्रेज जिन्दगी और मौतके भयंकर युद्धमें लगे हुए हैं, उन्हें कमसे-कम परेशानीमें डाला जाये" (पु॰ १६६), और इसलिए "जबतक युद्ध चल रहा " था "तबतक आन्दोलनमें तेजी " आने देने के लिए वे बिलकूल तैयार नहीं थे। किन्तु यह बात नहीं थी कि इस नीतिका अनुसरण वे कोई इस आशासे कर रहे ये कि बदलेमें "ब्रिटिश सरकार उदारता बरतेगी" और "वाणीकी स्वतन्त्रताके अधिकारको स्वीकार कर" लेगी। उनकी दृष्टिमें यह नीति "अहिंसाका तर्कसंगत परिणाम ... और इस लिहाजसे एक राजनीतिक आवश्यकता" थी (पू॰ ३२९)। तथापि एमरीकी बातोंसे उन्हें गहरी व्यथा हई, क्योंकि उनमें "हृदयहीनता" और "मारतको . . . परिस्थित . . . की तिरस्कारपूर्ण अवहेलना" झलकती थी तथा अत्यन्त निकट स्थितिमें भी कांग्रेस द्वारा अपनाये गये सायास "संयम . . . की कद्र करने की शालीनता" का सर्वथा अभाव प्रकट होता था (पु० १५-१६)। उन्होंने एगथा हैरिसनसे शिकायत की कि "भारत-मन्त्री जब भी बोलते है तो ऐसी बात कहते हैं जिससे लोगोंमें चिढ़ पैदा होती है" (पृ० १४५); और "ब्रिटेन आज जिस संकटसे गुजर रहा है उसमें भी श्री एमरीको इतना होश नही आया है कि वे कमसे-कम ठोस सचाईको स्वीकार कर छेते" (पृ० २०)। किन्तु साथी मानवोंके रूपमें अंग्रेजोंके प्रति गांघीजी की सहानुमूति पूर्ववत् कायम थी, और उन्होंने मीराबहनको लिखा: "युद्धके समाचार सनसनीखेज चल रहे हैं। इंग्लैण्डमें हो रही विनाश-लीलाके समाचार हृदय-विदारक है। संसदके दोनों भवन, विस्ट मिन्स्टर] ऐबी, कैथीड़िल तो अनक्वर प्रतीत होते थे।" यह तो वे देख रहे थे कि "इतना सब होने के वावजूद अंग्रेजोंका दर्प अखण्डित है," किन्तू उनके मनमें यह प्रवन अवश्य उठने लगा था कि "क्या यह अभी भी बहादुरी ही कहलायेगी" (पृ० ८७)। एक अन्य पत्र-लेखिकाको उत्तर देते हुए गांधीजी ने अंग्रेजोके सद्गुणोको तो स्वीकार किया, किन्तु जनकी "मदान्घता, तानाशाही और बेशमींस झूठ बोलने की आदत" का जिक

करते हुए कहा कि "ये सब बताते हैं कि इनकी सम्यताके मूलमें . . . स्वार्थ तथा . . . मोग-लोलुपता है" (पृ० ८८)।

रूसके सम्बन्धमें भी गांघीजी के मनमें कुछ ऐसा ही अन्तर्हेन्द्व चल रहा प्रतीत होता है। सोवियत संघर हिटलरके आक्रमणसे उत्पन्न नवीन स्थितिपर कोई भी टिप्पणी करने से उन्होंने इनकार कर दिया, जिसका कारण स्पष्ट करते हुए एक पत्रमें लिखा, "जबतक मैं हृदयसे कुछ न कर सकुं [सकूं] तबतक मौन रखना हि [ही] मेरे स्वमावके अनुकूल है।" अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें वे जवाहरलाल नेहरूके मार्ग-दर्शनपर निर्भर थे और मानते थे कि "जो उनकी नीति" थी "वह कांग्रेसकी नीति थी।" किन्तु उनके जेलमें रहते इस मामलेमें उनकी बुद्धि नही चलती थी। वे लेनिनके प्रशंसक थे, लेकिन "लेनिनका रूस आज नहिं [नहीं] रहा" (पृ० १८६), और रूसने जो-कुछ हासिल किया था उसके महत्त्वको यद्यपि वे स्वीकार करते थे, तथापि "अब जो चल रहा" था उसे वे नहीं समझ पा रहे थे (पृ० ३७७)। एक अन्य पत्र-लेखकको इस सम्बन्धमें अपनी स्थिति समझाते हुए उन्होंने लिखा, "उसने [रूसने] एक समय जर्मनीका सहारा लिया, अब इंग्लांड [इग्लैण्ड]का।" लेकिन इस विनाश-लीलाके बीच भी वे हताश नही थे, क्योंकि उन्हे विश्वास था कि "इसीमें से अहिंसाका जन्म होगा, अगर कोई सच्चे अहिंसक होंगे तो। मेरा विश्वास है कि हम [ऐसे ऑहंसक] है", हालाँकि इस शक्तिकी अवर्णनीयताको ध्यानमें रखते हुए उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि "अहिंसाका जन्म कैसे होगा, सो तो मैं नही कह सकता" (पृ० ३७४)। "मारत और विश्वके माग्यको दिशा देनेवाली कोई ईश्वरीय शक्ति है, इस बातमें " अपनी पूर्ण श्रद्धाका इजहार करते हुए उन्होंने एक मुलाकातीको बताया कि "यही वह जीवन्त श्रद्धा है जो आजकी संकटकी घड़ीमें मुझे सम्बल प्रदान करती है" (पृ० ३३०)। ऐसी श्रद्धांका त्याग वे मला कैसे कर सकते थे? और उसका त्याग करने को कहनेवाले मित्रोंसे उन्होंने पूछा: "संसारके और स्वयं मेरे जीवनके इस महत्त्वपूर्ण क्षणमें क्या मित्र छोग मुझसे अपना वह विश्वास छोड़ देने को कहेंगे . . . " (पू० ४)?

इस खण्डसे सम्बन्धित अविधिक दौरान भारतीय राजनीतिमें एक और चीज भी सामने आई, जो गांधीजी की आस्थाकी कड़ी कसौटी करनेवाली थी। मार्च, अप्रैल और मईमें ढाका, अहमदाबाद, बम्बई और विहारमें साम्प्रदायिक दंगे मड़क उठे। गांधीजी ने एगथा हैरिसनके नाम अपने पत्रमें लिखा कि "इस बारके दंगों और पहलेके दंगोंक बीच कोई साम्य नहीं" था, बल्कि ये तो उन्हें "गृह-युद्धका पूर्वीम्यास" (पृ० १४५) या जैसा कि उन्होंने अपने एक प्रेस वक्तव्यमें कहा, "छोटा-मोटा गृहयुद्ध" (पृ० १२५) प्रतीत हो रहे थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि ये "दंगे केवल कांग्रेसको दबाने के लिए थे" (पृ० ३५६), यद्यपि "एक मुस्लिम परिवारकी, जिसमें तीन सालकी एक बच्ची मी शामिल थी, अकारण हो नृशंस हत्या किये जाने के सरकारी विवरणको पढ़कर" अपने मनमें उठनेवाले "शर्म और दु:ख"के भावका मी उन्होंने स्पष्ट बयान किया (पृ० ११९)। आगजनी, लूट-पाट, निर्दोष

च्यक्तियोंकी हत्या, और प्राणोंके मयसे हजारों लोगोंका अपना घर-बार छोड़कर भागना — इस सबसे गांघीजी का हृदय व्यथित हो उठा और उन्होने क्षोभपूर्वक लिखा, "इन स्थानोंपर हम लोग बवंर और कायर सिद्ध हुए हैं" (पृ० ३०)। वे मानते थे कि "अपने सम्मानकी रक्षा करना मनुष्यका सहज अधिकार और अनिवार्य कर्त्तं व्य है। यदि कोई अहिंसक रीतिसे उसकी रक्षा करना जानता हो तो उस तरह रक्षा करे, अन्यथा हिंसक रीतिसे" (पृ० ३३१); किन्तु "किसीको भी कायर नहीं वनना है" (पृ० ११३)। जहाँतक कांग्रेसजनोंका सम्वन्ध था, उनके लिए तो अहिंसाका अविचल आचरण गांघीजी का अटल विधान था। इन दंगोंमें उन्हें एक सिक्रय शिंतिके रूपमें कांग्रेसकी अहिंसाका विखराव दिखाई दिया, और उन्होंने कांग्रेसियोंको "अपनी अहिंसाके तत्त्वोंपर विचार" करने की सलाह देते हुए कहा कि "निःशंक होकर प्राण था सम्पत्ति गैंवाने की कला हमें अंग्रेजोसे सीखनी चाहिए। . . . पारस्परिक धैर्य और सिंहण्णुताका पाठ हम तवतक नहीं सीख सकेंगे जवतक हममें से कुछ लोग पूर्णतया निर्दोष होते हुए भी अपने प्राणोंकी आहुति देकर भारतीय जनताने मानसको नहीं हिला देंगे" (पृ० ३१-३३)।

जो लोग हिंसक प्रतिरोधके पक्षमें थे उन्हें गांधीजी ने "कांग्रेससे निकल" कर "जैसा ठीक समझें वैसा आचरण" करने "ग्रीर दूसरोंका वैसा ही मार्ग-दर्शन" करने का परामग्रें दिया। लेकिन "यदि अधिकांश कांग्रेसी ऐसा मानत है "कि दंगोमें "हिंसक प्रतिरोध करना . . . कांग्रेसके सिद्धान्तके विपरीत नहीं "है तो उस स्थितिमें गांधीजी का कहना था कि "उन्हें सुस्पष्ट शब्दोंमें" अपनी इस मान्यताकी "घोपणा करनी चाहिए और उसके अनुरूप लोगोका मार्ग-दर्शन करना चाहिए" (पृ० ८१)। कांग्रेस संसदीय दलके नेता मूलामाई देसाईका विचार कुछ इसी प्रकारका था। निदान गांधीजी ने उन्हें भी लिखा: "तुम्हें उसका [अपने विचारका] एलान करके उसके अनुसार लोकमत तैयार करना चाहिए। यह समय आचरणका है। हम सवका मूल्य हमारे आचरणसे औंका जायेगा।" और इसी प्रकार मूलामाईके पुत्र घीरूमाईको भी उन्होंने लिखा, "यह अवसर सच्चा काम दिखाने का है, जिसमें अधकचरे लोग मार-रूप सिद्ध होंगे" (प० १४७-४८)।

वम्बईके प्रमुख कांग्रेसी कर्न्ह्यालाल माणिकलाल मुंबीको दंगोमें अहिसाके कारगर होने में सन्देह था और गांघीजी की सलाह मानकर वे कांग्रेससे निकल गये। अपनी
इस सलाहका औचित्य सिद्ध करते हुए गांघीजी ने कहा कि जब विचार और कार्यमें
विरोध हो तो काग्रेसी बने रहना मार-रूप हो जाता है; क्योंकि "अहिसात्मक
कार्यका स्रोत अहिसात्मक विचार होता है। यि व्यक्तिमें अहिसात्मक विचारका
अमाव है तो अहिसात्मक कार्यका अपने-आपमे कोई महत्त्व नही रह जाता" (पृ०
१२६)। मुंबीकी "व्यथा" से गांघीजी की सहानुभूति थी, लेकिन उन्होंने उन्हें आश्वस्त
करते हुए कहा कि "यह तुम्हें आगे ही ले जायेगी।" किन्तु मुंबीने अधीरतावश
बनारसकी एक सार्वजनिक समामें यह घोषणा कर दी थी कि "मारतकी राष्ट्रीयता
और एकताकी रक्षाके लिए किसी विदेशी ताकतकी मदद स्वीकार करने में मैं कोई हैठी

नहीं मानता।" इस सम्बन्धमें गांधीजी ने उन्हें समझाते हुए लिखा कि "पाकिस्तान-सम्बन्धी लड़ाई दो माइयोंके बीचकी लड़ाई है। उस लड़ाईमें एक माई दूसरेसे हार जाये, यह समझमें आता है, लेकिन किसी तीसरेकी मदद लेकर जो जीतेगा वह खुद गुलाम बनेगा और दूसरेको भी गुलाम बनायेगा" (पृ० ३४८)।

साम्प्रदायिकताकी इस फैलती ज्वालाको देखकर गांघीजी इतने उद्विग्न ही उठे कि उनके मनमें इस एक ही चीजका खयाल रह गया था (पृ० ९१)। उन्होंने पाकिस्तानके हिमायती और विरोधी दोनों पक्षोंसे एक-दूसरेके विचारके प्रति सिंहिप्णुतासे काम लेने और इस बातपर सहमत होने का आग्रह किया कि "हम अपने सारे मतमेदोंको वातचीत तथा शान्तिपूर्ण प्रयत्नोसे, जिनमें पंच-फैसला भी शामिल है, निवटायेंगे" (पृ० ४१)। जनका कहना था कि हर हालतमें हमें "जंगलियोंकी तरह व्यवहार" करने (पृ० ११७) और "गुण्डागर्दीका सहारा" लेने (पृ० २१३) से तो वचना ही चाहिए। गांघीजी को पूरा विश्वास था कि अन्ततः सत्य और अहिमाकी विजय होगी (पू० १०९), हम घीरे-धीरे "सही स्थितिपर पहुँच जायेंगे" (पु० ११३), और "सारे प्रश्नोंका अन्तिम निवटारा लोग अपने-आप कर लेगे और हम सब बीचमें लटकते ही रह जायेंगे" (पु॰ ३५६)। इस प्रक्रियाके मार्गमें बाघा एक तीमरे पक्ष, अर्थात् भ्रिटिश सरकारकी उपस्थिति थी। गांधीजी को ऐसी आशंका थी कि सरकार लोगोको एक-दूसरेको तवाह करने देगी और हस्तक्षेप तमी करेगी जब स्वयं उनकी सत्ताकी खतरा उत्पन्न होगा (पृ० ३१)। उन्हें इस समस्या का यही नमाधान दिखाई देता था कि "अंग्रेज मारत छोड़कर चले जायें", फिर तो "काग्रेन, लोग तथा अन्य सभी दल इसी बातमें अपना हित देखेंगे कि वे आपसमें मिल जायें और मिलकर मारत सरकारको गठित करने का एक स्वदेशी फार्मूला ढुँढ निकालें। सम्मव है कि इस सरकारकी रचना शास्त्रीय ढगकी न हो, किसी पश्चिमी नम्नेपर न हो, किन्तु वह टिकाऊ अवज्य होगी" (पृ० १७)। गांघीजी को इस समन्याके ममाधानकी आवब्यकता इतनी तीव्रतासे महसूस हो रही थी कि उनके मनमें दंगा-प्रस्त क्षेत्रोका दौरा करने का भी विचार आया। उन्होने वल्लममाई पटेलको न्त्रिया कि "हमें मुल्हिका रास्ता ढूँढना च।हिए", लेकिन यह तलाश तभी सफल हो सकती थी जब ईंग्वर सहायक हो। उसीकी सत्तामें अगाध आस्थाके कारण न उन्हें बोई धवराहट थी और न चिन्ता। वे "घटनाओंको घटित होते" देखते रहते थे और "कर्त्तव्यरत रहने की कोशिश" करते थे (पृ० ४४)।

इन राष्ट्रीय प्रश्नोसे जूझते हुए गांघीजी को जिन अन्य चीजोकी ओर दिन-प्रति-दिन ध्यान देना पड़ता या उनमें आश्रमकी मी कुछ समस्याएँ थी। इन समस्याओने उनके धैर्यंकी अच्छी कसीटी की। वंगालसे आये एक सेवकका पारिवारिक जीवन कदाचित् सुखी नही था, और गांधीजी को लगा कि "सम्मवतः वे मानसिक सन्यास ले लेगे और परिवारसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेंगे।" निदान उन्होने उन्हे ढाका जाकर सान्तिकी स्थापनांमे सन्नद्ध हो जाने का परामर्श दिया (पृ० २१)। किन्तु यह प्रयोग "अन्यंकारी" सिद्ध हुआ, क्योंकि वह सेवक "सेवा करना नहीं, प्रत्युत स्थाति" प्राप्त करना चाहता था। अतः गांघीजी ने उसे "परिवारका मार वहन करके देशकी सेवा" करने की सलाह दी (पृ० ३३ और ४६) और लिखा कि "अब तुम घरती पर उतर आओ और जो अन्य लोग करते हैं — ईमानदारीसे कौड़ी कमाने के लिए मजदूरी करने और उसमें निर्वाह करने का काम — वही करो" (पृ० १४०)। एक अन्य सेवकको समस्या मी ऐसी ही कठिन थी। गांघीजी की दृष्टिमें वह "पत्र लिखने के रोग" से प्रस्त था (पृ० २२) और "जितनी स्वतन्त्रता . . . अपने लिए" चाहता था "उतनी दूसरेके सम्बन्धमें सहन करने "को तैयार नहीं था (पृ० १७४)। उसके एक "मयंकर पत्र" के उत्तरमें गांघीजी ने लिखा कि यह तो "अव्यवस्थाकी हद हो गई" (पृ० ६३)। उसके एक अन्य "दु:खद" पत्रके उत्तरमें गांघीजी ने उसे सलाह दी, "शायद तुम्हारे [यहाँसे] चले जाने में ही तुम्हारा कल्याण है। . . . मैने तो पाण्डिचेरी, अथवा रमण आश्रमका मुझाव दिया है" (पृ० १४०)। उसे गांघीजी का अन्तिम परामर्थ यह था: "सभी प्रकारसे विचार करना बिलकुल छोड़कर जब काम और केवल काम ही करोगे तमी शान्त होगे" (पृ० २०७)।

ये समस्याएँ इतनी अधिक और विकट थी कि गांधीजी को किशोरलाल मशरू-बालासे स्वीकार करना पड़ा, "आश्रमको लेकर मुझे इतने आधात सहने पड़े हैं कि अब कुछ भी नया आरम्म करने का उत्साह मुझमें नही रह गया है" (पृ० ६१)। किन्तु गांघीजी मीराबहनके संस्था तोड़ने के सुझावसे भी सहमत नही थे। उन्होंने कहा, आश्रमका "विकास अपने-आप सहज रूपसे हुआ है और विनाश या पुनर्निर्माण मी उसी तरह होना होगा।" उन्होंने अनेक बार घर बाँघे, लेकिन हर जगह उन्हें हार कर हटना पड़ा। किन्तु "सब यथासमय हुआ।" इसलिए इस प्रसंगर्मे भी गांघीजी ने सब-कुछ ईश्वरपर ही छोड़ दिया: "भगवान ही जाने अब वह मुझे कहाँ पटकेगा। नहीं, मेरी रक्षा इसीमें है कि मै प्रार्थना और प्रतीक्षा करूँ। 'प्रभु, तू ही मुझे रास्ता बता'।" गांधीजी के वैष्णव मानसके अनुसार, व्यक्ति संसारको अपनेसे अलग नहीं कर सकता, इसलिए मनुष्यको संसारके दोषोंको सहन करते हुए अपना कर्नेव्य करते जाना चाहिए (पृ०६०)। एक अन्य सेवकको उन्होंने लिखा: "संस्थामें रहने के नालायक कोई हो नहिं [नही] सकता। जगत हि [ही] तो संस्था है। जगतके बाहर कौन रह सकता है? कुटुम्ब भी संस्था है। वह पेटा [छोटी] संस्था है और कुटुम्ब और जगतके बीचमें हमारे जैसी संस्थाएँ है।" तो फिर मनुष्यको तो उन्ही अपूर्ण संस्थाओं में मिल-जुलकर रहते हुए अपनी भूमिका निमाना और अपना विकास करना है (पृ० १७२)।

मनुष्य एक-के-बाद-एक अपूर्णताको लाँघते हुए ही प्रगति करता है। इसलिए गांधीजी ने एक अन्य सेवकको समझाया कि "आश्रममें हम सब अपूर्ण हैं, तो भी अच्छे होने का प्रयत्न करते है" (पृ० ४३१)। यदि मनुष्य मात्र इतना करे कि उसे जो मार्ग दिखाई दे उसका ईमानदारीसे अनुसरण करे तो "क्रमशः सत्यतक अवस्य" पहुँच जायेगा (पृ० ५४)। मर्यादित अहिंसापर भी "ईमानदारीसे आचरण किया जाता है तो उसका स्वयमेव विस्तार हो जाता है" (पृ० २५८)। वैसे "अहिंसाका

पालन तो सत्यके पालनसे भी कठिन दिखाई देता है। कारण, असत्यके परिणाम हिंसाके परिणामोंसे अधिक सूक्ष्म है और दिखाई नहीं देते" (पृ० १२६)। गांघीजी का विश्वास था कि "वाणी और लेखनीसे विचारका असर ज्यादा है। अगर मैं शुद्ध विचार करता हूँगा तो मेरा दृढ़ निश्चय है कि विचार अपना असर डाल हि [ही] रहे हैं" (पृ० १३०)। मनपर विकारोंके आक्रमणके प्रतिरोधका एकमात्र साधन है रामनाम; और "जब मन रामनामसे या उसके कामसे खाली है तो शैतान कव्जा लेता है", क्योंकि कुदरतको खालीपनसे नफरत है (पृ० ३४०)।

कबीरकी 'सहज समाधि मली' वाली परम्पराको चिरतार्थं करते हुए गांधीजी ने धर्मको जीवनके सहज-स्वामाविक अंगके रूपमें देखा। इसीलिए स्तुति-प्रशंसा उन्हें रुचती नहीं थी। एक पत्र-लेखकको उन्होंने लिखा, "मैं जो-कुछ भी करता हूँ वह मेरे लिए सहज और स्वामाविक होता है . . . जो चीज स्वामाविक है उसे करने के लिए प्रशंसाकी कोई आवश्यकता नहीं होती" (पृ० १४६)। शायद इसी कारण वे अपने किसी प्रकारके स्मारकके भी विष्द्ध थे: "मेरे द्वारा किये गये किसी कार्यकी स्मृतिको चिरस्थायी बनाने में मुझसे सहयोगकी अपेक्षा मत कीजिए" (पृ० १८७)।

किन्तु दिवंगत महापुरुषोको तथ्यमूलक श्रद्धांजलि अपित करना कुछ और वात थी। ७ अगस्तको रवीन्द्रनाथ ठाकुरके निघनके बाद अमृतकौरके नाम एक पत्रमें उन्होंने लिखा: "कविवरकी मृत्युसे जो स्थान रिक्त हो गया है उसे कभी भरा नही जा सकता। उनमें साधुता और प्रतिमाका अनुठा संगम था" (पृ० २५०)।

#### आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओं, व्यक्तियों, पुस्तकोंके प्रकाशकों तथा पत्र-पत्रिकाओंके आभारी है:

संस्थाएँ: सावरमती आश्रम संरक्षक तथा स्मारक न्यास और संग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद; राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय, राष्ट्रीय संग्रहालय और नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली; विश्वभारती पुस्तकालय, शान्तिनिकेतन तथा वस्वई, मैसूर, उड़ीसा और तमिलनाडुकी सरकारे।

व्यक्तिः राजकुमारी अमृतकीरः श्री अमृतलाल चटर्जीः श्री आनन्द तो० हिंगोरानीः थी ए० के० सेन, कलकत्ताः सुश्री एफ० मेरी वारः श्री एल० कृष्णस्वामी भारतोः सुश्री एस० अम्बुजम्मालः श्री क० मा० मुत्तीः श्री कान्ति गांघी, वस्वईः श्री के० लिंगराजूः श्री गुलाम रसूल कुरैशी, अहमदावादः सुश्री गोमतीवहन मश्रहवाला, वारडोलीः श्री घनश्यामदास विड्ला, कलकत्ताः श्री चक्रैयाः श्री जगन्नाथः श्री टी० एस० चोकलिंगमः डाँ० नाथूमाई पटेलः श्री नानामाई ६० मश्रूकवालाः श्री नारणदास गांघीः श्री नारायण देसाई, वाराणसीः श्री पृथ्वीसिह, लालरू, पंजावः श्री प्यारेलाल, नई दिल्लीः सुश्री प्रेमावहन कंटक, सासवडः श्री वनारसीलाल बजाज, बनारसः श्री मगवानजी पु० पंडचाः सुश्री मंजुला म० मेहताः सुश्री मनुवहन सु० मश्रूकवाला, वस्वईः सुश्री नीरावहन, आस्ट्रिया, गाडेनः श्री मृत्नालाल गं० शाहः सुश्री रत्नमणि चटर्जीः सर रॉवर्ट ई० हॉल्डें सुश्री रामेश्वरी नेहरूः सुश्री लीलावती आसर, वम्बईः श्री वल्लमराम वैद्यः श्री शाल्तिकुमार न० मोरारजीः सुश्री शारदा फूलचन्द शाहः सुश्री शारदावहन गो० चोबावाला, सूरतः श्री शिवानन्दः श्री सी० ए० तुलपुले और श्री हरिमाक लपाच्याय, अजमेर।

पुस्तकें : 'एन एथीस्ट विद गांघी', '(ए) डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस', 'पाँचवें पुत्रको वापूके आशीर्वाद', 'पिल्प्रिमेज टुफीडम', 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस', 'वापुना पत्रो—४ : मणिवहेन पटेलने', 'बापुना पत्रो—२ : सरदार वल्लभभाईने', 'वापुनी प्रसादी', 'वापू : कंवर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेंस विद महात्मा गांघी', 'बापू: मैने क्या देखा, क्या समझा?', 'बापूकी छायामें', 'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष ', 'बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया : एस० श्रीनिवास अर्थ्यगार ', 'मध्यप्रदेश और गांधीजी', 'महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी', जिल्द ६ और '(द) हिस्ट्री ऑफ द इंडियन नेशनल कांग्रेस', जिल्द २।

पत्र-पत्रिकाएँ: 'खादी-जगत्', 'गुजरात समाचार', 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'बॉम्बे कॉनिकल', 'सर्वोदय' और 'हिन्दु'।

अनुसन्धान और सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओं के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पुस्तकालय, इंडियन कार्जसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स पुस्तकालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग और श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली हमारे धन्यवादके पात्र-है। प्रलेखोकी फोटो-नकल तैयार करने में मदद देने के लिए हम सूचना और प्रसारण मंत्रालयके फोटो-विभाग, नई दिल्लीके आभारी है।

## पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमें गांघीजी के स्वाक्षरोंमें मिली है, उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरों द्वारा सम्पादित उनके माषण अथवा लेख आदिमें हिज्जों की स्पष्ट मूलें सुघार दी गई है।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्मव मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही माषाको सुपाठ्य बनाने का भी पूरा घ्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमें प्राप्त हो सके हैं, उनका हमने मूलसे मिलान और सशोधन करने के बाद उपयोग किया है। नामोको सामान्य उच्चारणोंके अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोंके उच्चारणों संशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गांघीजी ने अपने गुजराती लेखोमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमें दिये गये अंश सम्पादकीय है। गांघीजी ने किसी लेख, माषण आदिका जो अंशं मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़-कर गहरी स्याहीमें छापा गया है। लेकिन यदि ऐसा कोई अंश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमें छापा गया है। मापणोकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांघीजी के कहें हुए नहीं है, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमें छापे गये है। माषणों और मेंटकी रिपोर्टोंके उन अंशोमें जो गांघीजी के नहीं है, कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड़ भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दायें कोनेमें ऊपर दे दी गई है, लेकिन जिन लेखों, टिप्पणियों आदिके अन्तमें लेखन-तिथि दी गई है उनमें उसे यथावत् रहने दिया गया है। जहां वह उपलब्ध नहीं है, वहां अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोमें दी गई है और आवश्यक होने पर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमें केवल मास या वर्षका उल्लेख है, उन्हें प्रसंगानुसार मास तथा वर्षके अन्तमें रखा गया है। शीर्षकके अन्तमें साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशन की है। गांधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियां और लेख, जहां उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहां किसी दृढ़ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहां लेखन-तिथिके अनुसार और जहां ऐसा सम्मव नहीं हुआ है, वहां प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

साधन-सूत्रोंमें 'एस० एन०' संकेत साबरमती संग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्लीमें उप-

#### सोलह

लब्ध कागज-पत्रोंका, 'एम० एम० यू०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालयकी मोबाइल माइकोफिल्म यूनिट द्वारा तैयार कराई गई रीलोंका, 'एस० जी०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, सेवाग्राममें उपलब्ध सामग्रीकी फोटो-नकलोका, और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (कलेक्टेड वक्से ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा संगृहीत दस्तावेजोंका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठमूमिका परिचय देने के लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये है। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखबार घटनाएँ दी गई है।

## विषय-सूचीं

	मूमिका	पाँच
	आमार	तेरह
	पाठकोंको सूचना	. पन्द्रह
	पुर्जा : अमृतलाल चटर्जीको (१६-४-१९४१)	₹,
₹.	पत्र : इन्द्रुमती ना० गुणाजीको (१७-४-१९४१)	₹,
₹.	तार: हैदराबादके निजामको (१८-४-१९४१ या उसके पूर्व)	₹
٧.	पत्र : मनुबहन और सुरेन्द्र मशरूवालाको (१८-४-१९४१)	२
ч.	वक्तव्य: 'टाइम्स ऑफ इंडिया'को (१९-४-१९४१)	Ę
	पत्र : दुनीचन्दको (१९-४-१९४१)	4
<b>७.</b>	पत्र : संमाजीको (१९-४-१९४१)	9
۷.	पत्र : स्वाजाको (२०-४-१९४१)	9
	पत्र : पुरातन बुचको (२०-४-१९४१)	9
<b>१</b> ٥.	पत्र : मीराबहनको (२१-४-१९४१)	8
११.	पत्र : शचीन्द्रनाथ मित्रको (२१-४-१९४१)	80
१२.	पत्र : डॉ॰ अमृतुको (२१-४-१९४१)	१०
१३.	पत्र : पुरातन बुचको (२१-४-१९४१)	११
<b>१</b> ४.	पत्र : नरहरि द्वा० परीखको (२१-४-१९४१)	११
१५.	पत्र : रुक्मिणी वजाजको (२१-४-१९४१)	१२
<b>१</b> ξ.	पत्र : अरुणचन्द्र गुहको (२३-४-१९४१)	१२
	पुर्जा : अमृतलाल चटर्जीको (२३-४-१९४१)	१३
	पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (२३-४-१९४१)	5.8
१९.	सलाह: सिन्धके कांग्रेस शिष्टमण्डलको (२४-४-१९४१)	58
	पुर्जा : अमृतलाल चटर्जीको (२४-४-१९४१)	84
	पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२४-४-१९४१)	१५
	वक्तव्यः समाचारपत्रोंको (२५-४-१९४१)	१५
	फ़्रैक मोरेसके प्रक्तोंके उत्तर (२५-४-१९४१)	१८
	पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको (२५-४-१९४१)	२१
	पत्र : जे॰ सी॰ कुमारप्पाको (२५-४-१९४१)	२२
	पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (२७-४-१९४१)	२२
	तार: मुल्कराजको (२८-४-१९४१)	₹₹-

#### अठारह

२८. पत्र : नानामाई इ० मशरूवालाको (२८-४-१९४१)	२३
२९. पत्र : श्रीमन्नारायणको (२८-४-१९४१)	२४
३०. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (३०-४-१९४१)	२४
३१. पत्र : उर्मिला म० मेहताको (३०-४-१९४१)	२५
३२. पत्र : 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के सम्पादकको (१-५-१९४१)	२५
३३. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (१-५-१९४१)	२७
३४. पत्र: प्रमावतीको (२-५-१९४१)	२७
३५. प्रस्तावना (३-५-१९४१)	२८
३६. तार: तेजबहादुर सप्रूको (३-५-१९४१)	२८
३७. पत्र : मार्गरेट जोन्सको (३-५-१९४१)	२९
३८. पत्र : अमृतलाल न्वटर्जीको (३-५-१९४१)	78
३९. साम्प्रदायिक दंगे (४-५-१९४१)	३०
४०. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (४-५-१९४१)	३३
४१. पत्र: पुरुषोत्तमदास त्रिकमदासको (५-५-१९४१)	źR
४२. पत्र: मनुबहन सु० मशरूवालाको (५-५-१९४१)	₹K
४३. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको (५-५-१९४१)	३५
४४. पत्र : र्जीमला म० मेहताको (५-५-१९४१)	३५
४५. पत्र : हेमप्रमा दासगुप्तको (५-५-१९४१)	३६
४,६. पत्र : घनश्यामदास बिङ्लाको (५-५-१९४१)	३६
४.७. पत्र : कृष्णचन्द्रको (५-५-१९४१)	₹७
४८. पत्र : गोपीनाथ बारदलईको (६-५-१९४१)	३७
४९. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको (६-५-१९४१)	३८
५०. पत्र : सूरजराम पुरोहितको (६-५-१९४१)	₹\$
५१. पत्र : विचित्रनारायण शर्माको (६-५-१९४१)	४०
५२. वक्तव्यः समाचारपत्रोंको (७-५-१९४१)	Yo.
५३. पत्र : के० बी० मेननको (७-५-१९४१)	૪ેર
५४. पत्र : जयनारायण व्यासको (७-५-१९४१)	88
५५. पत्र : मणिबहन पटेलको (७-५-१९४१)	४३
५६: पत्र : वल्लममाई पटेलको (७-५-१९४१)	88
५७. पत्र : डाह्यामाई पटेलको (७-५-१९४१)	४५
५८. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (८-५-१९४१)	४५
५९. पत्र : पुरुषोत्तम गांघीको (८-५-१९४१)	४६
६०. पत्र : मुजंगीलाल का० छायाको (८-५-१९४१)	80
६१. पत्र : पृथ्वीसिंहको (८-५-१९४१)	80
६२. पत्र : एस० जी० वहोको (९-५-१९४१)	86
E3. पत्र : लीलावनी आसरको (९-५-१९४१)	86

#### उन्नीस

६४. पत्र : नारणदास गांघीको (९-५-१९४१)	४९
६५. पत्र : कस्तूरवा गांधीको (९-५-१९४१)	४९
६६. पत्र : लक्ष्मी गांधीको (९-५-१९४१)	५०
६७. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (१०-५-१९४१)	40
६८. पत्र : डॉ॰ नाथूमाई पटेलको (१०-५-१९४१)	48
६९. पत्र : देवदाम गांघीको (१०-५-१९४१)	५२
७०. पत्र : मणिबहन पटेलको (१०-५-१९४१)	43
७१. पत्र : डॉ॰ एम० के० वैद्यको (१०-५-१९४१)	48
७२. पत्र : प्रेमाबह्न कटकको (११-५-१९४१)	44
७३. पत्र : रणछोड़लालको (११-५-१९४१)	44
७४. पत्र : डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको (११-५-१९४१)	48
७५. पत्र : राममनोहर लोहियाको (११-५-१९४१)	48
७६. पत्र : व्रजकृष्ण चौदीवालाको (११-५-१९४१)	५७
७७. पत्र : बैलेन्द्रनाय चटर्जीको (१२-५-१९४१)	40
७८. पत्र : प्रमावतीको (१२-५-१९४१)	40
७९. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१२-५-१९४१)	48
८०. पत्र : मीरावहनको (१३-५-१९४१)	Ęo
८१. पत्र : किगोरलाल घ० मशस्त्रालाको (१३-५-१९४१)	६१
८२. पत्र : रामेदवरी नेहरूको (१३-५-१९४१)	६२
८३. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१३-५-१९४१)	६२
८४. पत्र : लोलावती आसरको (१४-५-१९४१)	६३
८५. पत्र : मुन्नालाल गॅ० शाहको (१४-५-१९४१)	६३
८६. पत्र : बंगान्त्र प्रान्तीय काग्रेस कमेटीके अध्यक्षको (१५-५-१९४१ के पूर्व)	ÉR
८७. पत्र . मारगधर दासको (१५-५-१९४१ के पूर्व)	६५
८८. 'यादी-जगत्' (१५-५-१९४१)	६५
८९. बातचीत : डी० के० गोसावीके साथ (१५-५-१९४१)	६८
९०. पत्र : चान्त्रमा सेनगुप्तको (१६-५-१९४१)	७२
९१. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (१६-५-१९४१)	७२
९२. पत्र : लीलावती आसरको (१६-५-१९४१)	Ęυ
९३. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (१७-५-१९४१)	80
९४. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१७-५-१९४१)	80
९५. पत्र : शुएव कुरैंशीको (१८-५-१९४१)	७५
९६. पत्र : वालजी गो० देस।ईको (१८-५-१९४१)	७५
९७. पत्र : अमृतलाल वि० ठनकरको (१८-५-१९४१)	७६
९८. पत्र : प्रमावतीको (१८-५-१९४१)	99
९९. पत्र : गुलावचन्द जैनको (१८-५-१९४१)	७७
The same from a constitution of	

#### वीस

įòο.	पत्र : डॉ० एस० के॰ वैद्यको (१९-५-१९४१)	<b>উ</b> ट
१०१.	पत्र : मणिवहन पटेलको (१९-५-१९४१)	७९
	पत्र : वलवन्तर्सिह्को (१९-५-१९४१)	७९
१०३.	पत्र : शकुन्तलाको (१९-५-१९४१)	٥٥
१०४.	पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२०-५-१९४१)	60
१०५.	पत्र : मोगोलाल लालाको (२१-५-१९४१ या उसके पूर्व)	८१
१०६.	पत्र : देवदास गांघोको (२१-५-१९४१)	८३
	पत्र : मुन्नालाल ग० शाहको (२१-५-१९४१)	23
	पत्र : पुरातन बुचको (२१-५-१९४१)	68
	भेंट: 'हिन्दू'के प्रतिनिधिको (२२-५-१९४१ या उसके पूर्व)	८५
	पत्र : मारतन् कुमारप्पाको (२२-५-१९४१)	८६
	पत्र : मीरावहनको (२२-५-१९४१)	েও
११२.	पत्र : मीठूबहन पेटिटको (२२-५-१९४१)	66
	पत्र : घीरेन्द्रको (२२-५-१९४१)	66
	पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२३-५-१९४१)	८९
	पत्र : पृथ्वीसिंहको (२३-५-१९४१)	90
	भाषण : राष्ट्रीय युवक प्रशिक्षण शिविरमें (२३-५-१९४१)	९०
	पत्र : अन्नदाशंकर चौधरीको (२४-५-१९४१)	९२
	पत्र : सी० ए० तुलपुलेको (२५-५-१९४१)	९२
	पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको (२५-५-१९४१)	९३
	पत्र : अग्निहोत्रीको (२५-५-१९४१)	९३
१२१.	पत्र : अता मुहम्मदको (२६-५-१९४१)	९४
	पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२६-५-१९४१)	९४
१२३.	पत्र : उर्मिला म० मेहताको (२६-५-१९४१)	94
१२४.	पत्र : डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको (२६-५-१९४१)	९५
१२५.	पत्र : कुँवरजी खे॰ पारेखको (२६-५-१९४१)	९६
१२६.	पत्र : ऋषमदास राँकाको (२६-५-१९४१)	९७
१२७.	पत्र : कृष्णचन्द्रको (२६-५-१९४१)	90
१२८.	पत्र : रामेश्वरी नेहरूको (२६-५-१९४१)	९८
	पत्र : सावित्री वजाजको (२६-५-१९४१)	96
	पत्र : अमृतकौरको (२८-५-१९४१)	99
	पत्र : प्रभावतीको (२८-५-१९४१)	१००
	पत्र : प्रमुलालको (२८-५-१९४१)	१००
	पत्र : अमृतकौरको (२९-५-१९४१)	१०१
	पत्र : कन्हैयालाल मा॰ मुन्बीको (२९-५-१९४१)	१०२
	पत्र : डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको (२९-५-१९४१)	203

#### इक्कीस

44	
१३६. पत्र : पुरातन बुचको (२९-५-१९४१)	\$0₹
१३७. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२९-५-१९४१)	१०४
१३८. पत्र : अमृतकीरको (३०-५-१९४१)	१०४
१३९. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (३०-५-१९४१)	१०५
१४०. पत्र : वोणा चटर्जी और आमा चटर्जीको (३०-५-१९४१)	१०६
१४१. पत्र : कृष्णचन्द्रको (३०-५-१९४१)	१०६
१४२. पत्र : लक्ष्मी सत्यमूर्तिको (३१-५-१९४१)	<i>७०</i> १
१४३. पत्र : मार्गरेट जोन्सको (३१-५-१९४१)	१०७
१४४. पत्र : मार्गरेट जोन्सको (३१-५-१९४१)	२०८
१४५. पत्र : चन्देलको (३१-५-१९४१)	१०८
१४६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (३१-५-१९४१)	१०९
१४७. पत्र : घनस्यामदास विङ्लाको (३१-५-१९४१)	१०९
१४८. पत्र : अब्राहमको (मई/जून, १९४१)	११०
१४९. पत्र : डी० केः० गोसावीको (१-६-१९४१)	१११
१५०. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (१-६-१९४१)	११२
१५१. पत्र : नटवरलाल वेपारोको (१-६-१९४१)	११२
१५२. पत्र : मार्गरेट जोन्सको (२-६-१९४१)	११३
१ू५३. पत्र : महेन्द्रप्रसादको (२-६-१९४१)	११३
१५४. पत्र : कृष्णचन्द्रको (३-६-१९४१)	११४
१५५. पत्र : घनव्यामदास बिङ्लाको (४-६-१९४१)	११४
१५६. पत्र : फरीद अन्सारीको (४-६-१९४१)	११५
१५७. पत्र : शुएव कुरैंशोको (५-६-१९४१)	११६
१५८. पत्र : मुन्नालाल ग० शाहको (५-६-१९४१)	११७
१५९. उत्तर: 'हिन्दू के संवाददाताको (७-६-१९४१)	११८
१६०. पत्र : डी० के॰ गोसावीको (८-६-१९४१)	११८
१६१. पत्र : कॅंबरलाल शर्माको (८-६-१९४१)	.888
१६२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (९-६-१९४१)	११९
१६३. पत्र : नटवरलाल वेपारीको (९-६-१९४१)	. १२०
१६४. पत्र : डॉ॰ युद्धवीर सिंहको ़(९-६-१९४१)	१२१
१६५. पुर्जा : क्रष्णचन्द्रको (९-६-१९४१)	१२१
१६६. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (१०-६-१९४१)	१२२
१६७. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको (१२-६-१९४१)	. १२२
१६८. पत्र : बालचन्द हीराचन्दको (१३-६-१९४१)	१२३
१६९. पत्र : एस० अम्बुजम्मालको (१४-६-१९४१)	१२३
१७०. पत्र : चिमनलाल वा० शाहको (१४-६-१९४१)	१२४
१७१. वक्तत्व्य: समाचारपत्रोंको (१५-६-१९४१)	१२५
(9), 99(109 · (11/3/3/3/1/1/1/1/1/1/1/1/1/1/1/1/1/1/1/	177

#### वाईस

१७२. उत्तर : ब्रिटिश महिलाओंकी अपीलका (१५-६-१९४१)	१२७
१७३. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१६-६-१९४१)	१२९
१७४. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको (१६-६-१९४१)	१३०
१७५. पत्र : गणेशदत्त सिंहको (१६-६-१९४१)	१३०
१७६. पत्र : विद्यावतीको (१६-६-१९४१)	१३१
१७७. पत्र : जीवकृष्ण शर्माको (१८-६-१९४१)	१३१
१७८. पत्र : एस० सत्यमूर्तिको (१९-६-१९४१)	१३२
१७९. पत्र : एस० रंगनायकीको (१९-६-१९४१)	१३२
१८०. पत्र : वल्लमराम वैद्यको (१९-६-१९४१)	१३३
१८१. तार : ओबेदुल्लाको (२१-६-१९४१)	१३३
१८२. वर्घाके जिलाधीशके नाम पत्रका मसौदा (२१-६-१९४१)	१३४
१८३. पुर्जा : जमनालाल बजाजको (२१-६-१९४१)	१३४
१८४. पत्र : चिमनलाल वा० शाहको (२१-६-१९४१)	१३४
१८५. पत्र : हरिमाऊ उपाध्यायको (२१-६-१९४१)	१३५
१८६. पत्र : बलीबहन म० अडालजाको (२१-६-१९४१ या	
उसके पश्चात्)	१३५
१८७. पत्र : मीराबहनको (२३-६-१९४१)	१३६
१८८. पत्र : मीठूबहून पेटिटको (२३-६-१९४१)	१३६
१८९. पत्र : महाबीर गिरिको (२३-६-१९४१)	१३७
१९०. पत्र : मीराबहनको (२३-६-१९४१ के पश्चात्)	१३७
१९१. तार : ईश्वरलाल व्यासको (२५-६-१९४१)	१३८
१९२. पत्र : डी० पी० करमरकरको (२५-६-१९४१)	१३८
१९३. तार: गोपीनाय बारदलईको (२६-६-१९४१)	१३९
१९४. पत्र : कन्हैयालास्को (२६-६-१९४१)	१३९
१९५. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (२७-६-१९४१)	१४०
१९६. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२८-६-१९४१)	१४०
१९७. पत्र : मनुबहन सु० मशरूवालाको (२८-६-१९४१)	१४१
१९८ भक्त जीवराम (२९-६-१९४१)	१४१
१९९. पत्र : मोतीलाल रायको (२९-६-१९४१)	१४२
२००. पत्र : बीरूमाई मू० देसाईको (२९-६-१९४१)	१४३
२०१. पत्र : नटवरलाल वेपारीको (२९-६-१९४१)	१४३
२०२. पत्र : जोहरा अन्सारीको (२९-६-१९४१)	188
२०३. पत्र : गोपीनाथ बारदलईको (३०-६-१९४१)	588
२०४. पत्र : एगथा हैरिसनको (३०-६-१९४१)	१४५
२०५. पत्र : फरीद अन्सारीको (३०-६-१९४१)	१४६
२०६. पत्र : मूलामाई झ० देसाईको (३०-६-१९४१)	१४७

### तेईस

२०७. पत्र : घीरूमाई मू० देसाईको (३०-६-१९४१)	१४८
२०८. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको (३०-६-१९४१)	१४८
२०९. पत्र : अमृतकौरको (३०-६-१९४१)	१४९
२१०. 'रेंटिया बारस' (१-७-१९४१)	१५०
२११. पत्र : मीरावहनको (१-७-१९४१)	१५०
२१२. पत्र : अमृतकीरको (१-७-१९४१)	१५१
२१३. अमृतलाल चटर्जीके लिए वक्तव्यका मसीदा (२-७-१९४१)	१५२
२१४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२-७-१९४१)	१५३
२१५. पत्र : अमृतकीरको (२-७-१९४१)	१५३
२१६. पत्र : लोलावती आसरको (२-७-१९४१)	१५४
२१७. पत्र : सतीन सेनको (३-७-१९४१)	१५५
२१८. पत्र : अमृतकीरको (३-७-१९४१)	१५५
२१९. पत्र : मोरावहनको (३-७-१९४१)	१५६
२२०. पत्र : गोपीनाथ बारदलईको (३-७-१९४१)	१५७
२२१. पत्र : दिल्खुय दोवानजीको (३-७-१९४१)	१५७
२२२. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको (४-७-१९४१)	१५८
२२३. पत्र : अमृतकीरको (४-७-१९४१)	१५९
२२४. पत्र : प्रेमाबह्न कंटकको (४-७-१९४१)	१५९
२२५. पत्र : नारणदाग गांघीको (४-७-१९४१)	१६०
२२६. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्कीको (४-७-१९४१)	१६१
२२७. पत्र : माद्यवदास गो० कापड़ियाको (४-७-१९४१)	१६१
२२८. पत्र : प्रमावतीको (४-७-१९४१)	१६२
२२९. नार : जमनालाल बजाजको (५-७-१९४१)	१६२
२३०. पत्र : अमृतकौरको (५-७-१९४१)	१६३
२३१. पत्र : मार्गरेट जोन्मको (५-७-१९४१)	१६४
२३२. वनतच्य : समाचारपत्रोंको (६-७-१९४१)	१६५
२३३. पत्र : अमृतकौरको (६-७-१९४१)	१६७
२३४. पत्र : लोलावती आसरको (६-७-१९४१)	१६८
२३५. पत्र : गारदावहन गो० चोखावालाको (६-७-१९४१)	१६९
२३६. पत्र : अगृतकीरको (७-७-१९४१)	१६९
२३७. पत्र : लक्ष्मी भारतीको (७-७-१९४१)	१७०
२३८. पत्र : डी॰ के॰ गोसाबीको (७-७-१९४१)	१७०
२३९. पत्र : कंचन मु० शाहको (७-७-१९४१)	१७१
२४०. पत्र : अमृतकीरको (८-७-१९४१)	१७१
400. 44 . Viguritari (0 - 1)-1/	१७२
२४१. टिप्पणी (९-७-१९४१) २४२. पत्र : ईववरलाल व्यासको (१०-७-१९४१)	१७३
२४२, पश्च : इश्वरलाल व्याचना (१००१)	•

#### चौबीस

२४३. पत्र : सी० ए० तुलपुलेको (११-७-१९४१)	<i>६७</i> १
२४४. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (११-७-१९४१)	१७४
२४५. पत्र : अमृतकौरको (११-७-१९४१)	१७५
२४६. पत्र : वर्घाके डिप्टी कमिश्नरको (१२-७-१९४१)	१७५
२४७. पत्र : मीराबहनको (१२-७-१९४१)	१७६
२४८. पत्र : धीरूमाई मू० देसाईको (१२-७-१९४१)	१७६
२४९. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको (१२-७-१९४१ के	पदचात्) १७७
२५०. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको (१३-७-१९४१)	208
२५१. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको (१४-७-१९४१)	८७१
२५२. पत्र : डॉ० एस० के० वैद्यको (१४-७-१९४१)	१७९
२५३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (१४-७-१९४१)	१७९
२५४. पत्र : अमृतकौरको (१५-७-१९४१)	१८०
२५५. पत्र : रघुनन्दन शरणको (१६-७-१९४१ के पूर्व)	१८०
२५६. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको (१४/१६-७-१९४१)	१८१
२५७. तार : रवीन्द्रनाय ठाकुरको (१६-७-१९४१)	१८२
२५८. पत्र : अमृतकौरको (१६-७-१९४१)	१८२
२५९. पत्र : जमनालाल बजाजको (१६-७-१९४१)	१८३
२६०. पत्र : अमृतकौरको (१७-७-१९४१)	१८४
२६१. पत्र : दुनीचन्दको (१७-७-१९४१)	१८४
२६२. पत्र: नारणदास गांधीको (१७-७-१९४१)	१८५
२६३. पत्र : सुरेश सिंहको (१७-७-१९४१)	१८६
२६४. पत्र : अमृतकौरको (१८-७-१९४१)	१८६
२६५. पत्र : विजयराघवाच्।रीको (१८-७-१९४१)	१८७
२६६ पत्र मोर्तालाल रायको (१८-७-१९४१)	१८७
२६७. पत्र : अमृतकौरको (१९-७-१९४१)	१८८
२६८. पत्र : मुन्नालाल ग० शाहको (१९-७-१९४१)	१८८
२६९. पत्र : अमृतकौरको (२०-७-१९४१)	१८९
२७०. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (२०-७-१९४१)	१८९
२७१. पत्र : सर्वपर्र्लः राघाकृष्णन्को (२१-७-१९४१)	१९०
२७२. पत्र : अमृतकौरको (२१-७-१९४१)	१९१
२७३. पत्र : जमनालाल बजाजको (२१-७-१९४१)	१९२
२७४. पत्र : मुन्नाल।ल गं० ज्ञाहको (२१-७-१९४१)	१९२
२७५. पत्र : नारणदास गांधीको (२१-७-१९४१)	१९३
२७६. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (२१-७-१९४१)	१९४
२७७. पत्र : दिलखुश दीवानजीको (२१-७-१९४१)	१९४
२७८. पत्र : अमृतकौरको (२२-७-१९४१)	१९५
	= -

#### पच्चीस

२७९. पत्र : अनन्तराय ठक्करको (२२-७-१९४१)	१९६
२८०. पत्र : घनञ्यामदास विङ्लाको (२२-७-१९४१)	१९७
२८१. मेट : 'हिन्दू 'वेः प्रतिनिधिको (२२-७-१९४१)	१९८
२८२. पत्र : मिर्जा इस्माइलको (२३-७-१९४१)	२००
२८३. पत्र : अमृतलाल नानावटीको (२३-७-१९४१)	२००
२८४. भेट: ए० एम० एन० मूर्तिको (२३-७-१९४१)	२०१
२८५. पत्र . अमृतकौरको (२४-७-१९४१)	२०२
२८६. पत्र : बारदावहन गो० चोलावानाको (२४-७-१९४१)	२०२
२८७. पत्र : डॉ॰ एम॰ वेः॰ वैद्यको (२४-७-१९४१)	२०३
२८८. पत्र : जमनालाल बजाजको (२४-७-१९४१ के आसपास)	२०३
२८९. पत्र : अमृतकीरको (२५-७-१९४१)	२०४
२९०. पत्र : ग्रष्णचन्द्रको (२५-७-१९४१)	२०५
२९१. पत्र : अमृतकीरको (२६-७-१९४१)	२०५
२९२. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (२६-७-१९४१)	२०६
२९३. पत्र : आमा चटर्जीको (२६-७-१९४१)	<i>७०५</i>
२९४ पत्र : मुन्नान्ताल ग० शाहको (२६-७-१९४१)	२०७
२९५. पत्र : वालजी गो० देस।ईको (२६-७-१९४१)	२०८
२९६. पत्र . नटबरन्ताल वेपारीको (२६-७-१९४१)	२०८
२९७. पत्र : अमृतकीरको (२७-७-१९४१)	२०८
२९८. नार : इपिनस्मारुद्दीनको (२८-७-१९४१ या उसके पूर्व)	२०९
२९९. पत्र : उमेशराव एम० वकीलको (२८-७-१९४१)	२०९
३००. पत्र : इपिनयाम्हीनको (२८-७-१९४१)	२१०
३०१. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको (२८-७-१९४१)	788
३०२. पत्र : मर रॉवर्ट र्ड <b>० हॉलैंटको (२८-७-१९४१)</b>	२१२
३०३. पत्र : नारणदास गांबीको (२८-७-१९४१)	787
३०४. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२८-७-१९४१)	२१३
३०५. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२८-७-१९४१)	२१३
३०६, पत्र : लक्ष्मी गांघीको (२८-७-१९४१)	<b>२१४</b>
३०७. पत्र : मुन्नालाल ग० शाहको (२९-७-१९४१)	२१५
३०८. पत्र : अमृतकौरको (२९-७-१९४१)	२१५
३०९. पत्र : अमृतकीरको (३०-७-१९४१)	२१६
३१०. पत्र : जमनालाल बजाजको (३०-७-१९४१)	२१६
३११. पत्र : शारदावहन गो० चोखावालाको (३०-७-१९४१)	२१७
३१२. पत्र : कृष्णचन्द्रको (३०-७-१९४१)	२१७
३१३. पत्र : हरिमाऊ उपाध्यायको (३०-७-१९४१)	२१८
३१४. पत्र : 'टाइम्स ऑफ इंडिया 'को (३१-७-१९४१)	२१९
Ales Ad a Strate den dien in fil . in the	

#### · छब्बीस

३१५. पत्र : अमृतकौरको (३१-७-१९४१)	२२०
३१६. पत्र : मीराबहनको (३१-७-१९४१)	२२१
३१७. पत्र : लीलावती आसरको (३१-७-१९४१)	२२१
३१८. पत्र : पृथ्वीसिंहको (३१-७-१९४१)	२२२
३१९. पत्र : अमृतकौरको (१-८-१९४१)	२२२
३२०. पत्र : नारणदास गांघीको (१-८-१९४१)	२२३
३२१. माषण : खादी विद्यालयके उद्घाटनके अवसरपर (१-८-१९४१)	२२३
३२२. पत्र : अमृतकौरको (२-८-१९४१)	<i>५२</i> ४
३२३. पत्र : ज्ञान्तिकुमार न० मोरारजीको (२-८-१९४१)	<b>२</b> २५
३२४. पत्र : नारणदास गाँघीको (२-८-१९४१)	<b>२</b> २५
३२५. पत्र : इन्द्रवदन दिव्येन्द्रको (२-८-१९४१)	२२६
३२६. पत्र : कुँवरजी खे० पारेखको (२-८-१९४१)	२५६
३२७. पत्र : अमृतकौरको (३-८-१९४१)	२२७
३२८. पत्र : रत्नमणि चटर्जीको (३-८-१९४१)	२२८
३२९. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (४-८-१९४१)	२२८
३३०. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (४-८-१९४१)	२३२
३३१. पत्र : अमृतकौरको (४-८-१९४१)	२३३
३३२. पत्र : ना० र० मलकानीको (४-८-१९४१)	२३४
३३३. पुर्जा : मीरावहनको (४-८-१९४१)	२३५
३३४. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (५-८-१९४१)	२३५
३३५. पत्र : अमृतकौरको (५-८-१९४१)	<b>२३</b> ६
३३६. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको (५-८-१९४१)	२३७
३३७. पत्र : शार्दूलसिंह कवीश्वरको (५-८-१९४१)	२३८
३३८. पत्र : वालजी गो० देसाईको (५-८-१९४१)	२३८
३३९. पत्र : अमृतकौरको (६-८-१९४१)	२३९
३४०. पत्र : विजया म० पंचोळीको (६-८-१९४१)	२४०
३४१. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको (६-८-१९४१)	२४०
३४२. पत्र : नटवरलाल वेप।रीको (६-८-१९४१)	२४१
३४३. शोक-सन्देश: रथीन्द्रनाथ ठाकुरको (७-८-१९४१)	२४१
३४४. श्रद्धांजिल : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको (७-८-१९४१)	२४१
३४५. पत्र : के० ए० चिदम्बरमको (७-८-१९४१)	· ২ <b>४</b> २
३४६. पत्र : अमृतकौरको (७-८-१९४१)	२४३
३४७. पत्र : कोतवालको (७-८-१९४१)	288
३४८. पत्र : अमृतकौरको (८-८-१९४१)	<b>२</b> ४४
रे४९. पत्र : नटवरलाल वेपारीको (८-८-१९४१)	२४५
३५० पत्र : प्रमावतीको (८-८-१९४१)	२४५
11- 11 - 4414(114) (C-C-(20()	1-1

### सनाईस

३५१. पत्र : नारणदास गाघीको (८-८-१९४१)	२४६
३५२. पत्र : विद्याबहनको (८-८-१९४१)	२४६
३५३. पत्र : अमृतकौरको (९-८-१९४१)	२४७
३५४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (९-८-१९४१)	२४७
३५५. पत्र : अब्दुल रहमानको (९-८-१९४१)	२४८
३५६. पत्र : अन्नदाशंकर चीघरीको (९-८-१९४१)	२४८
३५७. मेट : 'हिन्दू'वेः प्रतिनिधिको (१०-८-१९४१ या उसके पूर्व)	586
३५८. पत्र : अमृतर्कारको (१०-८-१९४१)	२५०
३५९. पत्र : सिकन्दरको (१०-८-१९४१)	२५०
३६०. पत्र : शान्तिकुमार न० मोरारजीको (१०-८-१९४१)	२५१
३६१. पत्र : सुशीला गांघीको (१०-८-१९४१)	२५१
३६२. पत्र : शारदाबहुन गो० चोलावालाको (१०-८-१९४१)	२५२
३६३. पत्र : अमृतकीरको (११-८-१९४१)	२५३
३६४. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्द्योको (११-८-१९४१)	२५४
३६५. पत्र : मणिबहन पटेलको (११-८-१९४१)	२५४
३६६. पत्र : पुरुषोत्तम का० जेराजाणीको (११-८-१९४१)	२५५
३६७. पत्र : ब्रह्मानन्दको (११-८-१९४१)	२५५
३६८. वक्तव्यः समाचारपत्रोंको (१२-८ १९४१)	२५६
३६९. पत्र : अमृतकीरको (१२-८-१९४१)	२५७
३७०. पत्र : मिर्जी इस्माइलको (१२-८-१९४१)	२५७
३७१. पत्र . अरुणचन्द्र गृह्को (१२-८-१९४१)	२५८
३७२. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (१२-८-१९४१)	२५८
३७३. पत्र : भगवानदासको (१२-८-१९४१)	२५९
३७४. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको (१२-८-१९४१)	२५९
३७५. पत्र : हीरालाल शर्माको (१२-८-१९४१)	२६०
३७६. पत्र : वैक ऑफ नागपुर लि० के मैनेजरको (१३-८-१९४१)	२६०
३७७. पत्र : अमृतकीरको (१३-८-१९४१)	२६१
३७८. पत्र : सी० माधवन पिल्लैको (१३-८-१९४१)	२६२
३७९. पत्र : टी० पालिनवेलुको (१३-८-१९४१)	२६२
३८०. पत्र : देवदास गांघीको (१३-८-१९४१)	२६३
<b>२८१. पत्र : अमृतकौरको (१४-८-१९४१)</b>	२६३
३८२. पत्र : मदालसाको (१४-८-१९४१)	२६४
३८३. पत्र : जमनालाल बजाजको (१४-८-१९४१)	२६५
३८४. पत्र : बल्लममाई पटेलको (१४-८-१९४१)	२६५
३८४. पत्र : अमृतकौरको (१५-८-१९४१)	२६७
३८६. पत्र : तेहाना तैयवजीको (१५-८-१९४१)	२६८
२८६. पत्र : रहाना राषवणामा (११७१) - १/	

## अट्ठाईस

३८७. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (१५-८-१९४१)	२६८
३८८. पत्र : अमृतकौरको (१६-८-१९४१)	२६९
३८९. पत्र : अमृतकौरको (१७-८-१९४१)	२६९
३९०. पत्र : जर्मनालाल वजाजको (१७-८-१९४१)	२७०
३९१. मेंट : यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधिको (१७-८-१९४१)	२७०
३९२. पत्र : जें० सी० कुमारप्याको (१८-८-१९४१)	२७१
३९३. पत्र : अमृतकौरको (१८-८-१९४१)	२७ १
३९४. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१८-८-१९४१)	२७२
३९५. पत्र : अमृतकौरको (१९-८-१९४१)	२७३
३९६. पत्र : ताराचन्दको (१९-८-१९४१)	१७३
३९७. पत्र : इन्द्रवदन दिव्येन्द्रको (१९-८-१९४१)	२७४
३९८. पत्र : मुन्नालाल गं० बाहको (२०-८-१९४१)	२७४
३९९. पत्र : देवदास गांचीको (२०-८-१९४१)	ર્૭૫
४००. तार : जमनालाल वजाजको (२१-८-१९४१ या उसके पूर्व)	२७६
४०१. पत्र : उत्तिमचन्द गंगारामको (२१-८-१९४१)	२७६
४०२. पत्र : जकातदारको (२१-८-१९४१)	२७७
४०३. पत्र : कचन मु० गाहको (२१-८-१९४१)	२७७
४०४. पत्र : बल्लमभाई पटेलको (२१-८-१९४१)	२७८
४०५. पत्र : नटवरलाल वेपारीको (२१-८-१९४१)	२७८
४०६. पत्र : अमृतकौरको (२१-८-१९४१)	२७९
४०७. पत्र : रामनारायण चौघरीको (२१-८-१९४१)	२७९
४०८. तार : जमनालाल बजाजको (२२-८-१९४१)	२८०
४०९. पत्र : अमृतकौरको (२३-८-१९४१)	२८०
४१०. पत्र : जी० रामचन्द्रनको (२३-८-१९४१)	२८१
४११. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको (२३-८-१९४१)	२८२
४१२. प्रस्तावना : 'ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस के लिए	
( २४-८-१९४१ )	२८२
४१३. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (२४-८-१९४१)	२८३
४१४. पत्र : विजया म० पंचोलीको (२४-८-१९४१)	२८८
४१५. पत्र : देवदास गांधीको (२४-८-१९४१)	766
४१६. पत्र : जमनालाल वजाजको (२४-८-१९४१)	२८९
४१७. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको (२४-८-१९४१)	२८९
४१८. पत्र : अद्वैतकुमार गोस्वामीको (२४-८-१९४१)	२९०
४१९. तार : जमनालाल बजाजको (२५-८-१९४१)	२९०
४२०. पत्र : अमृतकौरको (२५-८-१९४१)	798
४२१. पत्र : चन्देलको (२५-८-१९४१)	२९१

#### उनतीस

४२२. पत्र : वी० राघवय्याको (२५-८-१९४१)	797
४२३. पत्र : सर्वपल्ली राघाकृष्णन्को (२५-८-१९४१)	२९२
४२४. पत्र : जमनालाल वजाजको (२५-८-१९४१)	२९३
४२५. पत्र : दत्तात्रेय वा० कालेलकरको (२५-८-१९४१)	२९४
४२६. पत्र . नटवरलाल वेपारीको (२५-८-१९४१)	२९५
४२७. पत्र : होरालाल गर्माको (२५-८-१९४१)	२९५
४२८. पत्र : मीराबहनको (२६-८-१९४१)	२९६
४२९. नार : श्रोनारायण जयनारायणको (२७-८-१९४१)	२९६
४३०. पत्र : अमृनकीरको (२७-८-१९८१)	२९७
४३१. पत्र : मैरेन्द्रनाथ चटर्जीको (२७-८-१९४१)	२९८
४३२. पत्र . मार्गरेट जोन्सको (२७-८-१९४१)	२९९
४३३. पत्र : बीरुमाई भू० देनाईको (२७-८-१९४१)	२९९
४३४. पत्र : बलवन्नर्सिहको (२७-८-१९४१)	३००
४३५. पत्र : अमृतकीरको (२८-८-१९४१)	300
८३६. पत्र : भैकेन्द्रनाथ चटर्जीको (२८-८-१९४१)	१०६
८३७. पत्र . जी० एल० खानीलकरको (२८-८-१९४१)	३०२
८३८. पत्र : नटबरलाल वेपारीको (२८-८-१९४१)	३०२
४३९. पत्र : ह्वंदा दीवानजीको (२८-८-१९४१)	३०३
८८०. पत्र . शिवानन्दको (२८-८-१९४१)	३०३
४८१. पत्र : लीलावनी आगरको (२८-८-१९४१)	३०४
८४२. पत्र : कचन मु० शाहको (२८-८-१९४१)	३०४
८४३. पत्र : प्रकुल्ल्डचन्द्र घोषको (२९-८-१९४१)	३०५
८८८. पत्र : नारणदाम गाघीको (२९-८-१९४१)	३०६
४४५. पत्र : अमृतकीरको (२९-८-१९४१)	३०६
४४६. गुरुदेव (३०-८-१९४१)	₹०७
४४७. नार: जमनालाल वजाजको (३०-८-१९४१)	३०७
४४८. पत्र : जे० संत् कुमारप्याको (३०-८-१९४१)	३०८
४८९. पत्र : लोलावती आसरको (३०-८-१९४१)	२०८
४५०. प्रस्तावना : 'प्रैक्टकल नॉन-वायलेंस'के लिए (३१-८-१९४१)	३०९
४५१. एक कूट समस्या (अगस्त, १९४१)	३०९
४५२. पत्र अमृतकीरको (३१-८-१९४१)	388
४५३. पत्र : फरीय अन्मारीको (३१-८-१९४१)	३१२
४५४. पत्र : बल्लममाई पटेलको (३१-८-१९४१)	३१२
४५५. पत्र : मणिवहन पटेलको (३१-८-१९४१)	₹१३
४५६. पत्र : इन्दिरा नेहरूको (३१-८-१९४१)	३१४
४५७. तार : शिवानन्दको (१-९-१९४१)	\$ 6.8.
A 201 (11.1. 12.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1	

#### तीस

४५८. पत्र : अमृतकौरको (१-९-१९४१)	३१५
४५९. पत्र : मगवानजी पु० पंडचाको (१-९-१९४१)	717 724
845.47 : नरहरि द्वा० परीखको (१-९-१९४१)	7 ( <del>1</del>
४६१. पत्र : डॉ॰ नाथूमाई पटेलको (१-९-१९४१)	*
४६२. पत्र : एफ० मेरी बारको (२-९-१९४१)	३१७ ३१७
४६३. पत्र : कें० बी० मेननको (२-९-१९४१)	3 <i>9</i>
४६४. पत्र : बल्लमराम वैद्यको (२-९-१९४१)	<b>≥</b> 9 <i>€</i>
४६५. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्सीको (२-९-१९४१)	<b>३१९</b>
४६६. पत्र : उमादेवी अग्रवालको (२-९-१९४१)	₹ <b>१</b> ९
४६७. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२-९-१९४१)	<b>३</b> २०
४६८. पत्र : पोखराजको (२-९-१९४१)	₹ <b>२०</b>
४६९. पत्र : जुगलिकशोर विड्लाको (२-९-१९४१)	3,50
४७०. पत्र : जयनारायण व्यासको (२-९-१९४१)	<b>३</b> २१
४७१. पत्र : अमृतकौरको (२/३-९-१९४१)	378
४७२. पत्र : शारदा फू० शाहको (३-९-१९४१)	322
४७३. पत्र : मणिवहन पटेलको (३-९-१९४१)	323
४७४. पत्र : अमृतकौरको (४-९-१९४१)	३२३
४७५. पत्र : सच्चिदानन्द करकलको (४-९-१९४१)	<b>३</b> २३
४७६. पत्र : मगवानजी पु० पंड्याको (४-९-१९४१)	328
४७७. पत्र : पुरातन बुचको (४-९-१९४१)	३२४
४७८. पत्र : अमृतलाल नानावटीको (४-९-१९४१)	<b>३२५</b>
४७९. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्दीको (५-९-१९४१)	३२५
४८०. पत्र : कृष्णचन्द्रको (५-९-१९४१)	३२६
४८१. पत्र : अमृतकौरको (५-९-१९४१)	३२६
४८२. मेंट : हरि विष्णु कामध्यको (५-९-१९४१)	३२८
४८३. पत्र : सारंगघर दासको (६-९-१९४१)	\$ <b></b> \$0
४८४. पत्र : एस० एम० मसूरकरको (६-९-१९४१)	348
४८५. पत्र : अमृतकौरको (७-९-१९४१)	३३२
४८६. पत्र : मिर्जा इस्माइलको (७-९-१९४१)	३३३
४८७. पत्र : पुरातन बुचको (७-९-१९४१)	३३३
४८८. पत्र : कुँवरजी खे० पारेखको (७-९-१९४१)	338
४८९. पत्र : कंचन मु० शाहको (७-९-१९४१)	३३४
४९०. पत्र : घीरूमाई मू० देसाईको (७-९-१९४१)	३३५
४९१ सन्देश : अहमदाबादके लोगोंको (८-९-१९४१)	३३५
४९२. पत्र : अमृतकौरको (८-९-१९४१)	३३६
४९३. पत्र : डॉ॰ वी॰ सी॰ लागूको (८-९-१९४१)	<b>३३</b> ६

#### इक्लीस

४९४. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको (८-९-१९४१)	३३७
४९५. पत्र : भगवानजी पु० पंडचाको (८-९-१९४१)	336
४९६. पत्र : नारणदास गांघीको (८-९-१९४१)	778
४९७. पत्र : कृष्णचन्द्रको (८-९-१९४१)	₹%•
४९८. पुर्जा : रामनारायण चौघरोको (८-९-१९४१)	380
४९९. पुर्जा: रामनारायण चौघरीको (८-९-१९४१)	३४१
५००. पत्र : एम० जी० मावेको (९-९-१९४१)	३४२
५०१. पत्र : आर० कृष्णमूर्तिको (१०-९-१९४१)	388
५०२. पत्र : अमृतकीरको (१०-९-१९४१)	383
५०३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (१०-९-१९४१)	388
५०४. पत्र : कन्हैयालाल वैद्यको (१०-९-१९४१)	<b>3</b> 88
५०५. पत्र : टी० एस० चोकल्जिंगम्को (११-९-१९४१)	३४५
५०६. पत्र : अमृतकौरको (११-९-१९४१)	३४५
५०७. पत्र : जी० रामचन्द्ररावको (११-९-१९४१)	३४६
५०८. पत्र : अतुलानन्द चक्रवर्तीको (११-९-१९४१)	३४७
५०९. पत्र : निलनीरंजन सरकारको (११-९-१९४१)	३४७
५१०. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको (११-९-१९४१)	388
५११. पत्र : सरस्वती गांबीको (११-९-१९४१)	- 486
५१२. मेंट: 'हिन्दू'के प्रतिनिधिको (११-९-१९४१)	३५०
५१३. पत्र : अमृतकीरको (१२-९-१९४१)	348
५१४. पुर्जा : मुन्नालाल गं० शाहको (१२-९-१९४१)	३५१
५१५. पत्र : मृदुला सारामाईको (१२-९-१९४१)	३५२
५१६. पत्र : घनस्यामदास विङ्लाको (१२-९-१९४१)	. ३५२
५१७. पत्र : क्रष्णचन्द्रको (१२-९-१९४१)	३५३
५१८. पत्र : अमृतकौरको (१३-९-१९४१)	३५३
५१९. पत्र : अमृतकौरको (१४-९-१९४१)	३५४
५२०. पत्र : दत्तात्रेय वा० कालेलकरको (१४-९-१९४१)	३५५
५२१. पत्र : मनु सूर्वेदारको (१४-९-१९४१)	३५५
५२२. पत्र : वल्लममाई पटेलको (१४-९-१९४१)	३५६
५२३. पत्र : अमृतकौरको (१५-९-१९४१)	३५७
५२४. पत्र : प्रफुल्लचन्द्र घोषको (१५-९-१९४१)	348
५२५. पत्र : इकवालकुष्ण कपूरको (१५-९-१९४१)	३५८
५२६. पत्र : शौकत उस्मानीको (१५-९-१९४१)	३५९
५२७. पत्र : हरिलाल मा० रंगूनवालाको (१५-९-१९४१)	348
५२८. पत्र : विष्णुनारायणको (१५-९-१९४१)	348
५२९. पत्र : पृथ्वीसिहको (१५-९-१९४१)	340
Mr. co. I make her and	• •

#### वनीस

५३०. पत्र : अमृतकौरको (१६-९-१९४१)	\$ 4 8
५३१. पत्र : श्रान्तिकुमार न० मोरारजीको (१६-९-१९४१)	३६२
५३२. पत्र : कन्हैयालाल वैद्यको (१६-९-१९४१)	३६२
५३३. पत्र : अमृतकौरको (१७-९-१९४१)	३६३
५३४. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको (१७-९-१९४१)	3 £ &
५३५. पत्र : देवदास गांधीको (१७-९-१९४१)	३६४
५३६. पत्र : लक्ष्मी गांघीको (१७-९-१९४१)	३६५
५३७. पत्र : सुरेन्द्रनाथ सरखेलको (१७-९-१९४१के पक्चात्)	३६५
५३८. जिसे हर कोई कर सकता है (१८-९-१९४१)	३६५
५३९. सिपाहियोके लिए कम्बल (१८-९-१९४१)	३६७
५४०. अप्रमाणित खादी (१८-९-१९४१)	३६८
५४१. पत्र : अमृतकौरको (१८-९-१९४१)	३६९
५४२. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको (१८-९-१९४१)	३६९
५४३. पत्र : वल्लममाई पटेलको (१८-९-१९४१)	०७६
५४४. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको (१८-९-१९४१)	३७०
५४५. भाषण : गांघी जयन्ती समारोहमें (१८-९-१९४१)	- ३७ १
५४६. पत्र : प्राणकृष्ण पिंढयारीको (१९-९-१९४१ के पूर्व)	३७१
५४७. पत्र : अमृतकौरको (१९-९-१९४१)	३७२
५४८. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको (१९-९-१९४१)	३७२
५४९. पत्र : वल्लममाई पटेलको (१९-९-१९४१)	३७३
५५०. पत्र : अमृतकौरको (२०-९-१९४१)	३७३
५५१. पत्र : पृथ्वीसिंहको (२०-९-१९४१)	३७४
५५२. पत्र : अमृतकौरको (२१-९-१९४१)	.३७५
५५३. पत्र : विजया म० पचोलीको (२१-९-१९४१)	३७६
५५४. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको (२१-९-१९४१)	३७६
५५५. पत्र : घनक्यामदास बिङ्लाको (२१-९-१९४१)	<b>७७</b> ६
५५६. पत्र : सत्यवतीको (२१-९-१९४१)	<b>७</b> ७६
५५७. पत्र : अमृतकौरको (२२-९-१९४१)	३७८
५५८. पत्र : बमृतलाल चटर्जीको (२२-९-१९४१)	३७९
५५९. पत्र : वल्लममाई पटेलको (२२-९-१९४१)	३७९
५६०. पत्र : मूलक्षकरको (२२-९-१९४१)	360
५६१. पत्र : कन्हैयालाल वैद्यको (२२-९-१९४१)	३८१
५६२. पत्र : अमृतकौरको (२३-९-१९४१)	३८१
५६३. पत्र : दत्तात्रेय वा० कालेलकरको (२३-९-१९४१)	३८१
५६४. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको (२३-९-१९४१)	३८२
५६५. पत्र : अमृतकौरको (२४-९-१९४१)	368
	• -

## ं तेतीस

५६६. पत्र : सारंगघर दासको (२४-९-१९४१)	20
५६७. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको (२४-९-१९४१)	३८५
५६८. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको (२४-९-१९४१)	३८५
५६९. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शोको (२४-९-१९४१)	३८६
५७०. पत्र : नरहरि हा० परोलको (२४-९-१९४१)	326
५७१. पत्र : दत्तात्रेय वा० कालेलकरको (२४-९-१९४१)	<b>0</b> 5
५७२. पत्र : कृत्णचन्द्रकी (२४-९-१९४१)	05 <i>F</i> 33 <i>F</i>
५७३. वन्तव्य : नमाचारपत्रोको (२४-९-१९४१)	
५.३४. नार: धनन्यामदाम विङ्ग्लाको (२५-९-१९४१)	<b>३८</b> ६
५७५. पत्र : अमृतकीरको (२५-९-१९४१)	१८६
५७६. पत : बन्लममाई पटेलको (२५-९-१९४१)	३८९ ३ <b>९</b> ०
५७७. पत्र : धनस्यामदास विङ्लाको (२५-९-१९४१)	388
५७८. पत्र . प्रमावनी जनानदारकी (२५-९-१९४१)	388 426
५७९. पत्र : अमृतकीरकी (२६-९-१९४१)	₹ <i>₹</i> ₹
५८०. पत्र . गुरूम रसूल कुरैगोको (२६-९-१९४१)	383
५८१. पत्र : बल्ल्बनाई पटेलको (२६-९-१९४१)	\$ <b>\$</b> \$
५८२. पत्र . झान्तिकुमार न० मोरारजीको (२६-९-१९४१)	368
५८३. पत्र : घनव्यामदाग विदन्ताको (२६-९-१९४१)	३९४
५८४. पत्र : अमृतकारको (२७-९-१९४१)	३९५
५८५. पत्र : अमृतकीरको (२८-९-१९४१)	384
५८६. पत्र : गर राबर्ट ई० हॉलैण्डको (२८-९-१९४१)	388
५८७. पत्र : जै० मी० कुमारप्पाको (२८-९-१९४१)	388
५८८, पत्र : मगनन्दाल प्रा० मेहताको (२८-९-१९४१)	390
५८९. पत्र : न्योन्द्रनाय ठायुरको (२९-९-१९४१)	386
५९०. पत्र : अमृतकीरको (२९-९-१९४१)	386
५९१. पत्र : हिन्दू महासमा, शिमोगावे मन्त्रीको (२९-९-१९४१)	388
५९२. पत्र : जीवराजको (२९-९-१९४१)	800
५९३. पत्र : देवदाम गांघीको (२९-९-१९४१)	800
५९४. पत्र : अन्नपूर्णा चि० मेहताको (२९-९-१९४१)	Yoş
५९५. पत्र : घीरूमाई भू० देसाईको (२९-९-१९४१)	.808
५९६. उधारीसे बची (सितम्बर, १९४१)	.۲۰۶
५९७. पत्र : विजयलक्ष्मी पण्डितको (२०-९-१९४१)	FoX
५९८. एक पुर्जा (३०-९-१९४१)	F08-
५९९. भाषण : गोसेवा संघकी समामें (३०-९-१९४१)	Y0Y
६००. पत्र : अमृतकीरको (३०-९-१९४१)	806
६०१, पत्र : अमृतकोरको (१-१०-१९४१)	806
Anti the affinesse It to be 1	

#### चौतीस

६०२.	एक पत्र (१-१०-१९४१)	806
Ęo₹.	पत्र : दोड्डमतीको (१-१०-१९४१)	४०९
	पत्र : तैयबुल्लाको (१-१०-१९४१)	809
	सन्देश : देशी राज्योंकी जनताको (१-१०-१९४१)	४०९
६०६.	तार: मथुरादास त्रिकमजीको (२-१०-१९४१)	४११
	पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको (२-१०-१९४१)	४११
	पत्र : तारामती म० त्रिकमजीको (२-१०-१९४१)	४१२
६०९.	पत्र : वल्लभभाई पटेलको (२-१०-१९४१)	४१२
६१०.	पत्र : मदालसाको (२-१०-१९४१)	४१३
६११.	पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको (२-१०-१९४१)	४१३
६१२.	पत्र : पृथ्वीसिंहको (२-१०-१९४१)	888
६१३.	पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२-१०-१९४१)	४१४
६१४.	पत्र : जमनालाल बजाजको (२-१०-१९४१)	४१५
	पत्र : घनस्थामदास बिङ्लाको (२-१०-१९४१)	४१५
६१६.	माषण: गांघी जयन्ती समामें (२-१०-१९४१)	४१६
६१७.	तार: रघुनन्दन शरणको (२-१०-१९४१ या उसके पदचात्)	४१६
६१८.	पत्र : अमृतकौरको (३-१०-१९४१)	४१७
६१९.	पत्र : एस० अम्बुजस्मालको (३-१०-१९४१)	४१७
	पत्र : मीराबहनको (३-१०-१९४१)	४१८
६२१.	पुर्जा : आनन्द तो० हिंगोरानीको (३-१०-१९४१)	४१९
	पत्र : मदालसाको (३-१०-१९४१)	४१९
६२३.	तार: हितेषी औषघालयके मालिकको (३-१०-१९४१ या उसके पश्चात्)	४२०
६२४.	पत्र : डी॰ डी॰ साठ्चेको (४-१०-१९४१)	४२०
६२५.	पत्र : आर० अच्युतन्को (४-१०-१९४१)	४२१
६२६.	पत्र : अमृतकौरको (४-१०-१९४१)	४२१
६२७.	पत्र : बल्लममाई पटेलको (४-१०-१९४१)	४२२
६२८.	पुर्जा : नारणदास गांघीको (४-१०-१९४१)	४२३
६२९.	पत्र : नारणदास गांघीको (४-१०-१९४१)	४२३
६३०.	पत्र : अमृतकौरको (५-१०-१९४१)	४२४
	पत्र : मिर्जा इस्माइलको (५-१०-१९४१)	४२४
	पत्र: एल० कृष्णस्वामी भारतीको (५-१०-१९४१)	४२५
६३३.	पत्र : अन्नदाशंकर चौधरीको (५-१०-१९४१)	४२६
६३४.	पत्र : मगनलाल प्रा० मेहताको (५-१०-१९४१)	४२७
६३५.	पत्र : वल्लभभाई पटेलको (५-१०-१९४१)	४२७
<b>६३६.</b>	पत्र : पोपटलाल चुडगरको (५-१०-१९४१)	४२८
£30.	पत्र : ख्वाजा खर्शेंद आलमको (५-१०-१९४१-)	826

#### पतीस

६३८. पत्र : अमृतकौरको (६-१०-१९४१)	४२९
६३९. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको (६-१०-१९४१)	४२९
६४०. पत्र : मार्गरेट जोन्सको (६-१०-१९४१)	०इ४
६४१. पत्र: चन्दन शं० कालेलकरको (६-१०-१९४१)	840
६४२. पत्र: चक्रैयाको (६-१०-१९४१)	838
६४३. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको (७-१०-१९४१)	४३२
६४४. पत्र : अन्तपूर्णी चि० मेहताको (७-१०-१९४१)	835
६४५. पत्र : अमृतकीरको (७-१०-१९४१)	४३३
६४६. माषण : अ० मा० चरखा संघकी समामें (७-१०-१९४१)	833
६४७. पत्र : वल्लममाई पटेलको (८-१०-१९४१)	४३७
६४८. पत्र : अमृतकौरको (९-१०-१९४१)	४३८
६४९. पत्र : पी॰ पी॰ एम॰ टी॰ पोन्तूसामी नाडारको (९-१०-१९४१)	४३९
६५०. पत्र : अमृतकौरको (१०-१०-१९४१)	४३९
६५१. पत्र : सैयद महमूदको (१०-१०-१९४१)	880
६५२. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको (१०-१०-१९४१)	888
६५३. पत्र : रघुवीर सहायको (१०-१०-१९४१)	888
६५४. पत्र : हरिकृष्ण माणजीको (१०-१०-१९४१)	४४२
६५५. पत्र : बल्लममाई पटेलको (१०-१०-१९४१)	४४५
परिशिष्ट :	
१. सत्याग्रहियोके लिए निर्देश	४४३
२. क० मा० मुन्शीका पत्र	४४५
३. एल्लिनर रैथबोनको रवीन्द्रनाथ ठाकुरका उत्तर	880
४. बातचीत : क० मा० मुन्शी तथा अन्य लोगोंके साथ	४४९
५. क० मा० मुन्शीका वक्तव्य	४५४
६. "श्री गांघीकी स्वीकारोक्ति"	४५५
सामग्रीके साघन-सूत्र	४५६
तारीखवार जीवन-वृत्तान्त	४५८
घीर्षक-सांकेतिका	४६१
सांकेतिका	४६७

## १. पुर्जा: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम १६ अप्रैल, १९४१

तुम्हें हिन्दीमें लिखने की आवश्यकता नहीं। तुम मुझे गलत समझे हो। मैं तुम्हारे दोवोंको अनदेखा नहीं कर सकता, किन्तु उनके कारण तुम्हारे प्रति मेरा आदर कम नहीं हो सकता।

वापू

वंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०३५०)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

## २. पत्र: इन्दुमती ना० गुणाजीको

सेवाग्राम, वर्धा १७ अप्रैल, १९४१

चि॰ इन्दू,

तेरा यन मिला। नंयम स्वामाविक होने के लिये मनका साथ मिलना चाहिये। मनका नाय गृढ जान के सिवा नींह मिलता है। अगर मुझे शुद्ध ज्ञान है कि शराब पीने ने मुझे हानि होगी तो मैं शराब को नींह छूमा। मले वह कैसे भी मीठा हो। तेर बारेमें सच बात यह है कि तू संयम को संयम सो टका नींह माननी है। तेरे पाम दो धर्म है। ह्योकतमें एक ही है। लेकिन यह तो मेरे मनमें। इन दुविधामें तो ईश्वर हि तुझे सन्मति दे सकता है। प्रयत्न कर। तेरा मला हि होगा।

वापुके आशीर्वाद

पत्रको फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९४४) से। सीजन्य: इन्दुमती तेंडुलकर

१. देखिए खण्ड ७३, पृ० ४७८।

# ३. तार: हैदराबादके निजामको'

[१८ अप्रैल, १९४१ या उसके पूर्व [

परम महामान्य निजाम हैदराबाद आपके शोकमें मैं अपनी सादर संवेदना भेजता हैं।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल। **बाँग्वे कॉनिकल,** २१-४-१९४१ से भी

# ४. पत्र: मनुबहन और सुरेन्द्र मशरूवालाको

सेवाग्राम, वर्घा १८ अप्रैल, १९४१

चि० मनुड़ी,

तू खूब कष्ट भोग रही है। यही होता है। आँपरेशन कराना पढ़े तब भी घबराने की कोई वात नहीं है। उसमें कोई खतरा नहीं होगा। वां को पत्र लिखती रहना। बीमारीमें तो पत्र लिखना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

चि० सुरेन्द्र,

मनुड़ी अगर लिखने में आलस करे तो तू लिखना। मैं राह देख रहा था कि बाज तेरा कार्ड मिला।

बापूके आशीर्वाद

श्री मनुबह्दन मशरूवाला "बाल किरण" साउथ एवेन्यू सान्ताफूज, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २६७९) से। सौजन्य: मनुबहन सु० मशक्त्वाला

- रै और २. निजासकी माताके देहान्तपर भेजा गया यह तार निजासको २८ अप्रैक, १९४१ की मिछा था।
  - रे. इरिलाल गांधीकी पुत्री
  - ४. मनुबद्दनके पेटमें रसौंछी हो गई थी।

## ५. वक्तन्य: 'टाइम्स ऑफ इंडिया'को'

सेवाग्राम, वर्घा १९ अप्रैल. १९४१

मैने 'टाइम्स ऑफ इंडिया'के उस अग्रलेखके अग्रिम सार-संक्षेप को बहुत ध्यान-पूर्वक सुना है जो आज सुबह बम्बईमें प्रकाशित हुआ होगा। मै मानता हूँ, लेखका स्त्रर मैत्रीपूर्ण है और यदि मै इसका उत्साहवर्धक उत्तर दे पाता तो मुझे खुशी होती, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता।

इस संघर्षके आरम्भमे मैने जो-कुछ कहा था उसपर मै अब भी कायम हूँ। संघर्ष आरम्भ करते समय अचानक कोई चमत्कार घटित हो जाने की भ्रान्त धारणा मेरे मनमें नहीं थी। मंसारको आज जिन भयावह और विकट परिस्थितियोंका सामना करना पड़ रहा है वैसी परिस्थितियोंके वीच भी अहिंसाकी क्षितमें अदस्य आस्याकी एक मीन घोषणाके रूपमें इस संघर्षकी परिकल्पना की गई थी और आज भी इसका नहीं स्वरूप है।

इम छोटे-ने ग्रहपर समस्त विनाशकारी तत्त्व सम्मिल्ति रूपसे जिन सुवि-चारित और परिकलनीय शक्तियोंको जन्म दे सकते हैं, उनके मुकाबले मझे निगृढ दैवी मत्ताकी अपरिकलनीय शक्तिकी प्रभावकारिता पर ज्यादा विश्वास है। यह अपरिकलनीय शक्ति किसी-न-किसी प्रकार मनप्यके माध्यमसे ही अपना काम करेगी। कैने और कब, यह मैं नहीं कह सकता। वह माध्यम काग्रेस होगी या नही, यह भी मैं नहीं कह सकता। मैं यह विश्वास लेकर चल रहा है कि कांग्रेसमें चाहे कितनी ही कमियां वयों न हो, एक सस्याके रूपमें चाहे उसके अन्दर आस्थाकी कितनी भी कमी बयो न हो, फिर भी आज यही एकमात्र संस्था है जो निश्चित रूपमे ज्ञान्तिपूर्ण उपायोके पक्षमे है।

यह है भेरी स्थित। इमिलए जहांतक मेरा सवाल है, पीछे हटने की कोई नम्भावना नहीं है। एक व्यक्ति सविनय अवज्ञा करे या अनेक, इसका कोई महत्त्व नहीं। सुविनय अवजाको तो गय कठिनाइयोंके बावजूद जारी रहना होगा। वैसे कांग्रेमजन निरुचय ही इसका परित्याग एकाधिक तरीकोंसे कर सकते है। वैसी हजामें निवनय अयुजा आन्दोलन मंगठनकी ओरसे चलाया जानेवाला आन्दोलन

१. टाइरस ऑफ इंडिया ने अपने अग्रवेखमें गांधीजी से अपील की थी कि वे सविनय अवजा आन्दोलन वापस छे हैं। इस अपीलपर गांभीजी का उत्तर जानने के लिए उनत पत्रके विशेष संवाददाताने गांधीजी से मेंट की थी और उन्होंने उसे पह वक्तव्य दिया था।

२. अनत्वर १९४० में; देखिए खण्ड ७३।

नहीं रह जायेगा और मैं स्वीकार करता हूँ कि तव वह किसी भी रूपमें प्रभावकारी नहीं रह जायेगा। किन्तु यदि इसपर भी मुझमें इतनी आस्था वनी रहे कि मैं अहिंसाकी शक्तिका अकेला साक्षी वना रह सकूँ तो इतनेसे भी मैं सन्तोष मानूँगा।

मैं इस बातसे दृढ़तापूर्वक इनकार करता हूँ कि यह आन्दोलन अपनी संकल्पनाकी दृष्टिसे या कार्य-रूपमें साम्प्रदायिक या मुसलमान-विरोधी, या अंग्रेज-विरोधी है। जो देखना चाहें उन्हें इस बातके पर्याप्त प्रमाण मिल जायेंगे कि आन्दोलनको मर्यादित और विलकुल अनपकारी बनाये रखने के लिए असाधारण सावधानी बरती जा रही है।

अनेक सरकारी व्यक्तियोंने स्वीकार किया है कि उनकी संकल्पनाके अनुसार यह आन्दोलन सर्वथा अप्रभावकारी है। अप्रलेखके लेखकने भी अपने दृष्टिकोणसे लगभग यही वात कही है और दोनों ही सही हैं। आन्दोलनका उद्देश्य युद्ध-प्रयत्नोंपर कोई खास असर डालने का नहीं था। यह आन्दोलन तो एक स्वतन्त्र राष्ट्रके नामपर इस युद्धको चलाने के विश्द्ध किया जानेवाला एक नैतिक और इस दृष्टिसे एक शान-दार रोष-प्रदर्शन है। यह आन्दोलन एक राजनीतिक संगठनकी ३५ करोड़ जनताको विश्द्ध अहिसात्मक प्रयत्नों द्वारा स्वतन्त्र कराने, और इस प्रकार विश्वके मविष्यको प्रमावित करने की उत्कट इच्छाका प्रतीक है। यह दावा ऊँचा मले ही हो, लेकिन है।

यदि मेरा वस चला तो कांग्रेस उस स्वतन्त्रताको ठुकरा देगी जिसके लिए एक भी ऐसे न्यायसंगत हितकी बलि देनी पढ़े, जो करोड़ों मूक जनताके हितसे संगत हो, फिर वह हित चाहे हिन्दुओंका हो, मुसलमानोंका हो या किसी और का हो। मैं यह बात मानने से भी इनकार करता हूँ कि यदि सात प्रान्तोंमें कांग्रेस सरकार बनी रहती तो पाकिस्तानकी माँग उतनी उम्र न होती जितनी आज है। किन्तु जो पदत्याग किया गया वह मुस्लिम हितों या अन्य वर्गोंके हितोंसे संघर्ष बचाने की खातिर नहीं किया गया था, बल्कि उसका एक कहीं अधिक वड़ा नैतिक आधार था। पदत्यागका मूल आधार भारतको ऐसे युद्ध-प्रयत्नोंसे अलग करना था जिनमें शरीक होने के लिए उसे कभी निमन्त्रित नहीं किया गया था। वातको कमसेकम शब्दोंमें और खबी राजनीतिक भाषामें कहा जाये तो पदत्यागका यही आधार था। जैसा कि आप जानते हैं, मेरा अपना आधार कही अधिक अमूर्त, कही अधिक नैतिक और कहीं अधिक सार्वभीम है, और फिर भी वह विलक्षुल वास्तविक और व्यावहारिक है।

मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि जब युद्ध समाप्त हो जायेगा और हम स्थायी या अस्थायी शान्तिकां उपभोग करने छगेंगे तब इतिहासमें यही लिखा जायेगा कि कांग्रेसका संघर्ष अपने समग्र रूपमें एक परम नैतिक संघर्ष था, जिसमें मानवकी गरिमापर कभी औंच नहीं आई।

एक मित्रतापूर्ण अपीलके इस अत्यन्त असन्तोषजनक प्रतीत होनेवाले उत्तरको समाप्त करते हुए अन्तमें मैं एक निवेदन करना चाहता हूँ। संसारके और स्वयं मेरे जीवनके इस सबसे महत्त्वपूर्ण क्षणमें क्या मित्र लोग मुझसे अपना वह विश्वास छोड़ देने को कहेंगे जो पिछले पचास वर्षोंसे मुझे सम्बल प्रदान करता आ रहा है? और इस जगह मैं एक बात और जोड़ दूँ, भले ही वह कितनी ही नागवार

क्यों न लगे: मुझे पक्का विश्वास है कि कांग्रेस अपना संघर्ष स्थगित करे या न करे, किन्तु यदि ब्रिटेन भारतके प्रति सचाई बरते तो सभी समस्याओंका सन्तोष-जनक समाधान निकल सकता है। किन्तु दुर्भाग्यवश ब्रिटिश राजनीतिक्ञोंने गलत रास्ता चुना है और भारतकी आजादीके मार्गमें काल्पनिक बाधाएँ खड़ी कर दी हैं। किन्तु यह एक ऐसा विषय है जिसपर अधिक कहने की भेरी कोई इच्छा नहीं है।

[अंग्रेजीसे] टाइम्स ऑफ इंडिया, २०-४-१९४१

# ६. पत्र: दुनीचन्दको

सेवाग्राम, वर्धा १९ अर्प्रैल, १९४१

प्रिय लाला दुनीचन्दजी,

में १६ तारीखकी शामको यहाँ पहुँची थी किन्तु गांधीजी के सम्मुख आपके प्रश्न कल ही पेश कर पाई।

१. वार-वार याद दिलाये जाने के वावजूद गिरफ्तारीके लिए आगे न आनेवाले विधान-सभा-सदस्योंके प्रक्तपर कुछ समय और प्रतीक्षा कर लेना बेहतर होगा, क्योंकि मियाँ इफ्तिखारुद्दीनकी अवधिसे पूर्व रिहाई विचाराधीन है।

२. यही वात अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके उन सदस्योंपर भी लागू होती है जिनकी तिथि पहले ही ३० तारीखतक बढ़ाई जा चुकी है।

३. गांघीजी इस वातके लिए राजी है कि अखिल भारतीय चरखा संघ द्वारा नियुक्त परीक्षक प्रमाणित खादीकी कताई और बुनाईकी जांच करें। किन्तु वे आपसे सहमत है कि जो लोग आधिक अथवा किसी अन्य उचित कारणसे नियुक्त परीक्षकोंके सामने प्रस्तुत होने में असमयं हों और जिन्हें जिला कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष या मन्त्रोसे प्रामाणिकताका आवश्यक प्रमाणपत्र मिल सकता हो उन्हें अ० भा० चरखा संघकी परीक्षासे वरी कर दिया जाये।

४. स्थानीय निकायोंके सदस्योंके त्यागपत्र देने के विषयपर मियाँ इफ्तिखारुद्दीन-की रिहाईतक प्रतीक्षा करना ही बेहतर होगा।

प्. सत्याग्रहसे इनकार करनेवाले सभी स्तरोंके कांग्रेसजनोंके विषयमें भी यही बात लागु होगी।

६. प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य भविष्यमें सत्याग्रह करनेवालोंमें शामिल है।

७. सभी स्तरोंकी कार्य-समितियोंके सदस्योंको सत्याग्रह करना है।

### १. पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

८. गांधीजी को ऐसी आशंका है कि जो लोग घोला देने पर उतारू है उनके हारा इस आन्दोलनके प्रति वफादारीका दिया हुआ कोई भी वचन बिलकुल बेकार होगा।

आपकी २१२ सत्याप्रहियोंकी सूची आ गई है। में देखती हूँ कि ये सव नाम स्यानीय अध्यक्ष या मन्त्री द्वारा स्वीकार कर लिये गये हैं, और आपने मुझे बताया या कि आपने इस बातकी तसत्ली कर ली है कि ये पदाधिकारी विश्वसनीय व्यक्ति हैं। हर हालतमें, स्थानीय पदाधिकारियोंको प्रत्येक व्यक्तिसे प्रश्नावलीके जो उत्तर प्राप्त हुए हैं, हम चाहेंगे कि वे हमें भेज दिये जायें। और उनकी परीक्षा भी क्यों न ली जायें? अखिल भारतीय चरखा संघ कितनी जल्दी इसकी व्यवस्था कर सकेगा?

लाहीरमें ग्याय परामर्शदाता वकील संघ जो संशोधन करवा रहा है, उसको लेकर कुछ शिकायतें उठी हैं। गांधीजी के मतमें ऐसी समितिका विचार अपने-आपमें तो बिलकुल सही है। किन्तु उसके कार्यमें सत्याग्रहियोंकी ओरसे कोई विलचस्पी, उकसावा या हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए और उसे स्वतन्त्र रूपसे कार्य करने देना चाहिए। इस विषयमें आप सत्याग्रहियोंको कड़े आदेश जारी कर दीजिए।

मेरा खयाल है कि मेरा कार्यक्रम जितना मेरे लिए उतना ही आपके लिए भी यकानेवाला सिद्ध हुआ होगा। आज्ञा है, अब आपको विश्राम मिल गया होगा और आप स्वस्थ होंगे।

साभिवादन,

हृदयसे आपकी, अमृतकौर

#### [ पुनश्च : ]

में यह पत्र लिख चुकी थी, उसके बाद आपका इसी १५ तारीखका व्याख्या-पत्र (कर्वारंग लेटर) मिला।

लाला डुनीचन्दजी, लाहीरवाले, बार-ऐट-लॉ मार्फत: अध्यक्ष, पंजाब कांग्रेस कमेटी मोजंग रोड लाहौर

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९९७) से। सीजन्य: जगन्नाथ

#### ७. पत्र: संभाजीको

सेवाग्राम, वर्षा १९ अप्रैल, १९४१

भाई मंभाजी,

में उकरारनामा पट गया। अवज्य वह सरत है। मैं इस बारेमें तलाश कर रहा हूं। मेरा अभिप्राय यह होगा कि एक तटस्य पंचकी नियुक्ति हो और जो शर्ते क्यून करे वह ही कायम की जाये। यों तो प्रत्येक मालिकको अपनी शर्तपर ही नाम पर रपने का अधिकार है और हरएक कामगारको उसे नामंजूर करने का हक है। यह नो गुर्शाका मौदा है। लेकिन क्योंकि मैं प्रेसके अधिकारियोंको पहचानता हैं, मैंने पचकी मूचना की है।

मो० क० गांधीके वंदेमातरम्

पत्रकी नकलने: प्यारेलाल पेपमं। मीजन्य: प्यारेलाल

#### ८. पत्र: ख्वाजाको

सेवाग्राम २० अप्रैल, १९४१

त्रिय न्याजा,

नुम्हारा नम्बा पत्र बढ़ा ही मर्मन्पर्शी था। दिल्लीमे भेजा गया तुम्हारा पुर्जी

भी गुत्र मिला था। गुते गुनी है कि तुम वा से मिल लिये।

नुम्हें मेरी एन बानपर बकीन करना मुम्किल न होगा कि मै आज भी [हिन्दू-म्निन्म] एमतामें बैना ही अटल विश्वास रखता हूँ जैसा तुमने १९१९ में देखा था। नय्यों और तारीगोंक मामलोंमें मै तुम्हारी भूले सुधार दूं। हिन्दी सम्मेलनकी अध्यक्षता मैने १९१८ में की थी — और इसके पीछे मेरा उद्देश्य हिन्दीको वर्जनगील नहीं, वित्य प्रहणशील बनाने का था। मेरे अध्यक्षता करने पर तब कोई आलोनना नहीं हुई थी। मैने हिन्दीकी जो परिभाषा की थी उसको लेकर मुसलमान शोन्तोंमें उतनाह था। जब मैने अध्यक्षता की थी उस समय हिन्दीकी यह परिभाषा केवल गरी हो परिभाषा थी। फिर, गेरी परिभाषाको सम्मेलनने भी स्वीकार कर

१. माधन-धन में "१९१७" लिखा है। देखिए खण्ड १४, पुर २७७-८१।

लिया। हिन्दीके आधारको मैंने जब इतना व्यापक बना दिया कि हिन्दीके मंचसे उर्द लिपिको मान्यता दे दी गई, तब मेरी आलोचना की भी कैसे जा सकती थी? सबसे पहले विरोधकी आवाज तब उठी जब मैंने पर्यायके रूपमें हिन्द्स्तानीके लिए 'हिन्दी' शब्दका प्रयोग करने का प्रयास किया। यह प्रयास भी एक सही दिशामें किया गया प्रयास था। किन्तु इस समयतक मेरे ऊपरसे भरोसा उठ चका था और मेरा हर कार्य शककी निगाहसे देखा जाने लगा था। ऐसी अजीव स्थित क्यों पैदा हुई, इसमें जाने की जरूरत मुझे नहीं है। लेकिन उपर्युक्त बयानसे यह वात स्पष्ट हो जाती है कि मैंने जो-कुछ भी किया है, वह हिन्दी-उर्द विवादका कारण नहीं वन सकता। लेकिन विवाद खड़ा हो जाने पर मैं उससे बैदाग बचकर नहीं निकल सकता था। मैं जिस तरह उर्दू अंजुमनको साम्प्रदायिक संस्था नहीं कहूँगा उसी तरह सम्मेळनको साम्प्रदायिक संस्था नहीं कहुँगा। भाषाके दोनों ही रूप मौजद हैं और दोनों रूपोंके समर्थक भी मौजूद हैं। इन दोनों रूपोंमें प्रति-द्वन्द्विताकी जरूरत ही नहीं है। लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण भावना, जिसका भाषाओं से कोई सरोकार नहीं है, राष्ट्रीय जीवनके हर क्षेत्रमें व्याप्त है। जब यह समाप्त हो जायेगी -- समाप्त तो यह कभी-न-कभी अवश्य होगी और होनी भी चाहिए --तब भाषाएँ तो जो हैं वही रहेंगी, लेकिन वे झगडेका कारण नहीं बनेंगी। फिलहाल तो ये दोनों रूप हमारे समान उद्देश्यको सहायता ही पहुँचा रहे हैं। अन्तमें अतिवादी रूप, जिनके पीछे कोई सजीव वास्तविकता नहीं है, समाप्त हो जायेंगे या फिर वे अतीतकी भ्रष्ट भाषा-शैलियोंके रूपमें ही विद्यमान रह जायेंगे। जैसा भी हो, हम कुछ लोग तो अपना दिमाग ठंडा रखें और केवल सही कदम ही उठायें, फिर इसकी चाहे कुछ भी कीमत क्यों न देनी पड़े।

कोशंके बारेमें तुम्हारी योजना अच्छी है। उसके और दूसरे मुद्दोंके बारेमें मैं डॉ॰ ताराचन्दै और सुन्दरलालजीसे विचार-विमर्श कर रहा हूँ।

तुम्हें व समस्त परिवारको मेरा प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. अंजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू

२. अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन

३. इलाहाबाद विस्वविद्यालयके

### ९. पत्र: पुरातन बुचको

सेवाग्राम, वर्धा २० अप्रैल, १९४१

चि० पुरातन,

तेरा पत्र मिला। तू जो गंबर दे रहा है वह सच नही जान पड़ती। लेकिन यदि सच हो तब भी हमे तो तैयार ही रहना चाहिए। तुम दोनों सन्तद्ध हो गये होंगे। जो नियमा हो, गो लिखना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरानीकी फोटो-नरुल (जी० एन० ९१७९)से

१०. पत्र: मीरावहनको

रोवाग्राम, वर्षा २१ अप्रैल, १९४१

चि॰ मीरा.

मृत्दर वर्णनमे भरा तुम्हारा पत्र मिला। मुझे खुशी है कि तुम्हें इतनी शान्ति और हरूपचन्दभाईका मत्मेग प्राप्त है। दुर्गावहन अब अच्छी है।
मुझेन

वापू

मूल अग्रेजी (मी॰ তহন्पू॰ ६४७८)से; सीजन्य: मीरावहन। जी॰ एन॰ ९८७३ ने भी

१. पुरातन युच और उनकी पत्नी आनन्दी

३. महादेव देसार्की पानी

२. बायूज छेटसे टु मीरा में इसके बारेमें मीरावहमने खिला है: "में बीस एकड़के एक फर्लोके शानशर बागंक बीच बनी मिट्टीकी एक कुटियामें ठहरी हुई थी। बागमें बहुत सारे चटकीले रंगोंबाले मीर थे, जिनमें में बुद्ध युत कारते समय कभी-कभी मेरे सामने आकर नाचने छगते थे।"

### ११. पत्र: शचीन्द्रनाथ मित्रको

२१ अप्रैल, १९४१

प्रिय शचीन्द्र वाबू,

आपका पत्र मिला। मैंने जो आपको दिया वह तो न्यूनतम था। किन्तु सत्याग्रहीको तो गुहार पड़ने पर धरतीके एक छोरसे दूसरे छोरतक जाना होता है। जहाँतक आपके एक सेवा-दल संयोजित करने का सवाल है, उसके लिए आप कृपया वंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीवालोंसे मिलें।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

श्री शचीन्द्रनाथ मित्र ५/२, काँटापुकुर लेन बागबाजार, कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१८६)से

# १२. पत्र : डॉ० अमुतुको

सेवाग्राम, वर्धा २१ अप्रैल, १९४१

प्रिय डॉ॰ अमुतु,

मुझे आश्चर्य है। आप भला ट्रेनसे क्यों गये? आप यह कैसे कह सकते हैं कि आपने दिल्ली तक पदयात्रा की? आप वाइसरायको कोई पत्र न लिखें। आपको वापस तिमलनाडु लौट जाना चाहिए तथा प्रायश्चित्त-स्वरूप चुपचाप रचनात्मक कार्य करना चाहिए। आप अयोग्य सत्याग्रही सिद्ध हुए हैं।

> आपका, राम

बाप्

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० मा० कां० कमेटी फाइल, १९४०-४१। सौजन्यः नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

अनुमानतः यहाँ अभिप्राय सत्याग्रहियोंके पथ-प्रदर्शनके लिए दिये गये गांधीजी के निर्देशोंसे
 देखिए खण्ड ७३, पृ० ४१४-१५।

# १३. पत्र: पुरातन बुचको

२१ अप्रैल, १९४१

नि॰ पुरातन,

यसुमनीयहनने तेरा सन्देश मुझे दिया है। तुझे अथवा आनन्दीको मैं कैसे भूल नकता हैं? लेकिन आनन्दी तो, लगता है, मुझे विलकुल भूल गई है।

और अहमदाबादमे यह क्या हो गया? पठानोने तेरा किया-कराया काम नष्ट कर दिया क्या?

वापुके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८०)से

### १४. पत्र: नरहरि द्वा० परीखको

२१ अप्रैल, १९४१

चि० नगहरि,

नायके पत्रोंको ठिकानेपर पहुँचवा देना। अहमदाबादके दंगेके बारेमें तुमसे कृछ जानने की आजा रखता हैं।

वापुके आशीर्वाद

गुजरानीकी फोटो-नकल (एम० एन० ९१२१)से

१. वनुमती पंछित

२. सारपर्य १८ अप्रैक्षको भदक छे साम्प्रदायिक देगेसे है।

## १५. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

सेवाग्राम २१ अप्रैल, १९४१

चि॰ रुक्मिणी

तेरा पत्र अभी मिला। इन्दुबहन मेरे पास ही बैठी है। यह उन्हें जानती थी। उनका जहाज तो डूब गया था, लेकिन वे दो-तीन दिन एक डोंगीमें रहे और अन्तमें स्कॉटलैंड पहुँचे। वहाँसे उन्होंने दूसरा स्टीमर पकड़ा। उनके दक्षिण आफिका पहुँच जाने की खबर कुमारी हैरिसनकों मिली थी। उसके वाद इन्दुबहनको कुछ मालूम नहीं है। हमें आशा करनी चाहिए कि वे सही-सलामत पहुँच जायेंगे। तुम सब निश्चन्त रहना।

बा अभी दिल्लीमें ही है। दोनोंको<sup>\*</sup>

बाप्के आशीर्वाद

गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ १०१२९)से। सौजन्य: वनारसीलाल वजाज

## १६. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको

सेवाग्राम २३ अप्रैल, १९४१

प्रिय गुहु ,

आपका १८ तारीखका पत्र मिला। मैं जो कर सकता हूँ, करूँगा। किन्तु कपड़ों या भोजनके रूपमें सहायता देने की बात मुझे कभी खास नहीं जँची है। समस्या तो यह है कि ढाका, अहमदाबाद और वस्वई इन तीन जगहोंपर कांग्रेसजनोंके क्रियाशील होते हुए भी दंगे क्यों होते हैं? कांग्रेसका अधिकतम प्रभाव अहमदाबादमें है, बम्बई दूसरे नम्बरपर आता है। आपके सामन तो कुछ अड्चन है। हजारों लोग

- १. मगनलाल गांधीकी पुत्री
- २. रुक्मिणी नजाजके दवसुर, रामेदवरलाल नजाज
- ३. एगथा हैरिसन
- ४. रुक्मिणी बजाज और उनके पति बनारसीछाछ बजाज
- ५. वंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्री
- ६. १८ मार्चको ढाकामें साम्प्रदायिक देंगे महक उठे थे।

भला इतने असहाय क्यों हो गये कि अपने घरोंकी रक्षा नहीं कर पाये? यह तो वे हिसात्मक या अहिंसात्मक किसी भी उपायसे कर सकते थे। कांग्रेसजनोंको मात्र सहायता-कायं हो सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। वह कार्य तो सामाजिक कार्यकर्ताओं का है, जिन्होंने इस क्षेत्रमे विशेष योग्यता प्राप्त कर ली है, जैसे कि मारवाड़ी रिलीफ गोनाइटी। कांग्रेसजनोंको इस घोर वुराईके कारणो और निवारणके उपायोंका पता जगाना है। आप तो जुर्सीपर बैठकर बातें बनानेवाले नहीं, बल्कि अनुभवी कार्यकर्ता है। मैं चाहता हूँ कि आप इस काममें अपना दिमाय लगायें। ऐसे कार्यों में हमें गरातरने गहायताको अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जहाँ आसानीसे मयभीत हो जानेवाले लोग होगे, वहाँ उन्हें डरानेवाले लोग भी अवश्य उठ खड़े होंगे।

हृदयसे आपका,

श्री अर गृह वंगार प्रान्तीय कांग्रेन कमेटी ६२, अपर नर्जुन्द रोट कनकत्ता

अंग्रेजीकी नकलने: प्यारेलाल पेपमं; मौजन्य: प्यारेलालं। फाइल संख्या ३००१ एच, पुलिस कमिन्नमं ऑफिस, बम्बईने भी

# १७. पुर्जा: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम २३ वर्षेल, १९४१

केवल केना-गरीक्षा ही नहीं हो रही है, बल्कि मुक्यवस्थित रूपसे हिसाब-

किताब रखना भी चालु होगा।

चाहे जैना दाम देकर कोई भी चीज नहीं मेंगानी है। जो वास्तवमें वीमार हों उन्हें छोड़कर वाकी लोगोंके लिए सन्तरे विल्कुल वन्द कर दिये जायें। पपीतेके वजाय हम लोग प्रच्र मावामें नीयूका इस्तेमाल करेंगे। आजकी तरह लगभग प्रतिदिन नवको आम दिये जायेंगे, और जब आम दिये जायें तब केले आदि दूसरे फल न दिये जायें।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १४६२)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

सेवायाम आश्रममें भीजन-वितरणका कार्य अमृत्रकाल चटर्जीकी देखरेखमें होता था।

# १८. पत्र: मुन्नालाल गं० ज्ञाहको

२३ अप्रैल, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

यदि गम्भीरतासे विचार करें, तो परीक्षा देने, ज्ञान प्राप्त करने और पारंगत होने, इन तीनों वातोंका उद्देश्य एक ही है। मनुष्य परीक्षा देता है तो पारंगत होने के लिए, यानी पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए। कंचन कभी-कभी वेचैन जरूर हो जाती है, लेकिन चिन्ताकी कोई बात नहीं है। फिर, मैं तो नजर रखता ही हूँ। क्या तुम उसे कड़े पत्र लिखते हो? उसे लिखो कि तुम्हारे सब पत्र मुझे दिखाये। इससे तुम्हारी कलम अपने-आप संयममें रहेगी और मेरे लिए तुम्हारा मार्गदर्शन करना सरल हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री मुन्नालालजी चरस्ना संघ, सादी वस्त्रालय मूल, जिला चाँदा

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५०३)से। सी० डल्ल्यू० ७१३५ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं• शाह

# , १९,, सलाह: सिन्धके कांग्रेस शिष्टमण्डलको

वर्धागंज २४ अप्रैल, १९४१

मौलाना साहव सिन्धमें सिवनय अवजा आन्दोलन नहीं चाहते, यह स्वयमें एक निर्णायक तथ्य है। इसके अलावा, मेरा स्पष्ट मत है कि गुण-दोषके आधार पर भी वहाँ यह आन्दोलन नहीं होना चाहिए। सिन्धके प्रत्येक कांग्रेसीका यह कर्तंब्य है कि वह गाँवोंमें जाकर बैठ जाये और वहीं रचनात्मक कार्यक्रममें जुट जाये।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, २६-४-१९४१

१. मुन्नाषाल गं० शाहकी पत्नी

# २०. पुर्जा: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम २४ अप्रैल, १९४१

जिन लोगोंके नामोंके आगे काटेका चिह्न लगा दिया है उनको छोड़कर बाकी लोगोंको नीवूसे ही काम चलाना चाहिए।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३८६)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

# २१. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

२४ अप्रैल, १९४१

भाई अमृतलाल,

वसुमितवहनको पपीता इ० जो फल उन्हे चाहिये देना।

बापू

पत्रकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यु॰ १४६३)से। सौजन्य: ए० के० सेन

# २२. वक्तव्यः समाचारपत्रोंको

वर्षा २५ वर्षेल, १९४१

कॉमन्स सभामें हुई भारत-सम्बन्धी बहसकी लम्बी रिपोर्ट पढ़कर मुझे दु.ख हुआ। देखा गया है कि संकट पड़ने पर लोगोंके दिल पसीज जाते हैं और वे तथ्योंके प्रति सचेत हो जाते हैं, किन्तु ऐसा प्रकट होता है कि ब्रिटेनके संकटने श्री एमरीके दिलको जरा भी, नहीं छुआ है और उनकी हृदयहीनतामें कोई कमी नही

 अमृतलाल चटर्जीन गांधीजी को उन लोगोंके नामोंकी स्वी दी थी जिन्हों फलोंकी जरूरत थी। गांधीजी ने अमृतलाल न्वटर्जीक पत्रके पीछे ही यह पुर्ज लिखा था और चिमनलाल, रामदास, हों० दास, तथा अमृतकौरके नामोंके आगे काटेका चिक्क भी बनां दिया था। आई है। श्री एमरीके इस निष्ठुर रवैयेसे मेरा यह विचार और भी दृढ़ हो गया है कि भारी कठिनाइयोंके बावजूद कांग्रेसको अपनी अहिंसाकी नीतिका पालन करते रहना चाहिए।

भारतकी वर्तमान परिस्थित और सुस्पष्ट तथ्योंकी तिरस्कारपूर्ण अवहेलना करके श्री एमरीने ब्रिटेनका कोई हित नहीं किया है। वे वब् सहज भावसे कहते हैं कि ब्रिटिश शासनसे भारतमें शान्ति स्थापित हुई है। ढाका और अहमदावादमें क्या हो रहा है, क्या उन्हें इसका पता नहीं है? इन दोनों स्थानोंपर शान्ति बनाये रखने का उत्तरदायित्व किसका था? मुझे उम्मीद है कि वे पलटकर यह जवाब नहीं देंगे कि कमसे-कम बंगालमें स्वायत्त शासन है। उनको पता है कि वह स्वायत्त शासन कैसा मजाक है। उन्हें मालूम है कि इन कठपुतली-जैसे मन्त्रियोंको, चाहे वे कांग्रेसका बिल्ला लगायें या लीग या किसी भी दूसरे दलका, ऐसी आपात शिवायोंसे निपटने के लिए कितने कम अधिकार प्राप्त है।

मै एक बहुत प्रासंगिक सवाल पूछता हूँ: क्या कारण है कि ब्रिटिश शासनके इतने लम्बे दौरके फलस्वरूप लोग इसने शिवतहीन बन गये हैं कि वे कुछ सौ गुण्डों का सामना नहीं कर सकते? यह हमसे अधिक अंग्रेजोंके लिए शमनाक चीज है कि हजारों लोग भयभीत होकर इस कारण अपने घरोंसे माग खड़े हों कि कुछ-एक सौ गुण्डोंके लिए अग्निकाण्ड, हत्याकाण्ड और लूटपाटकी वारदातोंके लिए अनुकूल वाता-वरण बन गया है। किसी भी सरकारका — जिसे सरकार कहा जा सके — प्रथम कर्तंच्य अपनी प्रजाको आत्मरक्षाकी कला सिखाना होना चाहिए। लेकिन विदेशी ब्रिटिश सरकारको भारतीय नागरिकोंके मूलभूत कल्याणकी कोई चिन्ता नहीं थी और इसिलए उसने जनताको शस्त्रास्त्रके उपयोगसे वंचित कर दिया।

श्री एमरीने भारतीय सेनाओंकी जो प्रशंसा की है उसका भारतके जन-मानसपर कोई असर पड़नेवाला नहीं है, क्योंकि फिलहाल कांग्रेसकी ऑहंसा-नीतिकी वात छोड़ भी दें तो मेरा यह दावा है कि यदि भारतको आत्मरक्षाके साधन प्राप्त होते और उसका प्रशिक्षण मिला होता तथा यदि वह युद्धमें स्वेच्छासे ग्रेट ब्रिटेनका सहयोगी बना होता तो यूरोपकी सारी विष्वंसक शक्तियाँ मिलकर भी ब्रिटेनका वाल बाँका नहीं कर पातीं।

श्री एमरीने बार-बार यह कहकर भारतीयोंकी बुद्धिका अपमान किया है कि भारतके विभिन्न राजनीतिक दलोंके आपसमें समझौता करने-भर की देर है कि ब्रिटेन उनकी सर्वसम्मत इच्छाको मान्यता दे देगा। मैने बारम्बार यह सिद्ध कर दिया है कि दलोंको आपसमें एकता न करने देना ही ब्रिटेनकी परम्परागत नौति रही है। "फूट डालकर शासन करना" ब्रिटेनका नासमझी-भरा सिद्धान्त रहा है जिसपर

१. मार्त मन्त्री एङ० एस० एमरीने कॉमन्स समामें २२ अप्रैंङ, १९४१ को उस घोषणाकी अविध एक वर्ष और बढ़ाने का एक प्रस्ताव पेश किया था जिसके अन्तर्गंत भारतीय प्रान्तोंके गवनैरोंको प्रान्तीय विधान-मण्डलोंके सदस्योंके अधिकार है दिये गये थे। इस अवसरपर माषण देते हुए श्री एमरीने कांग्रेस और उसके नेतृत्वपर कई कुड आक्षेप किये थे।

उसे गर्व है। मारतके जन-सामान्यमें फूट डालने के लिए ब्रिटिश राजनियक जिम्मे-दार है और ये भेद तबतक मिट नहीं सकेंगे जबतक अंग्रेज तलवारके बलपर भारतको दासताके बन्धनमें जकड़े रखेंगे।

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि दुर्भाग्यका कांग्रेस और मुस्लिम लीगके बीच ऐसी खाई है जो पट नहीं सकती। त्रिटेनके राजनियक यह क्यों नहीं स्वीकार कर लेते कि अखिर यह एक घरेलू झगड़ा है? वे भारत छोड़कर चले जायें तो मैं वादा करता हूँ कि कांग्रेस, लीग तथा अन्य सब दल इसी बातमें अपना हित देखेंगे कि वे आपसमें मिल जायें और मिलकर भारत सरकारको गठित करने का एक स्वदेशी फार्मूला ढूँढ़ निकालें। सम्भव है कि इस सरकारकी रचना शास्त्रीय ढंगकी न हो, किसी पश्चिमी नमूने पर न हो, किन्तु वह टिकाऊ अवश्य होगी। यह भी सम्भव है कि उस सुखद स्यितिक पहुँचने से पहले हमें आपसमें ही संघर्ष करना पड़े। लेकिन यदि हम आपसमें तय कर लें कि हम किसी वाहरी शक्तिको सहायताके लिए नहीं चुलायेंगे, तो लड़ाई-झगड़ेकी वह स्थिति शायद दस-पन्द्रह दिनतक चलेगी और इस सारी अवधिमें यहाँ उतने लोग भी नहीं मरेंगे जितने कि आज यूरोपमें एक दिनकी लड़ाईमें मारे जाते हैं। इतने कम जन-संहारका सीधा-सादा कारण यह होगा कि ब्रिटिश शासनकी कुपासे हमारे देशके लोग विलकुल निहस्थे है।

सचाईकी घोर उपेक्षा करते हुए थी एमरीने अपने अनिभन्न श्रोताओं को इस अममें डाल दिया है कि कांग्रेस या तो "सव-कुछ या कुछ नहीं "चाहती है। उन्हें याद दिला दूं कि ब्रिटिश जनताकी भावनाओं को तुष्ट करने के लिए कांग्रेस इतना झुक गई कि उसने पूना-प्रस्ताव पारित कर डाला और जब वम्बईमें पूना-प्रस्ताव हो रहूँ कर दिया गया, तब मैंने दृढ़तापूर्वक यह कहा था कि चूँकि फिलहाल ब्रिटिश सरकार भारतको आजादी देने की स्थितिमें नहीं है और न उसकी घोषणा कर सकती है, इसलिए हम पूर्ण वाक्-स्वातन्त्र्य और लेखन-स्वातन्त्र्यसे ही सन्तोष कर लेंगे। क्या यह बात "मव-कुछ या कुछ नहीं "की माँग थी? कांग्रेस इस समय स्वयं अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिए संघर्ष कर रही है, फिर भी ब्रिटिश सरकारको परेशानीमें न डालने की अपनी इच्छिक कारण वह जान-वूझकर संयमसे काम छे रही है। परन्तु श्री एमरी अपनी बर्त्तमान मन स्थितिमें उसकी कद्र करने की शालीनता दिलायेंगे — ऐसी आशा करना व्यर्थ है। उस तरहकी शालीनता न होने के कारण उन्होंने उलटे कांग्रेसके उसी संयमको उसकी कमजोरी बताते हुए दावा किया है कि कांग्रेसका सविनय अवज्ञा आन्दोलन निष्फल हो गया है।

१. वर्धामें २१ जून, १९४० को कांग्रेस कार्थ-समितिने इस प्रस्तावकी खिफारिश की थी और पूनामें २८ जुलाई, १९४० को अ० मा० कां० कमेटीने इसे पारित किया था। प्रस्तावके पाठके छिद देखिए ए० १२५-२६।

२. देखिए खण्ड ७३, पृ० १-३ और ५-१४।

भारतकी सम्पन्नताक वारेमें उनका वक्तव्य पढ़कर मैं स्तम्भित रह गया। मैं अपने अनुभवके आघारपर कहता हूँ कि भारतकी सम्पन्नता अब एक कहानी वन कर रह गई है। भारतके करोड़ों लोग दिन-ब-दिन कंगाल होते जा रहे हैं। उनके पास तन ढॅकने को कपड़ा नहीं है और खाने को पर्याप्त भोजन नहीं है। चूँिक भारतका शासन एक आदमीके हाथों में है, इसलिए वह करोड़ों स्पयेका वजट दिखा सकता है। किन्तु मैं यह कहने का दुस्साहस करता हूँ कि वह बजट न केवल भारतकी भूखी जनताकी सम्पन्नताका कोई प्रमाण नहीं है, बंक्कि उलटे इस बातका पक्का प्रमाण है कि भारत अंग्रेजोंके पैरों तले पिसा जा रहा है। किसानोंक कण्टोंसे परिचित प्रस्येक भारतवासीका यह कत्तंव्य है कि वह इस निरंकुश शासनके खिलाफ विद्रोह कर दे। मानव-जातिका सौभाग्य है कि भारतका विद्रोह शान्तिमय विद्रोह है और मैं आशा करता हूँ कि केवल शान्तिपूर्ण प्रयत्नोंके द्वारा ही भारत अपने सहज भविष्यको प्राप्त कर लेगा।

लेकिन में श्री एमरीके वक्तव्यकी और अधिक चीर-फाड़ नहीं करूँगा। उनके भाषणका यह अति संक्षिप्त विश्लेषण करने में भी मुझे दुःख हुआ है। किन्तु उनका यह भाषण इतने आश्चर्यजनक रूपसे श्रामक है कि मुझे लगा कि यदि मैं उनके दुर्भाग्यपूर्ण वक्तव्यकी कुछ ज्वलन्त विसंगतियोंको स्पष्ट नहीं करता तो मैं अपने कर्त्तव्यसे च्युत होऊँगा। श्री एमरीको आज भारतकी ४० करोड़ जनताके भाग्य-नियन्ताके रूपमें जो निविवाद अधिकार प्राप्त है, बेहतर होता कि वे केवल उतने से ही सन्तोष मान लेते।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, २७-४-१९४१

# २३. फ्रैंक मोरेसके प्रक्तोंके उत्तर<sup>8</sup>

[२५ अप्रैल, १९४१]

१. इसके उत्तरमें में अपना पहलेका कथन ही दुहराऊँगा कि ब्रिटिश राज-नियकों और पत्रकारोंने सारे भारतीय प्रश्नको अवास्तविकताकी चादरसे ढक दिया है। 'टाइम्स [ऑक इंडियो ]'की आलोचनाकी वास्तविकता तो यह है कि राष्ट्रवादी भारत किन्हीं कारणोंसे युद्ध-प्रयत्नोंमें सहयोग देने के विरुद्ध है। किन्तु यह समझ लेने के बाद कि सारा-का-सारा भारत एक कारागार है, जहाँ

१. इसके बादके दो बाक्योंको सेन्सरने काट दिया था।

२ और ३. प्रश्न लन्दनके न्यूज कॉनिकलकी ओरसे पूछे गये थे। महादेव देसाईने २५ अप्रैल, १९४१ की फ्रैंक मोरेसको लिखे अपने पत्रमें कहा था: "गांधीजी ने प्रश्न १,२,३ और ५ के ये उत्तर दिये हैं। प्रश्न ४ के उत्तरमें वे कुछ नहीं कहना चाहते।"

४. देखिए पृ० ३-५।

जेलर लोग बन्दियोंसे जो चाहे करवा सकते हैं, इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है कि सरकार जितना चाहे धन उगाह सकती है और चाहे जितने रंगरूट भर्ती कर सकती है। यह बात मैं पहले भी सिद्ध कर चुका हूँ कि आजका खिताबधारी वर्ग, जिसमें देशी रियासतोंके राजा-नवाब भी शामिल है, वस्तुतः अंग्रेजोंकी ही सुष्टि है।

२. यदि वम्बई सम्मेलनके प्रस्तावोंको स्वार ज्यों-का-त्यों मान लेती है, तो हालांकि ये प्रस्ताव सम्भवतः कांग्रेसको स्वीकार्य नही होगे, फिर भी मै यह स्वीकार कर्छेंगा कि इन्हें मान लेना कुछ हदतक इस वातका सवूत है कि सरकार सत्ता छोड़ने की इच्छा रखती है।

३. मुझे तानाशाह बताना हास्यास्पद है, यदि किसी और कारणसे नहीं तो इसी कारणसे कि मैं जो निर्देश देता हूँ उसके पीछे दण्डकी शक्ति नहीं है। यदि कुछ है तो कांग्रेसजनोंके स्वेच्छापूर्वक दिये हुए स्नेहमय समर्थनकी शक्ति हो। मैंने अपना मत किसीपर भी नहीं थोपा है। अहिंसात्मक विचारोंको दूसरोपर थोपने की बात अपने-आपमें ही एक विरोधामास है। यह सच है कि मैं अपनो तथाकथित नोतिको बदलने में असमर्थ हूँ, क्योंकि मेरी नीति तो मेरा धमं है।

मैं श्री एमरीके इम घृण्टतापूर्ण कथनसे आब्चर्यचिकत रह गया हूँ कि कांग्रेसकी इच्छा या तो "सब-कुछ या कुछ नहीं" लेने की है, और उसने "इस विषयपर चर्चा करने में भी इनकार कर दिया है"। वे जानते हैं कि कांग्रेस इम हदतक जुक गई यी कि उसने सरकारके सामने पूना-प्रस्ताव रखा था और उन्हें यह भी जानना चाहिए कि जब वम्बईमें पूना-प्रस्ताव वापस ले लिया गया तव कांग्रेस यह समझ गई यी कि इम समय सरकारसे यह आज्ञा नहीं की जा सकती कि वह कांग्रेमकी मांगको स्वीकार करेगी और इसीलिए कांग्रेस-प्रस्तावमें वाणीकी स्वतन्त्रता-की मांग रखी गई, जिमे सरकार द्वारा स्पष्ट रूपसे ठुकरा दिया गया है।

इमी तरह कांग्रेसको एक ऐसी सर्वसत्तावादो संस्था कहना भी गळत है जिमको इच्छा नारी सत्ता प्राप्त करने की है। सर्वसत्तावादका मूळ लक्षण यह है कि उसके पीछे हिसात्मक दण्ड-शक्ति होती है। श्री एमरी जानते हैं कि कांग्रेसने अहिसाका यत लिया है, ओर मैं उन्हें चुनीती देता हूँ कि वे एक भी ऐसा उदा-हरण दें जिसमें अपने विरोधियोपर अपना मत थोपने के लिए कांग्रेसने अधिकृत रूपने हिसाका प्रयोग किया हो।

'उपरोक्त दो कथनोंके समान ही श्री एमरीका यह दावा भी गलत है कि
"इम नमय मुख्य संत्रैधानिक कार्यका जिम्मा अनिवार्यतः हमारी अपेक्षा भारतीयोंके
हायोंमें कही अधिक है", क्योंकि वे अच्छी तरह जानते है कि अंग्रेजोंकी 'फूट

१. देखिए खण्ड ७३, परिशिष्ट १३।

२. अतुमानतः इसके भागेका भंश ही प्रस्न ५ का उत्तर है।

💃 (डालकर राज्य करने 'की परम्परागत नीतिको असंफल बनाने के प्रायः असम्मव कार्यको परा करने के अलावा भारतीयोंके हाथमें कुछ भी नहीं है। जरा कल्पना कोजिए कि कोई हिटलर इंग्लैंडपर काविज होता और उसने उसी प्रकार सफलता-पर्वंक अंग्रेजोंमें फट डाली होती जैसी कि अंग्रेजोंने मारतीयोंमें डाली है और फिर उनकी खिल्ली उड़ाते हुए वह कहता कि 'तुम आपसमें समझौता कर छो तो मैं उसका अनुमोदन कर दूँगा। 'मैं दावेके साथ कहता हूँ कि चाहे कितने ही कोमल शब्दोंके आवरणमें इसे खुपाया जाये, फिर भी तथ्य यही है कि मारतमें भो हिटलरशाही ही है। और चुँकि उन्होंने सचाईकी अवहेलना करना ही चाहा है, इसलिए जब उन्होंने जान-बुझकर अपने अनिमज्ञ श्रोताओंको यह कह-कर वहकावेमें डालने की कोशिश की कि व्यक्तिगत सविनय अवज्ञाका उद्देश्य अग्रेजोंको विषम स्थितिमें डालना था और यही हुआ भी है, तब मुझे उसपर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जो-कुछ लिखा गया है वही अब भी सही है, और वह यह है कि कांग्रेसका इरादा सरकारको अपने सविनय अवज्ञा आन्दोलन द्वारा विषम स्थितिमें डालने का नहीं था। और श्री एमरीने अपने भाषणमें ही मान लिया है कि कोई विषम स्थिति नहीं बनी है, क्योंकि उन्होंने बड़े उत्साहसे घोषणा को है कि काग्रेसके इस कदमसे भारतके किसी भी मागमें युद्ध-प्रयत्नों-पर कोई असर नहीं पड़ा है और "युद्ध-सम्बन्धी सभी कार्यों के लिए या कष्ट-निवारणके वास्ते भारतके प्रत्येक वर्गसे खुब उदारतापूर्वक घनराशि मिल रही है।" कांग्रेसकी अनुकरणीय नरमीकी प्रशंसा करने के बजाय उन्होंने शालीनता छोड़कर एक पचास साल पूराने संगठनपर वह सब करने का आरोप लगाया है जो करने का न कभी उसका उद्देश्य रहा है और न कभी उसने वस्तुतः किया है। यह सोचकर मेरा मन दुःखसे भर उठता है कि ब्रिटेन आज जिस संकटसे गुजर रहा है उसमें भी श्री एमरीको इंतना होश नही आया है कि वे कमसे-कम ठोस सचाईको तो स्वीकार कर लेते।

[अंग्रेजी से]

महात्मा, जिल्द ६, पृ० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

### २४. पत्र: सतीशचन्द्र दासगुप्तको

सेवाग्राम, वर्घा २५ अप्रैल, १९४१

प्रिय सतीश वावू,

मैं जान-बूक्षकर आपको अग्रेजीमें पत्र लिख रहा हूँ। मेरी सलाहपर अमृतवावू बंगाल वापस जा रहे है। उनको अपने परिवारपर जबदंस्ती नहीं करनी
चाहिए। इस कारण सम्भवत वे मानसिक संन्यास छे छेंगे और परिवारसे
सम्बन्ध-विच्छेद कर छेगे। उनके दो लड़के फिलहाल यही रहेंगे। दो लड़कियोंको वे अपने साथ ले जायेंगे। मेरे विचारमें लड़कियोंका उचित स्थान
अपनी मांके पास है, जिसके साथ उनके मनका अमृतवावृक्ती अपेक्षा अधिक मेल
है। मैं चाहता हूँ कि आप इस परिवारको अपना परामशं दें और उनका मार्गदर्शन करें। जवतक वे लोग आपके मार्गदर्शनको स्वीकार करते रहेगे तबतक जो
स्पये मैं भेजता हूँ, भेजता रहूँगा। मैं चाहता हूँ कि दोनों बहनें देश-सेवाका कुछ
कार्य करें और अपनी आजीविका कमायें। किन्तु आप जैसा ठीक समझें।
अनृतवावू सेवा-कार्यके विषयमें वड़े महत्त्वाकांक्षी है। कुछ और करने के बजाय
वे दंगाइयोंको शान्त करने के प्रयासमें मर जाना पसन्द करेंगे। आप उनका
मार्गदर्शन कीर्जिएगा।

आभाके पाम साड़ी नहीं है। उसे कुछ सादे वस्त्र दिलवा दीजिएगा और विल मुझे भेज दीजिएगा।

सत्रेम,

बापू

अंग्रेजोको फोटो-नकल (सी० डन्स्यू० १०३००)से। सौजन्यः अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए खण्ड ७३, पृ० ४६८।

२. शैकेन्द्रनाथ और धीरेन्द्रनाथ

३. बीणा और भामा

४. डाकामें

# २५. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

२५ अप्रैल, १९४१

प्रिय कुमारप्पा,

यह क्या बात है ? परिश्रमसे तुम्हें वीमार क्यों पड़ जाना चाहिए ? तुम्हें तो उपाय मालूम है। जब अत्यधिक परिश्रम करना पड़े तो आंशिक या पूरा उपवास करो। आंशिक उपवासका मतलब है रसीले फलोंपर ही निर्वाह करना। और जब बुखार हो तो उपवास अनिवार्य है। मैं चाहता हूँ कि तुम शीघ्र ही कुन्तूर चले जाबो।

मुझे खुशी है कि तुम कोडम्बक्कम जा सके। सप्रेम,

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५२)से

# २६. पत्र : मुन्नालाल गं० शाहको

२७ अप्रैल, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

तुम्हारे बहुत लम्बे पत्र मिले। अच्छा किया, पत्र लिखे। लेकिन तुम्हें इस पत्र लिखनेके रोगसे छुट्टी पानी चाहिए। सेवाग्रामका मोह तुमसे छूट गया है, यह मैं विलकुल नहीं मानता। वैसे यह तो मैं अपना ही मत व्यक्त कर रहा हूँ। कहीं भी रहो, तुम्हें कंचनको साथ रखना ही चाहिए। वादमें भले अलग हो जाओ। तय यह हुआ था कि वुखार आने पर तुम मूल छोड़ दोगे। इसलिए वापस लौट आओ.।

#### [पुनश्च:]

कमजोरीके वावजूद इतना लिख डाला। आज मेरे उपवासका तीसरा दिन है, शामको तोडूँगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५०२) से। सी० डब्ल्यू० ७१३४ से भी; सीजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

रै. कुमारप्पा वायु-परिवर्तनके लिए कुन्नूर जानेवाले थे।

२. सम्भवतः गांधीजी ने उक्त उपवास दंगोंके सिक्टसिक्टेमें किया था।

# २७. तार: मुल्कराजको 1

२८ अप्रैल, १९४१

लाला मुल्कराज मन्त्री, जलियाँवाला बाग स्मारक कोष अमृतसर

आपकी कार्रवाईका समर्थन किया जाता है। जबतक सभी पक्ष आपसमें मिलकर आपके सामने कोई ऐसा नक्शा पेश नहीं करते जिसमें यह स्पष्ट रूपसे दिखाया गया हो कि वे बागके किन-किन भागोंका उपयोग करेंगे, और आपको इस बातका इत्मीनान नहीं करा देते कि वे अपने वचनका पालन करेंगे तबतक आपको उन्हें अनुमित-पत्र नहीं देना चाहिए।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

## २८. पत्र: नानाभाई इ० मशक्त्वालाको

२८ अप्रैल, १९४१

भाई नानाभाई,

तुमने तीन बीसी पूरी कर ली। अब मैं यह आशा तो करता ही हूँ कि तुम नीरोग हो जाओगे और सेवा करने के लिए दो और बीसी भी पूरी करोगे।

बापुके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६९४)से। सी० डब्ल्यू० ४३३९ से भी; सीजन्य: नानाभाई इ० मशष्ड्वाला

- १. यह तार मुक्तराजके २२ अप्रैल, १९४१ के पत्रके जवावमें भेजा गया था जिसमें उन्होंने अमृतसरकी विभिन्न यूनियनोंके लिए मई-दिवस मनाने की खातिर जलियाँवाला वागकी जमीनके आरक्षणके वारेमें लिखा था।
  - किशोरलाल मशरूवालाके भाई और सुशीला गांधीके पिता

### २९. पत्र : श्रीमन्नारायणको

सेवाग्राम २८ अप्रैल, १९४१

भाई श्रीमन्,

तुमारी सूचना अच्छी है। आज राजेंद्रवाबू आते हैं। देखुंगा क्या शक्य है। जानते होंगे की मदालसा खूब आगे वढ़ रही है। काफी चलती है। आशा तो है कि बिलकुल अच्छी हो जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३००

### ३०. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

[३० अप्रैल, १९४१] र

चि॰ काका,

तुम यह क्यों नहीं देखते कि वागी होने के बावजूद [विपक्षीकी] कमेटीमें काम करना, पत्र-व्यवहारमे उसकी भाषाका अनुसरण करना, यह तुम्हारे अहिंसक बागी होने की निशानी है?

बापूके आशीर्वाद

श्री काकासाहब ४०-ए, रिज रोड मलाबार हिल, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९४०)से

- १. श्रीमन्नारायणकी पत्नी
- २. डाककी मुहरपर से

# ३१. पत्र : उमिला म० मेहताको

[३० अप्रैल, १९४१]

नि० उमि

नेरी रुनरने मुद्दो मिली थी। लेकिन चूंकि उनमे कुछ नहीं था इसलिए | उत्तर-में ] मैंने दुःछ नदी लिगा। तू आजकल नया पढ रही है? तेरे बिना बहुत सूना-मूना लगा है। तुम गब लोग मई महीनेमें जल्दसे-जल्द आना। तू बया पढती है? नगा गानी हैं? आना बजन लिगना। पूमने जाती है या नहीं?

िन्तों में रपाहीका उपयोग कर। तू कैमे पढती है? यहाँ खूब गर्मी पड़ती है।

वापुके आशीर्वाद

थी डीमलाबहन मार्फन थी में प्राट मेहना मबने जारकी महिल, ७१ दीर्यागंड दिन्ही

गजगनी (मी० उल्पृ० १०११६) में । मीजन्य: मंजुला म० महता

# ३२. पत्र : 'टाइम्स ऑफ इंडिया 'के सम्पादकको

१ मई, १९४१

त्रिय महोदय,

आपने किया है ै

श्री एमरी बलूबी यह प्रत्युक्तर दे सकते है कि श्री गांधीने उनपर जिन "असंगतियों" का आरोप लगाया है वे स्वयं उनके वक्तव्यमें भी मीजूद हैं। और अहिसाके परम पुजारीके मुहसे निकला यह आरोप तो निक्चय ही बड़ा

१. एक्की महरपर मे

२. मगनवाय प्रा० महता व मंजुला म० महताकी पुत्री

3. प्रस्तुत बंध २८-४-१९४१ के टाइस्स ऑफ इंडिया में 'करेन्ट टॉपिक्स' (सामविक चर्चा) रतन्मके अन्तरीत प्रकाशित हुआ था।

४. देश्विष प्० १५-१८।

विचित्र लगता है कि भारतीय जनताको "विलकुल निहत्या" बनाये रखने की ब्रिटेनकी तथाकथित नीतिके फलस्वरूप भारत "शक्तिहीन" हो गया है।

१९०८' में जब मैंने पहली वार अहिंसा-सिद्धान्तके जीवन-रक्षक तथा जीवन-दायी सत्यका प्रतिपादन किया था, तभी मैंने कहा था कि अंग्रेजोंने भारतीय जनताका जो नि:शस्त्रीकरण किया है वह भारतमें ब्रिटिश राज्यके इतिहासका सबसे कलंकित पष्ठ है। और १९१८ में जब मैं जिटिश सेनाके लिए इतने ज्यादा उत्साहसे रंगस्ट इकट्ठे कर रहा था कि खुद सख्त वीमार पड़ गया और मझे काफी बदनामी भी उठानी पड़ी. तब भी मैंने यही कहा था। उस समय इस कथनको ठीक माना गया था। किन्त समय बदल गया है और एक अकाटच तथ्यका निरूपण करने के लिए मुझपर असंगतिका आरोप लगाया जा रहा है। मेरा कहना है कि अहिंसा विसी-पर लादी नहीं जा सकती। वह तो व्यक्तिके हदयसे ही प्रस्फटित हो सकती है। ब्रिटिश सरकारका वह कदम ब्रिटिश शासनकी सरकाको ध्यानमे रखकर उठाया गया था, लोगोंको अहिसक वनाने के उद्देश्यसे नहीं। अब तो लोग इतने शक्तिहीन हो गये हैं कि कुछ शरारत भी नहीं कर सकते। और शक्तिहीन व्यक्तियोंसे अच्छा काम कभी हो नहीं सकता। ब्रिटिश सत्ताका एक अकेला प्रतिनिधि, उदाहरणार्थ, एक हजारकी आवादीवाले एक गाँवको दयनीय दासतामें रख सकता है तो यह कोई गर्व या श्रेयकी बात नहीं है। बेशक, मेरी अहिंसा यह स्वीकार करती है कि जो लोग ऑहिसक नहीं हो सकते या नही होना चाहते वे शस्त्र रख सकते है और उनका कारगर उपयोग कर सकते है। मैं हजारों बार कह चुका हैं और फिर कहता हूँ कि अहिंसा निर्वलके लिए नहीं, विलक सबसे सबलके लिए है। वह हिसासे वहीं प्रवलतर शक्ति है, हालाँकि गण और प्रभावकी दिष्टिसे उससे मलतः भिन्न है।

> आपका, मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे] महात्मा, जिल्द ६, पृ० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

रे. स्पष्ट ही '२९०९' होना चाहिए था। वहाँ आशय हिन्ह स्वराज्य से हैं; देखिए खण्ड १०। २. देखिए खण्ड १४, पु० ४२४।

# ३३. पत्र: मुन्नालाल गं० ज्ञाहको

१ मई, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। परीक्षा तुम्हें देनी चाहिए और खादीके शास्त्रका सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिए — उत्पादन और बिकी दोनोंका। यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद तो तुम कहीं व्यवस्थित हो ही जाओंगे।

तबोयत ठीक रखने के लिए जो उपाय करने पड़ें, करने ही चाहिए। लेकिन सब-कुछ यहाँसे मेंगाना, यह बहुत दिन चलेगा नहीं। तुम्हीको शर्म आयेगी। मैंने तो मान ही लिया है कि तुम शर्तके मुताबिक यहां जरूर आ जाओगे। अभी भी सलाह देरहा हूँ। फिर भी, अगर तुम्हें रहना हो तो रहो और खूब उन्नति करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५००)से। सी० डब्ल्यू० ७१३६ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

### ३४. पत्र: प्रभावतीको

२ मई, १९४१

चि॰ प्रभा,

तेरा पत्र मिला। जयप्रकाशके लिए क्या किया जा सकता है, कुछ समझमें नहीं आता। सहन करने के सिवाय चारा नहीं है। तू समय-समयपर खबर लेती रहना। मुझे कुछ सूझेगा तो मैं लिखूंगा। अपना काम तो तू करती ही रहना। अन्य चिन्ता मत करना। राजेन्द्र बाबूने मेरे साथ बात की है। उसके सम्बन्धमें तुझे वे लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६५)से

प्रमावतीके पति जयप्रकाश नारायण उन दिनों देवली नजरवन्दी शिविरमें केंद्र थे।

#### ३५. प्रस्तावना

सेवाग्राम, वर्घा ३ मई, १९४१

यह संग्रह मैंने पढ़ा नहीं है। लेकिन मेरे लिये इतना पर्याप्त है कि उसमें दीनबन्धुके गुणोंकी कथा है और उसमें[से जो] द्रव्य उत्पन्न होगा सब-का-सब दीनबन्धु स्मारक [कोष]में जायेगा।

मो० क० गांधी

दीनवन्धुको श्रद्धांजलियाँ । जी० एन० ११६९४ भी

३६. तार: तेजबहादुर सप्रूको'

[३ मई, १९४१]

सहमत हूँ।

गांधी

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, ५-५-१९४१

१ और २. यह तार तेज बहादुर सम्के २ मडेंके तारके .उत्तरमें भेजा गया था, जिसमें कहा गया था: "श्री जिन्नाने मुझसे पूछे विना ही उनके नाम मेरा ६ फरवरीका पत्र और अपना १० फरवरी, १९४१ का उत्तर समाचारपत्रोंमें छपने को दे दिया है। अतः में २५ जनवरीले छेकर १० मार्च, १९४१ तक आपके और अपने बीच हुए पत्र-व्यवहारको प्रकाशित करने के लिए आपकी अनुमति चाहता हैं। कृपया तार दें।" अपने ४ मईकं वक्तव्यमें तेजवहादुर सप्ने यह रपष्टीकरण किया थाः "परसों अखनारोंमें मैसरमें दिये हुए श्री जिन्नाके वक्तव्य तथा उनके और मेरे बीच हुए उनके द्वारा प्रकाशित पत्र-व्यवहारको पढने के उपरान्त मेंने उसी शाम महात्मा गांधीको तार भेजा।... करु शाम महात्माजीका उत्तर मिला. . .। उनकी सहमतिसे में उनके और अपने बीच हुए पत्र-व्यवहारकी समाचार-पत्रोंमें प्रकाशनायें भेज रहा हैं। श्री जिन्नाने अपने वक्तव्यमें कहा है कि वे 'श्री गांधी या किसी अन्य हिन्दू नेताके साथ दिल खोलकर बातचीत करने के लिए तैयार है।' यदि उन्होंने मेरे नाम अपने पत्रमें लिखे हुए निम्नलिखित बाबयकी ओर लोगोंका ध्यान आकृष्ट किया होता तो वे शायद ज्यादा सही होते: 'मैं हिन्दू जातिक प्रतिनिधिक रूपमें श्री गांधी या किसी भी दूसरे हिन्दू नेवासे मिळने को और हिन्दू-मुस्लिम समस्याके समाधानमें अपना योगदान देने के लिए हमेशा तस्पर और राजी रहा हूँ।' उन्होंने अपने वक्तव्यमें 'हिन्दू जातिके प्रतिनिधिके रूपमें', इन शब्दोंको छोड दिया है किन्तु मेरे नाम उनके पत्रमें ये मौजूद हैं। इन शब्दोंसे सिद्ध होता है कि वे गांधीजी से इस प्रख्यापित रूपमें ही मिलना चाहते ये और गांधीजी के पत्रसे प्रकट हो जायेगा कि गांधीजी इस शर्तकी मानने की स्थिति में नहीं थे। इस मामछेका यहीं अन्त हो गया और श्री जिन्नाके साथ इस मामछेकी बागे बढ़ाने में कोई लाम नहीं था . , .।" तेजबहादुर सप्रके नाम गांधीजी के पत्रीके लिए देखिए खण्ड ७३।

### ३७. पत्र : मार्गरेट जोन्सको

सेवाग्राम, दर्वा ३ मई, १९४१

त्रिय कमला,

हाँ, मुझे तुम्हारे सब पत्र मिल गये थे। मुझे इससे पूर्व ही लिखना चाहिए था, किन्तु ऐसा नहीं कर पाया। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम सफलतापूर्वक अपना काम कर रही हो और सादा जीवन बिता रही हो। पत्र लिखती रहना। सप्रेम.

वापू

[ अंग्रेजीसे ] वापू — कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरस्पोंडेन्स विद महात्मा गांघी, पू० १९१

# ३८. पत्र: अमृत्लाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा ३ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुमने एसोशिएटेड प्रेसको जो आडम्बरपूर्ण वनतव्य दिया है उसे पढ़कर मुझे दुःख हुआ। मैने तो तुम्हें चृपचाप और सतीश बाबूके निर्देशनमें काम करने को कहा था। तुम्हें मैने न किसी मिशनपर भेजा है, और न सुम्हें किसी प्रकारका अधिकार दिया है। तुम जानते हो कि पारिवारिक कारणसे तुम्हें वहाँ भेजा गया है। अतः तुमने जान-बूक्षकर झूठ बोला है। तुम किसी प्रकारसे अपने वनतव्यका संशोधन कर

र, गांधीजी ने मार्गरेट जोन्ससे कहा था कि वे प्रस्ति-विद्यानके अपने प्रशिक्षणके दौरान हर पखवाड़े उन्हें अपनी दैनिक जीवनवर्षाका विवरण छिखकर भेजवी रहें; देखिए खण्ड ७३, "पत्र: एफ मेरी बारकी", पु० ४५२।

२. अप्रताल चटर्जिक अनुसार १ मईका यह बनतन्य "उनके ढाकाके मिशनके नारेमें था, जहाँ हिन्दू-मुस्लिम दंगा शुरू हो गया था।"

३. देखिए "पत्र: सतीश्चनद दासग्रन्तको ", ए० २१।

डालो, नहीं तो मुझे तुम्हारे साथ पूरी तरह सम्बन्ध-विच्छेद करना पड़ेगा। मुझे खेद है। मैंने तो तुमसे बेहतर बातोंकी आशा की थी।

सायमें शैलेनका पत्र है।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०१)से। सौजन्य: अमृतलाल चट्रजी

# ३९. साम्प्रदायिक दंगे

सेवाग्राम ४ मई, १९४१

देशके अनेक महत्त्वपूर्ण स्थानोंमें जो हिन्दू-मुस्लिम दंगे हो रहे हैं उनसे सभी समझदार लोगोंको अवश्य दुःख हुआ होगा। तथापि मेरा दुःख कुछ विशेष प्रकारका है। ऐसा जान पड़ता है कि इन अन्धकारमय दिनोंमें कांग्रेसका प्रभाव लगभग नहींके बराबर ही रहा है।

इन स्थानोंपर हम लोग बर्बर और कायर सिद्ध हुए है। आगजनी, लूट-पाट और निर्दोष व्यक्तियोंकी, जिनमें बच्चे भी शामिल है, हत्याओंका लगभग सभी जगह दौर-दौरा रहा है। प्राणोंके भयसे हजारों लोग अपने घरोंसे माग गये है।

कांग्रेसका प्रभाव उसके रिजस्टरोंमें दर्ज सदस्योंकी संख्यासे नहीं, बल्कि लोगोंको अपने सिद्धांतोसे अनुप्राणित करने की उसकी क्षमतासे ही आँका जा सकता है। यह स्पष्ट हो गया है कि दंगों या ऐसी ही परिस्थितियोंमें कांग्रेसका प्रभाव नगण्य रहता है। दंगाग्रस्त क्षेत्रोंमें कांग्रेस इक्के-दुक्के व्यक्तियोंको छोड़कर मुसलमानों या हिन्दुबोंपर बहुत कम असर दिखा पाई है। अभीतक हमें जो विवरण प्राप्त हुए हैं उनसे यह प्रतीत होता है कि ढाका और अहमदाबादमें मतान्य मुसलमानोंने हिन्दुबोंकी सम्पत्ति लूटने और जलाने में अपनी जोरसे कोई कोर-कसर उठा नहीं रखी और यह भी कि ऐसा उन्होंने पूर्व योजना बनाकर किया है। हजारोंकी संख्यामें हिन्दू, बजाय इसके कि घरारती तत्त्वोंका डटकर मुकाबला करें, दंगाग्रस्त क्षेत्रोंसे माय खड़ें हुए जहाँ वे मागे नहीं वहाँ वे भी हमलावरों-जितने ही बबंर बन गये। ये सभी कांग्रेसकी अहिंसा-नीतिसे अछूते थे। तथापि ये ही लोग हैं जो कांग्रेसकी समाओंमें अधिकांशतः उपस्थित होते हैं।

यदि ऐसे मौकोंपर कांग्रेसका जन-सावारणपर कोई नियन्त्रण नहीं रहता तो एक वास्तविक शक्तिके छपमें कांग्रेसकी अहिसाका कोई विशेष महत्त्व नहीं है। यदि अंग्रेज अचानक चले जाते हैं तो सरकारकी बागडोर कांग्रेस नहीं सँमाल सकेगी। जी-जान प्रेपास किये बिना वे यहाँ से चले जायेंगे, ऐसा सम्भव नहीं लगता, लेकिन अंग्रेजोंकी शूरवीरतासे कांग्रेस लोग बहादुर नहीं बन सकते और न उनमें सरकार सँमालने की योग्यता आ सकती है।

इस समय ब्रिटिश सरकार व्यस्त है। वे किस प्रकार चालीस करोड़ जनता-पर अपना दबदबा कायम रखते हैं, यह एक चमत्कार ही है। वे अपने अद्भृत आत्म-विश्वास और विध्वंसक शस्त्रोंके कुशल उपयोगके बलपर ही भारतको गुलाम बनाये रख सके हैं। लेकिन उनसे आम दिनों-जैसी भी शान्ति बनाये रखने की अपेक्षा नहीं की जा सकती। वे किसी-न-किसी प्रकार अपना नियन्त्रण बनाये रखेंगे, किन्तु वे हमें एक-दूसरेकी हत्या करने से नहीं रोकेंगे और केवल तभी हस्तक्षेप करेंगे जब उनका शासन खतरेमें होगा।

काग्रेसजनोंका रास्ता तो स्पष्ट है। उन्हें अपनी अहिंसाके तत्त्वोंपर विचार करना चाहिए। यदि उसमें विभिन्न सम्प्रदायोंके बीचमें तथा इसी प्रकारके अन्य सम्बन्धोंमें सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता नहीं है तो वह स्वतन्त्रता-प्राप्तिके लिए भी उपयोगी नहीं हो सकती। मेरी भविष्यवाणी तो यह है कि यदि कांग्रेसने शूर-वीरोंकी व्यापक अहिंसाको नहीं अपनाया तो वास्तविक सत्ता-हस्तान्तरणका समय आने पर उस कार्यको सम्पन्न करने का गौरव तथा उत्तरदायित्व कांग्रेसको नही मिल सकेगा। सत्ता उनके हाथोंमें आयेगी, जो हिंसाका कारगर उपयोग कर सकेंगे।

आज युरोपमें दो शनितयाँ, जिनमें समान मात्रामें विनाशकी क्षमता और शोर्थ है, एक-दूसरेके आमने-सामने खड़ी है। दोनोंका उद्देश्य अपना आधिपत्य स्थापित करना है। बहुत चाहने पर भी मैं इन दोनों शक्तियोंमें कोई गुणात्मक भेद नही कर पाता। मात्रा-मेदमें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है। मेरे लिए तो अंग्रेजोंकी दासता ही काफी बरी है। मैंने स्वतन्त्रता और अहिंसाका वरण किया है। मुझे दासताके पाशमें जकड़ने-वाले ब्रिटिश साम्त्राज्यवादके साथ ही नाजीवाद और फासिस्टवादके विरुद्ध भी सघर्ष करना होगा। लेकिन क्या इस साम्राज्यवाद तकसे, जिसकी हम नस-नस पहचानते है, लड़ने के लिए कांग्रेसके पास सचमुच अहिंसाकी शक्ति है ? अभीतक तो थोड़ा-घोड़ा करके सता हथियाने का प्रश्न था। लेकिन प्रत्येक भारतीय राजनीतिक यह जानता है कि अंग्रेजोंने अपनी ओरसे वास्तविक सत्ता छोड़ने की कभी जरा भी कोशिश नही की। और अब हमें श्री एमरीसे खरा-खरा उत्तर मिल गया है कि हमें अंग्रेजोंसे ऐसी कोई 'चीज शान्तिपूर्वंक प्राप्त करने की आशा नहीं रखनी चाहिए। इसके लिए हमें हिसात्मक अथवा अहिसात्मक ढंगसे संघर्ष करना ही होगा, फिर चाहे यह संघर्ष काग्रेस करे, या लीग अथवा हिन्दू महासमा। मुझे पूरा विश्वांस है कि ये दोनों साम्प्रदायिक संस्थाएँ कभी भी जनताके लिए आजादी प्राप्त नहीं कर सकतीं — उस जनताके लिए जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी, यहूदी सभी शामिल है। काग्रेस ही एकमात्र संस्था है जिसने शुरूसे ही राष्ट्रीय एकताके लिए परिश्रम किया है। लेकिन यदि कांग्रेस अपने दायित्वके प्रति सच्ची सावित नहीं होती तो वह सारा परिश्रम व्यर्थ जायेगा। यदि कांग्रेसी लोग अनेक नेताओं के इस समय जेलमें होते हुए भी अपना मत-परिवर्तन करते हैं या खुलेआम कांग्रेससे अलग हो जाते हैं तो मुझे यह बुरा नहीं छगेगा। मैं तो सिर्फ पाँच ऐसे सच्चे व्यक्तियोंको छेकर कांग्रेसका पुनिर्माण कर सकता है जिसके साथ न कोई हिन्दू है और न मुसलमान अथवा

अन्य कोई। धर्म एक व्यक्तिगत चीज है। उसका राजनीतिक क्षेत्रमें कोई दखल नहीं होना चाहिए।

तो फिर कांग्रेसीको क्या करना चाहिए? उसे किसी भी पक्षकी तरफदारी करने से दृढ़तापूर्वक इनकार कर देना चाहिए और अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर कि: लु हिंसाका उपयोग किये बिना आपद्भस्त व्यक्तिकी रक्षा करनी चाहिए, जिस तरह कि अहमदाबादमें तीन स्त्रियोंने किया था। नि:सन्देह इस प्रकारकी कितनी ही छिटपुट घटनाएँ हुई होंगी, जिनके बारेमें मुखे मालूम नहीं है। कायर लोग कभी भी शानित की स्थापना या आजादो हासिल नहीं कर सकते। इसिलए कांग्रेसीको लाम लोगोंको यह बताना होगा कि वे खतरेसे माणें नहीं और यदि वे उसका [बहिंसाका] मार्ग नहीं अपना सकते तो वे अपनी सामर्थ्यानुसार अपनी रक्षा करें। जरूरी तो दिल्की बहादुरीकी है। यह एक ऐसी चीज है जिसे कोई किसीको दे नहीं सफता और इसीलिए जिसे कोई छीन भी नहीं सकता। उसे अपने पड़ोसियोंके दिलोंमें यह बात अच्छी तरह बैठा देनी चाहिए कि हिसा भी अच्छी और बुरी दोनों तरहकी हो सकती है। केवल विधर्मी होने के कारण किसी निद्येंच व्यक्तिकी अचानक हत्या कर देना अथवा उसकी जायदादको आग लगा देना कोई बहादुरी नहीं है। जो लोग ऐसा करते हैं वे अपनेको तथा अपने धर्मकी बदनाम करते हैं और आजादी हासिल करने के प्रयत्नमें निश्चत रूपसे बाधा पहुँचाते हैं।

विशिष्ट परिस्थितियों में कांग्रेसीको क्या करना चाहिए, अव मैं इसके कुछ और उदाहरण आपके सम्मख रखता हैं।

कांग्रेसीका कोई शत्रु नहीं होता। जहाँ वह पुलिस या सेनाकी सहायता नहीं माँगेगा वहाँ साथ ही उनके कर्त्तंच्य-पालनमें कोई बाधा भी नहीं डालेगा; लेकिन यदि वे पक्षपात करें या अपने अधिकारोंका दुरुपयोग करें तो उन्हें वैसा करने से रोकने में वह अपनी जानकी बाजी लगा देने में नहीं हिचकिचायेगा। यह. एक खतरनाक सिद्धान्त प्रतीत होता है। लेकिन यदि इसका पूरी तरह पालन किया जाये तो खतरनाक नहीं है। क्योंकि यदि उक्त कांग्रेसीने मूल, की है तो उसका परिणाम भी उसे ही भुगतना होगा, पुलिस अथवा सेनाको नहीं। मुझे मालूम है कि एक नौजवानने, चूँकि वह सचमुच बहादुर था, ठीक समयपर हस्तक्षेप, करके करीव एक सौ लोगोंकी जानें बचाईं। उसने एक अधिकारीके घोड़ेकी लगाम पकड़कर उससे दृढ़ स्वरमें कहा कि वह गोली चलाने का हुक्म न दे, वह (नौजवान) स्वयं भीड़को समझा-बुझाकर तितर-बितर करा देगा।

मान लीजिए कि हिन्दुओं का एक जुलूस है, जिसे एक मुसलमानों दोलेसे होकर गुजरने का अधिकार है तथा एक कांग्रेसी है, जिसका वहाँ हिन्दुओं या मुसलमानों किसोपर भी कोई प्रभाव नहीं है। फिर भी वह जुलूसका विरोध करनेवाले मुसलमानों से जुलूसको राह देने की विनती करेगा, चाहे इसमें उसे अपने प्राणोकी विल क्यों न देनो पड़े। इसका तात्कालिक परिणाम सम्मवतः नहीं के वरावर होगा। लेकिन वह कांग्रेसी अपने पोछे अहिसात्मक वीरताकी एक विरासत छोड़ जायेगा। अहिसाका यह एक सुन्दर अम्यास होगा। निःशंक होकर प्राण या सम्पत्ति गैंबाने की कला हमें

बंग्रेजोंसे सोखनी चाहिए। यही नियम किसी मुसलमान जुलूसके हिन्दू मोहरूलेमें से गुजरने पर भी लागू होगा। पारस्परिक धैर्य और सहिष्णुताका पाठ हम तवतक नहीं सीख सकेंगे जबतक हममें से कुछ लोग पूर्णतया निदोंष होते हुए भी, अपने प्राणोंकी बाहृति देकर भारतीय जनताके मानसको नही हिला देंगे।

मान लीजिए कि कोई भीड़ किसी कौमकी सम्पत्ति जला डालने की या किसी मन्दिर या मस्जिदको अपवित्र कर डालने पर उतारू हो तो कांग्रेसी, चाहे वह एक हो अथवा अनेक, भीड़के ऋषेवको शान्त करने के लिए अपने प्राण न्योछावर कर देंगे।

कोई व्यक्ति यदि किसी राह चलते व्यक्तिको छुरा मारना चाहे तो कांग्रेसी अपनी जान जोिखममें डालकर भी उस भावी अनिष्टकर्त्ताके हाथसे छुरा छीन लेगा।

कांग्रेसी इस टिप्पणीको पढ़कर द्यायद चोंक पड़ें, विशेषतः मैंने जो उदाहरण दिये हैं उन्हें देखकर कह उठें कि ऐसा करना 'असम्भव' है। लेकिन हिंसक अथवा अहिंसक कैसे भी उपायों से स्वराज्य प्राप्त करना तो और भी अधिक असम्भव है। आस्था-रहित व्यक्तिको जो बात असम्भव दीख पड़ती है वही आस्थावानके लिए सम्भव हो जाती है। और आस्था तो, कहते हैं, पहाड़ोंको भी हिला देती है। मैं इतना जानता हूँ कि प्रचुर आत्मोत्सगं, शौर्य और आत्मविश्वासके विना, जो आस्था का हो दूसरा नाम है, न तो आजदी हासिल को जा सकती है और न साम्प्रदायिक एकता ही स्थापित की जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१ — गृह विभाग, पोलिल (१); सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। अ० भा० कां० कमेटी फाइल, १९४१ भी; सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

# ४०. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा ४ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हारे पत्रसे मुझे दुःख पहुँचा है। तुम सेवा करना नहीं, प्रत्युत क्याति चाहते हो। तुम्हें पत्रकारोंसे मेंटवार्त्ता करने का कोई अधिकार नहीं था। अपने कदम पीछे हटा लो। यदि तुम ढाका गये तो सिफं अपनी जिम्मेदारी पर जाओगे। जहाँतक लड़िकयोंका प्रश्न है, यदि वे सतीशवावूके मार्ग-दर्शनमें नहीं रह सकती, तो मैं सारी जिम्मेदारीसे हाथ थो लूँगा। उन्हें वहाँ किसी संस्थामें रहना चाहिए।

अमृतलाल चटर्जी ढाकाके दंगाधस्त क्षेत्रमें जाना चाहते ये। देखिए "पत्र: अमृतलाल चटर्जीको", पृ० २९-३० ।

किन्तु यह तुम्हारा अपना मामला है। यदि तुम सतीशवाबूके मार्ग-दर्शनमें रहना स्वीकार नहीं करते तो तुम्हारी आर्थिक सहायताके लिए मैं जिम्मेदार नहीं होऊँगा।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०३०२)से। सौजन्य: अमृतलास चटर्जी

# ४१. पत्र: पुरुषोत्तमदास त्रिकमदासको

५ मई, १९४१

समझमें नहीं आता कि मैं क्या कर सकता हूँ। तुम कोई तरकीब निकालो। चाहो तो देवली दिवस मना सकते हो। शायद . . . ैं कुछ मदद कर सकें।

अंग्रेजीकी नकल से: प्यारेलाल पेपसं। सीजन्य: प्यारेलाल

# ४२. पत्र : मनुबहन सु० मशरूवालाको

सेवाग्राम, बर्घा ५ मई, १९४१

चि॰ मनुड़ी,

तेरा पत्र मिला था। अब तो किशोरलालमाई और गोमती वहाँ जा रहे है, इससे तुझे ढाढ़स बेंघेगा। व्यर्थ दुखी मत होना। हरिलाल कुछ दिन दिल्लीमें बा के पास रहा और फिर माग गया। बा जूनके महीनेमें आयेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५८०)से। सौजन्य: मनुबह्न सु० मधरूवाला

कां अस-समाजवादी दळके मन्त्री पुरुषोत्तमदास त्रिकमदासने गांघीजी को सूचित किया या कि
देवळी नजरबन्दी शिविरके वन्दियोंकी मॉग पदि पूरी न हुई' तो वे छोग ४ महेसे मूख-इइताळ शुरू कर देंगे।
 पहाँ एक शब्द पढ़ा नहीं जा सका।

# ४३. पत्र: कन्हैयालाल मा० मुन्झीको

५ मई, १९४१

भाई मुन्शी,

तुम एस्क्विथका अनुकरण करो। बीमार पड़ने पर वे युद्धके दौरान भी भूमध्य सागरकी सैर करने चले गये थे। अहमदाबादकी चिन्ता क्यों करते हो? तुम्हे तो पूर्ण स्वस्य होकर लौटना है। बादमें बाकी बातोंकी सब चिन्ता करते रहना। दोनोंको अथवा सबको

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ ७६५९)से। सौजन्य: क॰ मा॰ मुन्शी

# ४४. पत्र: र्डीमला म० मेहताको

५ मई, १९४१

वि॰ र्डीम,

तेरा पत्र मिला। तूने वर्णन अच्छा किया है। पत्र लिखने में हाधिया छोड़ना चाहिए। अक्षर साफ लिखने चाहिए। मुन्नोको ठंडे पानीमें बिठाना चाहिए, उससे अम्हीरी खत्म हो जायेगी। मैं तो दिनमें शरीरपर भी ठंडा कपड़ा लपेटे रहता हूँ, जिससे गर्मी नहीं लगती। इस ऋतुमें दाल खाना छोड़ देना चाहिए। तेल भी नहीं खाना चाहिए। सागमें घी डालां जा सकता है, यद्यपि जरूरत तो उसकी भी नहीं होती। मंजुलासे कहना, वह ये सब चीजें जाड़ेके दिनोंमें खा सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ १६१८) से। सीजन्य: मंजुला म॰ मेहता

र. इबेंटे हेनरी परिनवध, किनरक दकके नेता और १९०८ से १९१६ तक जिटेनके प्रधान-मन्त्री

२. चर्मपाल. उमिला मेहताका छोटा माई

## ४५. पत्र: हेमप्रभा दासगुप्तको

५ मई, १९४१

चि॰ हेमप्रभा,

तुमारे खत मिले हैं। अब तो मेरे सामने [सौदपुरसे] २२ मील दूरके ग्रामवाला खत है। हो, ऐसे कार्मोमें तुमारा संतोष रहा है। मेरी तो ईश्वरसे यह प्रार्थना है कि तुम सबको आरोग्य देवे जिससे तुमारी सेवा शक्ति बढ़े।

अरुण कैसा है ?

अमृतळाळ चेटरजी वहां आये थे ? उसने जो अखबारोंमें लिखा है सब गळत है। मैंने उसे प्रतिनिधि नींह बनाया है। अपने आप डाका [ढाका] जाकर मस्म हो जाय तो भळे। उसको तो कहा है जैसे सतीशबाबू कहें ऐसे करो। उसकी लडकीयोंके बारेमें मी वही कहा है। अगर आवे तो उसे दोरे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७३७)से

### ४६. पत्र: घनश्यामदास बिङ्लाको

५ मई, १९४१

माई घनश्यामदास,

हिं[दुस्तान] को आधिक स्थितिके बारेमें तुम्हारा छेख मैंने आज खत्म किया। बहुत अच्छा लगा। उसका न्याय देने के लिये उसका सार आरंभ भी होना हि चाहिये। ऐसे छेख और भी चाहिये और उसे चौपानियेमें छपाने चाहिये। उसका अनुवाद होना चाहिये।

बिहार जाने की आवश्यकता सिद्ध होने पर जाने की मेरी पूर्ण तैयारी समजो। शस्तर ई० का में दुबारा पढ़ गया। यहांसे कोई सूचनाकी आवश्यकता में नींह महसुस करता। हम अपना घर संमालें और साफ करें। समय हमको मदद दे रहा है।

- १. सतीशचन्द्र दासगुप्तकी परनी
- २. हेमप्रमादेवीके प्रत
- ३. दोरे वर्थाव मार्ग-दर्शन करो

उन लोगोंको आगे बढ़ना हि होगा। कब्जा हमारे हाथमें आना हि चाहिये। इतना तो करें कि बोलने लिखने दें और सब कैदियोंको छोड़ दें। कोम्युनिस्टोको भी वगैर ट्रायलके नहि रख सकते हैं।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी॰ डब्ल्यू॰ ८०४२) से। सौजन्य: घनश्यामदास विङ्ला

## ४७. पत्र: कृष्णचन्द्रको

५ मई, १९४१

चि० कुष्णचंद्र,

लीलावतीबहन क्या कहती है ? सिघडी व० के बारेमें मुझको समजाना । खरीदी सब कौन करता है ?

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८६) से

### ४८. पत्र: गोपीनाथ बारदलईको

सेवाग्राम, वर्षा ६ मई, १९४१

प्रिय बारवलई,

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे हर्ष हुआ। तुम सचमुच अपने समयका पूरा सदुपयोग कर रहे हो। मुझे इस बातकी भी खुशी है कि तुम सब छोग कातते हो।

तुम मेरे बारेमें लिखा इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु जनतारों या पैगम्बरोंको पाँतमें मुझे बिठाकर तुम सभी सनातिनयोंके कोप-माजन बनोगे, खीर मेरी समझमें ठीक ही बनोगे। किसी जीवित मनुष्यके बारेमें उसी मावसे नहीं लिखा जा सकता जिस मावसे उन दिवंगत व्यक्तियोंके बारेमें लिखा जाता है जिन्हें सभी लोगोंने महान अपदेशकोंके रूपमें स्वीकार कर लिया है।

तुम्हारा दूसरा प्रश्न टेढ़ा है। मैं उन मुसलमानोंसे सहमत हूँ जो यह मानते हैं कि पैगम्बर जितने समयतक मक्कामें रहे उस दौरान उन्होंने विशुद्ध बहिसाकी

 गोपीनाथ बाददलई, जो जोरहाट जेलमें में, बच्चोंके लिए धर्म-गुरुमोंके बारेमें असमी भाषामें एक पुस्तक लिख रहे थें। इस पुस्तकमें वे गांधीजी की जीवनी भी देना चाहते थे। इसके लिए छन्होंने गांधीजी से अनुमति गाँगी थी।

 गोपीनाथ वारदल्डने पृद्धा था कि मदीनामें इसरत मुहम्मदने स्वस्त्र उठाये और मगयवर् गीता में श्रीकृष्णने अर्जुनको युद्ध करने का उपदेश दिया, इन दोनों कार्याका अहिंसाके सिद्धानके साय

सामंजस्य कैसे विठाया जा सकता है।

शिक्षा दी और स्वयं उसी पर आचरण किया। मदीनामें वे प्रशासक बन गये और इस तरह वे विशुद्ध वर्म-गुरु नहीं रहे। जो-कुछ भी हो, 'कुरान' का कुल निचोड़ यही है कि अहिंसा मनुष्यका कर्त्तंच्य है किन्तु उसे हिंसाकी अनुमित भी है। हमें तो मेरी पसन्दकी व्याख्या नहीं बल्कि उस व्याख्याको प्रामाणिक मानना होगा जो सामान्यतः मुस्लिम जगतकी ओरसे दी जाती है।

क्रुष्णने अर्जुनको जो उपदेश दिया था उसके विषयमें तो तुम्हें 'अनासिक्तयोग' की मेरी प्रस्तावना पढ़नी चाहिए। यदि तुमने अभीतक नहीं पढ़ी है तो मुझे

बताना, में तुम्हें एक प्रति भेज दूँगा।

मेरी सलाह है कि तुम सब लोग हिन्दी और उर्दू दोनों मली प्रकारसे सीख डालो। तभी हम एक अखिल भारतीय बोलीका विकास कर सकेंगे।

> तुम्हारा, बापू (मो० क० गांधी)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २) से

### ४९. पत्र: नरहरि द्वा० परीखको

६ मई, १९४१

वि॰ नरहरि,

अब तो तुम्हारे पास महादेव है, इसिलए इसका कोई खास मतलब नही रहा, लेकिन तुम्हारा पत्र मैंने कल रातको ही पढ़ा। बात महत्त्वकी है, इसिलए संक्षिप्त उत्तर दे रहा हूँ। मृदुला तो फौलाद है ही। उसकी रक्षा ईश्वर करेगा।

मैया छोगों और चौकीदारोंसे मुझे सन्तोष नहीं होगा। मैं यह मानकर लिख रहा हूँ कि बहिसक केवल उँगलियों पर गिनने लायक है। बाकी लोगोंको अपनी रक्षा आप कर लेनी चाहिए। ऐसा नहीं हुआ तो जो हो रहा है वही होगा। यह ध्यानमें रखकर जो हो सके वह किया जाये। जो भैया लोगोंको नौकर रखते हैं, वे राज्य नहीं चला सकेंगे। जो उँगलीपर गिने जा सकते हैं, उन्हें तो मुसलमानोंसे अवश्य मिलना चाहिए। जितनोंको अपने पक्षमें लाया जा सके, लाना चाहिए।

- १. देखिए खण्ड ४१, पृ० ९२-९९।
- २. गोपीनाथ नारदल्डके साथ कुछ कांग्रेसी विधायक भी केंद्र थे।

रै. अम्बालाल सारामाहेकी पुत्री मृदुला सारामाहै, जो अहमदाबादके दंगाग्रस्त क्षेत्रोंमें निर्मीक आया-जाया करती भीं।

अगर मुसलमान समाज दुश्मनी ही करता रहे, तो मैं बहिष्कारकी बातकी उपेक्षा नहीं करूँगा। छुरा मोंकना, घर जलाना आदिसे मैं सच्चे बहिष्कारको उच्चतर स्थान देता हुँ।

इसका मतलब यह समझना कि हिंसावादियोंका भी हमें जितना बने, मार्ग-दर्शन करना है। बायें हाथसे लिख रहा हुँ, इसलिए संक्षेपमें लिखा है।

महादेव जो कहे, उसमें यह जोड़ देना, अथवा इसको ध्यानमें रखकर चलना। वैसे महादेव स्वयं इसको समाविष्ट कर लेगा।

बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च : ]

साथके पत्र काका और बाबूके लिए हैं। ध गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२२)से

# ५०. पत्र: सूरजराम पुरोहितको

६ मई, १९४१

भाई,

तुम्हारा पत्र मै पढ़ गया हूँ। तुम्हारे हस्ताक्षर नहीं पढ़ पाया, और महादेव-

भाई यहाँ हैं नहीं।

तुम्हारे राज्यसे बाहर रहने में ही तुम्हारी शंक्ति निहित है। बाहर रहकर तुम चाहे कितना ही क्यों न कमाओ, लेकिन बाहर रहते हुए तुम एक होओ या पाँच, अच्छी तरहसे जूझ सकते हो। मूल बात तो यह होनी चाहिए कि तुम त्यागकी भावनासे प्रेरित होकर जायो और पैसा कमाओ। ऐसा करने पर तुम उसका उपयोग लोक-कल्याणार्थं कर सकोगे।

दूसरा रास्ता यह है जो तुमने बताया है। यदि तुम वहाँ जेलमें जाकर बैठ जाओ तो यह अच्छा ही है। लेकिन यदि तुम शरीर और घनकी रक्षा करके कुछ करने की आशा करते हो तो कुछ नहीं हो सकेगा।

इसमें तुम्हारे सभी प्रश्नोंका उत्तर का जाता है।

बापूके आशीर्वाद

सूरजराम पुरोहित संस्थान राजपीपला लोकसभा १३६-४० मीडोज स्ट्रीट, दूसरी मंजिल बम्बई

गुजरातीकी नकलसे: व्यारेकाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेकाल

२. ये पत्र उपलब्ध नहीं है।

#### ५१. पत्र: विचित्रनारायण शर्माको

सेवाग्राम ६ मई, १९४१

भाई विचित्र',

तुम्हारे खत मिले हैं। मैं पूरी हकीकत नहीं समझ सका हूं। लेकिन तुम्हारी शक्ति और कर्तव्यता पर मेरा विश्वास है। इसलिए सब ठीक ही होगा। हमारा काम तो चलता ही है न?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: ण्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य: प्यारेलाल

### ५२. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम ७ मई, १९४१

अभी-अभी मैंने विहारके दुर्भाग्यपूर्णं दंगोंका सिवरण पढ़ा है। ३ तारीखको राजेन्द्रवावूको जैसे ही श्री सिच्चदानन्द सिन्हाका तार मिला कि विहारमें खतरनाक स्थिति वन रही है, वे तरन्त विहार चले गये।

दंगोंका विवरण पीड़ा पहुँचानेवाला है। उनके सम्बन्धमें विभिन्न वस्तव्य भी भैने ध्यानपूर्वेक पढ़े हैं। शान्ति और समझदारीकें पक्षमें अपनी पूरी शक्ति लगाने के लिए ही राजेन्द्रवाबू बिहार गये हैं। वहाँ पहुँचकर उन्होंने मुझे जो पहला तार भेजा वह निम्नलिखित है:

स्थिति सुघर रही है फिर भी घबराहट और अनिविचतता कायम है। मयुरा-बाव् और ज्ञाह साहब दौरा कर रहे हैं। में स्वयंसेवकोंको लेकर जा रहा हूँ। "

- रै. एक प्रमुख खादी कार्यकर्ता, जो बादमें उत्तर प्रदेश कांग्रेस मन्त्रिमण्डकमें मन्त्री भी रहे।
- २. राजेन्द्र प्रसादके निजी सचिव
- २. शाह मुहम्मद उजैर मुनीमी
- ४. राजेन्द्र प्रसाद अपनी आत्मकथा में लिखते हैं: "... मैंने सोचा देशी अवस्थामें ग्रुरन्त निहार जाना चाहिए।... इत्तफाक्से उसी दिन प्रोफेसर अब्दुल नारी मी, जो नाहर थे, पटना पहुँच गये। हमने मोटर-लारी साथ ली। उनपर निहार-विद्यापीठके अध्यापकों और निहार्थियोंको तथा कुल दूसरे कार्यकार्योंको सवार करा लिखा। उसी दिन विहार-शरीककी और चल दिया...!"

मैं जानता हूँ कि वे अच्छा काम करके दिखायेंगे। यदि पुलिस और सेना अव तक शान्ति स्थापित नहीं कर चुकी है तो किसी-न-किसी प्रकार स्थापित कर ही दी जायेगी। किन्तु यह तो केवल ऊपरसे लादी हुई शान्ति होगी। राजेन्द्रवावू अथवा यों कहें कि प्रत्येक कांग्रेसजनका या प्रत्येक समझदार नागरिकका काम यह है कि यह दंगोंके कारणोंका पता लगाये। जबतक यह नहीं किया जाता, तवतक स्थायी शान्ति स्थापित होने की कोई सम्मावना नहीं है। मैं देखता हूँ कि दंगोंका आरम्भ पाकिस्तान-विरोध दिवस मनाये जाने के प्रति उत्पन्न आक्रोशसे हुआ। पाकिस्तानके पक्षमें और पाकिस्तानके विरोधमें इस प्रकारके आयोजन आदि तो अव होते ही रहेंगे। जैसे-जैसे राष्ट्रीय चेतनाका विकास होता जायेगा और महत्वाकांक्षाएँ बढ़ती जायेंगी वैसे-जैसे इस तरहके आयोजन अधिकाधिक संख्यामें होंगे। किन्तु इनके बावजूद हम शिष्टतापूर्ण व्यवहार क्यों नहीं कर सकते हम मला इतने असिहण्णु क्यों बन जायें कि एक-दूसरेके दृष्टिकोणको बर्दाक्त ही न कर सकें ? और फिर हम अपनी असिहण्णुताका परिचय इस तरह क्यों दें जैसे कि हम बिलकुल वर्वर हो ?

मेरा पनका विश्वास है कि लोग स्वेच्छासे शान्ति कायम रखें, ऐसी स्थिति उत्पन्न करने की मुख्य जिम्मेदारी कांग्रेसके कन्धों पर है, जो भारतकी सबसे पुरानी, ससंगठित और सर्वाधिक जनप्रिय संस्था है। यह स्वीकार करना होगा कि कांग्रेसमें हिन्दुओं की संख्या ही सबसे ज्यादा है और बिहार प्रधानतः एक हिन्दू प्रान्त है। इसलिए वहाँ पुलिस और सेनाकी सहायताके बिना ही शान्ति कायम रखना कांग्रेसके लिए अपेक्षाकृत सुगम होना चाहिए। समाजने नमजोर वर्गकी जान-मालकी रक्षा करना अधिक बलशाली दलके लिए प्रतिष्ठाकी बात होनी चाहिए। यह एक कठिन कार्य है, किन्तु इससे निपटना ही होगा। जब मैं यह बोझ कांग्रेसपर डालता हूँ, तब मेरा आशय यह नहीं है कि उसको अकेले ही यह सब करना है या वही इसे कर सकती है। कांग्रेसको सहायताके लिए मुस्लिम लीग, हिन्दू महासमा इत्यादि सभी दलोंका बाह्वान करना होगा। सभी दलोंका अपना-अपना राजनीतिक कार्यक्रम हो सकता है। लेकिन अगर हम इस बातपर आमादा न हों कि हम अपने निरोधियों-पर अपने कार्यक्रम जोर-जबरदस्तीसे, जो आज गंडागर्दीके रूपमें प्रकट हो रही है, थोपेंगे तो निश्चय ही हम सब इस बातपर सहमत हो सकते हैं कि हम अपने सारे मतमेदोंको बातचीत तथा शान्तिपूर्ण प्रयत्नोंसे, जिनमें पंच-फैसला भी शामिल है, निबटायेंगे। हो सकता है कि कांग्रेस सब दलोंके साथ मिल-जुलकर कुछ करने में असफल रहे। यह असफलता भी एक भव्य असफलता होगी। किन्तु यदि कांग्रेसकी अहिंसामें कुछ तत्त्व है तो उसे अकेले भी अपना काम करते रहना होगा।

इस समय बिहार एक ऐसा प्रान्त है जो अगुआ बनकर आदर्श स्थापित कर सकता है। राजेन्द्रबाबूका अपने प्रान्तपर ऐसा मृदुल और असाधारण प्रमाव है

रै. मु० अ० जिन्नाके कहने पर २३ मार्चको मनाये गये 'पाकिस्तान दिवस' के विरोधमें यह दिवस मनाया गया था।

जैसा किसी और नेताका नहीं है। वे भूकम्पके दिनोंके वह नायक है जिनपर उस समय सारे मारतने अपना भरोसा टिकाया था। भगवान करे, उन्हें विहारमें और बिहारके द्वारा समस्त भारतमें शान्ति-दूत वनने का सौभाग्य प्राप्त हो।

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१ - गृह विभाग, पोलि० (१)। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार

### ५३. पत्र : के० बी० मेननको

सेवाग्राम, वर्घा ७ मई, १९४१

प्रिय मेनन,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले थे। पहले पत्रका तो जवाव देने की आवश्यकता नहीं थी।

तुमने बैठकके वारेमें जो-कुछ लिखा है, वह मैंने ध्यानमें रख लिया है। चूँकि सेठ जमनालालजी की श्री वझेके साथ वातचीत हो चुकी है और चूँकि ऐसा समझा गया है कि श्री वझेने पत्रका सम्पादन करना भी स्वीकार कर लिया है, इसलिए मैंने उन्हें पत्र लिख दिया है और उनके जवावका रास्ता देख रहा हूँ। इसलिए मेरा सुझाव है कि मुझे उनका जवाव मिल जाने के बाद ही तुम बैठक बुलाओ।

मेरे खयालसे श्री जयनारायणजीको तुमने जो जवाब दिया वह ठीक था।

हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांधी

पुनश्च :

तुम्होरा अगला पत्र भी मुझे आज मिल गया। यदि स्थायी समिति कार्यं करता वन्द कर देती है, तो ज० ना० का भी काम समाप्त हो जाता है। तुम यह संलग्न पत्र जा० ना० को दे देना और मेरा यह पत्र भी उन्हें दिखला देना। ज० ना० का जवाब मिलने पर मैं तुम्हें आगे निर्देश दुंगा।

बापू

अंग्रेजीको नकलते: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

- १. १५ जनवरी, १९३४ का भूकम्प; देखिए खण्ड ५७, ए० १२२।
- २. एस० जी० वझे

स्टेट्स पीयुल, अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्का मुखपत्र

४. जयनारायण व्यास, बार आर देशी राज्य प्रजा परिषद्के तीन मन्त्रियोंमें से एक! केर बीर मेननने उन्हें जिखा या कि स्थापी समितिके अन्य सदस्योंके साथ उनके अधिकार भी समान्त हो गये हैं। ५. देखिए अगळा जीवैक!

### ५४. पत्र: जयनारायण व्यासको

७ मई, १९४१

माई जयनारायण,

माई मेनन मुझे मिल गये। अब मेरे पास उनके तीन खत पडे है। तुम दो में कुछ वैमनस्य सा है क्या? मेरा अभिप्राय तो मैंने दिया है। तुमने देखा होगा। लेकिन अब मुझे लगता है कि तुम्हारी बात भी मैं सुन लूं। इसके बाद कुछ कहूं। यों तो मुझे इस काममें दखल देने का कोई अधिकार नही है। लेकिन पंडीतजी चाहते है, इसलिये में माई मेननको दे ही रहा हूं। लेकिन तुम्हारेमें झगडा हो जाय तो मेरी स्थिति कुछ नाजुक हो जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ५५. पत्र: मणिबहन पटेलको

सेवाग्राम, वर्घा ७ मई, १९४१

चि॰ मणि,

नन्द्रबहन [कानूगा] तेरी खूब शिकायत कर रही थी। कहती थी, तू हठ करके शरीरको गला रही है। अच्छी तरह खाती नही। मैं इसे पराजयके लक्षण मानता हूँ। सत्याप्रही अपना शरीर अच्छा ही रखता है। इसल्पि जुक्ने मेरी खास सलाह है कि तू शरीरको सुभार।

सब बहुनोंको आशीर्वाद । वहुँकि कामके समाचार मिलते ही रहते हैं। मेरा स्वास्थ्य उत्तम रहता है। बा दिल्लीमें है। बहुत दुबली हो गई है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पढेल बन्दी यरवडा सेंट्रल प्रिजन यरवडा

[गुजरातीसे]

बापूना पत्रो - ४: मणिबहेन पटेलने, पू० १२७

१. जवाहरलाल नेहरू

## ५६. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम, वर्षा ७ मई, १९४१

भाई वललभभाई,

तुम्हारा उत्तर मिला था। मणिबहनको पत्र लिख रहा हूँ, इसलिए तुम्हें भी लिख रहा हूँ। मेरी गाड़ी चल रही है। स्वास्थ्य उत्तम रहता है। गरमीमें कोई नुकसान होता नजर नहीं आता। ठंडा कपड़ा सिरकी रक्षा करता है।

मेरी इच्छा अब कहीं-न-कही सफरपर जाने की हो रही है। जहाँ भगवान ले जायेंगे वहाँ जाऊँगा। नजरमें तो अहमदाबाद, वस्वई और बिहार है। देखता हूँ। हमें सुलहका रास्ता ढ्रंबना चाहिए अथवा कांग्रेस उसे ढ्रंबने में स्वाहा हो जाये। मेरे सामने तो यही मार्ग हो सकता है न? परन्तु वह ईश्वर बताये तव मिले। इस प्रकार न मुझे घबराहट है, और न कोई चिन्ता। मैं घटनाओं को घटित होते देखता रहता हूँ और कर्तव्यरत रहने की कोशिश्व करता हूँ।

मेरे लिखने का कोई अर्थं न निकालना। जितना मुझे सूझा उतना सब लिख डाला है।

सबको

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल यरवडा सेंद्रल प्रिजन पूना

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २: सरदार वल्लमभाईने, पृ० २४७

# ५७. पत्र: डाह्याभाई पटेलको

सेवाग्राम, वर्घा, सो० पी० ७ मई, १९४१

चि॰ डाह्याभाई

सायके पत्रोंको यथास्यान भेज सको तो भेज देना। महादेवका पत्र या तो ज्यों-का-त्यों भेज देना या उसकी नकल भेज देना।

तुम्हारी गृहस्थी ठीक चल रही होगी। बाबाको दो पंक्तियाँ लिखने के लिए प्रेरित करना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्यामाई पटेल ६८, मेरीन ड्राइव बम्बई

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ४: मणिबहेन पटेलने, पू० १६१

## ५८. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा ८ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मुझे तुम्हारा नारायणगंजसे मेजा हुआ हैरान करनेवाला तार मिला था, जिसका उत्तर मैंने मेज दिया था। आशा है कि तुम्हें मेरे पत्र मिले होंगे। उनमें मैंने स्पष्ट कर दिया है कि मेरी ओरसे बिना कोई अधिकार पाये ही तुम वहाँ गये हो। मैंने तो तुम्हें केवल सलाह दी थी, जिसे मानने या ठुकराने की तुम्हें स्वतन्त्रता थी। अब मेरा दृढ़ मत है कि तुम अपने बूते पर कोई जिम्मेदारीका काम सँमालने में

- १. बल्छममाई पटेछके पुत्र
- २. हाझामाई पटेलके पुत्र विपिन
- ३. अमृतकाल चटलीक अनुसार यह चार "हाकामें दंगेकी स्थिविके सम्बन्धमें था और उसमें गांधीजी से निर्देश मौंगा गया था"।
  - ४. यह सप्छन्ध नहीं है ; केनिन देखिए "पत्र : अमृतकाक चटर्जीकी ", ए० ५०-५१।
  - ५. देखिए "पत्र: अमृतकाल चटलींकी", पु० २९-३० और ३३-३४।

सर्वया अयोग्य हो। तुम काफी समयसे अपने पारिवारिक कर्त्तंव्योंसे विमुख रहे हा। अपने परिवारका मार वहन करके तुम देश-सेवा करोगे। यदि तुम अपनी काम-वासना पर अंकुश रख सको तो और बच्चे पैदा न करना, और जिन वच्चोंके जन्मके लिए तुम जिम्मेदार हो उनके प्रति अपने कर्त्तंव्यका पालन करना। इस दिशामें तुम क्या कुछ कर सकते हो, इसीसे तुम्हारी योग्यताका निर्णय हो जायेगा। मैं इस मासके अन्त तक तुम्हें पैसे मेजता रहूँगा, उसके बाद तुम अपना भार स्वयं सँमालना। याद रखो कि तुम्हारे ऊपर पैसे खर्च करने की कोई वाष्यता मुखपर नहीं थी। किन्तु यह सोचकर कि तुम एक योग्य देश-सेवक हो, मैंने तुमपर पैसे खर्च किये।

शैंलेन और घीरेनको प्रशिक्षण देने का मैं अभी भी प्रयास करूँगा। कुछ समय तक करता रहूँगा। यदि वे सुपात्र सिद्ध हुए तो सहायता जारी रखूँगा, नहीं तो उन्हें तुम्हारे ही पास भेज दूँगा। यह एक अनर्थकारी प्रयोग सिद्ध हुआ है, जिसके लिए मुझे गहरा दु:ख है। किन्तु यदि दैवयोगसे तुम अब भी चेत जाते हो और विनम्न बनकर अपनी नष्ट गृहस्थीको फिरसे वसा लेते हो तो मेरा यह दु:ख हर्षमें

परिणित हो जायेगा।

वीणाके नाम मेरा पत्र देखना।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०३)से।सीजन्य: अमृतलाल चटर्जी

# ५९. पत्र: पुरुषोत्तम गांधीको

सेवाग्राम, वर्या होते हुए ८ मई, १९४१

चि॰ पुरवोत्तम,

तेरे जन्म-दिवसपर तुझे आशीर्वाद देना तो मैं भूल ही गया। मैं भी क्या करूँ ? लेकिन तू जानता है कि आशीर्वाद तो है ही। खैर अब लिखित [आशीर्वाद] भी ले। देरसे भेज रहा हूँ, इसलिए ब्याज समेत गिन लेना। वाकी तो तू सब जानता है। नारणदासका पत्र मिल गया है। उसमें जवाव देने-जैसा कुछ होगा, तो बादमें दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से

- र. यह पत्र उपलब्ध नहीं है।
- २. पुरुषोत्तम गांधीके पिठा

## ६०. पत्र: भुजंगीलाल का० छायाको

८ मई, १९४१

चि॰ मुंजगीलाल,

मेरे पास आकर क्या करोगे? मैं काममें व्यस्त रहता हूँ और मुझे एक मिनट मी किसीकी ओर नजर उठाकर देखने को नहीं मिलता। इसलिए तुम वही रही और नारणदास आदिके सत्संगसे लाभ उठाकर जैसा चाहते हो, अपने जीवनका निर्माण करो। तुम्हें मेरा संग कबतक मिलेगा? इसका क्या मरोसा?

बापुके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २५९४) से

# ६१. पत्र: पृथ्वीसिहको

८ मई, १९४१

भाई पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत मिला। गोपालराव का निवेदन भी पढ़ गया। सब अच्छी तरहसे चल रहा लगता है।

मेरे खतकी पहुँच नहीं है। मैने पो० बाक्स दी थी।

शेठ रामेश्वरदासजीको तुमने जो कहा सब दुक्स्त था। मैं बहूत मार्गसूचन नहीं कर संजुंगा। क्योंकि अखाडे में शस्त्रबलसे स्वरक्षा और परस्काका ज्ञान देना हि होगा। इसल्पि निजी मित अनुसार करो। क्योंकि रामेश्वरदासजीका यह मतलब तो हो हि नींह सकता कि ऑहंसक तालीम दी जाय। कहां तक तुम हिंसक तालीमकी जिम्मेदारी ले सकते है, एक प्रश्न है। इसमें तो तुमारी वृति पर हि सब निर्मर है। नाथजीसे मिश्वरा करो। अब तो किशोरलालभाई भी मुंबईमें हैं। यह पेचीदा प्रश्न है। तुमारी अंतरात्मा कहे वही सही समजा जाय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६४७) से। सी० डब्ल्यू० २९५८ से भी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

१. केदारनाथ कुलकर्णी

### ६२. पत्र: एस० जी० वझेको

सेवाग्राम ९ मई, १९४१

त्रिय वझे,

पत्रका जनाव फौरन देने के लिए अनेक धन्यवाद । मैंने मेननसे पत्र [का प्रकाशन] जारी रखने के लिए कह दिया है। उसके आधिक पक्षपर सोच-विचार करने की जरूरत पड़ेगी। मुझे खुशी है कि तुम्हारा संकट दूर हो गया। सप्रेम.

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य: प्यारेलाल

### ६३. पत्र: लीलावती आसरको

९ मई, १९४१

चि॰ लीला,

तू आरामसे पहुँच गई होगी। आजके पत्रसे तो देखता हूँ, तुझे भेजकर मैंने बहुत अच्छा किया। अब वहां अपनी तबीयत मत बिगाड़ लेना और जो-जो दोष तुझमें हैं उन्हें अपनेमें से निकालने का प्रयत्न करना। मित्तभाषी बनना चाहिए और विचारपूर्वंक बोलना चाहिए। बाकी यहाँ तो सब ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ९५९५) से। सी॰ डब्ल्यू॰ ६५६७ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

### ६४. पत्र: नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्घा ९ मई, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। हमारे यहाँ दो-तीन पद्धित्याँ चल रही हैं। उनमें एक है तुम्हारी, दूसरी लक्ष्मीदासकी, तीसरी विनोबाकी, चौथी शायद जाजूजी की, पाँचवी मेरठ आश्रमकी यानी कुपलानीकी, छठी मथुरादासकी, सातवी दीवानजी की। और भी नाम शामिल किये जा सकते हैं। इनमें से कोई भी सम्पूर्ण नही है। अगर होती तो वह सर्वमान्य हो जाती। लेकिन सम्पूर्ण तो ईश्वरकी कृति ही हो सकती है। तुममें मेरा विश्वास है, इसलिए जिसमें तुम न रह सको ऐसी समिति मैने नहीं बनने दो। अब तुम तैयार हो, तो अवश्य अपने सुक्षावोंके अनुरूप एक समितिका निर्माण करो और कामको और अधिक गति दो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५८२ से भी; सीजन्य: नारणदास गांधी

# ६५. पत्र: कस्तूरबा गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए ९ मई, १९४१

बा,

तेरा पत्र मिला। उपवास ७२ घंटेका था। बिलकुल कष्ट नहीं हुआ। शक्ति आ रही है। तूबीमार पड़ती है, तब चिन्ता होती है। तूजल्दी अच्छी हो जा। अब मैं सब खाने लगा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकछ (जी० एन० २१४०) से

- १. डझ्मीदास मासर
- २. श्रीकृष्णदास जाजू
- ३. मधुरादास गांधी
- ४. दिल्खुश दीवानजी
- भ, देखिए "पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको", ए० २२।

## ६६. पत्र: लक्ष्मी गांधीको

९ मई, १९४१

चि० लक्ष्मी

तेरी मददके लिये या बाको साथ चाहिये उसलिये लीलावती बहनको भेजता हूं। अगर सुक्षींला यहाँ आने से पहले बाको आना पढ़े तो किसके साथ आवे इस विचारसे पहले तो लीलावती बहनका विचार किया।

बच्चे अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २१३७) से

६७. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा १० मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। स्पष्ट है कि तुमने मेरे कहे पर ज्यान नहीं दिया। मैंने तुमसे कहा था कि अपने किसी कार्यके सम्बन्धमें तुम मेरे नामका उपयोग मत करना। तुम्हें इसिलए भेजा गया क्योंकि बीणा और आमाको जाना था, विल्क दरअसल बैलेन और धीरेनको भी जाना था। मैंने तुम्हें ढाका जाने की सलाह अवक्य दी थी, किन्तु अपने प्रतिनिधि या सन्देशवाहक के रूपमें नहीं। तुम्हें किसी परिचयकी आव-रयकता नहीं थी। तुम जानते हो कि तुम्हारी विवेक-बुद्धिपर मुझे कोई भरोसा नहीं है। मैंने तो सुझाव-मात्र दिया था कि यदि तुम परिवारसे अपनेको अलग कर ही लेते हो तो वैसी स्थितिमें तुम क्या कर सकते हो। लेकिन मुझे इस विषयपर और आगे चर्चा नहीं करनी है। यदि तुम मित्रोंके बीच यह प्रकट कर दो कि तुम्हें वास्तवमें गलतफहमी हुई, जिसके कारण तुमने यह सब किया, और तुम किसी भी प्रकारसे मेरे प्रतिनिधि नहीं थे तो इतना काफी होगा। मेरी अब भी वही मान्यता है जो मैंने ढाकावाले अपने तारमें व्यक्त की थी। यदि तुम प्रसिद्धिमें रहकर

र और २. सामन-सूत्रमें ये गुजरावी छिपि में हैं।

रे. अमृतकार चटजींके अनुसार यह पत्र उन्होंने ढांकासे ७ महंको "गरूतकहमी दूर करने के रूप " मेजा या और "गांधीजी से ढांकामें शान्ति स्थापित करने के कार्यको चाळ रखने की अनुमति" माँगी थी।

काम करोगे तो असफल रहोगे। अन्नदा को या जो कोई भी व्यक्ति वहाँ जिम्मा उठाये हुए है उसे तुम यह बता दो कि तुम स्वतन्त्र रूपसे काम कर रहे हो और इसके बाद भी यदि वे तुम्हें ढाकामें काम करने के लिए रखना चाहें तो तुम वहाँ रह सकते हो, बशतें कि वे तुम्हारा पूरा खर्च उठायें। यदि वे ऐसा न करें तो तुम्हें अपने परिवारके पास लौट जाना चाहिए और अपने उस प्राथमिक कर्त्तंव्यका पालन करना चाहिए। मैं मईके बाद तुम्हारे खर्चकी जिम्मेदारीसे वरी हो जाऊँगा और मुझे अब पता चला है कि उस महीनेकी राधि तुम पेशगी ले चुके हो। मुझे यह सुनकर दु:ख हुआ कि दूसरोंसे ली हुई चीजें भी तुम अपने साथ ले गये हो, उदा-हरणार्थ चिमनलालका कम्बल।

सुरेन्द्र' किसीको वताये विना ही आश्रम छोड़कर चला गया है।

तुम्हारा, वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू १०३०४)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

# ६८. पत्र: डॉ॰ नायूभाई पटेलको

१० मई, १९४१

भाई नायूमाई,

महादेव अहमदाबादमें हैं। तुम दुर्गावहनकी जरूरतसे ज्यादा चिन्ता करते हो। वह खूब सोती है। उसकी जाँघका दर्द भी कम होता जा रहा है। उसे सेलीसिलेट दिया जाता है। कभी-कभी एप्सम सॉल्ट भी। पेशाब आदि सब ठीक है। अपने-आप उठती-बैठती है। मन होने पर किसीकी मददसे खुलेमें वने चबूतरे परसे नीचे उतर जाती है। इस प्रकार रोज स्पष्ट सुघार होते हुए भी क्या तुम्हारी इच्छा उसे अस्पतालेमें दाखिल कराने की है? तुम्हें भय किस बातका है? वह पतली खाखरी, भाजी, फल आदि खाती है।

बापुके आशीर्वाद

डाँ० एन० डी० पटेल, एम०डी० बैकबे च्यू बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डट्ल्यू० २७२१) से। सीजन्य: डॉ० नायूमाई पटेल

सुरेन्द्रनाथ सरकेळ, वंगाळके फ्र स्वतन्त्रता-सेनानी, जिन्हें गांघीजी ने आश्रममें <u>मालय दिया</u> था।

### ६९. पत्र: देवदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्वा १० मई, १९४१

चि० देवदास,

तेरा पत्र वाकी डाकके साथ आज ११-४० पर मिला। तूने अपने पत्रमें शुक्रवार लिखा है। आज शनिवार है। शुक्रवारका लिखा पत्र शनिवारको ११ वर्जे यहाँ पहुँच हो नहीं सकता। तेरे लिफाफे पर तारीख भी गुरुवारकी है।

ऐसा लगता है, अब मुझे एसोशिएटेड प्रेसको वनतव्य देना विलकुल वन्द कर देना चाहिए। यूनाइटेड प्रेसने तो अपने-आप वन्द कर दिया है। अनेक अखवारोंने मेरा वनतव्य ज्यों-का-त्यों छापा है। तूने डटकर मुकावला किया। लेकिन मुझे लगता है कि अन्तमें यह भी सम्भव नहीं होगा। या फिर तुम लोगोंको ... पड़ेगा। वेखता हूँ, तूने लाल लकीरवाला अंश छोड़कर मेरा वनतव्य छापा है। यह ठीक नहीं हुआ। तूने वन्तव्य विलकुल न छापा होता, तो ठीक लगता। अन्ततः जहाँसे कुछ अंश छोड़ दिया था, वहाँ "संसडं" तो जरूर लिखना चाहिए था। दूसरे अखवारोंकीं तुलनामें 'हिन्दुस्तान टाइम्स' घटिया माना जायेगा। यदि अकारण ऐसा माना जाता तो कोई वात नहीं थी, लेकिन यहाँ तो कारण प्रस्तुत हो गया। खैर, अब जो हो गया सो हो गया। लेकिन आइन्दाके लिए मेरी यह स्पष्ट इच्छा है कि मेरे वनतव्य छापे जायें तो विना किसी रहोवदलके छापे जायें।

बाको तुने स्वस्य देखा, यह पढ़कर प्रसन्त हुआ। लक्ष्मीकी सेवा करने की चित्त के वारेमें मुझे कभी कोई सन्देह नहीं था। फिर भी उसका वोझ हलका करने के लिए मैंने लीलावतीको भेजा है। अब तो लगता है कि वा जूनमें ही आयेगी।

महादेव यहाँ १३ को पहुँचेगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४६) स

र. देखिए पृ० १५-१८।

२. सावन-सूत्रमें यहाँ पढ़ा नहीं जा सका है।

३. देवदास गांधी हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादक ये।

# ७०. पत्र: मणिबहन पटेलको

[१०:] मई, १९४१

चि॰ मणि,

तुझे एक पत्र लिखा है। यह तुझे जेलमें मिलना चाहिए। यह तेरे पत्रके उत्तरमें है। पत्र कल मिला और रातसे पहले नहीं पढ सका।

तेरी तरह मैं यह कैसे मान लूं कि यदि मैं बहमदाबादमें होता तो जो दंगे हुए वे न होते? आज किसीके लिए ऐसा कहना मुक्किल है। मैं ईश्वरके निर्देशपर काम करता हूँ। उसने मुझे यहाँ डाल दिया है। मैं जानता हूँ कि गुजरातमें ऐसे बहुत-से गाँव है जहाँ मैं बस सकता था।

मनुमाई बड़ी बहादुरी दिखला रहा है। कल ही सारा परिवार प्रार्थनामें आया था।

वा तो आजकल नई दिल्लीमें रोगशय्या पर पड़ी है। बुखार आता है। लिखती है कि चिन्ताका कोई कारण नहीं है। कल मैंने लीलावतीको वहाँ मेजा है। जानकोबहनकी तबीयत बहुत अच्छी कही जा सकती है। नन्दूबहनने किस आघारपर खराब बताई? वे आजकल जितना घूमती है उतना पहले कभी नही घूमती थीं। अच्छी तरह खाती है।

कनुकी सगाईकी बात अधरमें है। अभी तो नहीं होगी, यही मानकर चलना है। लडकी भी अपने घर गई है।

मीराबहन चोरवाडमें गरमी बिता रही है। दुर्गाबहनकी तबीयत बच्छी होती जा रही है।

तू वहाँका काम ठीक करके दो-तीन दिन मेरे साथ रह जाये, यह मैं जरूर चाहता हूँ।

बापुके आशीर्वाद

- साधन-मुत्रमें "२०" है, जो सप्टत: भूकसे किंखा गया है, नर्पोकि गांधीजी ने पत्रमें पक दिन पहुछे कीकावदीको दिल्छो मेजने का जिंक किया है। कीकावती ९ महैको दिल्छी गई थीं। देखिए "पत्र: क्ष्मिंगे गांधीको", प्र० ५०।
  - २. देखिए पू० ४३।
  - ३. सानशंकर जपशंकर त्रिवेदी, जिनके पिता जपशंकर त्रिवेदीका देहान्त हो गया या
  - ४, जमनालाल बजाजकी परनी
  - ५. मामा चटजीं

चि॰ डाह्याभाई,

मणिवहन आये तब यह पत्र उसे दे देना।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल ६८, मैरीन ड्राइव बम्बई

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ४: मणिबहेन पटेलने, पृ० १२८-२९

७१. पत्र: डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको

१० मई, १९४१

भाई वैद्य,

तुम्हारी कारबाइन मिछी। मैं तुम्हारे अन्तःकरणकी शुद्धतापर मुग्व हूँ। लेकिन खादी और चरखेने क्या अपराध किया है? वैसे कोई बात नहीं, तुम्हें जो अच्छा छगा वह तुमने किया। यहीं करते रहे, तो ऋमशः सत्य तक अवश्य पहुँचोगे। सब-कुछ सोच-विचारकर खादी और चरखेपर यदि जमे रह सको तो जमे रहना। लेकिन करना वहीं जो तुम्हारी अन्तरात्मा कहे।

बापूके आशीर्वाद

श्री वैद्यजी अ० भा० च० संघ, खादी भण्डार ३९६, कालवादेवी रोड बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४६) से

### ७२. पत्र: प्रेमाबहन कंटकको

सेवाग्राम, वर्घा ११ मई, १९४१

चि॰ प्रेमा,

इस वार तुझे देरसे पत्र लिख रहा हूँ। कामकी भीड़ बहुत हैं। और तेरा पत्र भी पत्रोंके ढेरमें दबा रहा।

वहाँके समाचार तो मुझे मिलते ही रहते हैं। मेरा स्वास्थ्य उत्तम रहता हैं<sup>ग</sup>। सबकी परीक्षा अच्छी तरह हो रही है।

अमतुस्पलाम तो बीमार ही रहती है। वा दिल्लीमें है। अभी तो कमजोर हो गई है। सुशोला खूब सेवा-शुश्रूषा कर रही है। उसे उम्मीद है कि वा अच्छी हो जायेगी। लीलावतीको बा की सेवाके लिए भेजा है।

महादेव अहमदाबाद गये हैं। वे अब १३ तारीखको वापस आयेंगें। वहाँ सब बहनें खूब कातती होंगी। प्रार्थना अच्छी तरह चलती होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४१९) से। सी० डक्ल्यू० ६८५८ से भी; सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक

# ७३. पत्र: रणछोड़लालको

११-मई, १९४१

भाई रणछोड़लाल,

तुम्हारा पत्र मिला। जो मुझसे बनता है, अपनी योग्यतानुसार कर रहा हूँ। मो० क० गाँघीके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४२)से

### ७४. पत्र: डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको

११ मई, १९४१

भाई वैद्य,

मजिस्ट्रेटको और गवर्नरके सचिवको पत्र लिखने में मुझे कोई सार नहीं दिखाई देता। तुम्हारा दिमाग गरम हो गया है। थोड़ा बान्त हो लो। कलमका और वाणी का मौन लेकर गहरेमें पैठो। एक-दो दिनके लिए यहाँ आकर बान्ति प्राप्त करेनी हो तो आ जाओ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४७) से

# ७५. पत्र: राममनोहर लोहियाको

११ मई, १९४१

माई राममनोहर,

५६

तुम्हारा पत्र मिलने से बहुत आनंद हुआ। हरिस्त्तजोको लिख दिया है। अच्छा है करोब करोब सब कातते हैं। तुम्हारे पिताजीकी यात्रा चल रही है। वे अपनी डायरी भेजते रहते हैं। सबको मेरे आशीर्वाद।

मो० क० गांधीके वं० मा०

पत्रकी नकलसे: ध्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

र. राममनोहर कोहिया उन दिनों बरेकी सेंद्रूल जेलमें थे।

#### ७६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

११ मई, १९४१

चि० ब्रजिकशन,

तुमारे सब खत मिले हैं। तुमारे खतोंका उत्तर वरावर महादेव देते रहे हैं। अजीव वात है कि तुम्हें खत नींह मिले।

तुमारी सब बातें मै समजा हूं। हम अपनी २ वृद्धि अनुसार काम करते रहें। परिणाम तो ईश्वरके हि हाथोंमें है।

तुमारा 'गोता' वर्ग बगैरा चलता है सो अच्छा हि है। मैं तो चाहुंगा कि इसी तरह 'कूरान' का भी चले और हम एक-दूसरोंके धर्मका आदर करें।

भाई फरीद' का खत मिला है। मैं इस वक्त अलग उत्तर नींह दूंगा। उनकी गित अच्छी हो गई है। वहां सब दोनों लिपि सीख रहे हैं और दोनों तरीका हिंदी और उर्दूका सीख रहे हैं, बहूत अच्छी बात है। मैं उसका नतीजा बहूत अच्छी देखता हूं। हमारी तैयारी यहां तक जानी चाहिये कि हम आसानीसे उर्दू या हिंदी पढें और लिखें। कांग्रेसवालोंको तो इतना करना हि चाहिये।

बहन सत्यवतीजी का तो ऐसा हि है। लिखती थी कि कोई वार सेवाग्राम आयोगी। आशा तो रखूं कि गरमीके दिनोंके बाट आये।

.मेरी तबीयत बिलकुल अच्छी है। सबको ब॰ मा॰ या बाक्षीवींद। तुमारी तबीयत अच्छी रहती होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४८५)से

फरोद अन्सारी
 स्वामी श्रद्धानन्डकी पौत्री

### ७७. पत्र: शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा १२ मई, १९४१

प्रिय शैलेन,

तुम्हारा पत्र' मिला। तुम बड़ी लापरवाहीसे लिखते हो। तुम ऐसी गलतियाँ करते हो जिनसे बचा जा सकता है। तुम सर्वनाम भी उड़ा जाते हो। मुझे पत्र लिखनेमें जितना फूहड़पन दिखाते हो उतने ही फूहड़ यदि अपने काममें भी हो तो तुमहें सफलता नहीं मिलेगी। जानकी देवी नागपुरमें श्री मेहताके घर है। पुस्तक उनके हवाले कर देना; वे मुझे भेज देंगी। फिर देखूंगा कि और कौन-सी पुस्तक तुम्हें भेणूँ।

तुम्हारे पिता मुझे पत्र लिखते हैं। मैं असन्तुष्ट हूँ। फिर भी तुम्हें इस विषयमें

चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वैसे वे ठीक है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०५) से। सीजन्य: अमृतलाल चटर्जी

#### ७८. पत्र: प्रभावतीको

१२ मई, १९४१

चि॰ प्रभा,

तेरा पत्र मिला। जयप्रकाशका अभी तक तो नही मिला। सोशल्स्टों ने जो प्रस्ताव पास किया है, वह तूने देखा? कौन थे ये लोग? तू चिन्ता क्यों करती है? जो होना होगा सो होगा। हमें तो जो करना उचित हो वह कर गुजरना चाहिए। मेरी तबीयत ठीक है। उपवास कोई असर नहीं छोड़ गया। बा की तबीयत ठीक है। अभी दिल्लोमें है। लीलावतीको वहाँ मेजा है।

बापुके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५५९)से

रै. नागपुरते, जहाँ शैकेन्द्रनाथ चटर्जीको प्रशिक्षणके छिए मेजा गया था

२. अमृतकाळ चटर्जीके अनुसार, गांचीजी शैकेन्द्रको ज्ञान-वर्षनके निर्मित पुस्तर्के, समाचारपत्र इत्यादि मेजते रहते थे, जिनका सार किखकर वे गांधीजी को संशोधनार्थ मेजते थे । कसी-कसी गांचीजी अमृतकौरसे भी उनपर संशोधन करवाते थे।

## ७९. पत्र: कृष्णचन्द्रको

१२ मई, १९४१

चि० ५० चं०.

हां, रसोडेके लिये सामान मंगाना और निर्णयका काम तुमारा है। मेहमानके बारेमें तुमने ठीक कहा है।

रसोडा सफाई इ० के बारेमें भी तुमने ठीक कहा है। कोई गैर मामुल खर्च

करना पडे तो कमिटीके पास जाना चाहिये।

तुमारे क्षेत्रमें आते हूए खातेमें खर्च होगा। उसमें तुमारी हि सही होगी।

लेकिन व्य०की तो तुमारी गैरहाजरीमें हो हि सकती है।

तुमारे क्षेत्रोंमें जो काम पड़े हैं उनमें छोगोंको काम देना तुमारा काम है। वही आदमी दूसरे क्षेत्रमें भी हो सकते हैं। इस बारेमें तो दूसरे खातेके अधिकारीसे बंदोबस्त होना चाहिये।

इतना याद रखना कि हमारा काम जिम्मेदारी बदा करने का है। उसके बदा करने के लिये जो अधिकार चाहिये वह अपने आप आ जायगा। यह मेरा ५० वर्षका

अनुभव है।

तुमारे कार्यं विमाग करना होगा। जैसे के अमूक समय सफाई निरीक्षणके लिये। उस वस्त तुमारे हाथमें छोटी बकेट और फावड़ा और झाडू होना चाहिये। नित्य काम तो दूसरे हि करेंगे, लेकिन निरीक्षणके समय जो घाटा देखने में आवेगा उसे यथासंगव तुम हि कर लोगे बीर जिनका दोष होगा उनको वता दोगे। वहूत काम अपने आप करने का लोभ नींह करोगे। और जितना सहजमें अपने आप ही सके वह दूसरोंको नींह दोगे।

यह चि॰ को बताना और तुमारा खत भी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८७)से

१. व्यवस्थापककी

२. चिमनलाल न० शाह, सेबायाम कालमके व्यवस्थापक

### ८०. पत्र: मीराबहनको

दुबारा नहीं पढ़ा

सेवाग्राम, वर्वा १३ मई, १९४१

चि॰ मीरा,

संस्या तोड़ने की तुम्हारी योजना पढ़ने में तो अच्छी है, मगर उसमें सार वहुत कम है। गौशाला अलग है, परन्तु वलवन्तसिंह तो अलग नहीं है। दुग्धालय अलग है, परन्तु पारनेरकर' तो अलग नहीं है। वात यह है कि दुनिया मुझसे अलग नहीं हो सकती। भणसाली एक ही नहीं अनेक हैं। लेकिन सवका व्यवहार इतना अच्छा नहीं है जितना मणसालीका है। लेकिन जैसे मी हैं वैसे हैं। तुम इस चीजकी गहराई में नहीं गई हो। मुझे चिन्ता रसोई-घरकी नहीं है। विकास अपने-आप सहज रूपमें हुआ है और विनाश या पुर्नानर्माण भी उसी तरह होना होगा। मैं इस प्रक्रियामें केवल सहायक ही हो सकता हूँ। हर जगह मुझे हारकर हटना पड़ा है। राजकोटके घरकी जगह वम्बईका घर वना। उसके स्थानपर नेटालका घर वना, फिर वम्बईमें, वादमें जोहानिसवर्गमें दो वने, फिर फीनिक्स, टॉलस्टॉय फार्म, फिर वापस फीनिक्स, वादमें जोवात्व, सावरमती, मगनवाड़ी और सेवाग्राममें। मैंने वीचके स्थान-परिवर्तन तो छोड़ ही दिये हैं। सव यथासमय हुए। भगवान ही जाने अव वह मुझे कहाँ पटकेगा। नहीं, मेरी रक्षा इसीमें है कि मैं प्रार्थना और प्रतीक्षा करूँ। "प्रभु, तू ही मुझे रास्ता वता।"

तुमसे सम्बन्धित अनुच्छेद मैंने नहीं देखा है। जवतक तुम एकान्तवासियोंके जैसा जीवन न विताना चाहो, जो कि अत्यन्त मूर्खतापूर्ण और अकल्पनीय है, तवतक तुम छिपकर नहीं रह सकतीं।

महादेव कल लौट रहा है।

पी० की कक्षा छुट्टियों मर के लिए है। आशा है, वह १० जूनके लगभग बन्द होगी।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डक्ल्यू० ६४७९)से; सौजन्य: मीरावहन। जी० एन० ९८७४ से भी

१. पशवन्त म० पारनेरकर, आश्रमके एक हेरी-विशेषश

२. जयकृष्ण प्रभुदास मणसाङी

### ८१. पत्र: किशोरलाल घ० मशक्वालाको

१३ मई, १९४१

चि॰ किशोरलाल,

९ अगस्त, १९४० को तुमने 'सत्याग्रह साथी' की जो रूपरेखा तैयार की थी उसे मैंने अच्छी तरह सँमालकर रख छोड़ा था। समय निकालकर उसे पढ़ जाने का निश्चय था ही। अन्य किसी कारणसे नहीं तो तुम्हारे उत्साह और उद्यमका आदर करने के विचारसे ही आज उस निश्चयको पूरा किया।

आश्रमको लेकर मुझे इतने आघात सहने पड़े हैं कि अब कुछ भी नया आरम्भ करने का उत्साह मुझमें नहीं रह गया है। इसलिए यह 'साथ' ती भेरे जीते-जी अथवा भेरी मृत्युके पश्चात् तुममें से ही कोई खड़ा करेगा। वह होना चाहिए, यह मैं जरूर मानता हूँ। आरम्भमें बहुत छोटा हो तो भी काफी होगा।

परिशिष्ट उपयोगी है, मार्गदर्शन है। थोड़ा-बहुत सुवारकर उसे अभी भी प्रकाशित किया जा सकता है। छठे पृष्ठपर मैंने दो घाराओं को निकाल दिया है। हिंसाके प्रकारोंके बारेमें लिखा अंश मुझे अनावश्यक जान पड़ा, क्योंकि वे अगणित हैं। इसके अतिरिक्त इसके सम्बन्धमें मार्ग-दर्शनके लिए तुमने जो कसौटी प्रस्तुत की है वह स्थूल है। हिंसा तो हमारे हृदयमें भरी है। जल्दीमें पढ़ते हुए अगर मैंने कोई मूल की हो तो सुवार लेना।

१०वें पृष्ठपर मैंने जो अंश काटा है उसके बारेमें तुम समझ ही जाओं। परिशिष्ट-ना फिलड़ाल तो कामका नहीं रहा।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ १०७२४)से। सौजन्य: गोमतीबहन मशरूवाला

# ८२. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको

१३ मई, १९४१

प्रिय भगिनि,

क्यों बार बार बीमार होती है? सेवक सेविकाको तंदुरस्त रहने की कला भी सीख लेनी चाहिये। मगवानकी कुपासे दौरा तो निविच्न खतम होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ७९९५)से। सी॰ डब्ल्यू॰ ३०९२ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

### ८३. पत्र: कृष्णचन्द्रको

१३ मई, १९४१

चि० सु० चं०,

अ॰ स॰ बहेन कुछ सामुदायिक काम करना चाहती है। दे सबते हैं तो दे दो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८८) से

### ८४. पत्र: लीलावती आसरको

१४ मई, १९४१

चि॰ लीला,

तेरा पत्र मिला। तू अपने वजनकी चिन्ता छोड़, और स्वामाविक रूपसे जितनी भूख छगे उसके अनुसार बाकायदा खाया कर। उम्मीद है, तूने अध्ययन सुरू कर दिया होगा।

लक्ष्मीसे कहना, उसका पत्र मिल गया था। तारासे कहना, तेरी सहेली कैसी हैं कि अपने दोस्तको पत्र ही नहीं लिखती। बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३७९) से। सी० डब्ल्यू० ६६५४ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

# ८५. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

सेवाग्राम, वर्घा १४ मई, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र विचित्र है। अन्यवस्थाकी हद हो गई! तुमने सौ रुपये मँगाये। तुरन्त भेजे। अब वापस मेजते हो और कहते हो कि सव-कुछ समझ लेने के बाद अगर कंचन और मुझे सन्तोष हो जाये, तो रुपये वापस भेज दिये जायें। यह कहाँ की रीति है? हमें सन्तोष है कि नहीं, यह तुम पूछ सकते थे।

तुम्हारा भयंकर पत्र पढ़ने के बाद कंचनको भेज रहा हूँ, । तुम नहीं आ रहें हो। अब जो मैं उसे तुम्हारे साथ रहने के लिए भेजूँ, तो तुम रख लेने को तैयार हो। यह कैसी बात है? उसकी भावनाओं का तुम्हें कोई भी खयाल नहीं, मेरी भावनाओं का भी नहीं। यदि तुम नहीं ही आओ अथवा न आ सको, तो कंचनके वहीं रहने की बात थी। वह रह भी सकती थी, लेकिन तुमने तो उसके वहाँ पहुँचते ही उसे वापस भेज दिया। यह क्या है? तुम्हारा मन वहाँ लगता नहीं, फिर भी पड़े हो। वहाँकी हर चीजसे अपना मेल नहीं बैठा पाये, फिर भी हठपूर्वक वहाँ पड़े हो। यह उचित नहीं है।

मैंने किसीसे नहीं कहा है कि तुम मुझसे कोई चीज या कोई वात छिपाते हो।

तुम सेवाग्राम नहीं आना चाहते, यह मुझे तुम्हारे पत्रसे ही पता लगा।

मेरी सलाह यह है: सौ रुपये जब जरूरत हो, मैंगाओ। अगर परीक्षा देने को

मन न करता हो अथवा तबीयत अच्छी न रहती हो, तो यहाँ आओ और फिर

किसी ठंडी जगह जाओ। बोरडी जाना हो तो वहाँ जाया जा सकता है। यहाँ
आओ तो पूर्धतसे बात करके निश्चित किया जा सकता है कि क्या करना चाहिए।

तुम्हारी बातोंपर मैंने ध्यान नहीं दिया, यह मैं नहीं मानता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ८४९८) से। सी॰ डब्ल्यू॰ ७१३८ से भी; सीजन्य: मुन्नालाल गं॰ शाह

### ८६. पत्र: बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको

[१५ मई, १९४१ के पूर्व]

इस समय मैं आपको केवल यही सलाह दे सकता हूँ कि जिन्हें वाहर रहने दिया जाता है वे लोग रचनात्मक कार्योमें, विशेष रूपसे साम्प्रदायिक शान्ति वनाये रखने के कार्यमें रत रहे।

वास्तवमें कहा जाये तो यह कोई दुर्भाग्यकी वात नही है, क्योंकि हमें तो ऐसी गिरफ्तारियोंकी काशा थी ही। उनसे हमारी शक्ति और एकताकी परीक्षा होती है।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, १६-५-१९४१

१. यह पत्र दिनांक "कलकता, १५ मई" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

वंगाळ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्री अख्णचन्द्र गुह तथा कांग्रेसके अन्य पदाधिकारियों व प्रान्तके अनेक भागोंमें कांग्रेसी कार्यकर्ताओंको गिरफ्तार कर लिया गया था।

### ८७. पत्र: सारंगधर दासको

सेवाग्राम, वर्घा [१५ मई, १९४१ के पूर्व]

त्रिय सारंगघर दास,

राजकुमारीके नाम तुम्हारा बत्यन्त दिलचस्प पत्र पढ़कर मुझे बहुत खुशी हुई। हाँ, मुझे याद है कि तुम्हारा वक्तव्य प्राप्त हुआ था। मुझे तो याद नहीं कि उसमें कोई खटकनेवाली बात थी। राजकुमारी तब पंजावमें थी।

मुझे खुशी हैं कि तुम हरिजनोंके इतने निकट सम्पर्कमें आये। 'सी' श्रेणी निःसन्देह सर्वश्रेष्ठ है। 'ए' और 'बी' श्रेणियाँ तो नासूरके समान हैं। किन्तु यह 'सब तो हमारा ही बनाया हुआ है। मुझे उम्मीद है, अपने अनुभवसे तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँची होगी।

मै जानता हूँ कि बाहर सब जगह गड़बड़ है। राजेनबाबू फिलहाल विहार नहीं छोड़ सकते। जैसा कि मै पहले ही पिढयारीको बता चुका हूँ, हम सबको अपनी कठिनाइयाँ स्वयं सुलझाने की कला सीखनी है।...

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०५१६)से। सौजन्य: उड़ीसा सरकार

# ८८. 'खादी-जगत् '

'खादी-जगत्' को आजकी मर्यादा अखिल भारतीय चरखा संघकी मर्यादा है। लेकिन अखिल भारतीय चरखा संघ कल्पनामें अमर्यादित है। आज तो इसमें २,२४,४२१ कित्तिनें है, जिसमें १,६७,९९६ हिन्दू है और ५६,४२५ मुसलमान है और उनके लिए २०,६४३ स्रोटनेवाले, पिजारे, रंगरेज, जुलाहे, धोबी इत्यादि है। चरखा

- १. यह पत्र जे० एत० घोषने अपनी १५ मई, १९४१ की रिपोर्टमें उद्भुत किया था।
- २. प्राणकृष्ण पढियारी, उड़ीसा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष
- ३. साथन-सूत्रमें इसके आगे का अंश छूटा हुआ है।
- ४. साधन-सूत्रमें "वापूजी" लिखा है।
- ५, यह केख अ० मा० चरखा संव द्वारा वर्धासे प्रकाशित हिन्दी मासिक खादी-जगत् के प्रथम अंकर्मे छपा था।

संघ उनका और खादी पहननेवालोंका प्रतिनिधि है। यह संख्या तो हिन्दुस्तानरूपी समुद्रमें बिन्दु समान है, तो भी सारे हिन्दुस्तानमें फैली हुई है। अखिल मारतीय चरखा संघ पूरी तरह पारमाधिक संस्था है, और इतनी वड़ी पारमाधिक संस्था धायद ही द्विनयामें और कोई हो। अगर कल्पना सफल हुई तो अखिल भारतीय चरखा संघ करोड़ों हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी इत्यादिका प्रतिनिधि बनेगा, और जब ऐसा बनेगा तो सारे जगतका बनेगा। क्योंकि तब सारा जगत हिन्दुस्तानकी नकल अपने-आप करेगा। यह खूनी युद्ध बता रहा है कि यंत्रवादसे तो आखिरमें जगतका नाश ही होगा। हस्तकलासे ही जगतका पोषण हो सकता है। यह भविष्यकी बात हुई, और भविष्य ईश्वर ही जानता है। फिर भी पुरुषार्थ जैसी चीज तो जगतमें रहती ही है। और अखिल भारतीय चरखा संघका पुरुषार्थ इसमें है कि उसकी मारफत सारा हिन्दुस्तान खादोभय बने। तभी हिन्दुस्तानकी कंगाली जा सकती है। यहां खादीका व्यापक अर्थ लेना आवश्यक है। इतने प्रचंड कार्यके लिए सघमें ज्यादा सेवक चाहिए। जो है उनमें ज्यादा कुरबानी, ज्यादा अध्ययन, ज्यादा जान, ज्यादा जागृति होनी चाहिए।

इस प्रवृत्तिका केन्द्र चरखा है, क्योंकि करोड़ोंका उद्योग और घन तो चरखा ही हो सकता है। चरखेमें तकली तो आ ही जाती है। चरखा सिर्फ विघवाका अौजार नही है। चरखा हिन्दुस्तानकी आधिक उन्नति, स्वातन्त्र्य और कीमी एकताकी निघानी है, इसलिए यह बड़ा शास्त्र है। इस शास्त्रको बढ़ाने में कई विशारदोकी धिनतका संगठन होना है। विशारदोंमें अर्थशास्त्री तो होने ही चाहिए, साथ ही कई शास्त्रज्ञ भी होने चाहिए। एक मिस्त्री छोटा-सा घर बना देगा। बड़ी इमारत या पुळ तो बड़ा इंजीनियर ही बना सकता है। चरखेमें सुवार करने के लिए गंगाका पुळ बनानेवालेसे अधिक ज्ञान और शोधक-वृद्धिकी आवश्यकता रहती है। ऐसे लोगों को हम अपने त्यागसे और श्रमसे जब अपनी ओर खीचेंगे तव हम बहुत आगे जा सकेंगे।

इस दृष्टिसे देखें तो 'खादी-जगत्' छोटा साहस नही है। इसी दृष्टिसे मैंने 'खादी-जगत्' प्रकाशित करने के प्रस्तावका अनुमोदन किया है। मुझे आशा है कि 'खादी-जगत्' में जो लेख आवेंगे सब ज्ञानसे भरे हुए होंगे, जिससे संघके कार्यकर्ताओं

और जनताको लाभ हो।

संघकी प्रवृत्तिके लिए सेवक चाहिए और घन भी चाहिए। दोनोंका मिलना बाजके सेवकोंपर निर्भर है। अच्छा होगा कि 'खादी-जगत्' के आरम्भमें मैं संघके प्रमुखकी हैसियतसे एक दोष-घोवन कर दूं। मेरी और मेरे ही साथीकी गफलतसे कही या अतिविश्वाससे, संघको दो लाखसे अधिक रुपयेकी हानि हुई है। माई शंकरलाल बैंकरने एक शब्सको भले मानकर संघमें रख लिया और जोखिमका काम उसको दिया। अतिविश्वास करके उसके कामकी देखमाल कम की। अपना शरीर खराब होने के कारण वे पूरी देखमाल कर न सके। हिसाब निरीक्षण वगैरह तो होता रहा। छेकिन उक्त माईने वड़ी चालाकी से थोड़ा-थोड़ा करके दो लाखसे अधिक रुपये खालिये। माई जाजूजी के हाथमें दफ्तर आने पर इस चोरीका पता लगा। चोरने स्वीकार तो किया है छेकिन पैसे हमारे हाथ नहीं आये हैं। पैसे प्राप्त करने का सब प्रयत्न चल रहा है। हो सके, तबतक कोर्ट तक मामला नहीं जाने देने की नीतिपर संघ

कायम है। लेकिन आवश्यकता होने पर कोर्टतक जाने में जरा भी संकोच नहीं होगा।
यहाँ तो यह बात जाहिर करने का मतलब इतना ही है कि संघके सहायक हमारी
गफलत जानें और हो सके तो क्षमा करें। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि हम
सब जाग्रत हुए हैं, और ऐसी गफलत हुबारा न होने पाने, ऐसी चेष्टा कर रहे हैं।
इस दोष-स्वीकारमें यह भी आशा है कि संघके सब कार्यकर्ता जाग्रत हो जागेंगे
और अपनी शुद्धि करेंगे और जिस माईने चोरी की है वह भी इसे पढ़कर सावघान
हो जागेंगे तो बड़ा ही अच्छा होगा। कमसे-कम भाई शंकरलाल वैकर, जिन्होंने
मोलेपनमें इतना विश्वास किया जनको कुछ आश्वासन मिलेगा।

एक और बात। बाजारकी पर्वाह न करके कितानोंकी मजदूरी एकदम बढ़ाने का साहस हमने किया है, वह हमेशा उज्जवल साहस माना जायेगा। खादी-प्रेमियोने इस परमाथंमें बड़ी मदद दी है। खादीके दाम तो बढ़ने ही थे। खादी-प्रेमियोने वह दाम खुशी से दिये हैं। अब कार्यंकर्ताओं का दुहरा धर्म उत्पन्न होता है। एक तो यह कि कितानोंकी प्रस्तावके मुताबिक पूरे दाम दिये जायें। और दूसरा यह कि खादीके प्राह्कों से हिसाबसे जितने दाम लेने चाहिए, उतने ही लें। बचाने के लिए नफा करने की कोशिश न की जाये। अगर किसी कारणसे नफा हो भी गया हो तो संबक्षी इजाजत लेकर उसे खादीका दाम कम करने में खर्च करना चाहिए। खादीकी उन्नितिका आधार बाजारकी नरमी-गरमी होने पर नहीं है बिल्क हमारे शुद्ध व्यवहार पर ही है। हमारे शुद्ध व्यवहारसे तीन परिणाम अवश्य आयेंगे:

- १. कत्तिन इत्यादि कारीगर आकर्षित होंगे।
- २. खादीघारी बढ़ेंगे और इच्छित घन मिलेगा।
- ३. और अधिक कार्यंकर्त्ता मिलेंगे।

यह मेरा ५५ वर्षका अनुभव है। 'खादी-जगत्'का प्रयत्न ये तीन उद्देश्य पूरे करने के लिए रहेगा, अर्थात् संघमें मौजूदा कार्यकर्ताओंकी शुद्धि, वृद्धि और कार्यक्षितमें दिन-प्रतिदिन वृद्धि करने के लिए रहेगा।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, १५ मई, १९४१ खादी-जगत्, २५-७-१९४१

### ८९. बातचीत: डी० के० गोसावी के साथ

१५ मई, १९४१

प्रo: महाराष्ट्रके सत्याग्रहियोंकी तीसरी सूचीमें से बहुत कम (१०७२ में से १९३) सत्याग्रहियोंकी सत्याग्रह करने की अनुमति मिली है। अनुमति प्राप्त करने में आवश्यकतासे अधिक समय चला जाता है और इस प्रकार सत्याग्रहियोंको बहुत अमुविधा होती है।

उ०: सत्याप्रहियोंकी इन सूचियोंके मंजूर किये जाने की विधिमें मैं कुछ परि-वर्त्तन करना चाहता हूँ। जिस दिन प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी किसी भावी सत्याप्रहीका नाम भेरे पास मंजूरीके लिए भेजेगी उसी दिनसे उस सत्याप्रहीको अपनी सब व्यक्तिगत गतिविधियाँ रोक देनी होंगी तथा कांग्रेसके १३ सूत्री रचनात्मक कार्यक्रमके किसी एक या अधिक अंगोंको कार्यान्वित करने के कार्यमें पूरी तरह जुट जाना होगा। 'हरिजन' के १८-८-१९४० के अंकमें "रचनात्मक कार्यत्रम किसलिए?" शीर्षक अपने लेखमें मैंने उसका जो व्यापक अर्थ समझाया था वही अर्थ यहाँ भी लिया जायेगा।

प्रत्येक मावी सत्याग्रहीको अपने पास कार्य-विवरण-पुस्तिका (या दैनिन्दिनी) रखनी होगी, जिसमें वह हर रोज दिन-भरमें किया हुआ काम दर्ज करेगा और उक्त पुस्तिका निर्घारित समयपर, जैसे कि हर पखवाड़े या हर मास, सम्बन्धित प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी द्वारा मेरे पास भेजी जायेगी। दैनिन्दिनीको देख जाने के बाद ही मैं योग्य व्यक्तियोंको सत्याग्रह करने की अनुमति दूँगा और दूसरे लोग, जबतक कि उन्हें सत्याग्रहकी अनुमति नहीं मिल जाती, इसी तरह कार्य करते रहेंगे।

सत्याग्रहीको कांग्रेससे किसी प्रकारकी आर्थिक सहायताकी अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।

मुझे मालूम है कि इस कड़ी कसीटीके फलस्वरूप सत्याग्रहियोंकी संख्या बहुत कम ्हो जायेगी, किन्तु मेरा आग्रह गुणवत्ता पर है, संख्यापर नहीं। संख्या चाहे जितनी भी

१. महाराष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष, जिनके साथ पूनाके डॉ० छारू भी आये थे। सावन-एशके अनुसार, गांधीजी ने इसे "दुवारा पढ़ा था और पढ़कर इसमें संशोधन किये थे" और उनकीं अनुमितिके बाद ही यह समाचारपत्रोंको प्रकाशनके छिए दिया गया था। देखिए "पत्र: डी० के० गोसाबीको", १-६-१९४१ और ८-६-१९४१ भी।

 <sup>&</sup>quot;गांधीजी की सलाहसे सत्याप्रहियों और कांग्रेस कमेटियोंके मार्ग-दर्शनके लिए" जे० बी० इयकानी द्वारा जारी किये गये निवेंशोंके लिए देखिए परिशिष्ट १।

रे. देखिए खण्ड ७२, पृ० ४२४-२७।

घट जाये, मुझे उसका कोई दुःख नही होगा। इसके अलावा, इतने सत्याग्रही बेकार घूम रहे हैं कि मैं इस तरह वेकार घूमनेवाले सत्याग्रहियोंकी संख्यामें वृद्धि करना नही चाहता।

क्या आपको ऐसा महसूस नहीं होता कि इन भावी सत्याप्रहियोंके लिए ऐसी कड़ी आर्रान्मक परीक्षा रखकर आप उनके साथ अन्याय कर रहे हैं, जब कि आपने उनसे पूर्ववर्ती सत्याप्रहियोंके लिए तो अपेक्षाकृत आसान कसौटी रखी थी?

मेरा खयाल है कि मैं इसमें कुछ अन्याय नहीं कर रहा हूँ। आपकी एक बात जरूर ध्यानमें रखनी चाहिए कि इस आन्दोलनका विकास हो रहा है। परि-स्थितियोंकी माँगके अनुसार शर्ते भी भिन्न हो सकती हैं।

क्या जेलसे रिहा होनेवाले सत्थाप्रहियोंके प्रति प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष का कुछ कर्तव्य है ?

हाँ, अवश्य है। उसे उन दें कहना चाहिए कि वे फिरसे सत्याग्रह करें और छूटने के बाद लोई एक हफ्तेंके अन्दर ही दुवारा जेल जायें। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियोंको मेरे पास केवल उन्हीं मामलोंको भेजना चाहिए जिनपर विशेष ध्यान देने की जरूरत है और उनके सम्बन्धमें मैं जो निर्देश दूँगा उन निर्देशोंको अच्छी तरहसे समझकर उन्हें उनपर अमल करना चाहिए।

यह सिलसिला फबतक चालू रहेगा?

अनिश्चित काळतक; यानी तबतक जबतक हम अपनी लक्ष्य-प्राप्ति नहीं कर लेते। मेरे अन्तरतममें यही माव उठता है कि यह संवर्ष क्रमशः उग्रतर होता जायगा और हमें ऐसी सभी परीक्षाओं से गुजरना होगा।

इस सम्बन्धमें हमें अंग्रेजोंसे सवक सीखना चाहिए। बहुत ज्यादा नुकसान और भारी कठिनाइयोंके बावजूद वे खूब हिम्मत बनाये हुए हैं और संघर्ष जारी रखने को कृतसंकल्प हैं। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

यदि किसी सत्याप्रहीने पुराने नियमोंके आधारपर अपना नाम दर्ज कराया हो और नये नियमोंको स्वीकार करने में वह अपनेको असमर्थ पाता हो, तो उसके लिए सत्याप्रह छोड़ने का सम्मानजनक रास्ता क्या होगा?

वह अपना नाम वापस छे सकता है और इस प्रकार ईमानदारी से अपना नाम वापस छेनेमें लज्जाकी कोई वात नहीं है। मेरे साथ घोखा नहीं किया जाना चाहिए। मुझे घोखा देना तो अपने-आपको और इस प्रकार राष्ट्रको घोखा देना है। प्रत्येक ईमानदार किंत अपना नाम वापस छे सकता है और उसे वापस छेना भी चाहिए। उसे जितनी वन सके उतनी देशकी सेवा करते रहना चाहिए। वह पहलेके समान ही कांग्रेसी है और बना रहेगा। कांग्रेसको निश्चय ही उसकी सेवासोंकी जरूरत है और वह उनकी कद्र करती है। किन्तु इस समय सत्याग्रही

- यह तथा अगले तीन अनुच्छेद कांग्रेस बुलेटिन से लिये गये हैं।
- २. यह और अगला अनुच्छेद कांग्रेस झुलेटिन से लिये गये हैं।

होने की जो शर्ते हैं उनके आधारपर सत्याग्रहियोंकी सूचीमें उसका नाम नहीं रह सकता।

वर्त्तमान परिस्थितियोंमें क्या हम एक स्वयंसेवक संगठनकी स्थापना और उसका विकास कर सकते हैं?

अवश्य कर सकते हैं। सिर्फ एक ही शर्त है कि ऐसे संगठनकी स्थापना केवल आहिसा, विशुद्ध आहिसाके आधारपर ही होगी।

अहिंसाके साथ खिलवाड़ करने से काम नहीं चलेगा और इसिलए उस विषयमें किसी प्रकारकी शिथिलता बर्दावत नहीं की जा सकती। एक बात और; इस संगठनकों कांग्रेस-समर्थंक होते हुए भी कांग्रेससे स्वतन्त्र होना चाहिए। अ० मा० चरखा संघ बादि संगठनोंके समान यह कांग्रेससे सम्बद्ध संगठन हो सकता है।

यदि ऐसे स्वयंसेवक संगठनका कोई सदस्य आपात्-कालमें आत्मरक्षार्थ समुचित हिंसाका उपयोग करता है, तो क्या उसे अपवाद समझकर बर्दाक्त किया जायेगा?

नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। एक ऐसी संस्थामें, जो निश्चित रूपसे केवल अहिंसाके ही आधारपर संगठित की गई है, ऐसे अपवादोंकी न तो कल्पना की जा सकती है, न उनके लिए पहलेसे कोई व्यवस्था की जा सकती है। ऐसे व्यक्तिको संस्थासे निकल जाना होगा।

इस विषयमें आप यह शिक्षा देते रहे हैं कि "ऑहसात्मक प्रतिरोध सबसे अच्छा तरीका है; यदि वह सम्भव न हो, तो उचित हिंसायुक्त प्रतिरोध भी सह्य है, किन्तु कायरता तो अकल्पनीय और निन्दनीय है।" लेकिन आपका यह कथन आपकी उपरोक्त उक्तिसे मेल नहीं खाता।

मेरी वह उक्ति तो उन करोड़ों लोगोंके लिए है जिन्होंने अभी तक कांग्रेस-सिद्धान्तको नहीं अपनाया है। यह उन संगठनों पर लागू नहीं की जा सकती जिनका संगठन ऑहसाके मूलमूत सिद्धान्तपर किया गया है। जो लोग अहिंसाके मूलमूत सिद्धान्तमें परिवर्त्तन करना चाहते हैं उन्हें या तो अपना सेनापित बदलना होगा या संगठन छोड़ना होगा।

चूँकि एक संगठनके रूपमें कांग्रेसकी प्रवृत्तियोंको बहुत हदतक स्थिगित कर दिया गया है इसलिए सदस्योंकी सालाना भतींके सम्बन्धमें हमारी क्या नीति होनी चाहिए?

वर्त्तमान परिस्थितियों में पहलेकी तरह नये सदस्य बनाने की कोई बन्दिश नहीं हो सकती। यदि नये प्रार्थी चाहें तो उन्हें सदस्यके रूपमें भर्ती किया जा सकता है और जहाँ व्यावहारिक हो वहाँ पुराने सदस्यों से वाषिक चन्दा लेने में कोई आपित नहीं होनी चाहिए।

क्या आप शान्ति-सेनाओंकी स्थापना करना चाहते हैं? १. यह और इससे आगेके तीन अनुच्छेद कांग्रेस बुळेटिन से क्रिये गये हैंग हाँ, मैं अवश्य चाहता हूँ। कुछ समय पहले (देखिए 'हरिजन', १८ जून, १९३८) इस सम्बन्धमें मैंने कुछ ठोस सुझाव रखे थे। मैं जानता हूँ कि कमसे-कम मुख्में तो ऐसे संगठनके लिए बहुत कम लोग अपना नाम दर्ज करायेंगे? लेकिन सुख्यात तो छोटी-सी संख्यासे अथवा केवल एक व्यक्तिसे भी की जा सकती है। ऐसे संगठनको लोकतन्त्रीय पद्धतिपर नही चलाया जा सकता। यह तो एक सुनिश्चित उद्देश्य लेकर चलनेवाले व्यक्तियोंकी एक संस्था होगी। यदि सेनाके प्राथमिक सदस्य सही ढंगके लोग होंगे तो कालान्तरमें अपने अनुयायी भी जमा कर लेंगे।

स्थानीय निकायोंके चुनावोंके प्रति हमारा क्या रुख होना चाहिए?

सामान्यतः इन निकायोंके चुनाव कांग्रेसके नामपर नहीं छड़े जाने चाहिए। अगर कांग्रेसजन अपनी जिम्मेदारी पर ये चुनाव छड़ते हैं तो उसमें हमें कोई आपित्त नहीं हो सकती। परन्तु यह एक ऐसा प्रश्न है जिसपर केवछ राजेन्द्रवावू और आचार्य कुपछानी ही अधिकृत रूपसे कोई निर्णय दे सकते हैं।

जिनके नाम सत्याप्रहियोंकी सूचीमें दर्ज हैं, क्या वे छोग व्यक्तिगत रूपसे इन चुनावोंमें खंड़े हो सकते हैं?

नहीं। इस विषयपर मेरी राय बिलकुल साफ है।

को सत्याग्रही इन चुनावोंके लिए उम्मीदवारोंके रूपमें खड़े हो चुके हैं उनके बारेमें क्या किया जाना चाहिए?

उन्हें या तो चुनावसे हट जाना होगा या सत्याग्रहकी प्रतिज्ञाका त्याग करना होगा; वे दोनों हैसियतें एक साथ कायम नहीं रख सकते।

केन्द्रीय और प्रान्तीय विघान-सण्डलोंकी मतदाता-सूचियोंमें लोगोंके नाम दर्ज कराने के विषयमें कांग्रेसका क्या रुख होना चाहिए?

कांग्रेसको इस कामकी ओर पूरा ध्यान देना होगा। कांग्रेस इसकी चपेक्षा नहीं कर सकती।

[अंग्रेजी्से]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१ - गृह विमाग, पोलि० (१); सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। बॉम्बे फॉनिकल, १७-६-१९४१ मी

१. देखिए खण्ड ६७, ए० १४२-४४।

२. अखिल भारतीय कांग्रेस क्षमेटीके महामन्त्री

३. देखिए खण्ड ७२, परिशिष्ट १ ।

## ९०. पत्र: चारुप्रभा सेनगुप्तको

१६ मई, १९४१

प्रिय चारुप्रभा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने जिन पुस्तकोंका उल्लेख किया है, वे मुझे नहीं मिली है। बहरहाल, मैने प्रस्तावनाएँ लिखना छोड़ दिया है। इसलिए क्रुपया मुझे इस कामसे बरी करवा दो।

सप्रेम,

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७०९) से। सी० डब्ल्यू० १४९४ से मी; सौजन्य: ए० के० सेन

# ९१. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

१६ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम मेरे पत्रोंको पूरी तरह पढ़ते तक नहीं हो। मैंने तुम्हें वता दिया है कि जवतक तुम मेरे प्रतिनिधिक रूपमें या मेरे नामपर, अयवा मेरे निर्देशोंके अनुसार काम करने का दावा नहीं करते, तवतक तुम जैसा चाहो वैसा करने के लिए स्वतन्त्र हो। मुझे तुम्हारी निर्णय-वृद्धिपर तिनक मी भरोसा नहीं है। किन्तु यदि तुम्हें मरोसा है और लोग तुम्हें वहाँ चाहते हैं, तो न जाना गलत होगा। मैंने तुम्हें यह भी वता दिया है कि अव मैं तुम्हारे सर्चके लिए जिम्मेदार नहीं हूँ। तुम्हारा सेवाग्राम लौटना वेकार है। यदि कोई सार्वजनिक संस्था तुम्हें अपने यहाँ नहीं रखती है अथवा तुम्हारे भरण-पोषणका भार नहीं लेती है, तो तुम्हें शान्तिपूर्वक कहीं जमकर अपनी आजीविका कमानी चाहिए और इस तरह अपने उजड़े हुए घरको फिरसे वसाने का प्रयत्न करना चाहिए। इपया इसे ध्यानपूर्वक पढ़ जाना और तुम्हारी समझमें जो ठीक लगे वैसा करना।

- रै- दिनांक १३ महेका
- २. देखिए ए० २९-३०, ३३-३४, ४५-४६, और ५०-५१!
- रै. अमृतकाल चटर्जी के अनुसार वे "विरोधस्वरूप, गांधीजी के निर्देशको भानकर " ढाकासे करूकता छौट आये थे।

शैलेन और घोरेनका चरित्र गढ़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ। यह एक कठिन कार्य है। वीणा और आमासे कहना कि मुझे उनके पत्र मिल गये थे। उन्हें अपने समयका सदुपयोग करना चाहिए। वीणाने कचनको दो चूड़ियाँ क्यों दी?

> बुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०६)से । सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

#### ९२. पत्र : लीलावती आसरको

१६ मई, १९४१

चि॰ लीला.

तू सोच-समझकर पत्र लिख ही नहीं सकती। मैंने याद करके तुझे लगभग रोज पत्र लिखे हैं, फिर भी तू कहती है कि तू मुझसे पत्रकी अपेक्षा कैसे रख सकती है! अपने नामको वर्तनों भी तूने कैसी विगाड़ ली है? तू 'लैला" है क्या? दूने जो लिखा है उसका उच्चारण हुआ लैला। क्या तुझे लैलाके वारेमें मालूम है? तू तो "लीला" है। कितना अन्तर है दोनोंमें? लिखनेमें, वोलनेमें, वाल-ढालमें, सोच-विचारमें, प्रत्येक बातमें मर्यादाका पालन करना ही चाहिए। मैंने तुझसे कहा है कि प्रत्येक वाक्य विचारपूर्वक लिख, प्रत्येक वात विचारपूर्वक वोल। लेकिन मैं शिकायत कहाँ तो किससे कहाँ? अपने गुणों पर तू अपने हाथों पानी फेरती है। अभी भी चेत जा। तेरी अर्जी महादेवभाईने भेज दी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८०) से। सी० डब्ल्यू० ६६७५ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

१. साधन-सूत्रमें यह नाम रोमन लिपिमें है।

२. फारसकी एक प्रेम-गाथाकी नायिका

३. साधन-धूत्रमें यह नाम रोमन किपिमें है।

#### ९३. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा १७ मई, १९४१

त्रिय अमृतलाल,

मैं देखता हूँ कि तुम फिरसे समाचारपत्रोंको वक्तव्य देने लगे हो। अपने वक्तव्य में तुमने जो कहा बताते हैं वह सरासर झूठ है। यदि तुम सही वक्तव्य नही दोगे, तो मुझे सार्वजिनक रूपसे तुम्हारा प्रत्याख्यान करना होगा। ऐसा लगता है कि तुमने सुरेन्द्रजीकी मार्फत चीजें ली हैं; जैसे कि मंजन, साबुन, इत्यादि, क्योंकि जिस दिन तुम यहाँसे गये उसी दिनकी खरीददारीका एक बिल दुकानदारने भेजा है। तुम मुझे लिखो कि तुम क्या-क्या सामान ले गये थे।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०७)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

#### ९४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१७ मई, १९४१

चि० कु० चं०,

तुमको किसने सुनाया ? तुमारे बारेमें किसीने कुछ कहा ऐसा मुझे याद तक नाँह है। अगर कहे तो कमसे कम तुमको मैं वह बात कह तो दूं। वानर राजको याद करो। ऐसी बातें सुननेसे कानको रोको। 'मेरी कुछ शिकायत होगी तो बापु मुझे कह देंगे' ऐसा कहकर सुनानेवाळेसे मागो। दुःख क्यों?

मेरे पास काम होने से सेकड़ों बार आना, अन्यया विलक्ष्मल नींह। अब बस ना? बापके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३८९)से

 शमुख्काक चटर्जी के अनुसार, छन्होंने १३ महैको "यूनाहटेड प्रेसके प्रतिनिधिको ढाकाकी दंगा-सम्वन्वी स्थितिपर" पक वक्तव्य विद्या था।

### ९५. पत्र : शुएब कुरैशीको

सेवाग्राम १८ मई, १९४१

त्रिय शुएब,

देर आयद, दुक्स्त आयद।

मैं बज्मीका मामला समझता हूँ। तुमने अपने अँगूठेको क्या कर लिया? यहाँ हम गर्मीमें उबल रहे हैं। वर्षाकी गर्मी जैकबाबादका मुकाबला कर सकती है। तुम सबको प्यार।

वापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

#### ९६. पत्र: वालजी गो० देसाईको

१८ मई, १९४१

चि॰ वालजी,

तुम्हारा पत्र मिला।

दुर्गा बहनकी तबीयत सुघरती जा रही है।

गोपालनके बारेमें जब तुम बाबो, तब जो कहोगे वह मैं सुनने के लिए तैयार हूँ। धीरजका मतलब यह नहीं था कि बरसों या महीनों वीत जायें। धीरजका मतलब यही था कि जब तुम्हारे पास पूरा केस बा जाये, तव तुम तैयार होकर सब गवाहोंको लेकर आखो। थोड़े-थोड़े करके मुझसे प्रक्त पूछने से विलकुल काम नहीं चलेगा। अपनी तरफसे मैं बील नहीं करूँगा। जबतक काम पूरा न हो जाये, तबतक रोज दो धंटेका समय देने को तैयार हूँ।

वापूके आशीर्वाद

पुनश्च :

महेन्द्रका पत्र मुझे मिला था।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४९४) से । सौजन्य : वालजी गो० देसाई

बालजी गो० देसाहैके ज्येष्ठ पुत्र

### ९७. पत्र: अमृतलाल वि० ठक्करको

१८ मई, १९४१

बापा,

तुम गढ़वाल पहुँच गये, यह बहुत अच्छा किया। इसका परिणाम अवश्य अच्छा होगा। वहाँकी आबोहवा तो अच्छी होगी।

जयनारायण मझसे मिल गये। मैने वझेका सुझाव स्वीकार कर लिया, इसलिए उसे केवल तुम्हारे पास जाने को कहा। अपनी खुदकी राय तो मैने तुम्हें वता दी है, कि स्थायो समिति निल्लिम्बत है तथा लड़ाईके समय आपत्कालीन समिति काम करे। सारी संस्था अमृतलाल सेठके नियन्त्रणमें रहे, यह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। वे पैसे दें और अखबार चले, यह भी मुझे पसन्द नहीं है। जयनारायण-जी की मान्यता है कि आपत्कालीन समिति तो निजी समिति थी; इसकी खबर अखबारमें प्रकाशित भी नहीं हुई, और वह काम कर सकेगी, ऐसा भी नहीं छगता। स्थायी समितिको ही कर्ता-घर्ता होना चाहिए। मैने जमनालालजी से पुछवाया था। वे कहते हैं कि जयनारायण आदिकी सम्मतिसे आपत्कालीन समिति बनी है, इस-लिए फिलहाल तो स्थायी समिति निल्निवत रहती है। स्टेट्स पीपुल्स [कांफरेंस] चलाने का आग्रह बलवन्तरायका था, जयनारायणका नहीं है। जवाहरलालने मेननको कहळवाया है कि उसे मेरी सलाहके अनुसार चलना चाहिए। इसीलिए में बीचमें पड़ा हूँ। मेरा मत ऊपर कहे अनुसार है। यदि तुम्हें भी यह पसन्द हो तो तुम्हारे यहाँ आने की जरूरत नही है। लेकिन अगर तुम्हारा मत इससे भिन्न हो तो तुम्हारा आ जाना उचित होगा। स्टेट्स पीपुल्स कांफरेंस]को यदि एक स्वतन्त्र संस्थाके इत्पर्मे चलाया जाये तो कोई हर्ज नही होगा, ऐसी मेरी मान्यता है। इसके सम्बन्धमें शायद हमें मिलना चाहिए। लेकिन मैं सब तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ। यहाँ आ जाओ, यह तो मुझे पसन्द है ही। और अगर तुम्हें लगे कि किसी औरको भी हाजिर रहना चाहिए, तो वैसा करना। मेरे अक्षर पढ़ने में तुम्हें कठिनाई होती है क्या ? आज मैने यह प्रदन इसलिए पूछा है क्योंकि पत्र मुझे लग्बा लिखना पडा है।

बापू

#### [पुनश्च:]

तुम्हारा हर्षविह्वल पत्र इसके वाद मिला। मैने तो मविष्यवाणी की ही थी कि तुम विजयी होगे। फिर भी इनाम माँगते हो?

वापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११८७) से

#### ९८. पत्र: प्रभावतीको

१८ मई, १९४१

चि॰ प्रभा,

तेरा पत्र मिला। मैं ने जयप्रकाशको पत्र लिखा है । तू जमनालालजी को अवश्य पत्र लिख सकती है। उन्हें पत्र जरूर मिलते है। उनकी तवीयत अब ठीक है। दुर्गाबहन अच्छी है। वा भी अच्छी है। शायद २५ को यहाँ आयेगी। सुशीला २० तारीखको लाहौर जायेगी। २६ को उसकी परीक्षा शुरू होगी और छः दिन तक चलेगी। मैं तो यही मानकर चलता हूँ कि वह पास हो जायेगी। फिलहाल मृदुला और गुलजारीलाल यहाँ है।

बापूके , आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६६) से

# ९९. पत्र : गुलाबचन्द जैनको

१८ मई, १९४१

माई गुलाबचंद,

तुमारा खत मिला। तुमारे पिताजीके वारे अगर तार आया भी होगा तो मै

समजा नहीं हुंगा। पिताके वियोगका दुःख तो सुपुत्रको लगना ही चाहिये।

मुकुंदलालजी के बारेमें अन्याय कैसे? अन्याय तो तभी हो सकता है जब कोई अधिकार छीन लेवे तब अन्यायकी बात पैदा हो सकती है। लेकिन जेल जाने का तो धर्म हि हो सकता है, अधिकार कभी नीहि।

अगर दिल्लीसे नालायक आदमी चुने गये हैं तो यह वात तुमारे रघुनंदनजी को कहनी चाहिये। मैं तो विश्वाससे ही काम कर सकता हूं। हिं॰ टा॰ का रिपोर्टर अगर

- १. गुडनारीलाङ नन्दा
- २. हिन्दुस्तान टाइम्स

पैसे खाता है तो तुमारा घमें है कि देवदासको कहना। ऐसे ही हिं० टा० की नीतिके बारेमें। में तो अखबार पढ़ता हि नहीं हूं। अगर तुमारी बात सही है तो नामका क्या छुपाना? परोक्ष तरह देवदासको मैं नहीं लिखुंगा। तुमारा नाम भेजने की इजाज [त] दोगे तो मैं लिख सकता हूं।

ुनारे बारेमें मैं निश्चयपूर्वक अभिप्राय नींह दे सकता हूं। जो अन्तरात्मा कहे सो करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७७४४) से

१००. पत्र: डॉ० एस० के० वैद्यको

सेवाग्राम, वर्वा होते हुए १९ मई, १९४१

भाई वैद्य,

तुम मेरा विनोद भला क्यों समझोगे ? "स्वच्छता" के सब वर्ष लो और "मुग्य" का अन्तिम वर्ष । खादी और चरखेको यदि नहीं छोड़ोगे तो अन्तमें शान्ति मिलेगी । जो रामनाम लेनेसे नहीं थकते उन लोगोंको जैसे अन्तमें रामके दर्शन अवश्य होते हैं, वही वात खादी-चरखेके वारेमें समझो । मुसलमान सभी छुरा रखनेवाले थोड़े ही होते हैं। जो हो, तुम्हारा शुद्ध हृदय अन्तमें शुद्धताको अवश्य देख पायेगा । खिलखिलाकर हैंसना हो तो एक-दो दिनके लिए सेवाग्राम आ जाना चाहिए । अम्बु मजेमें होगी ।

बापुके आशीर्वाद

हाँ० वैद्य श्रीपत भुवन सान्ताऋज बम्बई ७

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४८)से

# १०१ पत्र: मणिबहन पटेलको

१९ मई, १९४१

चि० मणि,

तेरा पत्र आज ही मिला। मुझे उम्मीद तो है कि यह पत्र नुझे जेलमें ही मिलेगा। मैंने तेरे लिए एक पत्र' डाह्याभाईको भेजा है। तू अपनी सेहतका ध्यान रख रही है, यह अच्छी खबर है।

रिहा होने के बाद यदि तू थोड़े समयके लिए बम्बई रहना चाहे तो रहना और बादमें मेरे पास चली आना। अहमदाबादके सम्बन्धमें मृदुला और गुलजारीलाल आये हैं। वे इस समय यहीं पर है और बातचीत चल रही है। बापूको अथवा तुझे वहाँ बैठे-बैठे ऐसी समस्याओं पर विचार नहीं करना चाहिए। ज्यादा लिखने की जरूरत नहीं। जमनालालजी के बारेमें तिनक भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं। सब-कुल ठीक-ठीक चल रहा है। मनु त्रिवेदी आनन्दपूर्वक है। बा थोड़े दिनों में दिल्ली से आ जायेगी। लीलाबती उसके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापूना पत्रो - ४: मणिबहेन पटेलने, पु० १२७-२८

१०२. पत्र: बलवन्तसिंहको

१९ मई, १९४१

चि॰ बलवन्तसिंह,

मुन्नालाल कहते हैं कि तुम्हारी क्षमा-याचनासे शांति नही हुई है। क्षमा मांगने के समय विठोबाको सुनाया, सुमने विश्वासधात तो किया है तो भी क्षमा मांगता हूं। अगर यह ठोक है तो क्षमा-प्रार्थना निरयंक है। विश्वासधातकी शिकायत बहुत कठोर है। मैं विश्वासधात नही पाता हूं, हृदय-दौर्वल्य भले कहो। यह बात सुधरनी चाहिये।

वापू

बायुकी छायामें, पू॰ २८६-८७

१. देखिए ए० ५३-५४।

२. वक्लमभाई पटेल, मणिवहनके नाप्

बिठोबाने बळबन्यसिंहसे एक संकट्यस्त किसानकी जमीन खरीद छेने का अनुरोध किया था।
 सौदा पक्का हो जाने पर किसानके ळक्केने अपनी जमीन वापस छेनी चाही जिसपर झगढ़ा हो गया।

#### १०३. पत्र: शकुन्तलाको

१९ मई, १९४१

चि॰ शकुन्तला,

अच्छा है कि तुम जुनमें फिर सविनय भंग करोगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १३९६)से

### १०४. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्षा २० मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

दुः खकी बात है कि जो सीधी-सादी-सी बात मैं तुम्हें समझा रहा हूँ वह तुम समझना ही नहीं चाहते। तुम्हारे ही भल्लेके लिए मुझे तुम्हें कुछ नहीं देना चाहिए। तुम्हारा जरूरतसे ज्यादा लाड़ करके मैंने तुम्हारा अहित किया है। तुम तो शरीरसे हट्टे-कट्टे हो। जो भी काम पा सको वह तुम्हें करना चाहिए।

तुम जो-कुछ ले जा चुके हो, उसे लौटाने की आवश्यकता नहीं है। सुरेन्द्रजी ने लोगोंको खूव ठगा है। उसका किस्सा तो दुःखद है।

अच्छी तरह समझ लो कि अब तुम्हें अपनी देखभाल खुद करनी होगी। तुम बापस नहीं आ सकते। यदि शैलेन और धीरेनको कुछ बना सका, तो मैं उतनेसे ही पूरा सन्तोष मानूँगा।

> तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०८)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

#### १०५. पत्र: भोगीलाल लालाको

[२१ मई, १९४१ या उसके पूर्व]

मृदुलाबहुन, गुलजारीलाल और मैंने चार दिनों तक जी-भरकर वातचीत की है। यदि आप और श्रीयुत जीवनलाल दीवान भी तव उपस्थित होते, तो मुझे किसी निश्चयपर पहुँचने में बहुत सहायता मिली होती।

में ऐसा समझता हूँ कि साम्प्रदायिक दंगोंके समय कांग्रेसने क्या किया या क्या नहीं किया, और भविष्यमें ऐसी स्थितिमें कांग्रेसको क्या करना चाहिए, इस विषयपर दो मत हैं। खैर, वह तो जो है सो है, किन्तु सब बातोंपर विचार करने पर मेरी राय यह है कि इस समय जैसी गम्भीर स्थिति है वैसी स्थितिमें एक सलाहकार समिति (जिसके सदस्योंके नाम नीचे दिये गये हैं) नियुक्त की जानी चाहिए और उसकी सलाहके अनुसार सारे काम होने चाहिए। बाप देखेंगे कि मैने इस समितिमें महादेव देसाईका भी नाम रखा है। वे हर अवसरपर वहां उपस्थित नहीं हो सकते, किन्तु जब-जब आपको उनकी उपस्थित बावश्यक लगेगी तब-तब वे वहां पहुँचने का प्रयत्न करेंगे।

आपका प्रथम कर्तंब्य यह पता करना है कि हमारे कितने कांग्रेसी भाई ऐसे हैं जो दृढ़तापूर्वक यह मानते हैं कि अपनी अथवा दूसरोंकी रक्षाके लिए हिंसक प्रतिरोधका कोई प्रश्न नहीं उठता। जो लोग हिंसक प्रतिरोधके पक्षमें है उन्हें चाहिए कि वे कांग्रेससे निकल जायें और जैसा ठीक समझें वैसा आचरण करें और दूसरोंका वैसा ही मार्ग-दर्शन करें। मेरा यह दृढ़ मत है कि यदि इस विषयपर कांग्रेस स्पष्ट इपसे अपनी नीति निर्धारित नहीं करती तो अन्तमें वह एक वेकार संगठन ही सिद्ध होगी।

यदि अधिकांश कांग्रेसी ऐसा मानते हैं कि किसी आक्रमणकारीका हिंसक प्रति-रोध करना मनुष्यका कर्तंच्य है और इसे वे कांग्रेसके सिद्धान्तके विपरीत नहीं मानते, तो उन्हें सुस्पष्ट शब्दोंमें उसकी घोषणा करनी चाहिए और उसके अनुष्य लोगोंका मार्ग-वर्षन करना चाहिए। संकटकी इस घड़ीमें किसीको अपना मत प्रकट करने से यह सोचकर हिचिकचाना नहीं चाहिए कि हमारे नेता लोग अभी जेलोंमें पड़े हैं। कारण, यह मत गलत सिद्ध होने पर उसे सुघारा जा सकता है। मुख्य बात यह है कि किसी भी व्यक्तिको अनिश्चय की स्थितिमें नहीं रहना चाहिए।

१ और २. गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके मन्ती। साधन-एकके अनुसार कांग्रेसियों के मार्ग-दर्शनके किए महादेवसाई यह पत्र अहमदाबाद के गये थे। दे २१ महंको अहमदाबादके लिए रवाला हुए थे; देखिए अगका शीर्षक। मुझे पक्का विश्वास है कि यदि सभी कांग्रेसजनोंने अपने कर्त्तव्यका पालन किया होता तो अभी हालमें जो गुण्डाशाहीका दौर-दौरा रहा, वह न रहा होता।

लोगोंको गुण्डोंसे डरकर प्राण बचाने के लिए भागना पड़े, यह एक असह्य स्थिति है। उनमें गुण्डासाहीका हिंसक अथवा अहिंसक प्रतिरोध करने की सामर्थ्य होनी चाहिए। यदि कांग्रेसके सिद्धान्तोंकी मेरी व्याख्या सही है तो कांग्रेस और कांग्रेसजनोंको केवल अहिंसक प्रतिरोध ही करना चाहिए। फिर तो उनका सफल होना निश्चित है। लेकिन हमें जनताको बिलकुल स्पष्ट सन्दोंमें बता देना चाहिए कि डरकर माग खड़ा होना कायरता है। प्रतिरोध करना उनका धमं है — यदि सबसे ठीक यानी अहिंसक मागंसे करने में अक्षम हों तो हिंसक मागंसे भी करना।

कांग्रेसजन सरकारसे या पुलिस या सेनाकी सहायता नहीं माँगेंगे। वस्तुतः सरकारसे सहायता तो वे माँगेंगे जो हिंसक प्रतिरोधमें विश्वास रखते हैं।

कांग्रेसीको ऐसे किसी भी अखाड़ेसे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए जहाँ हिंसक प्रतिरोधका प्रशिक्षण दिया जाता हो। बल्कि वह तो हिंसक प्रतिरोधमें विश्वास रखनेवाले व्यक्तिसे भी कुछ संयमसे काम लेने का अनुरोध करेगा। हिंसक प्रतिरोधमें भी किसी हदतक शालीनताकी गुंजाइश तो है ही। उदाहरणार्थ, किसी निर्वोष ध्यक्तिको निर्मेग हत्या करना बिलकुल निषद्ध होना चाहिए। लोगोंको यह मूल बात याद रखनी चाहिए कि उन्हें किसी भी स्थितिमें कायर अथवा छाचार नहीं बनना है। गुण्डेसे लड़ने के लिए गुण्डा बनने की कोई जरूरत नहीं है। किसीकी पीठमें छुरा मोंककर भाग जानेवाला आदमी कभी वीर नही कहलायेगा।

कांग्रेसीके मनमें पूर्वग्रह हो ही नहीं सकता । इस कारण वह शान्ति स्थापित करने के उद्देश्यसे मुस्लिम लीग, हिन्दू महासमा तथा अन्य संस्थाओं के सदस्यों से मिलने के विशेष प्रयत्न करेगा और उन्हें इस बातके लिए समझा-बुझाकर राजी करेगा कि उनमें चाहे कितने ही राजनीतिक मतमेद क्यों न हों, लेकिन उन्हें परस्पर मिलकर बर्बरताकी स्थितिका अन्त कर देना चाहिए। ये प्रयत्न विफल हो सकते हैं, इस बातकी कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए। कांग्रेसियोंका कर्तंब्य तो यह है कि वे हर किसीसे अपील करें और किसीकी खुशायद न करें।

दंगेके दौरान हुई हानिके लिए कांग्रेस क्षतिपूर्तिकी माँग नहीं करेगी। इससे उसका कोई सरोकार नहीं है। जनताको जो हानि हुई है वह तो होनी ही थी, क्योंकि उसमें आत्म-रक्षा करने की क्षमता न थी; और इसलिए उसे इसका खीमयाजा तो मुगतना ही पड़ेगा। मेरा तो यहाँ तक विश्वास है कि सरकार यदि चाहे तो भी क्षतिग्रस्त लोगोंको पर्याप्त मुक्षावजा नही दिला सकेगी।

मेरे मतमें भैया, सिख या ठाकुरदा लोगोंकी सहायतासे आत्म-रक्षा करने का विचार है। कोई साधारण चौकीदार या दरबान रखना बिछकुल दूसरी बात है। मध्य वर्गके ध्यवसायी लोगोंमें एक भी ऐसा युवक नहीं होना चाहिए जिसे हिंसक या अहिसक ढंगसे आत्म-रक्षा करने की शिक्षा न

मिली हो। आत्म-रक्षाके लिए उक्त वाहरी लोगोंको नौकर रखना गुण्डाशाहीको खत्म करने के बजाय उसे और बढ़ावा देना है।

मुसलमानी टोलोंमें रहनेवाले हिन्दुओंको अपना मुहल्ला छोड़कर मागना नहीं चाहिए, विल्क अपनी जानका खतरा उठाकर भी उन्हें वहीं वने रहना चाहिए। हिन्दू मुहल्लोंमें रहनेवाले मुसलमानोंको वहाँके हिन्दुओंका पूरा संरक्षण मिलना चाहिए।

आजकल दंगेकी जरा-सी अफवाह फैलते ही दुकानें बन्द कर देने का जो चलन हो गया है वह बन्द हो जाना चाहिए और प्रत्येक दुकानदारको हिंसक अथवा अहिंसक उपायसे आत्म-रक्षाके लिए कटिबद्ध रहना चाहिए। यदि उन लोगोंमें इतना साहस आ जायेगा तो नुकसान भी बहुत कम होगा और दंगे-फसाद अतीतकी बात बनकर रह जायेंगे। हमारे देशमें जैसे दंगे होते हैं वैसे दंगे पश्चिममें नहीं होते, हालांकि वहाँ गृह-युद्ध भले हों। कारण यह है कि वहाँ प्रतिव्वन्द्धी दल वरावर की टक्करके होते हैं और वे एक-दूसरेको देखते ही भाग खड़े नहीं होते, और न वे पुलिसकी सहायता माँगते हैं, या उसे स्वीकार करते हैं। वहाँ पुलिसका उपयोग तो केवल चोर-डाकुओंसे बचने के लिए होता है। इस मामलेमें हम बिलकुल बबँर, बल्क पुंसत्वहीन हैं।

सिनितिके सदस्योंके नाम ये हैं: श्री महादेव देसाई — अध्यक्ष; श्री नरहरि परीख — उपाध्यक्ष; श्री मोगीलाल तथा गुलनारीलाल नन्दा — मन्त्री; श्री जीवनलाल दीवान, मृदुला साराभाई, इन्दुमती चिमनलाल, श्री खण्डूमाई देसाई तथा रावजीमाई पटेल।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, २५-५-१९४१

#### १०६. पत्र: देवदास गांघीको

२१ मई, १९४१

चि० देवदास,

महादेवको आज अहमदावाद भेज दिया। वहाँ खासा डर फैला हुआ है। बहुत करके तो महादेव शिमला पहुँच ही जायेगा। तू अगर यहाँ २७ तक रक सका तो वह तुमसे यहीं मिल लेगा, या फिर सीघे शिमलामें। २४ तारीखको बहुत करके तो तुम सबको सेवाग्राममें ही इकट्ठा करूँगा; लेकिन देखूँगा। वा मजेमें होगी। लीलावती वहनसे कहना कि उसका कार्ड मिल गया है। रामदासका पत्र भी मिला है। सब २४ तारीखको मिलेंगे। दुर्गावहन डाक्टरी जाँच कराने बम्बई गई है।

वापूके आशीर्वाद

#### १०७. पत्र: मुन्तालाल गं० शाहको

२१ नई, १९४१

चि० मुन्नालाल,

अच्छा है, तुम वहीं रही। तुम वहाँ पूरी सेवा कर रहे हो, और तुन्हें पोड़ी शांन्ति भी मिछती है। कंचनको तो मिछती ही है। अब तुम तमी आना बह यह स्पष्ट हो जाये कि वहाँ तुम्हारे रहने की जरूरत नहीं है। कंचनसे कहना कभी मुझे छिखे।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीको फोटो-नकछ (सी० हल्ल्यू० ७१३९) से। सौजन्य: मुन्तिखाल ग्रं० वाह

#### १०८. पत्र: पुरातन बुचको

२१ नई, १९४१

चि॰ पूरातन,

पत्र मिला। मैं इसमें सब प्रकारसे सहमत हूँ। ईव्वर तेरी रक्षा करे। वापूके आशोदीद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८१) से

### १०९. भेंट: 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

[२२ मई, १९४१ या उसके पूर्व]

एक विशेष भेंटके दौरान मेरे इस प्रक्षके उत्तरमें कि क्या वे (गांधीजी) ऐसा मामते हैं कि ब्रिटिश सरकार भारतके साथ कोई समझौता नहीं करेगी, और अनि-श्चियकी यही नीति कायम रखेगी, महात्मा गांधीने कहा:

मुझे अफ़सोस है कि इसके उत्तरमें मुझे कहना होगा, 'हाँ'। विलक्षुल; यह उनकी परम्परागत नीति रही है, और लगता है कि आज भी, जब कि वे अपने अस्तित्वके लिए लड़ रहे हैं, वे अपनी इस नीतिमें कोई परिवर्तन नहीं कर रहे हैं या नहीं करेंगे।

यह पूछने पर कि इस युद्धमें जब कि लगता है पहला शिकार नैतिक मूल्योंको ही बनाया गया है, तब क्या कांग्रेसको नैतिक विरोधका प्रदर्शन करके ही सन्तोष कर लेना चाहिए, गांबीजी ने उत्तर दिया:

कांग्रेसके पास नैतिक मूल्योंके सिवा अन्य कोई मूल्य नही है, और नैतिक प्रभावके खलावा कोई प्रमाव नहीं है। यद्यपि यह सही है कि युद्धमें पहला शिकार नैतिक मूल्य ही होते हैं, फिर भी यदि इन मूल्योंका प्रतिनिधित्व करनेवाला कोई जन-संगठन हो तो विजय अन्ततः इन मूल्योंकी ही होगी। और मुझे पूरी उम्मीद है कि कमसे-कम कांग्रेस नैतिक मूल्योंका प्रतिनिधित्व करनेवाला एक ऐसा ही जन-संगठन है। यदि क़ोई मुझसे इसका प्रमाण मांगे तो मैं कोई प्रमाण नहीं दे सकता। समय ही इसे सिद्ध करेगा।

जब मैंने गांधीजी का घ्यान साम्प्रदायिक दंगोंके बारेमें दिये गये वक्तव्यके वैरान कही गई उनकी इस बातकी ओर दिलाया कि शरारत करनेवाले लोग और उसका शिकार होनेवाले वे लोग जो उनका मुकावला नहीं करते, ये सब कांग्रेसके सिद्धान्तों से अप्रभावित है, और फिर भी ये ही लोग हैं जिनकी तावाद कांग्रेसकी सभाओं में सबसे ज्यादा होती है, तो गांधीजी में कहा:

हाँ, मुझे यह बात कहनी पड़ी, क्योंकि कांग्रेस उपद्रवी तत्त्वोको नियन्त्रित करने में सफल नहीं हुई है। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इन तत्त्वोंको शक्तिशाली संगठनोंका समर्थन प्राप्त है या, जैसा कि कुछ लोगोंने संकेत किया है, इन्हें ब्रिटिश अधिकारियोंका प्रोत्साहन प्राप्त है। मुझे इस बातमें किसी भी तरहका सन्देह नहीं है

१. मेंटबार्जाको यह रिपोर्ट दिनांक "नागपुर, २२ मर्द "के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

२. देखिए पूर ३०।

कि जन-मानससे गुण्डागर्दीका डर विल्कुल निकल जाना चाहिए। यह भय हिंसात्मक ढंगसे छोड़ा जाये या लॉहसात्मक ढंगसे, इसे छोड़ने के बाद ही हम दिश्विस सत्तासे विल्क सारे संसारसे अपनी रक्षा कर सकेंगे। सभ्य जीवनकी पहली शर्त यही है कि गुण्डागर्दीको चाहे किसी भी प्रकार क्यों न मड़काया गया हो, जनता उसका सामनाः कर सके।

यह पूछने पर कि क्या यह खबर सही है कि वे सत्याग्रहियोंकी और कोई नई सूची अब स्वीकृत नहीं करेंगे, गांधीजी ने कहा कि जिन स्थानॉपर साम्प्रदायिक दंगोंके कारण तनाव है और जहाँ ऐसे सत्याग्रहियोंकी काफी बड़ी संख्या है जिन्हें गिरफ्तार नहीं किया गया है, वहाँ सत्याग्रह अस्थायी रूपसे स्थगित कर दिया गया है।

इस प्रक्रनके उत्तरमें कि क्या जेलसे रिहा होनेवाले सत्याग्रहियोंसे फिर सत्या-ग्रह करने की अपेक्षा की जायेगी, गांधीजी ने कहा:

जिस चीजकी खातिर सिवनय अवज्ञा की जा रही है, जबतक वह चीज तय नहीं हो जाती, अर्थात् जबतक सिवनय अवज्ञाका लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता, तबतक मेरा खयाल है, जनमें से प्रत्येक व्यक्तिको समय-समयपर जेल जाना होगा।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, २३-५-१९४१

#### ११०. पत्र: भारतन् कुमारप्पाको

सेवाग्राम २२ मई, १९४१

त्रिय भारतन्<sup>१</sup>,

हाँ, जुमारप्पा बेशक साल्ट्स छें — किन्तु कम परिमाणमें। जबतक पीलापन विलकुल दूर नहीं हो जाता तबतक उन्हें कुन्नूरमें ही रहना चाहिए। आवश्यकता हो तो तार मेजना।

ज़हाँतक वस्वई रिपोर्टका सवाल है मैं तुम्हारे सुझावसे सहमत हूँ। सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५४) से

### १११. पत्र: मीराबहनको

२२ मई, १९४१

चि॰ मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला।

लन्दनसे पूछताछ हुई है कि क्या यह खबर सच है कि तुमने मुझसे सारे सम्बन्ध तोड़ लिये हैं और मुझसे दूर रहती हो। इच्छा किस तरह विचारोंको जन्म देती है!

जैसा कि तुम कहती हो, अगर कोई बड़ी चीज होनी होगी, तो वह किसी

तुच्छ दोखनेवाले बहानेसे भी हो सकती है।

तुम्हें पुरुषोत्तमसे अच्छे भजन सीखने चाहिए। तुम जानती हो कि वह लगभग स्वर्गीय पंडितजी जैसा ही अच्छा है। नारणदास जाकर तुमसे मिल ले तो अच्छा

होगा।

तुम अखबारों में जो समाचार पढ़ती हो, उनमें से अधिकांश निरे झूठे होते हैं, जिन्हें विश्वी बढ़ाने के लिए गढ़ लिया जाता है। मैं न अहमदाबाद जा रहा हूँ और न दौरे पर या शिमला ही जा रहा हूँ। फिर भी, इनमें से कोई भी वात हो सकती है, हालाँकि फिलहाल ऐसी कोई उम्मीद नहीं है। परन्तु ये अखबारवाले अब कह देंगे, 'देख लो, हमने ठीक कहा था न'।

बा २४ तारीलको लोटेगी। देवदास आ रहा है और रामदास भी। महादेव अहमदाबाद गया है, वहाँ वह देखेगा कि मेलजोल करवाने में वह कुछ

मदद कर सकता है या नहीं। दुर्गा डाक्टरी जाँचके लिए बम्बई गई है।

युद्धके समाचार सनसनीखेज चल रहे हैं। इंग्लैंडमें हो रही विनाशलीलाके

समाचार हृदय-विदारक है।

संसद्के दोनों भवन, [वेस्टॉमस्टर] ऐवी, कैथीडूल तो अनश्वर प्रतीत होते थे। और अभी भी कोई अन्त नहीं है। इतना सब होने के बावजूद अंग्रेजोंका दर्प अख-ण्डित है। क्या यह अभी भी बहादुरी ही कहलायेगी?

सप्रेम,

बापू

मूळ अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ६४८०) से; सौजन्य: मीराबहन। जी॰ एन॰ ९८७५ से भी

- भीरानहल किखती है: "सेवायाम आश्रम और उसके नारेमें नया किया जाये, इस इस विवयमें नभी भी पत्र-ल्यवहार कर रहे थे।"
  - २. प्रवीत्तमदास गांधी
  - ३. नारायण मोरेश्वर खरे

### ११२. पत्र: मीठूबहन पेटिटको

२२ मई, १९४१

नि॰ मीठूबह्न,

तुम्हारा पत्र मिला। वा दिल्लीमें है। स्वास्थ्यके लिए डाँ० सुशीलासे इलाज कराने गई है। २४ तारीखको वापस आ जायेगी। उसकी तवीयत ठीक हो गई है, हालाँकि कमजोरी अभी है। तुम्हारा पत्र उसके लिए सहेजकर रख्र्या।

तुम्हारा आरोग्य-विभाग अच्छा काम कर रहा जान पड़ता है। बहुतोंको अससे

मदद मिलती है।

तुमने अपनी तवीयतके वारेमें कोई खबर नहीं दी। क्या इससे समझ लें कि तबीयत अच्छी है?

जायजीके पत्रका उद्धरण भेजा, यह बहुत अच्छा किया। उम्दा है। जायजीको लिखना कि मैं उन्हें अक्सर याद करता हूँ। अंग्रेजोंके सद्गुणोंके वारेमें वे जो लिखती हैं, वह सही है, लेकिन वर्णन अधूरा है। हमारे देशमें इन लोगोंकी मदान्यता, तानाशाही और बेशमींसे झूठ वोलने की आदत, ये सव वताते हैं कि इनकी सम्यताके मूलमें इनका स्वार्थ तथा इनकी भोग-लोलुपता है। इतना समझ लेना हमारे लिए जरूरी है। यह जानकर भी हम क्रोच न करें और इनसे मैंत्री वढ़ायें, तव हमारी अहिंसा की शोमा है। ऐसी अहिंसा अभी हम लोगोंमें नही आई है।

वहाँ सब ठीक चल रहा होगा। सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

-गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७१८) से

#### ११३. पत्र: धीरेन्द्रको

सेवाग्राम, वर्धा २२ मई, १९४१

माई धीरेन्द्र,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारी कैंद मैं समझ ही नहीं सका हूं। देखें क्या क्या होता है।

सक्सेनाने वार्तपर निकलने से इन्कार किया सो तो विलक्षल ठीक ही था। लेकिन कोई कोटुंविक भावनाको रोक न सके और वार्तपर भी निकले तो मैं उसकी बर्दाक्त कर लुंगा। लेकिन सही तो यही है कि हम निकलें ही नही। तुम्हारा प्राम उद्योगका इतना अच्छा कामको चलते रहने की कोशिश तो भरसक कस्त्रंगा। लेकिन तुम्हारी जगह तो कौन ले सकता है? सब भगवानके हाथोंमें है। सबको आशीर्वाद।

> बापुके आशीर्वाद मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य : प्यारेलाल

### ११४. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्षा होते हुए २३ मई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

देखता हूँ कि तुमने सुरेन्द्रजीसे कुछ भी नहीं लिया था। क्या लड़िक्योंने कुछ लिया था? यदि अब तुम खानगी ढंगका जीवन विताना चाहते हो तो तुम्हें कोई सार्वजिनक वक्तव्य देने की जरूरत नहीं। अन्नदावाबूके नाम लिखे अपने पत्रकी प्रतिलिप में तुम्हें भेज चुका हूं।

सप्रेम,

बापू

श्री अमृतलाल चटर्जी ४/१, श्यामाचरण डे स्ट्रीट कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३०९)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१. अमृतलाल चटर्जिक अनुसार यह पत्र उनके २० मईके पत्रके उत्तरमें था, जिसमें उन्होंने "गांघीजी के इस आरोपका खण्डन किया था कि उन्होंने सुरेन्द्रजी की मार्फर्त कुछ सामान लिया या।" है खिर्फ "पत्र: अमृतलाल चटर्जिको", पू० ७४ और ८०।

२. देखिए "पत्र: अमृतकाक चटर्जीकी", ए० १०५ मी।

# ११५ पत्र: पृथ्वीसिहको

२३ मई, १९४१

माई पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत मिला। हमारी शिक्षा केवल अहिंसक दृष्टिसे हि होनी चाहिये। इसिलये हम तलवारादि हिंसक हिंथयारोंका उपयोग नींह सिखा सकते हैं लेकिन उसका अहिंसक प्रतिकार अवश्य सिखाते। तलवारका उत्तर तलवारसे देना हिंसक प्रतिकार है। तलवार खुनीके हाथमें से छीन लेना अहिंसक प्रतिकार होगा। उत्तम प्रतिकार यह होगा कि खुनीके पास सर झुकाना और मर जाना। ऐसा प्रतिकारके लिये हमारे क्षमाकी पराकाष्टा होनी चाहिये। ऐसी के लिये व्यायामकी अथवा किसी प्रकारकी शिक्षाकी आवश्यकता नींह रहेगी। व्यायाम शिक्षाका क्षम उन छोगोंके लिये है जिन्होंने डर छोडा नींह है। जो हिंसा अहिंसाका भेद भी पूरा नींह जानते हैं उनको हम अहिंसक व्यायामकी शिक्षा देना चाहते हैं यह कल्पनासे मैं लिख रहा हूं। मेरा ख्याल है कि मैने संक्षेपमें तो सब दे दिया है।

नाथजी औ[र] कि॰ भाई भी इसे देखें और कुछ प्रक्न नीकले तो पूछा

जाय ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६%८)से। सी० डब्ल्यू० २९५९ से भी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

# ११६. भाषण: राष्ट्रीय युवक प्रशिक्षण शिविरमें

वर्षा २३ मई, १९४१

आजकल नैसे तो मुझे सेवापाम छोड़ने की इच्छा हो ही नहीं सकती। अगर सेवापाम छोड़ना चाहूँ तो कई जगहसे बुलावे आते हैं। परन्तु सेवापाममें मेरे पास इतने काम पड़े हैं कि मैं खत्म नहीं कर सकता। इसलिए दूसरी बातोंमें दिलचस्पी छेना मेरे लिए मुमकिन नहीं रह गया है।

#### १. किसोरकाक

् २० वह भाषण इस टिप्पणीके साथ प्रकाशित छुणा था: "२३ मई, १९४१ को रात की ८-२० को वर्षोर्मे ... गांधीजी ने जो भाषण दिया था: उसकी रिपोर्ट अखनारोंमें निकळ चुकी है। परन्तु यहाँ उस व्याख्यानकी प्रमाणित रिपोर्ट की क्लाब्यानकी क्लाब्यानकी प्रमाणित रिपोर्ट की क्लाब्यानकी क्लाब्यानकी क्लाब्यानकी क्लाब्यानकी किलाब्यानकी क्लाब्यानकी क्लाब्यानकी

फिर भी मैंने सोचा कि वर्धामें इतने लड़के आकर रहें और मैं खेलूँ कूदूँ या मजाक न करूँ, यह मुझे अच्छा नहीं लगा। इसलिए मैंने खुद ही कहा कि मैं आ जारुँगा।

बाज तो मेरे दिलमें एक ही चीज भरी है। अहमदाबाद, ढाका, विहार और बम्बईमें जो-कुछ हुआ, उसीसे मैं बिल्कुल भरा हुआ हूँ। अहमदाबादमें फिर उपद्रव शुरू हो। गया। बम्बईमें भी गढ़बड़ है।

में पूछता हूँ कि ऐसे समय पर नौजवानोंका स्थान कहाँ है? हरएक हिन्दु-स्तानीको यह सवाल अपने-आपसे पूछना चाहिए।

, इस विकट परिस्थितिका मुकावला करने के दो ही तरीके हैं — एक तो मारके बदले मारका जगतका पुराना तरीका है। दूसरा एक प्रतिकारका तरीका और है, वह है शान्तिसे मार, खाकर बदला न लेने का तरीका। पहला तरीका सार्वत्रिक समझा जाता है। खतरेसे माग जाना मनुष्यका काम नहीं है। गूँगे जानवर मारे जाने पर मागने लगते हैं। हमें उनके जैसा नहीं बनना चाहिए। हमें तो मर्द की तरह भयका सोमना करते हुए मौका पढ़ने पर जान दे देना ही शोमा देता है।

कांग्रेसने देशके सामने हिंसाका सामना करने का अहिंसक मार्ग पेश किया है। यह अचूक मार्ग है। परन्तु, अगर तुम यह रास्ता नहीं पकड़ सकते, तो आक्रमणकारी से जी-मरकर छड़ छेना तुम्हारा कर्त्तंच्य है। छेकिन याद रखो कि तुम्हें सिर्फ आक्रमणकारीसे निपटना है। निर्दोष व्यक्तियों पर बैर निकालना अमानुष और नामदीं का लक्षण है।

में चाहता हूँ कि तुम अहिंसक ढंगसे और वहादुरीके साथ मर जाने के नये और बेहतर तरीकेको अपनाने की लियाकत हासिल करो। तुम्हें न तो मारके वदले मार देना चाहिए, न अपनी जानके लिए भागना ही चाहिए। पिछले वीस वर्षों हम यह श्रेष्ठ कला सीख रहे हैं और उसका अभ्यास कर रहे हैं। आज वह परिस्थिति है जो हमारे पौरवको और अहिंसक प्रतिकारकी इस नई कलामें हमारी श्रद्धा को चुनौती दे रही है। मैं आशा करता हूँ कि संकटके अवसरों पर इस कलाका प्रयोग करना तुम्हें सिखाया गया है।

आजकी परिस्थिति हर एक कांग्रेसजनको बड़ी सख्त कसौटी पर कस रही है। अगर कांग्रेस आज इस कसौटी पर खरी न उतरी, तो एक राष्ट्रीय संस्थाके नाते जीवित रहने का उसे कोई अधिकार नहीं रहेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि हम अपने-आपसे सच्चे रहें।

सर्वोदय, जून, १९४१

#### ११७. पत्र: अन्नदाशंकर चौधरीको

सेवाग्राम, वर्घा २४ मई, १९४१

प्रिय अन्नदा,

तुम्हारा पत्र मिला। महादेवको वहाँ भेजना वेकार होगा। वहाँ जाकर वह कोई कारगर काम नहीं कर सकता। वह सभी कांग्रेसजनोंका सहयोग नही प्राप्त कर सकता। जहाँतक रिपोटोंका सम्बन्ध है, मेरे पास इस वातका स्वयं निर्णय कर सकने लायक काफी सामग्री इकट्ठी हो गुई है कि नुकसान कितना हुआ है। इस वीमारीसे कैसे निपटा जाये, इसका पता चलाने की जिम्मेदारी कांग्रेसजनों की है। यदि तुम इस समस्यासे निपट सको, तो यह एक सार्थंक कार्य होगा।

> तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य: प्यारेलाल

# ११८. पत्र: सी० ए० तुलपुलेको

२५ मई, १९४१

प्रिय तुलपुले,

जहाँतक में जानता हूँ, पूना-प्रस्ताव हमेशाके लिए खत्म हो चुका है। हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९२०)से

रे. डाका तथा बंगालके अन्य दंगायस्त क्षेत्रोंमें २. देखिर ए० १७।

#### ११९. पत्र: अन्नपूर्णी चि० मेहताको

[२५ मई, १९४१]

चि॰ अन्नपूर्णा,

तेरा पत्र मिला। धीरेनका भी। तुम सब अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखो, ठोस ज्ञान प्राप्त करके उत्तीर्ण हो जाओ। मुन्नालालका बुखार उतर गया है। वा, रुक्ष्मी-बहन, देवदास, रामदास और बच्चे कल आ पहुँचें। लीलावती तो यहाँ है ही। अकबरमाई कल दंगोंमें मदद करने अहमदाबाद गये। तारी और उमियाकी चाबियाँ मिल गई है।

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

अन्तपूर्णाबहन खादी कार्यालय मूल

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४२७) से

१२०. पत्र : अग्निहोत्रीको

सेवाग्राम २५ मई, १९४१

माई अग्निहोत्री,

किशोरलाल पर तुम्हारा खत आया है। मैने पढ़ा। महादेवभाई यहां नहीं है। तुम्हारे खतसे ही सिष्य होता है कि मैने जो शतं लगाई है वह सही है। अगर लोग नये है तो सिष्य होता है कि सत्याग्रहके लायक नही है। अगर रचनात्मक कार्यमें दिलचस्पी नहीं है तो भी वे निकम्मे हैं। ऐसे लोगोंको भेजने से हमको कुछ भी फायदा पहुँचनेवाला नहीं है। इस बारेमें मैं निवेदन निकार्लुगा। उसे पढ़ो और

१. डाकको मुहरपर से

२. तारा मञ्ज्याना

३. उमिला मप्रवाल, शंकरलाल मप्रवालकी पत्नी

वादमें मुझे पुछना है तो पुछो। छोगोंमें निराशा पैदा होवे उसका हम फिकर नहीं करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य: प्यारेलाल

### १२१. पत्र: अता मुहम्मदको

सेवाग्राम २६ मई, १९४१

प्रिय अता मुहम्मद,

इससे पहले कि मैं तुम्हें आने के लिए कहूँ, तुम मुझे पूरी वात लिखकर भेज दो। लेकिन तुम्हारे लिए सबसे अच्छा तो यह होगा कि तुम अहमदाबाद जाओ और वहाँ श्रीं गुलजारीलाल नन्दासे मिलो।

> हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसी। सौजन्य: प्यारेलाल

# १२२. पत्रः अमृतलाल चटर्जीको

२६ मई, १९४१

प्रिय अमृत्तलाल,

्तुम्हारा पत्र मिला। तुममें यही तो बुराई है कि तुम हर कार्यंकर्ताको निकम्मा समझते हो जीर उसके साथ काम करने से इनकार करते हो। यह तुम्हारा एक मर्ज है। यहाँ भी तुम्हें कोई व्यक्ति योग्य नहीं जान पड़ता था। मैं चाहता हूँ कि तुमं विनस्र वनों। किसी भी राष्ट्रीय संस्थामें तुम्हारे छायक काफी काम है। तुम्हें

 अता मुहम्मद गांधीजी से मुळाकात करना चाहते थे और उन्हें "साम्प्रदाणिक दंगोंके मूळ कारणको समाप्त करने के ळिए ठोस और परिपूर्ण तरीका" बताना चाहते थे।

२. अमृतकाल चटलीके अनुसार, गांधीलों को किसे अपने २३ महंके पत्रमें उन्होंने "वंगालकी किसी भी सार्वजनिक संस्थामें काम करने में कठिनाई और अनिच्छा व्यक्त की थी, क्योंकि वहाँ दलगत मतमेद और सता-प्राप्तिके लिए संवर्ष बहुत ही ज्यादा है।"

दूसरोंकी ही तरह सादगी और विनम्नतासे रहना चाहिए। चूड़ियोंका किस्सा तो एक रहस्य बन गया है। मुझे इसकी पड़ताल करनी होगी।

सप्रेम,

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१०) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

# १२३. पत्र: डर्मिला म० मेहताको

२६ मई, १९४१

चि॰ उमि,

तेरा कार्ड मिला। हम सब तो आशा लगाये बैठे थे कि तुम सभी ए८ को यहाँ पहुँच जाओगे। लेकिन कश्मीर तो यहाँकी अपेक्षा अधिक अच्छा है ही। यहाँ तो इस साल अब भी बहुत गर्मी पड़ रही है। अब तो रातमें भी हम लोग तपते हैं। इसलिए अच्छा है कि तुम लोग कश्मीरकी ठंडी हवा खाओ। जब भी तुम आओगे मकान तो तैयार है ही। उसमें किसी अन्य व्यक्तिको नहीं ठहरने दूंगा। मगनने पास होने का निश्चय कर लिया, यह अच्छी बात है।

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १६१५) से । सौजन्य: मंजुला म० मेहता

# १२४. पत्र: डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको

सेवाग्रामं, वर्षा २६ मई, १९४१

माई वैद्य,

मुझे अंग्रेजीमें लिखना रास नहीं आता। तुम्हारे वर्णनमें ही तुम्हारे प्रत्नका उत्तर है। कोई व्यक्ति किसी सुनसान जंगलमें अकेला जा रहा हो और उसकी पीठमें कोई छुरा मोंक दे, तो वह कुछ नहीं कर सकता। लेकिन तुम्हारे वर्णनके अनुसार तो अनेक जगहों पर जहां वस्ती थी, वहां छुरे भोंके गये हैं। ऐसी जगह छुरा भोंकने-वाला सहज ही पकड़ा जा सकता है या मारा जा सकता है, बशर्ते कि लोग कायर

१. देखिए "पत्र: अमृतकाल चटर्जीको ", पृ० ७२-७३।

२. मगनकाल मेहता, समिला मेहताके पिता

न हों। एक निर्दोष व्यक्ति मर गया, इसिल्ए दूसरे निर्दोष व्यक्तिको मारकर बदला लेने से बदला लेना नहीं होता। अज्ञानमें अज्ञान जोड़ने से जोड़में अज्ञान ही हाथ लगता है। तुम खान्त होकर इसपर विचार करना और यदि मैने तस्यको समझने में मूल की हो तो मुझे लिखना। तुम्हें अंग्रेजीमें लिखने की छूट है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७४९)से

# १२५. पत्र: कुँवरजी खे० पारेंखको

[२६ मई, १९४१]

चि॰ कुँवरजी,

नहुत दिनों बाद तुम्हारा कार्ड मिला और यदि सब प्रकारसे तुम्हारी तबीयत ठीक रहती हो तो कुछ पींड बजन कम हो जाने में चिन्ता की कोई बात नही। जुगतराम भाईकी ओरसे पैसे मिल गये हैं। रामी तुम्हारे साथ ही है न? बच्चे मजेमें होंगे। बा परसों आ गई। अच्छी है। देवदास, रामदास और लक्ष्मी भी आये हैं। लक्ष्मी बच्चोंको लेकर मद्रास जा रही है। देवदास कल शिमला जायेगा, रामदास अहमदाबाद।

बापूके आशीर्वाद

श्री कुँवरजी खेतसी पारेख झंडू फार्मेसी दादर, बम्बई-१४

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७४८) से। सी० डब्ल्यू० ७२८ से भी; सौजन्य: नवजीवन ट्रस्ट

१. डाककी मुहरपर से

२. बुँबरजी की परनी, इरिकाल पांचीकी पुत्री

#### १२६. पत्र: ऋषभदास राँकाको

सेवाग्राम २६ मई, १९४१

माई रिषभदास,

तुम्हारा खत मिला। दुःख हुआ। मैने तुम्हारा खत पढ़ा, इतनेमें गिरववरी आ गये। वह नागपुर बैंकके तरफसे मुझे सब खबर देने आये थे। उनके कहने से और ओडिटरके रिपोर्टसे ऐसा पता चलता है कि तुमसे गलतिया हुई है। ऐसा ही है तो नम्रतासे स्वीकार किया जाय। इस हालतमें कनुमाईको एक वक्त नहीं भेजूंगा। जब कुंखें साफ हो जाय तो यहां आकर हिसाब तपास पूरी करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सीजन्य: प्यारेलाल

१२७. पत्र: कृष्णचन्द्रको

२६ मई, १९४१

चि॰ कु॰ चं॰,

तुमारा खत अच्छा नींह लगा। दिलमें जो माव जठे और मुझे वताये सो तो अच्छा हि किया। लेकिन एसे भाव उठे क्यों? जो बातें लिखी हैं सब का शुद्ध निर्णय घीरजसे जि॰ से हि करा सकते थे। एक वखत तुमारा पद जान लिया, पीछे उसे सरलतासे रखना और शोभाना वही तुमारी कछा होनी चाहिये। मैं तो सब बातोंको ठीक कर सकता हूं लेकिन उसमें तुभको लाम नींह हो सकता है। जि॰ तो कहते हैं मुझे व्य० के पदसे हटा दो तो भी मैं राजी हूंगा। कोई व्य० न रहे, सबके सब विभागका वही जवाबदार सबका कोई नींह, यह भी ठोक नहीं है। अब कृद्धे। कि

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९०) से

१. चिमनकाल

<sup>&#</sup>x27; २. व्यवस्थापक

### १२८. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको

सेवाग्राम, वर्षा २६ मई, १९४१

प्रिय भगिनि,

तुम्हारा अच्छा खत मिल पया है। ठक्करवापाने सब हाल लिखे थे। हम आज्ञा करें कि जो हूआ है वह स्थायी हो जायगा। तुमारी तबीयत बिगडनी नींह चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९६) से। सी० डब्ल्यू० ३०९३ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

#### १२९. पत्र: सावित्री बजाजको

सेवाग्राम, वर्षा २६ मई, १९४१

चि॰ सावित्री',

तू प्रथम विभागमें आई है इसिलये तुझे तो बहुत मुबारकबादीयां मिली होगी। मेरे तरफसे चाहिये तो ले सकती है। तेरे प्रथम विभागमें आने से मुझे कोई आरुपर्य नींह है। क्योंकि जो विषय सीखने के थे वे तेरी बुद्धिके लिये कठिन नींह थे। कठिन परीक्षा और हमारे मुलकके लिये कामकी तो चर्खा संघकी है। उसमें सवांगीणता चाहिये। और मैं जिस परीक्षाका उल्लेख करता हूं वह प्रथम परीक्षा है। रसपूर्ण तो है हि। तू वचनका पालन करती होगी।

· यहां तो अंगार सरता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फीडी-नकल (जी० एन० ३०६०) से

### १३०. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम [ २८ मई, १९४१ ]

प्रिय पगली,

अच्छा है कि तुम यहाँकी सड़ी गर्मीसे दूर हो।

मुझे डर था कि तुम्हारे लिए सफर कष्टकर होगा और वैसा ही हुआ। जहाँ तक मुझे याद है, आजके जैसा तार तुम्हें पहले कभी भी भेजना नही पड़ा था। आशा करता हूँ, बम्बईमें सुस्थिर होने के बाद तुम्हें चैन मिला होगा।

साथमें चार पत्र हैं। मैं शिवाजी की लिख रहा हूँ। मेटकाँफका पत्र काफी अच्छा है। यदि कनिषमसे तुम्हारा परिचय है तो उन्हें पत्र लिख सकती हो।

मेरा रक्तचाप काफी स्थिर है - १५४/९२ है; और सुबह भी लगभग इतना ही था।

तुम्हारी जगहपर मदालसा रही। रात अपेक्षाकृत मुख अच्छी थी। सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२२)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३१ से भी

१. डानकी सुहरपर से

२. अमृतकौर एक महिका समामें माग केने के किए नम्मई गई थीं।

३. बिनोबा भावेक साई

४. इरबर बोबी फ्रांसिस मेटकॉफ

५. जॉजै क्रनिंघम, उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्तेके गवर्नर

#### १३१. पत्र: प्रभावतीको

सेवाग्राम, वर्षा २८ मई, १९४१

चि॰ प्रभा,

चम्पारनसे लिखा तेरा पत्र मिला। तू वहाँ अच्छी उलझी हुई है। वा आ गई है। वह अच्छी है। लक्ष्मीयहन मद्रास और महादेव तथा देवदास शिमला चले गये। राजकुमारी स्त्रियोंकी सभामें भाग लेने चार दिनके लिए बन्धई गई है। वहाँ गर्मी यहाँ जैसी ही होगी। यहाँसे ज्यादा तो क्या होगी?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६०)से

१३२. पत्र: प्रभुलालको

२८ मई, १९४१

माई प्रमुलाल,

मेरे आशीर्वाद तो तुम्हें हैं ही। यदि उनसे तुम्हें कोई प्रेरणा मिलती हो, तो उनका उपयोग अवश्य करो। यदि तुम उन्हें पत्रोंमें प्रकाशित करोगे तो समझ छेना कि उनकी प्रेरणा-शक्ति नष्ट हो जायेगी।

बापुके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१३६)से

#### १३३. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा २९ मई, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला था। आश्चर्य है, आज तुम्हारा कोई पत्र नही आया। आशा करता हूँ कि अब तुम्हारे जबड़ेका दर्द मिट गया होगा। यदि न मिटा हो तो जोवराजको दिखा देना चाहिए।

मिणि कल यहाँ का रही है। बा की तबीयत ठीक है। मेरी तबीयत बहुत अच्छे। है। सप्रेम.

बापू

#### [पुनश्च:]

. क्या तुम्हें याद है कि पाकिस्तान-विषयक साहित्य कहाँ एखा हुआ है? कनुने तलाश की किन्तु उसे कुछ नहीं मिला। यदि तुम्हें कुछ अन्दाज हो तो तार भेजो और यह भी बताओं कि तुम्हारे जबड़ेका क्या हाल है।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३२]से मी

१. डॉक्टर जीक्राज मेहता

२. मणिवहन पटेल

#### १३४. पत्र: कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

२९ मई, १९४१

माई मुन्शी,

तुम्हारा निर्मेल पत्र' मिला। कोई हर्ज नहीं जो अंग्रेजीमें लिखा। तुम अपने विचारोंका दमन करो अथवा जो मैं कहूँ उसमें केवल मुँहसे ही में हाँ मिलाओ, यह मुझसे बिलकुल सहन नहीं होगा। यह हम दोनोंके लिए शर्मकी बात होगी।

तुम्हें पूर्ण विचार-स्वातन्त्र्य है। जो लिखना उचित समझो स्वतन्त्रतापूर्वकं लिखो। अगर भूल हो गई हो, तो ऐसा तो है नहीं कि उसे सुघारा नहीं जा सकता। इतना याद रखना कि ऑहंसाकी शिक्त हिंसाकी शिक्तकी अपेक्षा बहुत आगे बढ़ जाती है। यदि यह ठीक है, तो जिसे ऑहंसामें श्रद्धा है, वह क्या कमी हिंसाका सहारा लेगा? जिसमें श्रद्धा नहीं है, उसके लिए तो हिंसा ही धमें है, ऐसा में पहले ही कह चुका हूँ न?

तुम वहाँ बैठे-बैठे यहाँकी चिन्ता मत करो। कौसानी जाकर धवलगिरिके दर्शन करके अपनी आँखें ठंडी करना। आँखोंके लिए ज्यादा ठहरना पड़े, तो जरूर ठहरना। कोई जल्दी नहीं है। तुम अच्छे होकर आजोगे, तव भी यही काम तुम्हें प्रतीक्षा करता मिलेगा। बम्बई छौटो, तब यहाँ जरूर आना।

बापुके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६१)से। सौजन्य: वन्हैयालाल मा० मुन्की

१. देखिए परिशिष्ट २।

२. देखिए "पत्र: भोगीलाल कालाको ", ५० ८१-८३।

रे. क० मा० मुन्झी गांघीजी से १२/१३ जूनको मिछे ये; देखिए "वनतन्य: समाचारपत्रोंको", १५-६-१९४१ ।

#### १३५. पत्र: डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको

२९ मई, १९४१

माई वैद्य,

तुम ठीक समाचार देते रहते हो। कोई भी व्यक्ति चाहे अहिंसाकी पढितिको स्वीकार करे या हिंसाकी पढितिको, लेकिन यदि वह घीरजसे काम लेगा तभी पार उतर सकेगा। हिठलर आदिको कितना घीरज, कितनी घान्ति रखनी पढ़ती होगी, इसकी हम कल्पना भी कैसे कर सकते हैं? छूरेका जवाव छुरा विलक्षुल नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरासीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७५०) से

१३६. पत्र: पुरातन बुचको

२९ मई, १९४१

चि॰ पुरातन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम ठीक काम कर रहे हो। अकवरको क्या काम सौंपा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८२) से

# १३७. पत्र: कृष्णचन्द्रको ;

२९ मई, १९४१

चि० कु० चं०,

अयर मेरा खत' समझ गये हो तो दूसरे दो [प्रश्तों] के उत्तरकी आवृश्यकता निंह रहती है। यहि तो दुःख है कि दोनों अपना काम छोड़ने को तैयार हो। क्या छोड़ोगे? कर्तंक्य या अधिकार? कर्तंक्य तो छुट सकता निंह, अधिकार तो है कहां? जितना कर्तंक्य या अधिकार? कर्तंक्य तो छुट सकता निंह, अधिकार तो है कहां? जितना कर्तंक्यमें समाविष्ट है वह तो छुटता निंह। तदुपरांत तो बोज है। यह वचन दोनोंको, तुमको और चि० को, लागु होता है। चि० व्यवस्थापकर्त्वका अधिकार न भोगे तो वह छुट गये। जितना कर्तंक्यमें भरा है सो तो है। जैसे सुरेन्द्र चोरी करता है तो उसे रोकने के लिये अधिकारका उपयोग होगा हि। वह अपमान करता है वहां अधिकारका उपयोग त्याज्य है। यह दोनों पढ़ो। शायद काफी चीज यों हि सुलक्ष जायगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९१) से

१३८. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम; वर्षा ... [३० सई, १९४१]

चि॰ अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे दुःख है कि जबड़ा अभी भी तुम्हें तकलीफ दे रहा है। तुम हिदायतों का पूरा पालन करना।

आशा है, तुम्हें मेरा कलका पत्र भिल गया होगा।
तुम्हारा प्रस्ताव अपेक्षित स्तरका नहीं है। मिलने पर उसपर चर्चा करेंगे।
यहाँ सब-कुछ ठीक चल रहा है।
सप्रेम,

बापू

मूळ अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२४)से; सौजन्यः अमृतकौर। जी० एन० ७३३३ से भी

१. देखिए ५० ९७।

२. डामकी मुहरपर से

808

#### १३९. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्षा ३० मई, १९४१

त्रिय अमृतलाल,

मैं तुम्हारे पत्र से सन्तुष्ट नहीं हूँ। तुम इतने मोले हो कि तुम्हें कोई जिम्मे-दारीका काम नही दिया जा सकता। लड़िकयाँ तुमसे छल कर रही है। तुम तो उनके पास ही थे। मला सुरेन्द्रने वे सब चीजें हठपूर्वक उन्हें कैसे दे दी कि तुम्हें पता ही न चला? और उन्होंने सुरेन्द्रकी बातका कैसे विश्वास कर लिया? तुम अपने बच्चोंको बिगाड़ रहे हो। उन सब वस्तुओंको लौटाने का या उन्हें वेचने का तुम्हारा प्रस्ताव आश्चर्यजनक है। मैं यह मानने को विलकुल तैयार नहीं हूँ कि लड़िकयाँ उन वस्तुओंका उपयोग करना नहीं चाहती थी। जी-कुछ भी हो, मैं उस सामानका मूल्य नहीं चाहता, क्योंकि तुम्हें कोई कीमत मिलेगी ही नहीं; साथ ही मैं वह सामान मी नही वापस चाहता हूँ।

रही बात अन्नदाबाबूकी, तो उन्हें अपनी जिम्मेदारी पर ही तुम्हें रखना होगा। मुझे कहना पड़ता है कि तुम कोई भी कार्य सुचाक रूपसे कर सकते हो, इसका मुझे कोई मरोसां नहीं है।

तुम मुझे अपने वनतन्यका मसौदा भेज सकते हो। मैं देखूँगा कि मैं उसमें

कुछ सुघारं कर सकता हूँ या नही।

. तुम ऐसा क्यों कहते हो कि मैंने तुम्हें आश्रमके विषयमें, या उसके साथ तुम्हारे सम्बन्धके विषयमें कुछ कहने से मना किया है? तुम कुछ भी कह सकते हो, बचर्ते कि वह सच हो।

खानगी ढंगके जीवनसे मेरा तात्पर्यं था कि तुम अपनी योग्यताके अनुसार कोई भी काम करो। यदि तुम एक देशभक्तकी हैसियतसे खादी-कार्यको हाथमें छेते हो तो इसे मैं खानगी ढंगका जीवन नहीं कहूँगा। छेकिन यदि तुम जीविको-पार्जनके छिए इसे करोगे तो यह खानगी ढंगका काम होगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्स्यू० १०३११)से। सीजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए "पत्र: बमृतलाल चटर्जीको", पु० ५०-५१, ७४, ८० और ८९।

२. अमृतलाल चटर्जीका लकाके दंगोंके सम्बन्धमें एक सार्वजनिक बनतम्य देने का निचार था; देखिए "पत्र: अमृतलाल चटर्जीको", ए० ८९।

### १४०. पत्र: वीणा चटर्जी और आभा चटर्जीको

३० मई, १९४१

चि॰ वीणा और आमा,

तुम्हारा खत झूटसे भरा है, पिताजी तुमारे पास थे और उनको पूछा तक नहीं? इतना भी सत्य निंह बोल सकती है कि चीज पसंद थी और ली।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०३१२)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१४१. पत्र: कृष्णचन्द्रको

३० मई, १९४१

चि० कु० चं०,

तुमारी चिट्ठी पढ़ ली। कष्ट तो है। जो साधन मिले उसीसे काम निकालना है इसमें बृद्धिकी परीक्षा होगी। कामका बटबारा ऐसे किया जाये जिससे अनिश्चित लोगोंसे भी काम लिया जाय। लड़ाईयोंमें ऐसे हि चलता है। सबको ऐसी शिक्षा मिलती है कि आरामसे कोई भी आदमी काम कर सके। मैं इसमें कोई आपित्त नहिं पाता हूं। आवश्यकता हो तो मेरे साथ बात कर ली।

बलवंतर्सिह मुझे नेमाजी बताते थे। उनकी संतीष दे सकते हो तो देना, अन्यया

मुझे बताना यह क्या है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९२) से

# १४२. पत्र: लक्ष्मी सत्यमूर्तिको

३१ मई, १९४१

प्रिय लक्ष्मी<sup>१</sup>,

हाँ, मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले थे। काश, तुम अपने अगले पत्रमें मुझे यह वता सको कि पिताजी दवाओं की मदद लिये बिना ही ठीकसे सो सके हैं। आशा है, तुम और माँ दोनों अच्छी हो।

सत्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजीसे: एस० सत्यमूर्ति पेपसे; सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालया। सी० डब्ल्यू० १०३१३ से भी; सौजन्य: तमिलनाडु सरकार

#### १४३. पत्र: मार्गरेट जोन्सको<sup>8</sup>

३१ मई, १९४१

त्रिय कमला,

. गांधीजो के नाम लिखा आपका पत्र मिला। वे चाहते हैं कि आप उनको ठीक-ठीक बतायें कि आपको कौन-सा चर्म-रोग है। वे यह भी कहते हैं कि आप अपने हैं लिए आटा खरीदकर स्वयं ही पावरोटी या चपाती क्यों नहीं बना सकतीं? यह हैं तो आपको कर सकना चाहिए।

आपके दूसरे प्रश्नका उत्तर यह है कि लोगोंसे परिचय प्राप्त करने अथवा उनसे सम्बन्ध-विच्छेद करने के लिए आपको अपनी ओरसे कोई विशेष प्रयत्न नहीं करनार्ट्सचाहिए। जो-कुछ स्वयमेव आपके सामने आता चले उसे स्वीकार करें और

र. पस॰ सत्यमृतिकी पुत्री

२. एक॰ मेरी बार किखती हैं: "कमकाने महमें पत्र किखा या कि उसे चमैरीग हो गया है और गांधीजी से सकाह माँगी बी कि बनेक मित्रोंने उसके किए पूर्णंतः अपरिचित जिन कोगोंके पते दिये हैं उनसे जाकर वह मिळे या न मिळे। ऐसी एक मुकाकातके बाद उसे ऐसी मुकाकातोंकी उपयोगिता पर सन्देह हो गया था। गांधीजी ने अपने एक सेकेटरी हारा पह उत्तर मेजा था।" देखिए "पत्र: मागैरेट जोन्सको", ए॰ २९ मी।

लोगोंको कुछ भी शिक्षा देने का मौका ढूंड्ने या उसकी प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। आपका जीवन ही आपका सन्देश होना चाहिए। . . . .

[अंग्रेजीसे]

बायू -- कन्वसेंशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, पृ० १९२

#### १४४. पत्र: मार्गरेट जोन्सको

३१ मई, १९४१

त्रिय कमला,

तुम फिसल गईं, यह शरारतका काम किया। आशा है, तुम शीघ्र ही ठीक हो जाओगी। राजकुमारी बम्बईमे है। वह तुमसे मिलने जा पाती तो अच्छा होता। सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

बापू - कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांघी, पृ० १९३

#### १४५. पत्र: चन्देलको

३१ मई, १९४१

माई चन्देल,

कमलाको चोट लगने की खबर देकर तुमने ठीक किया। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि तुम्हारे काममें प्रगति हो रही है। . . . !

[अंग्रेजीसे]

बापू -- कन्वसेंझन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, पू० १९३

१. सामन-सूत्रमें इसके बादका अंश छूटा हुआ है।

२. देखिए पिछ्छा शीर्षक मी।

३. साधन-पुत्रमें जागेका अंश छूटा हुआ है।

#### १४६. पत्रः वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम ३१ मई, १९४१

माई वल्लमभाई,

मणिबहुन कल आई। वह दुबली तो खूब हो गई है। तिसपर भी मैं तो उसे तुरन्त वापस मेज देता, परन्तु मैं मानता हूँ कि अहमदावादमें वह वहुत काम कर सकेगी। इसलिए मैंने उसे वहाँ जाने को कहा है। दो-तीन दिन वम्बईमें रह लेगी।

मणि कहती है कि महिला-वार्डमें पासानोंकी स्थित असह। है। तुम्हें उस बारेमें वहाँ लड़ना चाहिए। इसमें मुझे खर्चकी बात कम और लापरवाही अथवा आलस ही ज्यादा दिखाई देता है। मुझे लगता है कि तुम विवेकपूर्वक वीचमें पड़कर सुघार करा सकीगे। मणि कहती है कि हंसाबहनने जो लिखा है वह अपर्याप्त है।

दंगोंसे तुम्हें जरा भी चिन्ता नहीं होनी चाहिए। जो होना है सो होगा। मैं तो मानता हूँ कि गृह-युद्ध ही शुरू हो गया है। देखना है कि वह हम सबको कहाँ तक छे जाता है। इसमें किसीका कोई वश नहीं चछनेवाछा है। मैं तो विछकुछ निश्चिन्त बैठा हूँ। मैं अपनी शक्तिके अनुसार लोगोंका मार्गदर्शन कर रहा हूँ। जरूरत हुई तो मैं अहमदाबाद या बंम्बई या अन्यत्र भी जाऊँगा।

विजय तो अन्ततः सत्य और बहिंसाकी ही होगी। सत्य और बहिंसा हममें

है या नहीं, इसका पता चल जायेगा।

बापूके आशोर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० २४८

१४७. पत्र : घनश्यामदास बिङ्लाको

.३१ मई, १९४१

माई घनश्यामदास,

तुमारा पत्र और साथका मैं पढ़ गया हूं। ऐसी बातोंका हम खयाल तक न करें। मैं तो उस पर कुछ भी नींह करना चाहता हूं। हां, अंतमें तो भगवान होने देगा वही होगा। तो हम चिन्ता क्यों करें? जो साववानी रखनी चाहिये, रखें; डर छोड़ें। मुझे गुरखा ६० रखने से संतोष नींह होता है। उनको रखे लेकिन सव

१. व्यमिप्राय चेक मेजने से है। २. इसा मेहता डर छोड़ें बौर हिंसासे या बहिसासे रक्षा करना सीखें। परवश - रहकर - हम मर बायेंगे। छोग डरपोक हैं। इसिल्ये ऐसी वातोंसे डर जाते हैं और डरानेवाछे तो जगतमें पड़े हि हैं। इस मौके पर तुमको मेरी यह सलाह है कि हर प्रकारका डर छोड़ें और दूसरोंको डर छोड़ने का कहा जाय। ऐसे हुल्लड़ चलते हि रहेंगे और बड़ेंगे। हां मिट सकते हैं अगर हिन्दु सच्ची तरह वहादुर वनें। ऐसी वहादुरी एक दो दिनमें नहीं आ सकती है। ऐसी आपत्तिको समजकर उसका सामना कर सकें तो हम सुरक्षित वन सकते हैं। हमारे लोग नीति भी छोड़ते है वह मुझे चुमता है। कमजोर नीति कैसे रखें।

महादेव दिल्ली पहोंचेगा।

वापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४३)से। सीजन्य: घनश्यामदास विङ्ला

१४८. पत्र: अन्नाहमको

सेवाग्राम, वर्वा [ मई/जून, १९४१ ]

प्रिय डॉ॰ अन्नाहम,

इसके साथ आपके पत्रके सम्बन्धमें प्राप्त रिपोर्टकी नकल मेल रहा हूँ। यदि तथ्योंके वारेमें मतभेद है, तो यह खेदकी वात होगी। सम्भव है कि दंगेका कारण धार्मिक होने के वजाय आर्थिक ही हो। लेकिन आप अपनी सुविचारित राय मुझे मेजें।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

 साधन-ध्वमें इस पत्रको १९४१ के प्रतेकि साथ रखा गया है। मार्च और अप्रैक्नें टाका, अहमदाबाद और वम्बईमें दंगे हुक हो गये थे। पत्रके पाउसे माळ्स होता है कि वह मई या जूनमें किला गया होगा।

#### १४९. पत्र: डी० के० गोसावीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए १ जून, १९४१

त्रिय गोसाबी,

हमारी बातचीत प्रकाशनार्थं नहीं थी। उसमें सं कुछ तो प्रकाशित हं। चुका है। ऐसा नहीं होना चाहिए था। मैं मराठी अच्छी तरहसे नहीं समझता। लेकिन जहाँतक मुझे तुम्हारी टिप्पणियाँ समझमें आई हैं, उनमें मेरे उत्तरोंको सही ढंगसे प्रस्तुत किया गया है। तथापि बेहतर यहीं होगा कि मैं बातचीतका पूरा विवरण इस रूपमें रखूँ कि वह प्रकाशनके लिए ठीक रहे।

यदि समाजनादी मित्रों तथा अन्य लोगोंको मेरे द्वारा लगाये गये प्रतिवन्धों पर आपत्ति है तो वे निःसन्देह स्वतन्त्र रूपसे कार्रवाई कर सकते हैं। ऐसा वे कांग्रेसमें त्यागपत्र देकर कर सकते हैं। कांग्रेसमें रहते हुए यदि वे स्वतन्त्र रूपसे कोई कार्रवाई करते हैं तो यह विद्रोह होगा। लेकिन यदि अपने विद्रोहमें वे कांग्रेसियोंके अधिकांशको अपने साथ ले लेते हैं तो उनका विद्रोह न्यायोचित उहरेगा। इस तरह तुम देखोगे कि मेरे निर्देश एक भी व्यक्तिकी स्वतन्त्रतामें किसी भी प्रकार वाधक नहीं है।

दो चन्द तुम्हारे बारेमें। तुम्हारी स्थिति क्या है? मुझे लगता है कि मैने जो प्रतिबन्ध सुझाये हैं वे स्वयं तुम्हें भी पसन्द नही है। यदि ऐसा है तो तुम महाराष्ट्रमें सफल नहीं होगे। तुम संघर्षको यन्त्रवत् जारी नही रख सकोगे। तुम्हे पूर्ण आस्था और उस आस्थासे उत्पन्न दृढ़ताके साथ कार्यक्रमपर अमल करना होगा।

यदि मैंने तुम्हें गलत समझा है, तो तुम्हारे वारेमें मैंने जो-कुछ लिखा है। उसे न लिखा हुआ ही समझना।

> हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांधी

[ पुनश्च : ]

यदि तुम मुझसे फिर मिलकर बातचीत करना जरूरी समझो तो तुम आ सकते हो।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२३२) से

१. देखिष पृ॰ ६८-७१।

## १५०. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

१ जून, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

मुझसे बात करनी हो, तो कल कर सकोगे। आज मैने मौन घारण किया है। फिर भो बिना बोले बता सकता हूँ। घनुष तकली बाँसकी बनाओ, और मैं छातेकी तीली मेंगवाता हूँ, उससे तकुआ बनाओ। यह काम तुमसे जितना करते बने, उतना करो। काम सरल है, इससे शिक्षण भी मिलेगा। परीक्षाकी बात तो इस समय मूल ही गये लगते हो। दोनों साथ ही देनी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९९)से। सी० डब्ल्यू० ७१४० से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

#### १५१. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

सेवाग्राम, वर्घा . १ जून, १९४१

भाई वेपारी,

'हरिजन' के हिसाबके निरीक्षणका काम कबतक पूरा होने की सम्भावना है? अगर तुम्हारा स्वास्थ्य साथ दे, तो मेरी इच्छा है कि यह काम झटपट कर डालो। बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

२ जून, १९४१

यह पत्र कल लिखा गया था, डाक निकल जाने के बाद। तुम्हारा पत्र आज मिला। मेरी इच्छा तो है कि अगर तुम मुझे पुस्तकोंका हिसाव लिख मेजो, तो बाकीका काम मैं कर लूँ, क्योंकि आखिर हिसाबकी जाँच तो मुझे करनी ही पड़ेगी।

्बापू

नटवरलाल जे॰ वेपारी ३६१, हॉर्नेबी रोड बम्बई-१

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०११९) से

#### १५२. पत्र: मार्गरेट जोन्सको

सेवाग्राम, वर्वा २ जून, १९४१

प्रिय कमला,

तुम्हारी दुर्घटनाकी खबर सुनकर मैंने तुम्हें अस्पतालके पते पर पत्र लिखा था, लेकिन देखता हूँ कि तुम अपनी पुरानी जगह पर ही हो। हाँ, जब तुम आना चाहो तब आ सकती हो और यहाँ जबतक रक सको तबतक रक सकती हो। जितनी मददकी जरूरत होगी वह सब तुम्हें मिलेगी।

सत्रेम,

वापू

[अंग्रेजीसे] बापू — कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांधी, प्० १९४

## १५३. पत्र: महेन्द्रप्रसादको

२ जून, १९४१

भाईश्री महेन्द्रप्रसाद,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं आशा करता हूँ कि ४ तारीख निर्विष्म वीत जायेगी। तुम्हारा और तुम जैसोंका धर्म स्पष्ट है। सुम्हें तो अपनी जानको जोखिममें डाल कर भी दोनों पर्सोको शान्त रहने के लिए समझाना चाहिए। ऐसा करते-करते हम सही स्थितिपर पहुँच जायेंगे। इतना निश्चित है कि किसीको भी कायर मही बनना है।

वापूके आशीर्वाद

पुनश्च :

मुझे पूरी जानकारी देते रहना। गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१)से

१. देखिए ५०१०८।

#### १५४. पत्र: कृष्णचन्द्रको

३ जून, १९४१

चि० कु० चं०,

आज कल तो कुएका पानी करीब २ स्वच्छ ही रहता है तो कोई हरज नहीं हैं। जब बारीश शुरू होगा तब देखना होगा।

ं जानकी बहिनके फलका तो जितना हिसाव आसानीसे रखा जा सकता है रखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९३)से

## १५५. पत्र: घनश्यामदास बिङ्लाको

४ जून, १९४१

भाई घनश्यामदास,

मेरे मन पर उस पत्रका कोई असर नींह पड़ा क्योंकि मुझको उसमें कोई नया अनुभव नींह था। मैं उस वारेमें कुछ लिखता भी तो एक मौका और जूठ वनाने का मैं उनको देता और फायदा कुछ नींह। सिद्धांत तो है हि कि अपना कर्तेव्यको छोड़कर हम और झनझटमें न पढ़ें। लेकिन मेर अनिच्छाके साथ सिद्धातना कोई संबंध नींहें था।

कळकत्तेमें कुछ भयभीतता निह है सुनकर मुझे आनन्द होता है। यह अमयके पीछे अगर प्रतिकार करने में मर्यादा है तो बहूत संतोषजनक बात है। हुल्लड़ादि तो शायद बढ़ेंगे। दोनोंमें एक भी मर्यादाके बाहर न जाय तो अच्छा होगा। अन्यथा देशका कल्याण निह, हो सकता है। आजसे हवा बदली है। ठंडा वायु शह हुआ है।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४४) से। सीजन्य: घनश्यामदास विड्ला

#### १५६. पत्र: फरीद अन्सारीको

सेवाग्राम, वर्घा, सी० पी० ४ जून, १९४१

प्रिय फरीद,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमपर जो दु:ख आ पड़ा है वह तो हम सवका है। तथापि मुझे उम्मीद है कि तुम्हारी माँ वीमारीसे छुटकारा पा गई होंगी। वेशक, कोई मी पत्र अपनी वीमार माँसे अलग नहीं रहना चाहेगा।

तथ्य तो यह है कि वे बहुतोंके एक निस्वार्थ मित्र और मार्गदर्शक थे। ऐसी थी उनकी नेकदिली। भगवान करे कि उनकी रूह हमें वल प्रदान करे और ऐसा आचरण करने की सामर्थ्य दे जो उनके योग्य हो।

तुम व्यर्थ ही मुझसे सात्वना और शक्ति चाहते हो। मुझमें उनकी जैसी महान् चिकित्सा-योग्यता नही है और वे तुम लोगों को जितनी अच्छी तरह जानते थे उतनी अच्छी तरह मैं नहीं जानता। लेकिन मैं जानता हूँ कि ईश्वरने तुम्हें वियोग सह सकने लायक शक्ति और साहस दिया है।

यहाँ भी बहुत ज्यादा गर्मी रही है। रात-दिन लू चलती रहती थी। आज

हवामें थोडी ठंडक आ गई लगती है।

तुम्हें मालूम होगा कि स्वास्थ्य खराव होने के कारण जमनालालजी रिहा कर दिये गये हैं। उनका वजन काफी घट गया है, लेकिन उन्होंने जान-बूझकर वजन घटाया है। सवाल यह है कि वे गिंडियेसे छुटकारा पा सकेंगे या नहीं। वे सेवाग्राममें रहकर वही पथ्य ले रहे हैं जो उन्हें जेलमें दिया जा रहा था। वेशक, चिन्ता करने का कोई कारण नहीं है।

क्षमी भी शौकत' क्या उसी जगह पर है? अगली बार जब मुझे पत्र लिखो तो उनका पता लिख भेजना। वह और जोहरा दोनों बहुत नटखट हो गये है। वे मुझे कभी भी पत्र नहीं लिखते। आशा है शौकतका काम ठीक चल रहा होगा।

डाँ॰ गोपीचन्दके यहाँ जल्दी ही आने की सम्भावना है।

३. शौकत अन्सारी, जोहराके पति

१. सम्द्र ही पहाँ कुछ शब्द या बावय छूट गये हैं।

२. डॉ॰ मु॰ अ॰ अन्सारी

४. गोपीचन्द भार्येव, पंजाबके एक प्रमुख कांग्रेसी नेता जो देश-विमाजनके बाद पंजाबके मुस्य-मन्त्री (१९४७-५१) भी रहे हैं।

ब्रजक्वष्णकी चन्द सतरें पढ़कर खुशी हुई। उसे कब्जसे छुटकारा पाना चाहिए। मुझे सत्यवतीका पत्र पहले कभी मिला था, लेकिन काफी दिनोंसे उसने चुप्पी साघ रखी है।

तुम सबको प्यार।

बापू (मो० क० गांघी)

[पुनश्चः]

५ जून, १९४१

यह पत्र कर रात लिखा गया था और ब्रजक्वरणका दुःखद सन्देश आज सबेरे मिला। मैंने तुम्हें एक तार भेजा है। उम्मीद है कि वह मिल गया होगा। जीवनकी गति ऐसी ही है। मृत्युके बिना जीवन सम्भव नहीं है। हमें उस दैवी नियमके आगे सिर शुकाना ही है जो किसीको भी नहीं छोड़ता। ईश्वर तुम्हें पूर्ण शान्ति और बल दे।

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०३७३)से

# १५७ पत्र: शुएब कुरैशीको

सेवाग्राम, वर्घा ५ जून, १९४१

प्रिय शुएब,

.मैं मानता हूँ कि दंगोंके सम्बन्धमें दिये गये मेरे वक्तव्यों तुमने देखे होंगे।
मुसलमान पत्र-लेखकोंने उनकी बड़ी कड़ी आलोचना की है। मैं अपने वक्तव्योंपर
पुम्हारी प्रतिक्रिया जानना चाहूँगा। यदि तुमने उन्हें नहीं पढ़ा है तो मैं उनकी कतरने
लेकर तुम्हें भेज दूँगा। मैंने यह जो कहा कि ढाका और अहमदाबादमें दंगोंकी शुरुआत
मुस्लिम गुण्डोंने की, उसपर विशेष रूपसे रोज प्रकट किया गया है। मैं जानना चाहूँगा कि
उसके बारेमें तुम क्या कहते हो। सबसे ज्यादा कष्ट तो मुझे छुरेबाजी और ऐसी
अन्य अशोमनीय घटनाओंसे होता है। विभिन्न दलों और जातियोंमें चाहे कैसे भी

१. चार् उपलब्ध नहीं है। 🗸

२. पत्रमें बादमें चोड़ा गया धंशं ब्रक्तकण चाँदीवाला पेपसैमें उपलब्द मूलकी फोटो-नकलसे लिया गया है।

३. देखिए पूर्व ३०-३३ और ४०-४२।

राजनीतिक मतभेद क्यों न हों, लेकिन हमें इस वातकी जमकर कोशिय करनी चाहिए कि लोग जंगलियों की तरह व्यवहार न करें।

पहले तो मैंने जाकिर' और ख्वाजा, दोनोंको एक साथ लिखने की बात सोची थी। लेकिन जब मैंने लिखना शुरू किया तो मुझे लगा कि पहले मैं केवल तुम्हीको पत्र लिख्गा।

मैं जानता हूँ कि तुम अपने दिलकी सारी बात मुझे खोलकर लिखोगे। सप्रेम,

वापू

[अंग्रेजीसे]

मध्यप्रदेश और गांधीजी, पृ० १२८ और १२९ के वीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

### १५८. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

सेवाग्राम, वर्धा ५ जून, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

े : तुम्हारी चिट्ठीका जवाब देना रोज रह जाता था। वैसे कुछ खास कहने को नहीं था। यदि इस समय तुम चनुष-तकलीकी आराधना करो और उसे बनाना भी सीख लो, तो बहुत अच्छा हो। उससे धान्तिके साथ-साथ ज्ञान प्राप्त होगा और दिस्तारायणकी सेवा तो होगी ही। बादमें दोनों परीक्षाएँ तो एकसाथ देनी ही है। सुशीला बहनके आने के बाद कंचनको वालोड या बंगलौर भेज देंगे। वैसे उसकी इच्छा तो जबतंक तुम पूर्ण सशक्त न हो जाओ, यही रहने की है। उसका मन जरा भी मत दुखाना। वह बच्ची है, तुम सयाने हो और तुमने संसार देखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९७) से। सी० डब्ल्यू० ७१४१ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

## १५९. उत्तर: 'हिन्दू' के संवाददाताको'

७ जून, १९४१

प्वोन्द्रनाथ ठाकुरके उत्तर<sup>के</sup> के बाद क्या मुझे कुछ कहना चाहिए? कुछ नहीं कहना चाहिए।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, ९-६-१९४१

#### १६०. पत्र: डी० के० गोसावीको

सेवाग्राम, वर्वा होते हुए ८ जून, १९४१

त्रिय गोसावी,

मुझे आपका बिलकुल साफ और खरा पत्र मिला। उसमें शक करने-जैसी कोई बात नहीं थी। लेकिन चूँकि आपने अपने पत्रमें अथवा हमारी आपसी बातचीतमें अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं की थी, इसलिए मुझे उसके वारेमें पता तो लगाना ही था। प्रोफेसर लिमये और अन्य लोगोंके साथ आपके होने की बात मुझे अच्छी तरह याद है। आपने मुझे जो आष्वासन दिया है उसपर मुझे विश्वास है और जिन मित्रोंका आपने जिक्ष किया है उनसे उसकी पुष्टि कराने की मुझे कोई आवश्यकता नही है।

रै. भारतीय मित्रोंके नाम अपने एक खुळे पत्रमें ब्रिटेनकी एक संसद-सदस्या, कुमारी एडिनर रैयनोन ने कहा था कि हमारे अधिकांश ब्रिटिश मित्र इस प्रवनपर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं कि वर्तमान भारतीय गतिरोधके छिए ब्रिटिश सरकार कहाँतक जिम्मेदार है और इसे दूर करने के छिए वे क्या कर सकते हैं। उनके इस रवैयेसे चूँकि असहयोगी भारतीयोंके इस अममें पढ़ जाने का खतरा है कि प्रगतिशोक विचार के सभी अंग्रेज उन्होंकी तरह सारा दोष ब्रिटिश सत्तापारियों को ही देते हैं, अतः उन्होंने इसके विपरीत रास्ता अपनाया है और उनकी दृष्टिमें जो नार्ते असहयोगियोंके विख्य जारी हैं उन्हों प्रस्तुत करके वह उस्तीरका दूसरा पहलू उजागर करने की कोशिश कर रही हैं। हिन्दू के संवादस्ता ने गांधीजी से पूछा था कि कथा वे कुठ रैयनोन के प्रश्नर कुछ कहना चाहेंगे।

२. दिनांक ४ जून, १९४१ का; देखिए परिशिष्ट ३।

रे. १५ महेंको; देखिए ए० ६८-७१।

में प्रश्नों और उत्तरोंमें संशोधन करके लीटा रहा हूँ। आप चाहें तो उन्हें प्रकाशित कर सकते हैं।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२३३) से

#### १६१ पत्रः कवरलाल शर्माको

सेवाग्राम ८ जून, १९४१

प्रिय कँवरलाल,

यदि आप चाहें तो छड़ सकते हैं, लेकिन मेरी सलाह है कि न लड़ें। हूदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सीजन्य: प्यारेलाल

#### १६२. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम ९ जून, १९४१

एक मुस्लिम परिवारको, जिसमें तीन सालकी एक वच्ची भी शामिल थी, अकारण ही नृशंस हत्या किये जाने के सरकारी विवरणको मैने शमं और दुःखके साथ एक बार नहीं, बार-बार पढ़ा है। हालाँकि विहारमें साम्प्रदायिक शान्ति वनाये रखने की दिशामें राजेन्द्रवाबू शानदार काम कर रहे हैं, फिर भी ऐसे नृशंस अपराधके वारेमें मैं अपनी राय व्यक्त किये विना नहीं रह सकता। अपराधियोंने, वे जो भी हों, अपने इस कार्यसे न तो अपना, न अपने धर्मका — यदि उनका कोई धर्म है तो — और न अपने देशका ही कोई हित किया है। मैं जो वात कह रहा हूँ उसका अहिंसा-सम्बन्धी मेरे विचारोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है। मेरा कहना है कि किसी भी आधारपर, यहाँतक कि हिसाके आधारपर भी, ऐसी हत्याओंको उचित नहीं ठहराया जा सकता। यदि

 क्रॅब्ट्लाक शर्माको सरवाग्रह करने के कारण डेढ़ वर्षकी कैदकी सजा हुई थी। उन्होंने भारत
 रहा कानून के अन्तर्गत अपनी वकालतका काइसेंस रह हो जाने के मामकेमें गांधीजी से धनकी राष्ट्र माँगी थी। ऐसी हत्याएँ व्यापक पैमाने पर होने लगेंगी तो हमारा यह सुन्दर देश वर्वर वन जायेगा और देशके लिए स्वाधीनता प्राप्त कर सकना असम्भव हो जायेगा। कोई भी सरकार ऐसे अपराधोंसे निपट नहीं सकती। सरकार तो केवल घटना हो जाने के बाद ही अपराधियोंको सजा दे सकती है और वह भी तव जब उनका पता चले। अपराधियोंका पता चल जाने पर उनकी मिलनेवाला दण्ड भी सम्भवतः उतना ही विवेकशून्य और वर्वर होगा जितना कि उनका अपराध था। इसलिए मैं पूरे जोरके साथ अपराधियोंको यह सलाह दूँगा कि वे बिना किसी शर्तके अधिकारियोंके सामने आत्म-समर्पण कर दें और अधिकारी जो दण्ड देना चाहें उसे भोगें। पश्चातापके उनके इस कायंसे, मले ही यह देरसे ही किया गया कार्य हो, उन्होंने जो गम्भीर अपराध किया है उसका कुछ हदतक प्रतिकार हो जायेगा। उन्होंने अपने इस अपराधके द्वारा अपने धर्मके और अपने देशके मुँहपर जो कालिख लगाई है वह कुछ हदतक युल जायेगी। यदि वे अपना अपराध साफ और खुले दिलसे स्वीकार कर लेते है तो यह लोगोंके सामने एक अच्छा उदाहरण होगा और हो संकता है कि आगे ऐसी वर्वरतापूर्ण घटनाएँ फिर न हों।

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० भा० कां० कमेटी फाइल, १९४१। सीजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

#### १६३. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

९ जून, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे भेजे कागजात चन्द्रशंकरको भेज रहा हूँ और

लिख रहा हूँ कि अपना उत्तर तुरन्त भेजे।

मैं देखता हूँ, चन्द्रशंकरको तुम्हारी निष्पक्षतामें विश्वास नहीं रहा। वह महादेवको और कभी-कभी मुझे भी शिकायतके पत्र लिखता रहता है। लेकिन वे पत्र तुम्हों मेजकर तुम्हारा वक्त खराब करने की मैंने जरूरत नहीं समझीं। मैंने उसे लिख दिया है कि अन्तिम निर्णय तो मुझे ही करना पड़ेगा और तुम्हारी रिपोर्टमें तो केवल आँकड़े ही रहेंगे।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ १०१२०) से

## १६४. पत्र: डॉ० युद्धवीर सिंहकी

९ जून, १९४१

माई युद्धवीर,

तुम्हारा खत मिला। मैं तो विद्यार्थियोंका झगडा तटस्थतांस और दु.खके साथ देख रहा हूं। इसिलये न मैं संदेशा मेज सकता हूं न किसी नेताको। और इसीमें विद्यार्थी वर्गका मला है। आप लोगोंको आपसमें ही झगडा तय करना है। किस तरहसे हो सकता है वह तो मैंने सत्याग्रहका निष्पण करके बता दिया है। दुवंलतासे कुछ न किया जाय, वैरमावसे कभी नहीं, सत्ता पाने के लिये भी नहीं। सिक्रय राजकारणसे अलग रहें। ऐसी वाते याद रख कर थोडे विद्यार्थी भी काम करें तो अंतमें दूसरे उनके साथ होंगे।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

# १६५. पुर्जा: कृष्णचन्द्रको

९ जून, १९४१

खानेमें मेरे नींह आने से सबको दुःख हुआ होगा। सचमुच दुःखका कारण हि नींह। मेरी मूर्खता या अज्ञानके कारण थोडासा मरडा हो गया है। योडासा बुखार है। सुबीलाबहनकी मनाई न रहती तो मैं आरामसे खानाघरमें आ सकता था। परंतु मैं तो दाक्तरोंकी बातका यथा संभव पालन करनेवाला हूं। कोई चिंता न करे।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९४)से

दिल्लीके एक कांग्रेसी कार्यकर्ता, जो कुछ समयतक दिल्ली राज्यके खारथ्य-मन्त्री भी रहे।
 पेटमें मरोड़

### १६६. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

१० जून, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र व्यानपूर्वंक पढ़ गया। कंचनके साथ रहा ही नहीं जा सकता, ऐसा निश्चय न करो तो काफी होगा। सुशीला छुट्टी दे दे, तो वह वालोड चली जाये। पीहरमें रहने का मन होना स्वाभाविक है। अब इसकी खास जरूरत नहीं है कि वह तुम्हारे साथ रहे। तुम यहाँ रहो और जो करते बने सो करो। तुम्हें अपने विचारों को परिपक्व बनाना चाहिए और झान्ति बनाये रखनी चाहिए। संयमका पालन करके शरीरको मजबूत बना लेना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९६)से। सी० डब्ल्यू० ७१४२ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० ज्ञाह

#### १६७. पत्र: मार्गरेट स्पीगलको

सेवाग्राम, वर्घा १२ जून, १९४१

त्रिय अमला,

तुम्हारा पत्र मिला। महादेव अहमदाबादमें है। वह बीमार नहीं था। दुर्गा वीमार है और भाटिया अस्पताल में है। मुझे खुशी है कि सतीके रूपमें तुम्हें नई सहेली मिलनेवाली है। कॉलेजके बारेमें मैं यह क्या सुन रहा हूँ? उस वारेमें तुम मुझे विस्तारसे लिखना।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजीसे: स्पीगल पेपर्स । सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

#### १६८ पत्र: वालचन्द हीराचन्दको

१३ जून, १९४१

माई वालचन्द',

आपका पत्र मिला। राजेन्द्रवाब् वहां [विजगापट्टम] वा रहे हैं। अतः मेरे पत्रकी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। लेकिन चूंकि नरोत्तम सेटके साथ मेरा पुराना सम्बन्ध रहा है, इसलिए आप मेरे आशीर्वादकी आशा रखते हैं, यह मै समझता हूँ। आपका साहस सफल सिद्ध हो और सारे देशके लिए लामप्रद हो।

मो० क० गांधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२०) से

#### १६९. पत्र: एस० अम्बुजम्मालको

१४ जून, १९४१

चि॰ अम्बुजम,

तुम्हारा वर्णनात्मक पत्र मिला। तुम्हारे और तुम्हारी माताजीके दु:खको मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ। विया मुझे व्यक्तिगत रूपसे इस वातकी जानकारी नहीं है कि तुम्हारे पिताजी कितने सद्गृहस्थ थे? तुम सव लोगोंके प्रति उनका स्नेह अगाध था। देशके प्रति उनका प्रेम तो वादमें उत्पन्न हुआ, लेकिन अपने परिवारके प्रति उनके प्रेममें कोई कमी नहीं आई। क्या मुझे याद नहीं है कि वे किस तरह तुम्हारी ही खातिर वर्षा आये थे? इससे मैंने यह भी देखा कि यद्यपि राजनीतिमें हमारा मतमेद था, किन्तु हमारे वैयनितक सम्बन्ध कभी नहीं टूटे।

तुम्हें तो अपनी माताजीके लिए शक्ति-स्तम्भ वनना चाहिए। उनसे कहना कि मैं तो उनसे रमाबाई रानडेके पदिचह्नों पर चलने की और जो सेवा वन सके, वह

- सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनीके वोर्ड ऑफ डायरेक्टरीके अध्यक्ष
- राजेन्द्रवाव २१ जून, १९४१ की सिन्धिया नेवीगेशन कम्पनीकी वाधारशिला रखनेवाले थे।
   जहाज बनाने का यह पहला कारखाना था, जिसका स्वामित्व भारतीयों के हाथमें या।
  - ३. नरोत्तम मोरारजी, शान्तिकुमार मोरारजीके पिता
  - ४. अम्बुजम्मालके पिता पस० श्रीनिवास अव्यंगारका १९ मई, १९४१ को देहान्त हो गया था। ५, १९३४ में

बहादुरीके साथ करने की अपेक्षा रखता हूँ। उन्हे दुःखके आगे हार नही माननी चाहिए।

जब भी आ सको, अवस्य आसो। सप्रेम.

बापू

[अंग्रेजीसे]

बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया: एस० श्रीनिवास अध्यंगार, पृ० ९५ और ९७ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

#### १७०. पत्र: चिमनलाल वा० शाहको

सेवाग्राम १४ जून, १९४१

माई चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। कानूनन तुम अपना जो बचाव कर सको वह अवश्य करना। क्षुकना नहीं। तुम पर यदि जुर्माना लगाया जाता है तो लगने देना। जेल हो तो जेल काटना। तुम्हारे बाद यदि कोई छापेखानेको चलानेवाला न हो तो छापाखाना मले ही बन्द हो जाये। अथवा यह प्रकाशन केवल समाचारपत्रके रूपमें ही चलाया जाये। यदि यह भी सम्भव न हो, तो जो भी परिणाम हो, होने देना। मुझे तो इतना ही कहना है कि तुम दबकर कुछ न करना। लेकिन अभी चूँकि वहाँ मुन्शीजी हैं, इसलिए मुझसे पूछने की कोई जरूरत नहीं है। वे जैसा कहें वैसा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

रे. चिमनकाल बार शाहको ६ महीनेकी केंद्र अथवा २,००० रुपये जुर्मानेकी सजा दी गई थी।

<sup>3.</sup> मारत समाचार, जिसके प्रकाशनपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था

#### १७१. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम १५ जून, १९४१

इसके साथका पत्र' श्री क॰ मा॰ मुन्दि। नेनीतालसे लिखा था। इसका उत्तर मैने गुजरातीमें दिया था; मूल पत्र और उसका अनुवाद संलग्न है। हमारे बीच हुए पत्र-व्यवहारके फलस्वरूप श्री क० मा० मुन्शी वस्वई छीटने के यथासम्भव तुरन्त बाद मुझसे मिलने आये। बातचीतके दौरान मैने पाया कि यद्यपि वे अहिंसाको सिद्धान्त-रूपमें उसके सभी फलिताथौं-सहित स्वीकार करते है, पर उस-पर अमल करना उन्हें बहुत कठिन मालूम होता है। यह कठिनाई और भी ज्यादा इसलिए महसूस होती है, कि बम्बईकी अपनी अन्तरंग जानकारी के आधारपर जनका यह विश्वास है कि मुसलमानोंकी क्या वात, हिन्दुओं को भी वे अपने विचारोंस सहमत नहीं कर सकते। वे जानते हैं कि जो असंख्य हिन्दू उनके प्रभावमें हैं वे उनसे मार्गदर्शनकी अपेक्षा रखेंगे और उनसे सलाह मार्गेगे। श्री मुन्धीको इन हिन्द्ओंको इस बातका यकीन दिलाने का कोई रास्ता नजर नहीं आता कि वे अहिंसा द्वारा अपनी रक्षा कर सकते हैं। इन दंगोंमें, जो एक छोटा-मोटा गृह-युद्ध ही प्रतीत होता है, वे अहिंसाका तत्काल काममे लाये जा सकनेवाले एक राज-नीतिक शस्त्रके रूपमें कोई कारगर उपयोग नहीं कर सकते। उनके सामने सवाल कांग्रेसके प्रस्तावोंकी व्याख्याका नहीं, विलक यह है कि अपने प्रति और देशके प्रति सच्चे किस प्रकार रहें। इसलिए, अ० मा० कां० कमेटीके उस प्रस्तावको देखते हुए जिसमें वर्घा वक्तव्यका स्पष्टीकरण किया गया है, मैने उन्हें सलाह दी कि उनके लिए सम्मानजनक और वहादुरीका रास्ता यही है कि वे कांग्रेससे त्यागपत्र दे दें, ताकि वे कांग्रेसकी अहिंसा-नीतिके प्रतिवन्धोंसे मुक्त होकर स्वतन्त्र रूपसे कार्यं कर सकें। प्रस्ताव निम्नलिखित है:

कांग्रेस कार्य-समितिने २१ जून, १९४० को वर्षासे जो वक्तन्य जारी किया या उसपर अ० भा० कां० कमेटीने अच्छी तरह विचार किया है और यह उसकी पुष्टि करती है। जैसा कि वक्तन्यमें बताया गया है, अ० भा० कां० कमेटीकी यह राय है कि यद्यपि कांग्रेसको स्वाधीनताकी अपनी लड़ाईमें

१. देखिए परिशिष्ट २।

२. देखिए ए० १०२।

३. १२ जून, १९४१ को; देखिए परिशिष्ट ४।

V. यह प्रस्ताव २८ जुलाई, १९४० को पूनामें पारित हुआ था।

आंह्साके सिद्धान्तका दृढ़तासे पालन करते रहना चाहिए, तथापि वह वर्त्तमान पिरिस्थितियों में यह घोषणा नहीं कर सकती कि इस सिद्धान्तको स्वाधीन भारतको राष्ट्रीय पुरक्षाके मामलेमें भी लागू किया जाना चाहिए। अ० मा० कां० कमेटी इस बातकी अभिपुष्टि करना चाहती है कि कांग्रेस संगठनका संचालन आगे भी ऑह्साके सिद्धान्तपर ही किया जाना चाहिए और सभी कांग्रेसी स्वयंसेवक अपने कर्तव्य-पालनमें ऑहसापूर्ण आचरणके लिए वचनबद्ध हैं तथा कांग्रेसी स्वयंसेवकोंकी कोई भी संस्था ऑहसाके सिद्धान्तके अलावा और किसी आधारपर न तो संगठित की जा सकती है और न कायम रखी जा सकती है। आत्मरक्षाके छहेश्यसे बनी किसी भी अन्य स्वयंसेवक संस्थाको भी जिसके साथ कांग्रेसके लोग सम्बद्ध हों उसी प्रकार ऑहसाका पालन करना होगा।

मैंने उन्हें बताया कि हर कांग्रेसीके जीवनमें एक ऐसा अवसर भी आता है जब उसे लगता है कि उसका कांग्रेसी होना उसके लिए एक बोझ बन गया है; ऐसा तब होता है जब उसके विचार और कार्यमें विरोध होता है। अहिंसात्मक कार्यका स्रोत अहिंसात्मक विचार होता है। यदि व्यक्तिमें अहिंसात्मक विचारका अभाव है तो अहिंसात्मक कार्यका अपने-आपमे कोई महस्त्व नहीं रह जाता। इस-लिए स्वयं उनके लिए, कांग्रेसके लिए और देशके लिए यही बेहतर है कि वे कांग्रेससे त्यागपत्र दे दें और समय-समयपर जैसा कुछ उन्हें ठीक लगे, उसके अनुसार कार्य करें। अपने इस कार्यसे वे उन अन्य कांग्रेसियोंके लिए भी कांग्रेससे त्यागपत्र देने का मार्ग खोल देंगे जिनके कार्य और विचार परस्पर मेल नहीं खाते। कांग्रेसकी कल्पना एक अहिंसक और सत्यनिष्ठ संस्थाके रूपमें की गई थी और जो लोग पूरी ईमानदारीके साथ इन दो शर्तोपर अमल नहीं कर सकते उनके लिए कांग्रेसमें कोई जगह नहीं होनी चाहिए। भले ही यह आदच्यंजनक लगे, लेकिन अहिंसका पालन तो सत्यके पालनसे भी कठिन दिखाई देता है। कारण, असत्यके परिणाम हिंसाके परिणामोंसे अधिक सूक्ष्म है और दिखाई नहीं देते।

मेरी सलाह श्री मुन्तिको पसन्द आई और उन्होंने उसे स्वीकार करने का निश्चय किया है। जिस कांग्रेसकी उन्होंने इतने समयतक सेवा की है, उसके प्रति चूँकि वे द्रोह नहीं कर सकते, अतः वे उससे अलग हो जायेंगे। और उनके कांग्रेससे त्यागपत्र देने का अर्थ यह नहीं है कि वे कान्त और सौम्य व्यक्तिसे एकाएक खूँखार व्यक्तिमें परिणत हो जायेंगे और उन लोगोंसे प्रतिकोध लेने की कसम खायेंगे जिन्हें वे अपना विरोधी समझते हैं, अथवा वे राष्ट्रीयता-विरोधी सम्प्रदायवादी बन जायेंगे। मुझे इसमें तिनक भी सन्देह नहीं कि उनकी निगाहमें ऐसा हर गैर-हिन्दू, जिसका एकमात्र घर भारत है, उतना ही भारतीय है जितना कि भारतमें जन्मा और पला कोई भी हिन्दू। श्री मुन्त्री जो कदम उठाने जा रहे हैं उसके लिए मैं

कन्द्रैयाकाक मा० मुन्ज्ञीके वक्तव्यके किए देखिए परिशिष्ट ५।

उन्हें वधाई देता हूँ और मुझे पूरी उम्मीद है कि काग्रेससे त्यागपत्र देने के बाद वे अपने गुणोंका सदुपयोग कर सकेंगे और इस तरह वम्बईमें स्यायी शान्ति स्यापित करने में निश्चित योगदान दे सकेंगे।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे कॉनिकल, २७-६-१९४१; पिल्प्रिमेज दु फ्रीडम, पृ० ४१५-१६ भी

### १७२. उत्तर: ब्रिटिश महिलाओंकी अपीलका'

सेवाग्राम १५ जून, १९४१

प्रिय बहुनो,

-भारतको महिलाओं के लिए आपने जो सन्देश भेजा है उसे हमने बहुत ध्यान-पूर्वक पढ़ा है। यह अपील हम ध्यक्तिगत रूपसे और अखिल भारतीय महिला परिषद् को प्रतिनिधिको हैसियतसे भी भेज रही हैं। जैसा कि आपको मालूम ही है, यह एक पन्द्रह वर्ष पुरानी संस्था है। हम इसकी चर्चा यह बताने के लिए कर रही हैं कि हम जो कहने जा रही हैं वह केवल हमारी अपनी गहरी निजी मान्यता नहीं है, बल्क जहाँतक हम देख सकती है, भारतकी अधिकांश महिलाओं की भी मान्यता है।

कहने की जरूरत नहीं कि आपकी अपीलमें निहित निश्छलताकी हम कह करती हैं। लेकिन उसमें वास्तविकताओं के प्रति जो अज्ञान दिखाई देता है उसपर हमें आश्चर्य है। सच तो यह है कि इसके विपरीत आपके प्रधान मन्त्री अपने वास्तविकता-वोधका कहो ठीक परिचय देते हैं, भले वह कितना ही दु:खद क्यों न हो। ब्रिटेनके मनमें भारतका क्या दर्जा है, इसके वारेमें उनके मनमें कोई शंका नहीं है। वह एक पराधीन देश है, जिसका अंग्रेज मनमाने ढगसे उपयोग कर सकते हैं और कर रहे हैं। वे जानते हैं कि ब्रिटेनको अपनी लड़ाई लड़ने के लिए जो-कुछ भी चाहिए उसमें उसे भारतके विचारवान पुत्रों और पुत्रियोंकी सहमति अथवा सहयोगकी जरूरत नहीं है। वे उन भारतीय सैनिकोंकी वहादुरीकी प्रशंसा करना नहीं भूलते जो भारतपर कब्जा जमाये रखनेवाली सेनाके अंग है। आपको मालूम होना चाहिए कि ये सैनिक भारतके राष्ट्रीय जीवन और फ्रियाकलापसे सर्वथा अलग है। ये लोग किसी राष्ट्रवादी व्यक्तिसे बिना भारी दण्डका खतरा उठाये खुलकर नहीं मिल सकते और अगर आपके

१. इसेका मसौदा गाथीजी ने तैयार किया था तथा इसपर श्रविष्ठ भारतीय मिह्ना परिपद्की नीर से सरोजिनी नायह, रामेश्वरी नेहरू, विजयलक्ष्मी पण्डित, श्रमृतकौर, रानी लक्ष्मीवाई राज्याहे, श्रम्म् स्वामिनाथन और राथा सुन्वारायनने इस्ताक्षर किये थे। यह २१ जून, १९४१ को भेजा गया था।

२. बिन्सरत चर्चिल

प्रधान मन्त्रीको पैसेकी जरूरत होती है तो कर लगाकर अथवा तथाकथित स्वैच्छिक चन्दे द्वारा पैसा जमा करने में इन्हें कोई कठिनाई नहीं होती। हम इस असहाया-वस्थाकी शिकायत तो नहीं कर सकतीं लेकिन हम तथ्योंकी ओरसे आंख भी नहीं मूँद सकतीं। ऐसी स्थितिमें जबरन वसूल की जानेवाली जिस सहायताका हमने जिक्र किया है, उसमें विदेशी दासताके जुएको उतार फेंकने के लिए अधीर मारत कैसे सहयोग दे सकता है?

सच तो यह है कि आपने स्थितिको बिळकुळ गळत समझा है। राष्ट्रपति रूजवेल्टकी घोषणामें निहित असरयको आपने जो उद्धृत किया है उसे देखकर आरुचयं होता है। आपने उद्धृत किया है: "आज सारा संसार मानव दासता और मानव स्वतन्त्रताके बीच विभाजित है।" मानवी स्वतन्त्रताके बीच विभाजित है।" मानवी स्वतन्त्रता नामकी कोई चीज ही नहीं है — भारतके लिए तो निश्चय ही नहीं है, और न पुरुषार्थी आफिकी लोगोंके लिए ही है। युद्धका परिणाम चाहे जो हो उससे उनकी अवस्थामे कोई सुधार नहीं होनेवाला है। उनकी अवस्था बदलेगी तो स्वयं उनके अपने प्रयत्नोंसे। वास्तविकताको जिस स्थमें हम देखते हैं वह इस प्रकार है। यह युद्ध ब्रिटिश साम्राज्य तथा नाजियों और फासिस्टोंके बीच विश्वपर अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए हो रहा है, और इस प्रभुत्वका मतलब तत्त्वतः गैर-यूरोपीय जातियोंका शोषण है।

हमें नाजीवाद या फासिज्मसे कोई प्रेम नहीं हो सकता। लेकिन हमसे ब्रिटिश साम्राज्यवादसे भी प्रेम करने की आशा नहीं की जानी चाहिए।

अब शायद आप समझ गई होंगी कि स्त्रियोंके रूपमें हम युद्ध-मात्रके विश्व क्यों है। इस समय तो स्त्रियोंका कर्त्तंच्य है कि आज हम जिस असत्य और हिंसासे घिरे हुए हैं उसके विश्व हम सत्य और अहिंसाका पक्ष केकर उठ खड़ी हों। हम ब्रिटिश स्त्रियोंके आत्मत्यागकी, जिसपर आपका गर्व करना सर्वेचा उचित है, प्रशंसा करते हैं। यहाँ हम सोचते हैं कि यदि आप लोग अपने पुश्वोंको मानव-रक्तसे सने अपने हाथोंको घो डालने को कहती — जो आपके लिए ज्यादा बहादुरी और गौरवकी बात होती — तो कितना अच्छा होता। सम्भव है, आपको उसमें तत्काल सफलता नहीं मिलतो। लेकिन आपने स्थायी शान्तिकी स्थापनाका मार्ग तो प्रशस्त कर दिया होता। आज जिस व्यापक पैमाने पर नर-संहार हो रहा है वह इतिहासमें अमृतपूर्व है, और इस संहार-लीलामें स्त्रियोंका पुश्योंकी नकल करना हमारी समझमें बृद्धिमानी नहीं है।

बन्तमें हम एक असंगतिकी और आपका व्यान दिलाना चाहती हैं। बिटेनकी स्त्रियाँ गुलामोंके मालिकोंको अपने अन्यायका मार्जन करने और अपने प्रारम्भिक पापसे अपने-आपको मुक्त कर लेने और इस तरह अपनी स्थितिको नैतिक दृष्टिसे न्यायसंगत बनाने को कहने के बजाय भारतसे, को स्वयं ही एक गुलाम राष्ट्र है, यह कह रही हैं कि वह अपने मालिकोंकी जनकी कठिनाईमें सहायता करे।

र. उदरण बॉम्बे कॉनिक्ड, २३-६-१९४१ से खिया गया है।

हमने तसवीरको जिस रूपमें पेश किया है वह शायद आपको बुरा छगे, लेकिन इसे ईमानदारीसे पेश किया गया है। आपकी ईमानदारीका जवाव हम उतनी ही ईमानदारीसे ही दे सकती थीं।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डव्ल्यू० १०३६०)से

१७३. पत्र: कृष्णचन्द्रको

१६ जून, १९४१

चि० कु० चं०,

हरिजनोंके हायमें रसोइघर रखने का तरीका यह है कि जो पुरुष या औरत स्थिर रूपसे काम करे उनको तैयार करके दूसरोंको हटा लेना। उनका मुखी तो प्रथम हमारेमें से हि किसीको रहना होगा। यही तरह सब प्रबंध होते है।

रसोडाके नियम तो है जो आज बनता है वहीं है। फरक सिर्फ फलके बारेमें हि है। जिनको देने का धर्म हो जाता है उनको दें, वाकीको जब मिले तब। आम तो थोड़े हि दिनोंकी बात रही। पपीता मिले तब देवे। सबको दे सकें तो अवश्य देवे।

किसीको रुचीके लिये तो कुछ देना हि नहीं है। वा इसमें अपवाद है। शकरी बहुन अपने लिये कुछ बनाना चाहे, वना सकती है। औरोके लिये अगर मैं खास कहुं तब हि अलग चीज वने। शास्त्रीजी का तो जानते हि है।

इसमें सब आ जाता है।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ४३९५)से

# १७४. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको

सेवाग्राम, वर्षा १६ जून, १९४१

त्रिय मगिनि.

तुमारा खत आज मिला। घोती मिल गई थी। मैने दूसरे दिन हि ओढी और इस्तेमाल करंगा। मैं समझता हूं उसमे कितना प्रेम भरा है।

अहिंसाका प्रचार केवल हमारे अमलसे हि होनेवाला है। 'हरिजन' इस वक्त तो नींह निकल सकता है। उसे निकालना हि सत्यकी हानि होगी। लेकिन हम विश्वास रखे कि वाणी और लेखनीसे विचारका असर ज्यादा है। अगर मैं शुद्ध विचार करता हूंगा तो मेरा दृढ़ निश्चय है कि वह विचार अपना असर डाल हि रहे हैं। और उसका असर सर्वेच्यायी हि होता है।

गढवालका किस्सा दुःखद है। मेरा अभिप्राय है कि तुम या वापाको वहां जाना हि चाहिये। हो सकता है तो दोनों को जाना चाहिये। वहां जाने के बाद और समझोता करने के बाद उसके भंग होने पर कमसे कम एकका वहां शीघ्र पहूंच जाना अत्यावश्यक है। सेवाघर्म कठिन घर्म है।

मेरी बोमारीकी वात सुनकर चिंतामें नही पडी होगी। अब तो कुछ रहा हि नहिं है। जो हुआ सो मेरी मूर्खता या अज्ञानका फल था।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९७)से। सी० डब्ल्यू० ३०९४ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

### १७५. पत्रः गणेशदत्त सिंहको

१६ जून, १९४१

माई गणेशदत्त सिंघजी,

आपका पत्र पाकर बहूत आनंद हुआ। राजेन्द्रबावू कहते हैं आप बहूत वृद्ध हो गये हैं तो भी प्रजाके कामोंमें काफी दिलचस्पी छे रहे हैं।

बगर सब सत्याग्रही छुट भी जांय तो मैं कोई विश्वास नींह दिला सकता हूं कि किसीको दुबारा जइल नींह भेजूंगा। राजेन्द्रबाबुसे महिवरा कर रहा हूं।

आपका,

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७३८) से

#### १७६. पत्र: विद्यावतीको

१६ जून, १९४१

चि॰ विद्या,

सचमुच तुमारे सरपे दुःखका पहाड़ आ पता है। यही तुमारी परीक्षाका समय है। घीरजसे सहन करना है। दिल्लीमें क्षयका हस्पताल है वह सिर्फ दिल्लीवालोंक लिये है। मरा हुआ रहता है। लेकिन मुआलीमें सबसे अच्छा है। वहां यू० पी० वालोंको प्रथम स्थान मिलता है, दूसरा घरमपूरमें है। चिताकी कोई वात नींह है। परहेजगार रहेगा तो राजेन्द्र अच्छा हो जायगा। टी० वी० का आरम्भकाल होगा तो असाध्य नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

मूळ पत्रसे: रानी विद्यावती पेपर्स । सौजन्य: राष्ट्रीय गांघी संग्रहालय और पुस्तकालय

#### १७७. पत्र: जीवकृष्ण शर्माको

१८ जून, १९४१

भाई जीवकुष्ण शर्मा,

खादी और ग्राम उद्योगकी वस्तुओंकी नुमाइश करना और उसमें जो लाभ होगा वह सब कमला नेहरू हस्पतालमें देने का तुमारा इरादा स्तुत्य है। मैं आशा करता हूं कि उसमें सफलता मिलेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८,९)से

## १७८. पत्र: एस० सत्यमूर्तिको

सेवाग्राम, वर्धा १९ जून, १९४१

त्रिय सत्यमूर्ति,

बहुत लम्बी चुप्पीके बाद आपके हस्ताक्षर देखकर मुझे वहुत खुकी हुई। मुझे पूरी आशा है कि आपकी जो सेवा-शुश्रूषा की जा रही है उसके फलस्वरूप आप बिलकुल ठीक हो जायेंगे।

हार्लांकि पिछले युद्धके दौरान मैंने जो-कुछ किया और आज हम जो कर रहे हैं उनका आपसमें कोई सम्बन्ध नहीं है, फिर भी मैं इस बातसे पूर्णतया सहमत हूँ कि आज जो लोग अपनी सेवाएँ अपित कर रहे हैं, उन्हें किसी कांग्रेसी सरकार की ओरसे बदलेकी कार्रवाई किये जाने की कोई आशंका नहीं होनी चाहिए।

क्रुपया लक्ष्मीसे कहिए कि मैं बिलकुल ठीक हूँ।

हृदयसे आपका, मो० क० गांघी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२०२) से

### १७९. पत्र: एस० रंगनायकीको

१९ जून, १९४१

त्रिय बहन,

वम्बुजमकी मार्फत व्यापका पत्र पाकर मुझे वहुत खुकी हुई। उसने मेरे लिए उस पत्रका अनुवाद कर दिया। बेंशक, मैं स्वयंको आपके परिवारका एक सदस्य मानता हूँ और उसके सुख-दुःखमें व्यक्तिगत दिलचस्पी लेता रहुँगा।

- पस० सरवमूर्तिने गांधीजी से अनुरोध किया था कि वे मानवीयताके आधारपर सेनामें डाक्टरोंकी मर्तीको प्रोत्साहित करें।
  - २. स्वर्गीय एस० श्रीनिवास अर्थ्यगरकी पत्नी

अम्बुजमने अपने कीमती जवाहरात मुझे दे दिये हैं, जिन्हे आपने दिवंगत देश-भक्तकी पुण्य स्मृतिमें दान करने की उसे अनुमति दी है। इससे प्राप्त होनेवाले धनको मैंने हरिजन छात्रवृत्तिकी स्थापनाके लिए अपित करने का निर्णय किया है। सप्रेम,

वापू

[अंग्रेजीसे]

बिल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया : एस० श्रीनिवास अय्यंगार, पु० ६७

#### १८०. पत्र: वल्लभराम वैद्यको

१९ जून, १९४१

भाई वल्लभराम,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम सचमुच ही तपश्चर्या कर रहे हो। तुम्हारी विजय हो। जब बाने की इच्छा हो, बा जाना। मैं मजेमें हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्री वल्लमराम वैद्य शान्तिसदन माउण्ट आब्

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २९१४)से। सीजन्य: वल्लभराम वैद्य

## १८१. तार: ओबेदुल्लाको

वर्घा २१ जून, १९४१

कोबेदुल्ला <sup>१</sup> कांग्रेस कॉफिस त्रिची वेंकटाचलमके<sup>१</sup> लिए झूट स्वीकृत ।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० भा० कां० कमेटी फाइल, १९४१। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. एस० श्रीनिवास अव्यंगार

२. तमिल्नाडु प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

३, जेळसे रिद्दा हुए एक सत्याग्रही, जो त्रिचिरापरली जिला बोर्डके अध्यक्षपदके चुनावमें खड़ा होना चाहते ये

#### १८२. वर्घाके जिलाधीशके नाम पत्रका मसौदा'

२१ जून, १९४१

प्रिय महोदय,

आपके १६ तारीखके पत्रके सम्बन्धमें मुझे यह कहना है कि मेरे पुत्र अव संयुक्त परिवारके सदस्य नहीं हैं। मेरे प्रत्येक पुत्रके पास आयके अपने साधन है। लेकिन चूँकि मेरे पुत्र रामक्कष्णके पैसे मेरे पास जमा हैं इसलिए मैं आपको उसपर किये गये जुर्माने की पूरी रकम अर्थात् ३०० रुपयेके नोट मेज रहा हूँ।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०६४)से

## १८३. पुर्जा: जमनालाल बजाजको

[२१ जून, १९४१]

इस रकमको भेजने से क्या रामकृष्णको रिहा नहीं कर दिया जायेगा? गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०६४) से

### १८४. पत्र: चिमनलाल वा० शाहको

२१ जून, १९४१

भाई चिमनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तो तुम्हारा लेख बिलकुल निर्दोष जान पड़ा है। तुम्हें समय-समयपर सेंसरके अधीन होना पड़ता है, यह बात मुझे अच्छी नहीं लगतो। लेकिन समाचारपत्रोंने अपना काम चलाने की कला सीख ली है जिससे मैं पूर्णंतया अनिभन्न हूँ। इसलिए मैं इसमें ज्यादा मदद नहीं कर सकता। इसके सिवा,

२. यह मसौदा जमनालाल बजाजकी कोरसे तैयार किया गया था; देखिए अगला शिर्षक भी। २. रामकृष्णने १५ वग्रैल, १९४१ को वर्षी में सरवाग्रह किया था।

३ और ४. गांधीजी ने जमनाळाळ वजाजके किए अंग्रेजीमें पत्रका जो मसौदा तैयार किया था उसके हाशिये पर उन्होंने यह टिप्पणी ळिखी थी: देखिए पिछळा श्रीवैक। अभी मुन्शीजी वहाँ है। इसलिए मेरी सलाह है कि वे तुम्हें जो सलाह दें, तुम उसी पर अमल करो। यदि तुम्हारे वारेमें उन्हें कुछ पूछना होगा तो वे मुझसे पूछ लेगे। उनके वहाँ रहते हुए मैं इस मामलेमें अपनी ओरसे स्वतन्त्र रूपसे कुछ नहीं कहना चाहता। यह पत्र भी उन्हें दिखाना और वे जैसा कहें वैसा करना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सीजन्य: प्यारेलाल

## १८५. पत्र: हरिभाऊ उपाध्यायको

सेवाग्राम २१ जून, १९४१

माई हरिभाऊ,

सायमें वहन हिनमणीका पत्र है। तुमारी तबीयत अच्छी होगी। रामनारायण कहते हैं कि अजमेरमें जो वैमनस्य म्यु॰ वारेमें चलता है वह अगर तुम योहा समय देंगे तो दूर हो सकता है। अगर इसमें कुछ है तो ऐसा किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रे (सी॰ डब्ल्यू० ६०९०)से। सौजन्य: हरिमाऊ उपाध्याय

## १८६. पत्र : बलीबहन म॰ अडालजाको

[२१ जून, १९४१ या उसके पश्चात्]

चि॰ बली,

तुने तो हरिलालके बक्वोंकी सेवा करने के लिए ही जन्म लिया है, इसलिए अब मैं तुझसे क्या कहूँ?

अगर तू बीमार न पड़े, तो और क्या हो?

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ १५८२)से। सीजन्यः मनुबह्न सु॰ मशस्त्राला

१. पत्र अपलम्ब नहीं है।

२. म्युनिसिपेकिटी ३. यह पत्र किसी अन्य व्यवित द्वारा वलीवहन अडालजाको लिखे इस तारीखके पत्रकी पीठपर

लिखा हुमा है।

४. हरिकाल गांधीकी साली

### १८७. पत्र: मीराबहनको

सोमवार, २३ जून, १९४१

चि॰ मीरा,

मैंने साथकी सामग्री पढ़ ली। यह अच्छा संकलन है। इन सब ऋचाओं के तुम्हें जितने अर्थ मालूम हुए है, उनसे कहीं अधिक अर्थ किये गये है। परन्तु हमारे लिए शाब्दिक अर्थ काफी है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८१)से; सौजन्य: मीरावहन। जी० एन० ९८७६ से भी

# १८८. पत्र: मीठूबहन पेटिटको

२३ जून, १९४१

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे नहीं लगता वा अभी उस ओर आयेगी। वह अच्छी है। आम कहींसे मिल जायेंगे। रणजीत अच्छा हो गया, इसके लिए वघाई। न होता, तो तुम्हारे लिए शर्मकी वात होती न? आखिर तुम्हें भी वकरी माताकी शरण लेनी पड़ी। लेकिन कल्पाणजी तो किसान है, उसे डूव मरना चाहिए कि थोड़ी तकलीफ उठाकर भी एक गाय रखकर उसकी वंश-वृद्धि न कर सका। प्रागजी की भी यही गति होगी।

बापूके आशीर्वाद

मीठूबहन पेटिट मरोली, बरास्ता नवसारी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७१७)से

१. अंग्रेजीमें रूपान्तरित ऋग्वेद की ऋचाओंका

## १८९ पत्र: महावीर गिरिको

२३ जून, १९४१

चि॰ महावीर,

तेरा बुकार अभी भी जाता नहीं, यह क्या बात है ? क्या तू खान-पानमें सावधानी वरतता है ? ऐसा बुखार सिर्फ थकावटके कारण नहीं आना चाहिए। चाहे जैसे आया हो, लेकिन इससे छुट्टी पाना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२४३)से

#### १९०. पत्र: मीराबहनको

[२३ जून, १९४१ के पश्चात्]

चि॰ मीरा,

तुम्हें कई परेशानियाँ हैं। तुमने स्वयं यह रास्ता चुना है। मै मुन्नालालको और उसके साथ सम्भवतः ओक्षाजी को भेजने की कोशिश कर रहा हूँ। कुएँका उपयोग करने की बात अत्यन्त गम्भीर है। देखें, क्या होता है? हाँ, आशा एक अच्छी मित्र है।

सप्रेम,

वापू

[पुनश्च : ]

संकलनका जो अंश पढ़ लिया है वह इसके साथ भेज रहा हूँ।

मूळ अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८२)से; सौजन्यः मीरावहन। जी० एन० ९८७७ से मी

र. मीरानहन इस पत्रको २३ जून और १ जुलाई के नीच किसी दिन लिखा हुआ मानती हैं।

 मीरावहन किखती हैं: "मैं चोरवाहसे छोटकर सेवाधामसे कोई आधा मीळ दूर नये बगीचेमें कुएँके किनारे बनी एक कुटियामें रह रही थी।"

३. आशादेवी आर्थनायकम्। मीरावहनने चुनी हुई वैदिक क्रचाओंका संकल्न किया था। उसके अंग्रेजी अनुवादमें सुधारमें मदद छेने के विचारसे वह आशादेवीके पास कुछ दिन ठहरने गई थीं।

## १९१. तार: ईश्वरलाल व्यासको

वर्धागंज २५ जून, १९४१

ईश्वरलाल आश्रम भद्रक

जीवरामभाईकी पृत्युको एक वरदान समझो । उनके कष्टसे मुक्ति पाने पर नाथोबहनको खुन्न होना चाहिए । पूरा समाचार दो ।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०६०) से

### १९२. पत्र: डी० पी० करमरकरको

२५ जून, १९४१

प्रिय करमरकर,

नगरपालिका-सम्बन्धी मामलोंकी क्योंिक मुझे बहुत कम जानकारी है, इसलिए वे सभी राजेन्द्रबाबू और आचार्य क्रपलानीको भेजे जाते हैं। इस समय दोनों-के-दोनों यहाँ नहीं हैं। या तो आप वर्त्तमान नियमानुसार चलें अथवा पटनाके पतेपर राजेन्द्रबाबूको लिखें।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: अ० मा० कां० कमेटो फाइल सं० १२९३-ए, १९४०-४१। सीजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

- १. जीवराम कोठारी; देखिए ए० १४१-४२ भी।
- २. जीवराम कोठारीकी पत्नी
- कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके वस्त्रालीन अध्यक्ष

#### १९३. तार: गोपीनाथ बारदलईको

सेवाग्राम २६ जून, १९४१

में सहमत हूँ। बाका है स्वास्थ्य सुवर रहा होगा।

गांघी

अंग्रेज़ीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सीजन्य: प्यारेलाल

## १९४. पत्र: कन्हैयालालको

सेवाग्राम, वर्षा होते हुए २६ जून, १९४१

भाई कन्हैयालाल,

आशा है कि चि॰ जुमारी विद्यावतीका विवाह निर्विष्ट हो जायगा। और दोनों दोर्घजीवी होंगे। और मुल्ककी सेवा करेंगे। मीरावाई चोरवाडसे वापिस आ गई है। खुशा है।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १००५२)से। सी० डब्ल्यू० ६४५७ से भी

गोपीनाथ नारदळईने घेळसे रिहा होने के दुरन्त बाद फिर सत्याग्रह करने के विषयमें गांधीजी
 की सळाह माँगी थी।

## १९५. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

२७ जून, १९४१

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र दुःखद है। लेकिन शायद तुम्हारे चले जाने में ही तुम्हारा कल्याण है। कड़वा अनुभव प्राप्त करके वापस आओगे, ऐसी मेरी मान्यता है। लेकिन अगर यह बात झूठी सिद्ध हो और जानकी प्रसादके समान तुम वहाँ कुछ कर सको, तो मुझे प्रसन्नता होगी। मैने तो पाण्डिचेरी अथवा रमण आश्रमका सुझाव दिया है। लेकिन तुमसे कही भी स्थिर न हुआ जाये, तो यहाँ तो जगह है ही।

हीरामणिके बारेमें जवाहरमलजी जो कहते हैं वही ठीक है। धीरे-धीरे उसका

प्रशिक्षण हो, इसमें कोई हर्ज नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९३)से। सी० डब्ल्यू० ७१४३ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

# १९६. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २८ जून, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मेरे मनमें यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि मै तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। अब तुम घरती पर उतर आओ और जो अन्य लोग करते हैं — ईमानदारी से कौड़ी कमाने के लिए मजदूरी करने और उसमें निर्वाह करने का काम — वहीं करों तब तुम सीख सकोगे कि आत्म-सम्मान क्या चीज है। '

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डक्ल्यू० १०३१४)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

रै. अमृतलाल चटर्जीने "समाज-सेवाका कार्य छोड़कर सिर्फ मार्थिक लामके लिए कोई काम करने की अनिच्छा व्यक्त की थी"।

### १९७. पत्र: मनुबहन सु० मशरूवालाको

२८ जून, १९४१

चि॰ मनुड़ी,

इस बीच तेरे पत्र नहीं आये। लेकिन सुना है तेरी तबीयत ठीक है। मुझे पत्र लिखना। बड़ी माँ मजेमें है। मैं भी अच्छा हूँ। मनोज्ञा, कृष्णदास' आ गये हैं। अभी प्रभुदास भी यही है। अब जाने की तैयारीमें है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५८१)से। सीजन्य: मनुबहन सु० मशरूवाला

#### १९८. भक्त जीवराम

जीवराममाई गये। वे मेरी दृष्टिमें सच्चे भक्त थे और भक्त तो मरकर ज्यादा जीते हैं। मेरी आत्मा साफ ना कहती है कि वे मरे हैं। उनका व्याधिग्रस्त देह अवश्य गया — राख हो गया। उनकी उष्ज्वल आत्मा अमर है और उड़िया प्रान्तकी रजकणमें जोतप्रोत है।

जीवरामभाई धनिक थे। भेरी व्याख्याके आदर्श ट्रस्टी वने। अपने पैसे उड़िया के गरीबोंने चरखा प्रचारमें दिये। वे खुद भी उड़ियामें गरीव वनकर रहे। और उनका चौबीस घंटोंका चिन्तवन उड़िया छोगोंका कल्याण ही रहा। श्री ईश्वरलालने इस भक्तके अन्तिम जीवनका इस प्रकार वर्णन किया है:

उन्हें करीब तीन महीनोंसे दस्तकी बीमारी थी। ता० १८-६-१९४१से दवा बन्द कर दी। कहने लगे, 'आज तीन महीनोंसे दवा करा रहा हूं; लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता; तो अब प्रमुकी इच्छा।' पानी और मिट्टी की पट्टी रखवाते थे। खाना तो छोड़ दिया था। मोसंवीका रस लेते थे, उसे भी बन्द कर दिया। ता० २३ की सुवहसे पानी भी नहीं लिया। गला सुखने पर खूब कुल्ले करते थे। मैने कहा, 'थोड़ा पानी पी लीजिए।' तो उन्होंने कहा, 'अब दम उखड़ रहा है, देखते नहीं।' यह सुबहमें कहा था और तीन बजनेमें दस मिनट बाकी थे, तवतक वे पूरे होशमें थे। दस मिनट

में एकाएक बेहोश हो गये और एकदम सीघे सो रहे। जरा भी हाल-चालके बिना धीरेसे स्वास वन्द हो गया।

ऐसे हम सब बनें। ऐसा भन्य मृत्यु हम सबको मिले।

सेवाग्राम, २९ जून, १९४१ सर्वोदय, जुलाई, १९४१

१९९. पत्र: मोतीलाल रायको

सेवाग्राम, वर्वा होते हुए २९ जून, १९४१

प्रिय मोतीवाबु,

प्रवर्तक संघके वारेमें श्री जाजूजी ने मुझे फाइल भेजी है। उसे पढ़कर मुझे दुःख हुआ। अ० मा० चरखा संघ एक वहुत वड़ी संस्था है, जिसका एकमात्र उद्देश्य देशके गरीबसे-गरीब लोगोंकी भलाई है। उसे अपना सारा लेनदेन ठोस कानूनी आवारपर करना चाहिए। तभी वह नैतिक दृष्टिसे सुदृढ़ हो सकता है। इसलिए मुझे समझमें नहीं आता कि अपेक्षित प्रॉमिसरी नोट देने में इतनी हिचिकचाहट क्यों है। निःसन्देह कर्ज तो वहुत पहले चुका दिया जाना चाहिए था। और फिर प्रमाणपत्र प्राप्त करने में इतनी हिचिकचाहट क्यों? यदि तुम शर्तोंको स्वीकार नहीं कर सकते तो वैसी स्थितमें कमसे-कम इतना तो करना ही चाहिए कि खादी-कार्यको बिलकुल छोड़ दो।

मुझे विश्वास है कि सब चीजोंको व्यवस्थित करने के लिए मुझे उनकी ओर तुम्हारा व्यान दिला देना काफी है।

मुझे उम्मीद है कि अब आँखोंकी वजहसे तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा, और अन्य प्रकारसे भी तुम स्वस्थ होगे।

सत्रेम,

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५४)से

## २००. पत्र: घीरूभाई भू० देसाईको

२९ जून, १९४१

चि० धीसमाई,

माई मोतीचन्द कापड़ियाके पत्रका मैंने तुरन्त जवाव दिया था। मेरी टिप्पणीमें भी उसका उल्लेख है। संयोगवश उसकी नकल मैं नहीं रख पाया, लेकिन जवाव मुझे याद है। वह इस पत्रके साथ मेज रहा हूँ। इसे पढ़कर भाई मोतीचन्दकों दे देना।

तुम्हारे पिछले पत्रका जवाब देना जरूरी नही रह गया था, क्योंकि उसके बाद ती माई मुन्धीने त्यागपत्र दे दिया और महादेवकी उनसे मेंट भी हो गई।

तुम और माधुरी मजेमें होंगे। वहाँका वालावरण कैसा है?

सायका पत्र दे सकी, तो भूलाभाईको दे देना।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलाभाई देसाई पेपर्स\_। सीजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

#### २०१. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

२९ जून, १९४१

माई नटवरलाल,

मुझे आफिससे ऐसी खबर मिली है कि यह तुम्हारा तीसरा या चीया पत्र है, जिसमें पहलेसे कम दोष दिखायें गये हैं। अपने आदिमियोंको सावधान करना। मैं तुम्हारे पत्र महादेवभाईको भेज रहा हूँ। उन्होंने तुम्हारे साय बात की

है, इसलिए अब तुम हरिजन आश्रम, साबरमतीके पतेपर सीघे उन्हें लिखना।

भूकामाई देशाईके पुत्र
 कत्तु गांधीने पत्रमें निम्निकिसित टिप्पणी जोड़ दी थी: "मोतीचन्दमाई को लिखे पहले पत्रकी निकल अब मिल गई है, केकिन वह संलग्न नकल जैती ही है, इसलिए उसे नहीं भेज रहा हूँ।"

इ. देखिए "वनतन्य: समान्यारपत्रोंकी", पृ० १२५-२७। ४. एक अन्य टिप्पणीमें कनु गांधीने यहाँ लिखा दै: "यह पत्र वे बादमें लिखेंगे इसलिए में उसे इस पत्रके साथ नहीं मेल सकता।" वही जवाब देंगे। उद्देश्य केवल यह है कि जो सामग्री तुम्हें मिली हो उसके आधारपर यदि तुम अपनी रिपोर्ट दे दो तो काफी होगा। क्योंकि आखिर सारी जांच मुझे ही करनी पढ़ेगी। इसलिए यदि तुम्हारी [मदद] की विशेष आवश्यकता हुई, तो मैं तुमसे लूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२१)से

# २०२. पत्र: जोहरा अन्सारीको

२९ जून, १९४१

बेटी जोहरा,

तेरा खत मिलने पर मैं तो खुश खुश हो गया। फरीदभाई लिखते हैं कि
तूने उनकी अम्माजानकी बहुत खिदमत की। खुदा तेरा मला करेगा। थोडी घीरज
रखा कोई रोज तो मैं तुझे जरूर जेल जाने दुंगा। शौकत अच्छे होंगे। बच्चोंको
प्यार।

बापूकी दुआ

[ उर्दूसे ]

महात्मा, जिल्द ६, पृ० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

#### २०३. पत्र: गोपीनाथ बारदलईको

सेवाग्राम, वर्षा ३० जून, १९४१

प्रिय बारदलई,

मैंने तुम्हारे तारका जवाव तत्काल ही उसी समय दे दिया था। मुझे तार-घरसे एक पत्र मिला कि तुम जा चुके थे और तार तुम्हारे नाम डाकसे भेज दिया गया था। वह तुम्हें मिल गया होगा। तुमने जो नोटिस दिया है उसे देखते हुए तो मेरे खयालसे तुम्हें अपनेको गिरफ्तार करवाना चाहिए, लेकिन यदि सरकारके पास तुम्हें रिहा कर देने के अच्छे आधार हों तो वैसी स्थितिमें तुम्हारा अपनेको गिरफ्तार करवाना हिंसा होगी। लेकिन इसका ठीक फैसला तुम्हीं कर

१. यहाँ एक शब्द सम्य नहीं है।

२. देखिए पृ० १३९।

सकते हो। अपनी गतिविधियोंके नारेमें मुझे सूचित करते रहना। यह छड़ाई तो लम्बे समयतक चलनेवाली है, इसमें जल्दवाजी नहीं चलेगी। हर व्यक्तिको अपना जौहर दिखाने का पूरा मौका मिलेगा।

तुम्हारा, वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३) से

#### २०४. पत्र: एगथा हैरिसनको

३० जून, १९४१

त्रिय एगथा,

श्री एम॰ लंकास्टरका परिचय देते हुए तुमने जो पत्र लिखा वह मुझे मिला। मैने उन्हें मिलने का समय दे दिया है। मै नहीं जानता कि मै उनकी कुछ मदद कर सक्राँग।

हाँ, मुझे एन्ड्र्यूजकी बहुनोंके बारेमें तुम्हारा पत्र मिला था। उसकी प्राप्ति-सूचना अमृतने भेजी थी। लेकिन कौन-कौन-से पत्र अपने ठिकानों पर पहुँचते हैं, कोई नहीं जानता। आश्चर्य तो यह है कि इतनी भयंकर मार-काटके बीच भी अभी इतनी व्यवस्था बनी हुई है।

[एन्ड्रयूजकी] बहनोंके सम्बन्धमें मैं अभीतक कुछ नही कर पाया हूँ। [एन्ड्रयूज] स्मारककी बात भी अभी अधरमें लटकी है। यदि मैं उतने दिन जीवित

रहा तो चन्दा अवश्य इकट्ठा कर लूँगा।

दंगोंने, बाढ़ने, और हमारे संघर्षने मेरी सभी योजनाएँ गड़वड़ कर दी हैं। इस बारके दंगों और पहलेके दंगोंमें कोई साम्य नही है। इस बार तो यह गृहयुद्धका पूर्वीम्यास है। अधिकारियोंके प्रति मेरे विश्वासको रोज गहरा धक्का पहुँचता है। लगता है कि वे न तो कभी कुछ सीखेंगे और नकभी

कुछ भूलेंगे।

मारत-मन्त्री जब भी बोलते हैं तो ऐसी बात कहते हैं जिससे लोगोंमें चिढ़ ही पैदा होती है। दरार चौड़ी होती जा रही है। बहुत दिखाबा चल रहा है। इस सबके बावजूद अपनी अहिंसाके कारगर होने के बारेमें में निराश नहीं हूँ। इसका प्रभाव चुपचाप और घीरे-घीरे — इतना घीरे कि मनुष्य घीरज खोने लगे — होता है, लेकिन निश्चित खपसे होता है। इसलिए में तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी ओरसे आपसी समझ-वूझ और मैत्री-भावको वढ़ावा देने में कोई कोर-कसर उठा नहीं रखी जायेगी।

ब्रिटिश महिलाओंकी अपीलका भारतीय महिलाओंने को उत्तर दिया है वह तुमने देखा होगा। मालूम नहीं कि चि० तुम्हें कतरनें भेजते रहते हैं या नहीं। महादेव अहमदाबादमें है और अमृत शिमलामें। सप्रेम.

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५२१) से

#### २०५. पत्र: फरीद अन्सारीको

३० जून, १९४१

प्रिय फरीद,

मै जो-कुछ भी करता हूँ वह मेरे लिए सहज और स्वामाविक होता है। सत्यका उपासक इसके अतिरिक्त और कुछ कर ही नहीं सकता। जिस प्रकार यदि कोई व्यक्ति मनुष्यवत् व्यवहार करें तो इसमें प्रशंसाकी कोई बात नहीं है, उसी प्रकार जो चीज स्वामाविक है उसे करने के लिए प्रशंसाकी कोई आवश्यकता नहीं होती।

हाँ, जोहराने मुझे लिखा है। उसने मुझसे अनुमति माँगी है, किन्तु मैंने उसको प्रतीक्षा करने के लिए कहा है। जोहराने माँकी अच्छी तरह सेवा की, इसपर मुझे कोई आरचर्य नहीं है। अगर वह ऐसा न करती तो डाँ० अन्सारीसे प्राप्त शिक्षा की झुठला देती।

मैं बिलकुल ठीक हूँ। कोई खास बात नहीं थी। तबीयत जरा-सी गड़वड़ा गई थी। मैं मानता हूँ कि इतना भी नहीं होना चाहिए था। मैं तबीयतमें हर प्रकारकी गड़बड़ी को प्रकृतिके नियमोंका उल्लंघन मानता हूँ। अक्सर अनजान में ऐसा होता है, ऐसा मानकर हम छुटकारा नहीं पा सकते।

सत्यवतीका पता क्या है? आशा करता हूँ कि तुम लोगोंका हालचाल ठीक होगा। सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए ए० १२७-२९।

२. देखिए पु० १४४ ।

#### २०६. पत्र: भूलाभाई झ० देसाईको

३० जून, १९४१

माई मूलामाई,

माई मुन्तीके साथ हुई तुम्हारी बातोंका सार उन्होंने मुझे सुनाया था। भेरे वक्तव्यसे तुमने देखा होगा कि कांग्रेसकी नीति विलकुल स्पष्ट है। यह स्पष्टता काफी चर्चाके बाद हो पाई। इसलिए जो लोग पूना-प्रस्तावके इस अंशको स्वीकार नहीं करते उनके लिए कांग्रेससे अलग हो जाने के सिवाय और कोई मार्ग ही नहीं रह जाता। इसीलिए मैंने माई मुन्तीको यह कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। अव अगर तुम्हारा विचार जैसा में समझता हूँ वैसा ही है तो तुम्हारा मार्ग स्पष्ट है। तुम्हें उसका ऐलान करके उसके अनुसार लोकमत तैयार करना चाहिए। यह समय आचरणका है। हम सबका मूल्य हमारे आचरणसे आँका जायेगा। कांग्रेसके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। यह जिम्मेदारी तभी पूरी की जा सकेगी जब हमारे आचार और विचारमें मेल होगा। हम ३५ करोड़ लोगोंके प्रतिनिधि होने का दावा करते है। हालाँकि यह बात मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, लेकिन तुम सब इसपर विचार करना। यह लड़ाई लम्बी और विकट होगी। अभी जो हो रहा है, यह तो उसकी तैयारी मात्र है।

वापूके आशीर्वाद

मूळ गुजरातीसे: मूलामाई देसाई पेपर्सु। सीजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

#### २०७. पत्र : घीरूभाई भू० देसाईको

३० जून, १९४१

चि॰ धीरूमाई,

तुम्हारा पत्र मिला। कलका मेरा पत्र मिला होगा। भाई मुन्तीके बारेमें तुमने कतरनें भेजीं, इसी प्रकार खौर भी भेजा करना। भाई मुन्तीके इस कदमसे में शुम परिणामकी ही आशा करता हूँ। लेकिन बहुत-कुछ उनके व्यवहारपर निर्मर करेगा। और जो लोग उनके जैसे विचारोंके हों, उन्हें भी अलग हो जाने के लिए प्रोत्साहित करना। यह अवसर सच्चा काम कर दिखाने का है, जिसमें अधकचरे लोग माररूप सिद्ध होंगे। अहिंसाका मार्ग तभी सफल होगा, जब उसमें केवल आहिंसा को पूर्णतया माननेवाले लोग ही रहें। आहिंसाका नाम लेने मात्रसे कोई आहिंसक थोड़े ही हो जाता है।

ज़ि॰ कनुका खाता-बहीका काम पूरा होने पर मैं उसे वहाँ भेज दूँगा। तुम्हारे पिताजीको मैं पत्र कल नहीं लिख सका। इस पत्रके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलामाई देसाई पेपसे । सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

### २०८. पत्रः सतीशचन्द्र दासगुप्तको

३० जून, १९४१

माई सतीशबाबु,

इसका उत्तर दो। बिना विधी पहुंचे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

- १. देखिए पु० १४३ ।
- २. देखिए पिछ्छा शीपैक।
- यहाँ संकेत अन्तदाशंकर चौधरीके उस पत्रकी और है जिसमें उन्होंने कळिमपौगमें काम करने के नारेमें पूछा था।

#### २०९. पत्र: अमृतकौरको

३० जून, १९४१

त्रिय पगली,

दिल्लीसे तुम्हारा प्रफुल्लित करनेवाला तार मिला। शिमलासे भी एक तार मिलना चाहिए। अभी दिनके साहे तीन तक तो मिला नही है।

सम्माताकी जोरसे मिले २५१ हमयेके चेकके वारेमें क्या तुम्हें कुछ मालूम है? रामेश्वरीका लिखा एक पत्र मेज रहा हूँ। उस्मान सीवानीने जो इच्छा व्यवत की थी उसे पूरा करने के लिए मैने हिन्दू-मुस्लिम एकताके लिए २४ घंटेका उपवास रखा है। उपवास ५.२० पर खत्म होगा। जन्म सात लोगोंने भी अपनी इच्छासे मेरे साथ उपवास रखा है। वरसात वाकायदा शुरू हो गई है। सारी रात वारिश होती रही, अभी-अभी बन्द हुई है।

में पूरी रफ्तारके साथ काम करता रहा हूँ। उपवासका मेरे स्वास्थ्यपर कोई बुरा असर नहीं पड़ा है। सुकीला नागपुर गई है, जहाँ वह उवाके गर्माशयकी जाँच करवाने के लिए उसके साथ डॉ॰ मार्टिनके यहाँ जायेगी। वह प्यारेलालसे भी मिलेगी।

महादेव जवाहरलालसे मिलने के लिए कल अहमदाबादसे देहरादून रवाना होगा। वह ९ तारीखको वापस आयेगा। देहरादूनसे वह बम्बई और वहाँसे पंचगनी जायेगा जहाँ वह मथुरादाससे मिलेगा।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२५)से; सीजन्यः अमृतकीर। जी० एन० ७३३४ से भी

जनाहरकाक नेहरू उस समय देहरादून जेकमें थे।

२. मधुरादास त्रिक्समजी

#### २१०. 'रेंटिया बारस'

नारणदासको प्रतिवर्ष जैसे-जैसे सफलता मिलती जाती है वैसे-वैसे उसका लोभ और उत्साह भी बढ़ता जाता है। श्रद्धावान व्यक्तिके साथ ऐसा ही होना चाहिए। खादीका विस्तार समस्त हिन्दुस्तानमें तो है ही, लेकिन आज जो प्रलयंकर युद्ध हो रहा है उससे कदाचित् यह वात भी सिद्ध हो जायेगी कि खादी, अर्थात् मेहनत-मजदूरी करके अपनी आजीविका कमाने का मन्त्र सर्वें व्यापक है। चाहे जो हो, हिन्दु-स्तानके लिए तो गरीबी और वेंकारीको दूर करने का मुख्य साधन चरखा ही है। इसलए मुझे आशा है कि काठियावाड़ नारणदासके मनोरथको पूरी तरह सिद्ध करेगा।

याद रखना चाहिए कि काठियावाड़में खादीका उपयोग बढ़ता जाता है। काठियावाड़को अपनी जरूरतकी खादी काठियावाड़में ही पैदा करनी चाहिए। इसके लिए स्पष्ट है कि अधिक धनकी जरूरत होगी। इसको ध्यानमें रखकर इस बार जो धन प्राप्त होगा वह सारा धन खादी पैदा करने में खर्च किया जायेगा।

आगामी ७२ दिनोंमें नारणदासको कमसे-कम एक लाख रुपया इकट्ठा होने की जम्मीद है। भगवान करे उसकी आशा पूरी हो।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, १ जुलाई, १९४१

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८३ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

#### २११. पत्र: मीरांबहनको

सेवाग्राम, १ जुलाई, १९४१

चि॰ मीरा,

रामदासका कहना है कि उसके पास अभी एक भी आदमी फालतू नहीं है। क्या उँबरू तुम्हारी देखरेखमें वह काम कर सकता है? क्या तुम्हें वरोडासे मजदूर मिल सकते हैं? तुम्हारी कठिनाई वास्तविक है। लेकिन मैं लाचार हूँ। इस तरह के अनुभव दिखाते हैं कि घनसे श्रम बड़ा है। तुम्हारे पत्रपर से कई नैतिक प्रश्न

 अर्थाद चरखा द्वादशी। नारणदास गांधीने गुजराती कैलेण्डरके अनुसार गांधीजी का ७२ काँ जन्मदिवस मनाने के वारेमें जो अपील जारी की थी, यह टिप्पणी उसके साथ संलग्न थी। उठते हैं, किन्तु उनकी चर्चा यहाँ नहीं करूँगा। मुझे वताना कि तुम मुझसे क्या करने की अपेक्षा रखती हो। क्या तुम चाहोगी कि मैं वर्धासे मजदूर जुटा दूँ? सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ६४८३)से; सौजन्य: मीरावहन। जी॰ एन॰ ९८७८ से भी

#### २१२ पत्र: अमृतकौरको

१ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

शिमलासे मेजा तुम्हारा तार मुझे मिला था और अब दिल्लीसे लिखा पत्र मिला है।

तुम्हारे नाम लिखा बालकोबाका पत्र इसके साथ है।

अभी भी बारिश हो रही है। तुम्हारा हिन्दी-लेखन लगभग निर्दोष है। भेरे पास मुन्शीने बारेमें नतरनोंना एक पुलिन्दा है। ये पढ़ने में नाफी दिल-चस्प हैं। सम्भव है कि मैं एक वन्तव्य जारी कहें।

मैंने नन्दनको प्रोफेसर इन्द्रका रियागपत्र स्वीकार करने की सलाह दी है। जितने ज्यादा लोग त्यागपत्र देंगे उतना ही अच्छा होगा। इससे वातावरण साफ

हो जायेगा।

सप्रेम.

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२६)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३५ से मी

रघुनन्दन शरण, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष; देखिए "पत्र: रघुनन्दन शरणको",
 १६-७-१९४१ के पूर्व जोर " वक्तव्य: समाचारपत्रोंको ", ५-८-१९४१ मी।

२. प्रो॰ इन्द्र विद्यावाचरपति, स्वामी अद्धानन्दके पुत्र

## २१३. अमृतलाल चटर्जीके लिए वक्तव्यका मसौदा'

[ २ जुलाई, १९४१]

किन्हीं घरेल कारणोंसे, जिनमें जनताको कोई दिलचस्पी नही हो सकती. अपने दो बड़े पुत्रोंको गांधीजी की देख-रेखमें छोड़कर मुझे बंगाल वापस बाना पड़ा। बंगाल पहेंचने के तरन्त बाद मैं ढाकाके लिए रवाना हो गया। और मेरा खयाल था कि ऐसा मैं गांधीजी के निर्देशों पर कर रहा हैं। मैंने ढाका जाने के बारेमें एक रुम्बा वक्तव्य दिया। वक्तव्य पढ़ने के तुरन्त बाद गांधीजी ने एक तार दारा उसका खण्डन करते हुए लिखा कि उन्होंने मुझे कभी कोई निर्देश नहीं दिया बल्कि यह कहा था कि यदि मैं अपनी जिम्मेदारी पर ढाका जाना चाहूँ तो जा सकता हूँ और बिना किसी शीर-शराबेके दोनों जातियोंकी सेवा करते हुए अपने प्राणोंकी बिल दे सकता हैं। मुझे खेद है कि मैने गांधीजी के निर्देशोंकी गलत समझा। मुझे अच्छी तरह याद है कि उन्होंने अन्य सब कार्यकर्ताओं की तरह मुझ से भी वार-बार यह कहा था कि हमें चुपचाप और निःस्वार्थ भावसे काम करते जाना होगा। लेकिन भावावैशमें आकर मैं अपना आपा खो बैठा और ऐसा वक्तव्य दे डाला जिसके अनुरूप मैं काम नहीं कर सकता। ढाकामें मुझे निर्देशोंकी जरूरत थी, जिनके बिना मै काम नहीं कर सकता था। निर्देश जारी करने के लिए मैंने गांधीजी को तार दिया और उन्होंने मुझे तार भेजा कि वे कोई निर्देश जारी नहीं कर सकते और मैं वापस लौट बाऊँ तथा आकर अपनी आजीविका अजित करूँ। मै वही करने की कोशिश कर रहा हैं।"

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३६१) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

र और २. वक्तव्यका यह मसौदा गांधीजी ने अपने २ जुळाई, १९४१ के पत्रके साय ही भेजा था; देखिए अगळा कीर्वक।

रे और ४. तार उपकन्ध नहीं हैं।

५. अमृतकाल चटर्जीको यह वक्तव्य पसन्द नहीं आया और इसलिए यह प्रकाशित नहीं किया गया। १५२

#### २१४. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्षा २ जुलाई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मुझे खेद है कि मैं तुम्हें अपना मसौदा न भेज सका। अब मैं तुम्हारे मसौदे की जगह एक अन्य मसौदा मेज रहा हूँ। यदि तुम्हें भेरा मसौदा पसन्द न आये तो तुम्हें कुछ भी छपवाने की जरूरत नहीं है। यह विषय पुराना हो चुका है।

मुझे आचा है कि अब आभा तन्दुहस्त हो गई होगी।

तुम्हें किसी खानगी पेढ़ीमें काम बूँढ़ना चाहिए और घीरे-घीरे अपनी जीविका कमानी चाहिए। अभीतक तुम जिस तरहसे रहते रहे हो उससे मैं यही समझता हूँ कि तुमने अपना जीवन व्ययं गैंवाया है। तुम आमा और वीणासे भी वे जो-कुछ कमा सकें, कमाने को कहो। तुम्हें मेहनत करने में धर्म महसूस नहीं करनी चाहिए।

> तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१५) से। सीजन्यः अमृतलारु चटर्जी

### २१५. पत्रः अमृतकौरको

२ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

ये रहे दो पत्र । आशा है, तुम्हारे पास यह सही-सलामत पहुँच जायेगा।
अभीतक एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब मैंने तुम्हें पत्र न लिखा हो।
बहुत ठंडी हवा चल रही है। फिलहाल तो यहाँ शिमला-जैसा मौसम है।
इससे श०को प्रसन्तता होनी चाहिए। मुझे आशा है कि उसे तुम्हारी सूरत देखकर
आधात नहीं पहुँचा होगा।

१. देखिए पिछ्छा शीर्षक।

२. जुँबर शमशेर सिंह, अमृतकौरके भाई

यहाँ सब ठीक है।

सिकन्दर आज यहाँ आ रहा है। मैं तुम्हारे बिना निरुपाय हूँगा। किन्तु दामोदरने उसके साथ मैंत्री कर ली है। उसने उसका ध्यान रखने का वादा किया है। सप्रेम,

बापू

#### [पुनश्च:]

यह पत्र व्यवधानोंके बीच लिखा गया है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२७)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३६ से भी

#### २१६. पत्र: लीलावती आसरको

२ जुलाई, १९४१

चि० लीली,

तेरा पत्र मिला। अगर तू अभीसे हिम्मत हार वैठेगी, तो कैसे काम चलेगा। तुझे ध्यान लगाकर पढ़ना और समझना चाहिए। किसीकी मददकी जरूरत हो तो लेनी चाहिए। वजन बढ़ता हो तो बढ़े, लेकिन दूध और घी तुझे नियमपूर्वक खाना चाहिए। तेरा वजन १०५ या ११० भी हो जाये, तो कोई हर्ज नही। अगर पौष्टिक भोजन नहीं लेगी तो तबीयत खराब होगी और दिमागमें ताजगी नहीं रहेगी। यहाँ चार दिनसे खूब बारिश हो रही है। ठंड खूब पड़ती है। चाय, जैसा मुझसे कहा था, इलकी बनाती होगी।

बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

राजकुमारी शिमला गई। सुशीला मजेमें है। तेरा खर्चा उठाने का शान्तिकुमारने वचन दिया है।

श्रीमती छोलावतीबहुन उदेशी कानजी खेतसी कन्या छात्रालय ६५, मिट रोड फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१०९) से। सौजन्य: लीलावती आसर

#### २१७. पत्र: सतीन सेनको

सेवाग्राम ३ जुलाई, १९४१

प्रिय सतीन,

अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला। हालांकि स्थानीय परिस्थितियाँ ही अन्ततः स्थितिका निर्धारण करेंगी, तथापि मैं सोचता हूँ कि यदि तुम लोगोंके मतभेदका आधार साम्प्रदायिक नहीं है तो तुम्हें किसी निश्चित उद्देश्योंके लिए दिये गये चन्दे स्वीकार कर लेने चाहिए, वक्तों कि वे दोनों जातियोंसे मिलें। यदि मुसलमानोंमें से अधिकाश लोग विरोध करें, तो तुम्हें साम्प्रदायिक आधारपर वितरणका काम अपने अपर नहीं लेना चाहिए।

मारवाड़ी सोसायटीके उत्तरपर मुझे कोई बाश्चर्य नही हुआ। तुम स्यानीय

तौरपर जो कार्यं कर सकते हो, करो।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

२१८. पत्र: अमृतकौरको

३ ज्लाई, १९४१

प्रिय पगली,

सायमें जीन्दके राजाका उत्तर है। यह खराव है, टालमटोलवाला है। किन्तु किया क्या जाये? मुझे खुशी है कि तुम्हें इतना ठीक-ठाक देखकर उन सबको सुखद बाश्चर्य हुआ। तथापि मुझे खुशी है कि मैं घवरा गया और तुम्हें भेज दिया। तुम्हारे लिए स्वस्थ या बीमार, हर हालतमें शिमला जाना जरूरी था।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२८) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३३७ से भी

#### २१९. पत्र: मीराबहनको

३ जुलाई, १९४१

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। कल रात मुझे तुम्हारी बहुत याद आई। और फिर भी मैं मना यह रहा था कि तुम न आओ। जब मुझे मालूम हुआ कि उँघरूको तुम्हारे पास मेजा गया है तो मैंने सोचा कि तुम्हारी देखमाल हो रही हैं। अभी-अभी पूछताछ करने पर पता चला कि केवल उँघरूको हो मेजा गया है। मुझे अभी-अभी यह मालूम हुआ है कि उँघरूको पूरी हिदायतोंके साथ मेजा गया था। तयापि तुम्हारी कैसी गुजर रही है, यह देखने के लिए मैं पुरीको तुम्हारे पास मेज रहा हूँ। उससे बात करने के लिए तुम अपना मौन भंग कर देना।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४८४)से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९८७९ से भी

१. बापूज छेटसं टु मीरा में ७ सितम्बर, १९४० को लिखे पत्रसे पहलेकी एक टिप्पणीमें मीराबहन लिखती हैं: "मेरा अन्तहन्ब अत्यन्त नाजुक दौरमें पहुँच गया था बौर मेरा मार्ग दुविधाओं तथा आन्तियोंके कुद्धासेसे आच्छादित हो छठा था। मैं इतनी व्याकुळ हो छठी थी कि मैंने एकान्त और मौन धारण कर लिया था जिससे कि मैं इंक्वरसे मददके लिए प्रार्थना कर सकूँ। मेरा यह मौन, सफरके कुछ दिनोंको छोड़कर, पन्द्रह महीने चला। कुछ समयके लिए मेरा निवम आवह्यकता पहने पर दिनमें एक बार बाधा हटिके लिए वोलना था। वाकी समयमें, जब मैं सेवाधाममें वनी एक कुटियामें रहती थी, मैं सप्ताहमें दो बार बोळा करती थी, जब मैं शामको बापूसे मिळने जाती थी।"

### २२० पत्र: गोपीनाथ बारदलईको

३ जुलाई, १९४१

प्रिय बारदलई,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे मनमें यह बात विलकुल स्पष्ट है कि जबतक तुम अपने तमाम रोगोंसे मुक्त नहीं हो जाते, तबतक तुम्हें अपनेको गिरफ्तार नहीं करवाना चाहिए। यह पत्र अध्यक्षको दिखा देना।

> तुम्हारा, वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४) से

### २२१. पत्र: दिलखुश दीवानजीको

३ जुलाई, १९४१

माई दिलखुश,

तुम्हारी पुस्तिका मिली। उसे पढ़ने का प्रयत्न करेंगा और उसपर लिखने जैसा कुछ हुआ तो लिख्रेंगा। जब तुम सब लोग आते हो, तब मुझे कुछ लोगोंसे खास तौरपर मिलने की इच्छा तो जरूर होती है, लेकिन मुझे उसे दवाना पड़ता है। बापुके आशीर्वाद

दिलसुश दीवानजी
"गांधी कुटीर"
कराड़ी, नवसारी होते हुए
बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवै

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६४८) से

१. देखिए "पत्र: गोपीनाथ बारदर्व्हं को ", पृ० १४४-४५ भी।

२. देखिए "पत्र: दिल्खुश दीवानजीको ", २१-७-१९४१।

### २२२. पत्र: अरुणचन्द्र गुहको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए ४ जुलाई, १९४१

प्रिय अरुण बाबू,

पुराने बसेरेसे लिखा आपका पत्र पाकर बहुत खुशी हुई। आश्चर्य तो इस बातका है कि आपको वहाँ और पहले नहीं ले जाया गया। मीतर हों या वाहर, आप सेवा करते ही हैं। हाँ, मुझे आपके सभी पत्र मिले थे और मैंने उन सबको निपटा दिया है। हमारा काम निश्चय ही कठिन किन्तु सीधा-सादा है। हम जानते है कि अमुक समयपर हमें क्या करना है। हमें कोई जल्दी नहीं है, क्योंकि हमें सफलताका विश्वास है।

बंगालसे शायद मेरे पास किसीको आने की जरूरत नही होगी, क्योंकि राजेन-बावू और प्रोफेसर वहाँ गये थे और उन्होंने कार्यकर्ताओंके साथ दिल खोलकर वातें

की थीं।

यदि हम छोग पूरी तरह साम्प्रदायिकतासे मुक्त और अहिसक वने रहें, तो किसी दिन हम साम्प्रदायिक प्रश्नको हल करने में निर्णायक मूमिका निभायेंगे। क्या आप इस बातसे सहमत नहीं हैं कि बिना अहिसाके हम साम्प्रदायिकतासे पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकते?

आशा है, आप सब लोग ठीक-ठाक होंगे। सब लोगोंको मेरा सप्रेम अभिवादन कहें।

> आपका, मो० क० गांघी

श्री अरुणचन्द्र गुह सुरक्षा बन्दी मार्फंत अतिरिक्त पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिदनापुर हिजली शिविर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६६८)से

१. इस पत्रको पहले सेंसरने रोक लिया था, किन्तु नादमें २२ जुलाईको पास कर दिया था। २. २३ जूनको कलकत्तेमें राजेन्द्रप्रसाद और बे० नी० कुपलानी ने थंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालयमें थंगालके कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ साम्प्रदायिक समस्यापर नातनीत की थीं। २२३ पत्र: अमृतकौरको

४ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

ये रहें तुंम्हारे पत्र । तुम्हारा पत्र ठीक समयपर आ गया है। जमनालाल बजाजके वारेमें मुझे कोई जल्दी नहीं है। यदि तुम्हें जरा-सी भी दिक्कत महसूस हो तो तुम मुझे बिना किसी झिझकके वता देना।

जरा सोचो कि तुमपर भार डाले विना कोई आदमी यदि तुम्हारी गित-विधियाँ निर्मारित कर दे तो कितना आराम रहेगा। यदि नीकर-चाकर ऐसा करें तो कहा जायेगा कि वे बड़े निष्ठावान है। यदि यही चीज मित्र लोग करे तो कमसे-कम उतना श्रेय तो उन्हें मिलना ही चाहिए। और जरा सोचो कि इससे अपना काम करने के लिए तुम्हें कितना मौका मिल जाता है! लेकिन हम लोग जिस दुनियामें रह रहे हैं वह बड़ी एहसान फरामोश है। आखिर किया क्या जाये? सिकन्दर यहाँ है। वह तुम्हारे बिना बहुत सूना महसूस करता है। वह हैदराबाद जानेवाला है और बादमें आयेगा।

सप्रेम,

वापू

मूळ अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०२९)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३८ से भी

## २२४. पत्र: प्रेमाबहन कंटकको

४ जुलाई, १९४१

चि॰ प्रेमा,

जिस पत्रके लिए मैने लिखा था कि नहीं मिला, वह वादमें मिल गया।

तू जो लिखती है वह सच है। बहुत तेजीसे काम करने में कभी-कभी पत्रोंके जवाब रह जाते हैं और कभी-कभी दुवारा दे दिये जाते हैं, जैसा तेरे वारेमें हुआ। जवाब देना रह जाये इसके बजाय दुवारा दे दिया जाये, यही अच्छा है न? मैने तुसे पत्र लिखा तभी मुझे खयाल हुआ था कि इसका उत्तर तो दे दिया होगा। तेरे पत्रोंका उत्तर अधिकतर लौटती डाकसे लिखने की आदत पड़ गई है। परन्तु ऊपर जवाबकी तारीख नहीं लिखी थी। इससे अम हो गया। यह तो हुआ व्यर्थका व्याख्यान।

अमृतकौरने गांधीजी को एक तार मेजा था, जिसमें उनसे जमनालाल वजाजको स्वास्थ्य-सुधारके
 श्रिप शिमका मेजने का भनुरोध किया गया था।

सुशोलाका मोतोझरा भयंकर कहा जायेगा। राघावहनने उसके वारेमें मुझे कुछ अधिक विस्तारसे लिखा है। आज मैं सुशोलाको लिख रहा हूँ। जमनादासने उसकी वडी सेवा की।

अप्पा<sup>\*</sup> तो बढ़िया काम कर ही रहे हैं। इस बार तू [जेलसे] सीधी यहाँ आयेगी ही।<sup>५</sup>

'घनुष-तकली' मिली होगी। वह ठीक बनी हो तो गित अच्छी देती है। अपनी उर्दू अच्छी कर लेना। लिखना और पढ़ना आना ही चाहिए। अपना वजन बढ़ाना।

मैने तो समझा था कि कनुकी सगाई होनेवाली है। परन्तु अब ऐसा नही है। भविष्यमें क्या होगा, यह तो ईश्वर जाने।

राजकुमारी वायु-परिवर्त्तनके लिए शिमला गई है। मेरी और वा की तबीयत अच्छी है। महादेव देहरादून गया है। आज मुलाकात करके लौटेगा। अहमदाबादमें उसने विद्या काम किया है।

सव वहनोंको

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४२०)से। सी० डब्ल्यू० ६८५९ से भी; सीजन्य: प्रेमावहन कंटक

#### २२५. पत्र: नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्घा ४ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

सदाकी तरह प्रेमाबहनका पत्र तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम्हारे वक्तव्यपर मेरी टिप्पणी तुम्हें मिली होगी। जमनाकी चिट्ठी आई थी, उसमें जवाब देने जैसा कुछ नहीं था।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीको माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८४ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

- १. सशीला पै
- २. मगनलाल गांधीकी पुत्री
- ३. जमनादास गांधी
- ४. अप्पासाहव पटवर्षन, महाराष्ट्रके गांधीके रूपसे प्रसिद्ध
- ५. इससे आगेके एक वाक्यको जेल-अधिकारियों ने काट दिया था।
- ६. 'रॅंटिया वारस' के बारे में, देखिए पृ० १५०।

## २२६. पत्र: कन्हैयालाल मा० मुन्जीको

४ जुलाई, १९४१

भाई मुन्शी,

राव वहादुरको तुम्हारा पत्र मिले, इससे पहले ही मैं उन्हें लिख चुका था। डॉ॰ खरेको लिखा तुम्हारा जवाव मुझे कमजोर लगा। उन्होंने तुम्हारे साथ अपनी तुलना ही कैसे की? कहाँ तुम और कहाँ वे! उन्होंने तो कांग्रेसके सब नियमोंका उल्लंघन किया है। इसके विपरीत, तुमने नियमोंका आदर्श रीतिसे पालन किया और फिर पालन करने के लिए ही अलग हो गये। किसीके कहने या इच्छा करने से तुम्हारे-हमारे बीच भेद थोड़े ही उत्पन्न होनेवाला है।

उम्मीद है तुम सपरिवार कुशलपूर्वक होगे।

बापुके आशीर्वाद

गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ ७६६४)से। सीजन्य: कन्हैयालाल मा॰ मुन्जी

#### २२७. पत्र: माधवदास गो० कापडियाको<sup>2</sup>

[४ जुलाई, १९४१]

तुम्हारी गाड़ी किसी प्रकार चल रही है, या अभी भी विना किसी बन्बेके हो? बापूके आशीर्वाद

श्री माघवदास गोकुलदास कापड़िया पहली मंजिल, श्यामणी शिवजी विल्डिंग मनोहरदास स्ट्रीट, मोदीखाना फोट, बम्बई

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से

बुलाई, १९३८ में कांग्रेस कार्य-समितिने मध्य प्रान्तके मृतपूर्व मुख्यमन्त्री ठाँ० पत० वी० खरेको "घोर बनुकासनहीनताका दोषी" पाया था और उन्हें "कांग्रेस संस्थामें किसी मी जिम्मेदारीके पदके क्योग्य" छहराया था; देखिए खण्ड ६७।

२ और ३. माधनदास कापदिया कस्तूरना गांधीके भाई ये। कस्तूरना द्वारा उन्हें लिखे गये इस

वारीखके पत्रके नीचे ही गांधीजी ने ये पंक्तियाँ जोड़ दी थीं।

१६१

#### २२८. पत्र: प्रभावतीको

४ जुलाई, १९४१

चि० प्रमा,

तेरा कार्ड मिला था। अब तो तू देवली जाने की तैयारीमें होगी। लौटते हुए यहाँ जखर आना। जयप्रकाशने मुझे पत्र लिखा था। लगता है उसे मेरे कामसे कुछ असन्तोष है। लेकिन सन्तोष उसे था ही कब? मैं उसे जवाब लिखनेवाला हूँ। उससे कहना कि अगर वह अपनी तबीथत सुपार ले, तो उसके असन्तोषके बावजूद मुझे पूरा सन्तोष होगा। राजकुमारी वायु-परिवर्तनके लिए शिमला गई है। राजेन बाबू ज्यों ही वहाँ पहुँचे कि उनका बीमार पड़ जाना निश्चित है। बा मजेमें है। मैं ठोक हूँ। सुशीला अभी यही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६१)से

#### २२९. तार: जमनालाल बजाजको

वर्षा ५ जुलाई, १९४१

सेठ जमनालालजी बिड्ला आरोग्य मन्दिर नासिक रोड चिमलासे तार मिला है कि तुम्हारा स्वागत है। [बमी यहाँ] आ जाओ।

बापू

[अंग्रेजीसे] पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २३६

र. देखिए "पत्र: अमृतकारको" ५० र७९ भी।

२३०. पत्र: अमृतकौरको

व्यक्तिगत

सेवाग्राम, वर्घा ५ जुलाई, १९४१

त्रिय पगली,

तुन्हारा तार और पत्र मुझे आज मिले। तुम्हारे पत्रके अनुसार मुझे तुम्हारा तार ज्यादासे-ज्यादा ३ तारीख तक मिल जाना चाहिए था। क्यो नहीं मिला, इसका तुम पता लगाना।

अब मैने नासिकके पतेपर जमनालालको नार दिया है। तुम अगले हफ्ते उसके पहुँचने की आशा कर सकती हो। मैने तुम्हारा पत्र उसे दिखाने के लिए रख लिया है। बाकी सब पत्र भेरे पढ़ने के तुरन्त बाद नष्ट कर दिये जाते हैं।

तुम्हारे पत्रोंसे पता चलता है कि तुम कितना भारी त्याग करके सेवाग्राममें रहती हो। मेरे सामने यह वात स्पष्ट है कि गमियोंमें तुम्हें पहाड़पर रहना चाहिए। तुम्हें अपने शरीरके साथ हिंसा नहीं करनी चाहिए। शम्मीकी तरह मुझे भी इस बातका पूरा विश्वास है कि अपने शरीरके साथ इस तरह हिंसा करने से तुम एकाएक गम्मीर रूपसे बीमार पड़ सकती हो। एक सीमाके वाद आत्म-दमन नुकसानदेह बन जाता है। मैं चाहूँगा कि इस वार तुम शिमलामें ही रहकर देखों कैसी रहती हो। स्वस्थ आत्मिनग्रह वही है जिसमें मनुष्यको आन्तरिक आनन्दका अनुभव हो। यह अच्छी बात है कि जमनालाल तुम्हारे साथ होगे।

यह रहा शम्मीका पत्र। देखें कि तुम शिमलामें रहकर कितनी मोटी हो जाती हो। जितना वजन लेकर आओ, वह फिर घटना नहीं चाहिए।

अमतुल सलाम अभी भी एक कठिन समस्या वनी हुई है। वह वड़ी रहस्यमयी है। उसका दमा पूरी तरह खत्म नही हुआ है। वह बहुत कमजोर है। उसका गुस्सा पहले-जैसा ही है।

महादेव ९ तारीखको वापस आ रहा है।

बेशक मौसम काफी ठंडा है। वारिश अभी भी हो रही है, हार्लांक लगातार नहीं हो रही है। मैं वरामदेके वजाय अपने कमरेमें सोता हूँ। वरामदा आश्रम-वासियोंके लिए चाहिए। पिछली रात मैं दो दरवाजोंके दीच सोया, उसने ताजी

१. देखिए पिछला शीर्षेका

२. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", १७-७-१९४१ सी।

हवा आती रही। शंकरन-समेत मेरे साथी मेरे साथ ही सोये, शंकरन दीवारके पीछे प्यारेळाळकी तरफ तस्तपर सोया।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६७५) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ६४८४ से भी

#### २३१. पत्र: मार्गरेट जोन्सको

५ जुलाई, १९४१

प्रिय कमलाबहन,

बापूको लिखा तुम्हारा पत्र मिला। वे अब ठीक हैं, और पहलेकी तरह अपना काम कर रहे हैं और चलते-फिरते हैं। बापू कहते हैं कि तुम वहाँ प्रशिक्षण प्राप्त करने गई हो, और तुम्हें तुम्हारे चारों ओर जो-कुछ हो रहा है उसकी परवाह न करते हुए और उसपर ध्यान दिये बिना अपना काम करते जाना चाहिए। हाँ, यूरोपमें घटना-चक्की गति दिनों-दिन तीवसे तीवतर होती जा रही है, और कोई नहीं जानता कि विद्वके घटना-चक्कमें हम कहाँ होंगे। किन्तु ईश्वर जानता है। हमें भरोसा रखना चाहिए कि वह हमें उसी स्थितिमें रखेगा जिसमें हमें होना चाहिए, फिर उससे हमें कुछ समयके लिए दुःख मिले या मुख। . . . "

बापूके प्यार सहित, . . . !

[अंग्रेजीसे ]

बापू -- कन्वसेंशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्सा गौधी, पृ० १९५

रे. मार्गेरेट जोन्सने, जो बम्बईमें प्रस्ति-विश्वानका प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थीं, बम्बईके " आम धौरपर असन्तोषजनक वातावरण" के बारेमें किया था।

२ और ३. साधन-सूत्रमें वहाँ कुछ छूट गया है।

#### २३२. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम ६ जुलाई, १९४१

अभी कुछ दिन पहले जब पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष मियाँ साहव इिपज्ञ खाव है कि जो पोचान्द मुझसे मिलने आये थे, तो मियाँ साहवने मुझे बताया था कि कुछ चीजोंको लेकर कतिपय कांग्रेसियोंके मनमें गलतफहमी है और उनका स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए। मुझे उनके बारेमें पहले ही लिखना चाहिए था। लेकिन ज्यादा काम होने और उसे निपटाने की अपनी सीमित झमताके कारण मुझे लिखने में देर हो गई। मैं आज उनपर लिख रहा हूँ।

जब पंजाबके वक्तील संघने देश-प्रेमसे प्रेरित होकर निष्पक्ष न्यायिक सलाहकार की अपनी सम्मानित भूमिका निभाते हुए पंजाब उच्च न्यायालयमें ऐसे सत्यायहियोंके मामलोंको पुनर्विचारके लिए प्रस्तुत करने का निश्चय किया जिनके साथ, उसकी रोयमे. साफ-साफ अन्याय किया गया था, तब मुझे बड़ी ख़ुशी हुई थी। ख़ुशी मुझे इसलिए नही हुई कि उससे सत्याप्रहियोंको कुछ राहत मिलेगी, बत्कि इसलिए हुई कि उससे वकील संबन्धी कर्त्तव्यनिष्ठता और न्यायकी पवित्रता सिद्ध होगी। यद्यपि सत्याग्रहियोंको, उन्हें जी सजा सुनाई गई हो, उसके प्रति उदासीन रहना चाहिए, फिर भी उन्हें अन्यायका पर्दाफाश किये जाने की वातका स्वागत करना चाहिए, विशेषकर तव जब ऐसा निप्पक्ष लोगोंके कहने पर किया जाये। इसलिए जब इस्मत वेगमने मुझे तार दिया और लिखा कि उनके पति अपने मामले पर पूर्निवचार किये जाने की वातसे नाराज और परेशान है. तब मैने उनसे अन्रोध किया कि वे हस्तक्षेप न करें और कहा कि वे अपने पतिसे कहें कि पूर्नीवचार किये जाने की वातमें कोई खराबी नहीं है; और यदि उन्हें रिहा कर दिया गया तो वे फिरसे सविनय अवज्ञा कर सकते है। वेशक अगर कोई सत्या-प्रही कैदी न्यायिक सलाहकारसे यह अनुरोध करे कि वह सत्याप्रहियोंके मामलेको अहालतमें फिरसे उठाये, तो यह एक बिलकुल भिन्न और मही चीज होगी। ऐसा आचरण सल्याप्रह आचार-संहिताके विलकुल विपरीत होगा।

पंजाबकी तरह देशके अनेक भागों में शिकायतें की जा रही है कि सत्याप्रहियों की नई सूचियां जिस तेजीसे मेजी जाती है उतनी तेजीसे उनपर स्वीकृति नहीं दें। जाती। जहाँतक सूचियां भेजने का सवाल है, पंजाव अथवा किसी प्रान्तमें तत्परताकों कोई कमी नहीं है। लेकिन उनपर अपनी स्वीकृति प्रदान करने की मुझे कोई जत्दी नहीं। में हजारवीं वार यह दोहरा रहा हूँ कि वर्त्तमान सविनय अवज्ञा आन्दोलनका उद्देश्य सरकारके काममें वाया डालना नहीं है; इतना ही नहीं, इस वातका ध्यान भी रखा जा रहा है कि जहाँतक हो सके, ऐसी स्थिति उत्पन्न ही न होने दी जाये।

सविनय अवज्ञा आन्दोलनकी खूबी इसीमें है और उसकी शक्ति भी इसी वातमें निहित है कि आज जब अंग्रेज जिन्दगी और मौतके भयंकर युद्धमें लगे हुए है, उन्हें कमसे-कम परेशानीमें डाला जाये। इसके अतिरिक्त, चूँकि हमारी यह लड़ाई अनिरिक्त काल तक चलनेवाली है -- मैं मानता हुँ कि कमसे-कम पाँच सालतक तो अवश्य ही चलेगी -- इसलिए जेलोंको भरने की जल्दी मचाने की कोई जरूरत नही है। आज हम स्वतन्त्रता-प्राप्तिके जितने नजदीक है, मात्र जेलें भरने से उससे अधिक नजदीक नहीं हो जायेंगे। इसकी उपयोगिता तो यह है कि मर्यादित सविनय अवज्ञाके माध्यम से लोग अनुशासन, कष्ट-सहन और आत्म-बलिदानकी आवश्यकताको ठीक तरहसे समझें। सत्याप्रहका हर सच्चा उदाहरण जनमानसको व्यापक रूपसे प्रभावित करता है। बान्दोलनके शरूमें सूचियोंकी जाँच करने में मैंने जान-बुझकर ढिलाईसे काम लिया था। उसका परिणाम यह हुआ कि उसमें कई ऐसे छोग आ घुसे जिन्होंने कोई रचनात्मक कार्य नहीं किया था। कुछ लोगोंको तो उसमें कोई आस्था भी नही थी। ऐसे लोग कांग्रेस संगठनके लिए बोझ सरीखे हैं और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के रास्तेमें निश्चित रूपसे बाघक हैं। मैंने वार-वार कहा है कि रचनात्मक कार्य सवि-नय अवज्ञाकी नींव है। इससे कार्यकर्तामें अनुशासन की भावना आती है और अहिंसा का विकास होता है। अतः जैसे-जैसे समय वीतता जाता है कांग्रेसियोंको मेरी ओर से अधिक सल्तीकी अपेक्षा रखनी चाहिए। शत वही होंगी, लेकिन उन्हें लाग करने में कड़ाई बरती जायेगी। यदि हम धीरे-धीरे शक्तिका विकास करना और अपनी लड़ाई को अधिकाधिक शुद्ध बनाना चाहते है तो ऐसा करना स्वामाविक है। मै किन्हीं अन्य शतींपर इसका संचालन नहीं कर सकता।

फिर मियाँ साहवने मुझे यह भी बताया कि उन्होंने पंजावके सभी दलोंको जो इस वातपर सहमत कराने की कोशिश की कि अपने कार्यक्रमोंपर अमल करने में वे गुण्डागर्दीका सहारा न लें उसकी कुछ कांग्रेसियोंने आलोचना की है। जब मियाँ साहवने मुझे वताया कि ऐसे प्रयत्नमें सफलता मिलने की सम्भावना है तो मैने तत्काल उनसे कहा कि वे इस दिशामें जरूर प्रयत्न करें और फिलहाल वे खुद सविनय अवज्ञा न करें और जिन लोगोंकी सहायता इस कठिन कार्यंके लिए वे जरूरी समझें, वे लोग भी सुविनय अवज्ञा न करें। मियाँ साहबने अपनी बैठकमें गैर-कांग्रेसियों, यहाँ तक कि साम्प्रदायिक नेताओंको भी बुलाया, यह बात कुछ कांग्रेसियोंको, मालूम होता है, ठीक नहीं लगी। ये आपत्तिकत्ती यह भूल जाते है कि मियाँ साहबके प्रमावका सार यही है कि सभी विरोधी तत्वोंको इकट्ठा किया जाये और यह देखा जाये कि वे लोग अपने-अपने उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए गुण्डागर्दीका सहारा न लेने की वातपर सहमत हो सकते हैं या नहीं। और ऐसी बैठकमें लोगोंकी गिनतीके आधारपर ही कोई निर्णय नहीं किये जा सकते। गुण्डागर्दीको खत्म करने का हमारा उद्देश्य तो सभी दलोंकी दिली सहमतिसे ही पूरा हो सकता है। कुछ मी हो, कांग्रेसियोंको यह जानना चाहिए कि मियाँ साहवने मुझसे सलाह करने और मेरी पूर्ण सहमति प्राप्त करने के बाद ही इस कठिन कार्यको अपने हाथमें लिया है। मै आचा करता हैं कि मियाँ साहबकी सभी कांग्रेसियोंका पूरा-इरा सहयोग मिलेगा।

वे [मियाँ साहव] सविनय अवज्ञा करने के लिए अधीर हो रहे हैं। पंजाब कांग्रेसका अध्यक्ष होने के नाते वे सविनय अवज्ञा आन्दोलनमें भाग लेना अपना प्रमुख कत्तंत्र्य समझते हैं। मैंने उनसे कहा है कि ऐसा कोई सर्वसामान्य नियम नहीं है। इसके विपरोत उनका, और उन लोगोंका जिन्हें वे इस कार्यके लिए चुने, यह स्पष्ट कत्तंत्र्य है कि तबतक सविनय अवज्ञा आन्दोलनमें भाग न ले जबतक वे और उनके साथी यह समझते हैं कि वे गुण्डागर्दीको खत्म करने की दिशामें कुछ योगदान कर सकते हैं।

अब सवाल उन लोगोंका रह जाता है जिन्हें पंजाब उच्च न्यायालयने इस आधार पर रिहा कर दिया है कि उन्होंने सिवनय अवज्ञा करने की जो सूचना दी थी वह उनको सजा देने का पर्याप्त कारण नहीं हो सकती। इस निर्णयके बारेमें पता चलने पर मैंने मियाँ साहबको सूचित किया था कि उन्हें उन लोगोंको जेल भेजने में जल्द-बाजो नहीं करनो चाहिए और जब वे सेवाग्राम आयेंगे तब मैं उनसे इस विपयमे बातचीत करके कोई निश्चय कल्या। वे बाये और मैंने उन्हें सलाह दी कि जिन लोगोंको शान्ति-स्थापनाके कार्यके लिए जल्दरत नहीं है उन्हें फिरसे सविनय अवज्ञा आन्दोलन करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेडिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१-गृह निमाग, पॉलि॰ (१)। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार

२३३. पत्र: अमृतकौरको

र्घ्यावतगत

सेवाग्राम, वर्या ६ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

भैने एक दिनका भी नागा नहीं किया है। इसलिए तुम्हें अप्राप्त पत्र मिलना

ही चाहिए।

फारकी यहाँ आये थे, मैं तुम्हें यह बताना मूल ही गया। हम एक घंटे तक विचारोंका आदान-प्रदान करते रहे। लेकिन वह तो केवल प्रारम्भिक बातचीत थी। उन्होंने कहा कि वे फिर आयेंगे। मैं नहीं समझता कि उनसे मिलने से हमारा कोई नुकसान हुआ है। नन्दनको फारकीके वारेमें अपनी राथ मुझे बतानी चाहिए, खास-कर इसलिए कि वे दिल्लीके हैं।

क्ल पुरवोत्तम त्रिकमदास यहाँ आये थे। खान साहब ९ तारीखको आ रहे है।

जमनालाल कल अथवा बुधवारको निश्चित रूपसे आयेंगे।

तुम्हें सिरदर्द क्यों होना चाहिएं?

राजाको बच्चेकी खातिर रिहा कर दिया गया है। मुझे उसका एक पत्र मिला था। राजाकी रिहाईके लिए धीखने पुलिस कमिश्नरसे अनुरोध किया था।

अपने पिछले जन्मोंके बारेमे जानने की विद्या तुमने कवसे सीख ली? तुम्हे कैसे मालूम कि तुम अपने पिछले लाखों जन्मोंमें बिनयेसे भी बदतर नहीं थी? बहरहाल, क्या मैने तुमसे यह नहीं कहा था कि अगर तुम कागजवालेसे यह कहोगी कि वह तुम्हें बिल न दे तो वह तुम्हारे इस अनुरोधको स्वीकार कर लेगा? और मैंने तुमसे यह भी कहा था कि मुझे उस कागजको इस्तेमाल करना अच्छा नहीं लगेगा। उसका बिल सही बिल था। वह किसी भी ग्राहकसे उतना ही पैसा लेता। लेकिन अन्तिम निणेंय करने में जल्दबाजीकी जकरत नहीं है। तुम मुझे समझाने की कोशिश्च करना और यदि तुम मुझे समझाने में सफल रही, तो मैं खुशीके साथ पैडोंका इस्तेमाल कर्लेगा।

सब जगह बहुत ज्यादा वर्षा हुई है। हम उम्मीद करें कि इसका मतलव यह नहीं है कि आगे मौसम सुखा रहेगा।

सत्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३३९ से भी

#### २३४. पत्र: लीलावती आसरको

६ जुलाई, १९४१

चि॰ लीली,

तेरा पत्र मिला। अच्छा नहीं लगा मुझे। तेरी दिक्कतें किसी लेखेमें नहीं आतीं। अन्य अनेक स्त्रियाँ बहुत ज्यादा दिक्कतें उठाकर भी पढ़ती है। तू अस्वस्य रहती है, अध्ययनमें तेरा मन नहीं लगता, यह क्या तुझे शोमा देता है? जिस कामका बीड़ा उठाया है उसे पूरा कर। अभी सेवाग्रामको भूल जा। शान्तिकुमारको कष्ट न देने का तेरा दृढ़ निश्चय मुझे अच्छा लगा। लेकिन पैसोंके अभावमें तेरी पढ़ाई बिलकुल नहीं बिगड़नी चाहिए। तुझे तो यह संकल्प करना ही है कि तुझे खूब मेहनत करके पास होना है। ऐसा नहीं हुआ, तो यहाँ पढ़ने में जो तीन महीने तूने बिताय उन्हें व्यर्थ बीता मानूँगा और मुझे इस बातका दुःख होगा कि मैने तुझे आने दिया।

् बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८१)से। सी० डब्ल्यू० ६६५६ से मी; सौजन्य: लीलावती आसर

#### १. गुणोत्तम इठीसिंह

#### २३५. पत्र: शारदाबहन गो० चोखावालाको

६ जुलाई, १९४१

चि० बंबुड़ी,

तरा पत्र आज मिला। तार भी कल ही मिला। इसलिए उसमें किसीका दोप न होते हुए भी, यहाँ तो शकरीबहन घवरा गई थी। मुझे तो कोई चिन्ता नही थी। तेरी खासी परीक्षा हो गई। आज यहाँ तो मौसम खुल गया है। तू अपनी तबीयत सँभालना। खानसाहब ९ को आयेंगे। आनन्दघनको वहुत-बहुत राम-राम। तेरी पुस्तकका प्रबन्ध कर दिया है। उम्मीद है घोखाबालाकी सबीयत ठीक होगी। वापूके आशोबीद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३२)से। सौजन्य: जारदावहन गो० कोखावाला

### २३६. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम ७ जुलाई, १९४१

त्रिय पगली,

सिर्फ एक बार छोड़कर तुम्हारे पत्र बिना नागा मुझे मिले है। किन्तु मेरे पत्र तुम तक नहीं पहुँचते, यह बड़े आश्चर्यकी बात है।

् इसके साथ तीन पत्र व तुम्हारा तार भेज रहा हूँ, जो मैं कल भेजना भूल

गया था।

जब जमनालाल यहाँ आयेंगे तो मैं उनके भोजनके बारेमें तुम्हें सूचना भेज दूँगा। किन्तु उसमें विशेष कुछ नहीं है। उन्हें जिन चीजोंकी जरूरत हो सकती है वे सब तुम्हारे पास हैं — ताजी सब्जिया, फल व दूध।

महादेवका कहना है कि वे १० तारीखको पहुँचेंगे। रेलवे लाइनोंमें टूट-फूट

के कारण कुछ भी निश्चित नही है।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०३१) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन० ७३४० से भी

१. ज्ञारदावहनके पुत्र

#### २३७. पत्र: लक्ष्मी भारतीको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए ७ जुलाई, १९४१

प्रिय बहन,

अपनी कमजोर सेहत व अन्य परिस्थितियोंको देखते हुए तुम्हें दुवारा सिवनय अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।

> हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांघी

श्रीमती लक्ष्मी भारती, एम० एल० ए० मार्फंत श्री एल० के० भारती पसुमले मदुरै (दक्षिण भारत)

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२६९) से। सौजन्य: एल० क्रूब्णस्वामी मारती

#### २३८. पत्र: डी० के० गोसावीको

७ जुलाई, १९४१

प्रिय गोसावी,

राजेनवाबूके आने की तिथि अनिश्चित है। वे मध्य जुलाईसे पूर्व नहीं बायेंगे। देवकीनन्दनका तर्क युक्तियुक्त होते हुए भी तसल्लीबख्श नहीं है। लेकिन राजेनवाबू तो आयेंगे ही, ऐसा मानकर तुम आ सकते हो और अपने साथ डी० को भी ला सकते हो।

तुम्हारा, वापू

श्री डो० के० गोसावी कांग्रेस हाउस पूना-५

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२३५)से

## २३९ पत्र: कंचन मु० शाहको

७ जुलाई, १९४१

चि० कंचन,

तेरा कार्ड मिला था। आज फिर पत्र मिला। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि तू आलसी है। यहाँ जब तुझे आना हो, आ जाना, लेकिन वहाँ सबको सन्तुष्ट करके आना। और यहाँ आना, तो यह निश्चय करके आना कि रोऊँगी नहीं। हर समय प्रसन्न रहना तेरा घर्म है। हाँ, वारिश तो सब ओर खूब हुई। अब रुम्बे समयतक खुला न रहें तो अच्छा हो। मुन्नालाल प्रसन्न रहता है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती कंचनबहन मार्फेत शाह मगनलाल कालिदास वालोड, स्टेशन मढी (सुरत), टी० वी० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७४) से। सी० डब्ल्यू० ७१४५ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० श्राह

### २४०. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्षा ८ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। भाषा और लिखावट दोनों अच्छी है। और यदि तुम हिन्दी भी जतनी ही तेजीसे लिखती हो जितनी अंग्रेजी तब तो तुमने आश्चर्य-जनक प्रगति कर ली है।

जमनालाल आज आ गये। बहुत स्वस्थ दिखाई देते हैं। वे ज्यादासे-ज्यादा १५ तारीख तक ठहरना चाहते हैं। वे कुछ काम पूरे करना चाहते हैं। में नहीं चाहता कि वे उतावली करें।

तुम्हें अपनी प्रतिष्ठा नहीं खोनी चाहिए। सरकारी अधिकारियों द्वारा हमेशा तुम्हें विनयपूर्वक 'न' कहने की वात मुझे अच्छी नहीं लगती। यह इस वातका संकेत है कि चूँकि तुम अब प्रकट रूपसे मुझसे आ मिली हो इसिलए तुम्हें किसीसे कुछ अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। उनके दृष्टिकोणसे विचार करने पर मैं उनके व्यवहारको उचित ही ठहराऊँगा। तुम एक साथ दो नावोंमें पैर नहीं रख सकती। उनके दृष्टिकोणसे यह ठोस दलील होगी। वै और कोई दलील दे ही नहीं सकते। लेकिन अगर तुम मुझसे सहमत नही हो तो तुम्हें जो ठीक लगे सो करना। क्योंकि यदि तुम अधिकारियोंको लिखती हो तो उसमें अपने-आपमे कोई दोष नहीं है। यही बात बुलके मामलेमें भी लागू होती है। उसके गोटिसके बाद उन्होंने उससे उनके निर्देशोंकी प्रतीक्षा करने को कहा है। वह १० तारीख तक प्रतीक्षा करने के लिए राजी हो गई है। इसमें भी तुम्हें अपनी समझके अनुसार काम करना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३२)से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३४१ से भी

#### २४१. टिप्पणी

९ जुलाई, १९४१

मैं दोनो पत्र पढ गया। करियाप्पाका दोष तो स्पष्ट है। मुन्नालाल माफी मागते हैं वह भी ठीक है। लेकिन मुन्नालालके पत्रमें वहूत गल्ती है। संस्थामें रहने के नालायक कोई हो निह सकता। जगत हि तो संस्था है। जगतके वाहर कौन रह सकता है? कुटुंव भी संस्था है। वह पेटा संस्था है और कुटुंव और जगतके वीचमें हमारे जैसी संस्थाएं है। सब अपूर्ण है। जगत भी अपूर्ण-संपूर्ण संस्था जैसी वस्सु हि निह है। क्योंकि संस्था अपूर्ण मानवीओंकी बनी हुई है। संपूर्ण एक मात्र ईश्वर है। इसिलये मुन्नालाल संस्था मात्रसे भाग निह सकते। किसी न किसीमें तो रहना हि है।

बापू

टिप्पणीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९२) से । सी० डब्ल्यू० ७१४४ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

#### २४२. पत्र: ईश्वरलाल व्यासको

१० जुलाई, १९४१

माई ईश्वरलाल,

तुम्हारा सजीव पत्र पढ़ गया। अब वहाँ क्या व्यवस्था है, मुझे लिखना। जीवराममाईके पैसे जहाँ-तहाँ पड़े है, उनका क्या होगा? आश्रमकी व्यवस्था कौन करेगा? नाथीबाई यहाँ आये तो मुझे अच्छा लगेगा। उनका पत्र उन्हे दे देना। जीवराममाईका जहाँ अग्नि-सस्कार हुआ, उस जगहपर कुछ होना चाहिए। तुमने कुछ सोचा हो तो लिखना। अग्नि-संस्कार कहाँ हुआ? कुछ फूल बचाये हैं या सव समुद्रमें विसर्जित कर दिये? जीवराममाईने जो बीज बोये हैं, उस सवमें से विशाल वृक्ष प्रस्फृटित हो, तभी कहा जायेगा कि हमने, जो उनके पीछे रह गये हैं, उन्हें छोमान्वित किया।

बापूके आशींवीद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०५९) से

२४३. पत्र : सी० ए० तुलपुलेको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए ११ जुलाई, १९४१

प्रिय मित्र,

गांबीजी को आपका ९ तारीखका पत्र मिला। जबतक आपकी तकलीक पूरी तरह दूर न हो जाये, आपको जेल जाने का विचार नहीं करना चाहिए। उस समय तक जो भी रचनात्मक कार्य आपके सामने आये, आप उसे ही करें।

हृदयसे आपका, महादेव देसाई

श्रीयुत सी० ए० तुलपुले, एडवोकेट तिलक रोड पूना

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० २९०२)से। सीजन्य: सी० ए० तुलपुलें

१. देखिए पृ० १४१-४२ भी।

२. श्री तुळपुळे हृदय-रोगसे पीव्हित थे।

### २४४. पत्र: मुन्नालाल गं ः धुनाहको

११ जुलाई, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

मनुष्यके रूपमें सम्पूर्णता प्राप्त कर लेनेवाला •व्यक्ति भी ईश्वर नहीं वन मकता। देहचारी कृष्णको भी वुरी मौत मरना पड़ा था। वे पुरुषोत्तम भले हों, ईश्वर नहीं थे। जैसे मेंढक मेंढकके रूपमें सर्वोत्तम हो सकता है, ऐसा ही मनुष्यके वारेमें समझना चाहिए। इसलिए मनुष्यकी सभी संस्थाएँ अपूर्ण ही रहेंगी।

लेकिन अगर तुम इस संस्थासे घवराते हो, तो तुम्हें इसे छोड़ देना चाहिए। मैंने तो इतना ही कहना चाहा था कि संस्था-मात्रके वारेमें तुमने जो लिखा है, वह अज्ञानसे भरा हुआ है।

कुटुम्ब नामकी संस्थामें तुम वने रहो, यह तो मेरे मनकी वात जरूर होगी.। कंचन वेचारी तो यही चाहती है। उसने यह सुख तो देखा ही नही। यह सुख उसे दो बीर उसे सन्तुष्ट करो।

यहाँ तो स्वतन्त्रता है ही। जितनो स्वतन्त्रताका उपभोग तुम यहाँ करते हो, उतनी तुम्हें अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगी, यह मेरा निश्चित मत है। अगर तुम गहराई में उतरकर विचार करो, तो समझोगे कि जितनी स्वतन्त्रता तुम अपने लिए चाहते हो, उतनी तुम्हें दूसरेके सम्बन्धमें सहन नही होती। करियाप्पाने मजबूरी वताई, यह उसकी गलती थी; लेकिन उसकी यह स्वतन्त्रता तुम्हें सहन करनी चाहिए थी। इसी प्रकार, निम्वारकरको न रखने की चिमनलालकी स्वतन्त्रता तुम्हें वरदावत करनी चाहिए; जैसे कि अपना मत प्रकट करने की तुम्हारी स्वतन्त्रता चिमनलालको सहन करनी चाहिए। निम्वारकरके साथ न्याय हुआ है या अन्याय, इसकी जाँच तो मुझे करनी है। मैं कलेंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५१८) से। सी० इब्ल्यू० ७१४७ से भी; सौजन्याः मुन्नालाल गं० शाह

जब कृष्ण एक पेड़के नीचे विश्राम कर रहे थे तो एक व्याधने भूक्ते उन्हें तीर मार दिया था।
 देखिए " टिप्पणी", ५० १७२।

### २४५. पत्र: अमृतकौरको.

११ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

कल मैं कुछ नींह लिख सका। तुमारा खत तो मिला। उसका क्या उत्तर हो सकता है? भूल जाना क्या? मैंने गरम ऋतुके दो या तीन मास हि माने हैं। हां, मैं मानता हूं कि हम शरीरकी चिंता न करे। व्यक्तिओं के लिये तो विलकुल ठीक है। लेकिन ईंदीगर्दमें रहनेवालोको वाझ दफा फिकर करनी पड़ती है।

यह सैलन' का है। वहीसे उसको थोड़ा लिखा करो। सुन्नीला कल दो हफ्तेके लिये दाक्तरी अनुभव लेने को गई। दा० जीवराज कल रह गये। कलकत्ता आज गये। खानसाहब आ गये हैं। आज फिर वारिन शरु हो गया है। इस वक्त विचित्र तरह कुदरत काम कर रही है।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८७४)से। सी० डल्ल्यू० ४२४१ से भी; सौजन्य: अमृतकौर

#### २४६. पत्र: वर्घाके डिप्टी कमिश्नरको

सेवाग्राम, वर्वा १२ जुलाई, १९४१

डिप्टी कमिश्नर वर्षा प्रिय मित्र,

यह पत्र सेठ जमनालाल बजाज द्वारा टेलीफोनसे आपको दी गई इस सूचना की पुष्टि करने के लिए है कि श्रीयुत विनोवा माने, जिन्हें आज ही रिहा किया गया था, इसी सोमंबार, १४ तारीखको शाम ६ बजे नालवाड़ीमें पुनः सविनय अवज्ञा करेंगे।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसें। सौजन्य: प्यारेलाल

१. शैकेन्द्र चटर्जी

#### २४७. पत्र: मीराबहनको

१२ जुलाई, १९४१

चि॰ मीरा,

सायकी सामग्री अनितम है। यह बहुत दिल्लचस्प है। देवताओं और मनुष्योंमें एक-जैसे गुण-दोष हैं और वे ऐसे सुपरिचित मित्र हैं जो अकसर परस्पर लड़ते रहते हैं। केवल एक अदृश्य शक्ति ही ऐसी है जो सर्वोपरि और निर्वेश्व है।

तुम कठिनाइयोंके वीचमें से अपना रास्ता वना रही हो। ज्वारके आटेकी चपा-तियाँ तुम आसानीसे वना सकती हो। कोशिश करो तो कामयाव हो जाओगी।

सत्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ६४८५)से; सीजन्य: मीरावहन। जी॰ एन॰ ९८८० से भी

### २४८. पत्र: धीरूभाई भू० देसाईको

१२ जुलाई, १९४१

चि॰ धीसभाई,

अप्पासाहव लिखते हैं कि तुमने उन्हें वम्बईमे घूमने-फिरने से मना कर दिया, इसिलए वह वाहर नहीं निकलते। लेकिन मुझे तो लगता है तुम्हें उन्हें आजादीसे घूमने-फिरने देना चाहिए। उनके जैसे ज्यक्ति बहुत कम है, इसिलए हम उन्हें सहेजकर रखें, यह ठीक नहीं है, फिर भले ही उनका खून होना हो तो हो जाये। वह जो अनुभव प्राप्त कर रहे हैं, वै अमूल्य है। वे बनुभव और किसी तरीके से नहीं मिल सकते। यदि यह तकं तुम्हारे गले उत्तर जाये, तो अप्पाको छुट्टी दे देना। मेरा कलका पत्र फिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे: भूलाभाई देसाई पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहाल्य तथा पुस्तकालय

 चुनी हुई वैदिक ऋचाओंका अंग्रेजी रूपान्तर मीरावहन समय-समयपर गांधीजी को मेजवी रहती थीं। देखिए "पत्र: मीरावहनको", पु० १३६ मी।

२. यह उपलब्ध नहीं है।

# २४९. पत्र: मणिलाल और सुशीला गांधीको

[१२ जुलाई, १९४१ के पश्चात्]

चि॰ मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र बहुत दिनोंके बाद मिले। तुम दोनों सुखी रहो तो मुझे कोई चिन्ता न रहे। सीता तो जब आये तब ठीक है। वहाँ भी वह पढ़ती तो रहेगी ही और प्रगति भी करेगी ही। वह भले तुम्हारे साथ रहे। वह तुम्हारी कुछ मदद भी कर सकेगी।

वापूके आशीर्वाद

#### [ पुनश्च : ] रे

यहाँ भी नेतागण जेलमें पड़े सड़ रहे हैं। विनोवा छूटने के वाद फिर पकड़े गये।

मेड कहाँ है ? मेड और तुम, दोनों ही जोहानिसवर्गमें रहते हो, तुम दोनोंमें से कोई एक फीनिक्समें जाकर क्यों नही रहता ? सुशीला लिखती है कि तुम उसे समा-चारपत्र सीघे न मेजकर किसीके हाथ मेजते हो। वह तो यह मी लिखती है कि कदाचित् वहाँ बलवा भी हो सकता है। मैं तो तुमसे केवल इतना ही कहूँगा कि तुम्हें सुशीलाके पास रहना चाहिए।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९१७) से। सी० डब्ल्यू० १३३० से भी; सौजन्य: सुक्षीला गांधी

- १, पत्रमें विनोवा मावेके जेळसे छूटने और पुनः गिरफ्तार होने के उल्लेखसे। विनोवा मावे ११ जुलाई, १९४१ को जेळसे रिहा हुए ये और बगळे ही दिन फिर गिरफ्तार हो गये थे। इसके अतिरिक्त महादेव देसाई भी मईसे ळेकर अगस्त, १९४१ तक छगातार दौरे पर थे।
  - २. यह अंश सी० डब्ल्यू० नक्छसे लिया गया है।
  - ३. सुरेन्द्र राय मेड
  - ४. मूळ गुजरातीमें यह बावय कुछ बागुद और अस्पष्ट है।
  - ५. साधनसूत्रमें पत्र मधुरा है।

## २५०. पत्र: नरहरि द्वा० परीखको

१३ जुलाई, १९४१

चि॰ नरहरि,

महादेव दिल्लीमें है। मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा। प्रलय उपस्थित हुआ है। कांग्रेसकी जितनी शक्ति है, वह पूरो-की-पूरी लोगोंकी मदद करने में लग जानी चाहिए, यह बात तो बिना कहे समझ लेनी चाहिए। कहाँ, कैसी और कितनी मदद दी जाये, यह सवाल पैदा होगा, लेकिन इसका निगंय परिस्थिति देखकर और अपनी सीमाओंको इयानमें रखकर किया जा सकता है। स्थायी [सहायता] कोषका उपयोग तो वहाँ अवस्य ही किया जा सकता है।

दंगोंकी बात तो वहाँ लोग इस समय मूल गये होंगे। महादेव १७ को यहाँ आयोगा। तभी उसके उस तरफ जान के बारेमें हम विचार करेंगे। मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२३) से

### २५१. पत्र: मार्गरेट स्पीगलको

सेवाग्राम, वर्षा १४ जुलाई, १९४१

प्रिय अमला..

तुम मूर्खं हो। महादेव दिल्लीमें है। फिल्हाल तो उसे यहाँ-वहाँ घूमना है। इतनी उत्कंठा किसलिए? सच्ची मित्रतामें मिलने, यहाँतक कि पत्र-व्यवहारकी भी कोई जरूरत नहीं होती। क्यों न मूक प्रेमको सँजोकर रखा जाये? अथवा तुम सदा पगली ही बनी रहना चाहती हो?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजीसे: स्पीगल पेपसं। सीजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

### २५२. पत्र: डॉ॰ एस॰ के॰ वैद्यको

१४ जुलाई, १९४१

भाई वैद्य,

तुम्हारा प्रमाणपत्र तो सुन्दर है। मनपर उसका कोई प्रभाव पड़ा क्या? चारों बोर फैली हुई हिंसाके वीच भी चरखा कुछ शान्ति देपाया या नही? तुम्हारा व्यवसाय तो चल रहा है न?

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७५१) से

२५३. पत्र: अमृतलाल वि० ठक्करको

१४ जुलाई, १९४१

भाई बापा,

तुम्हारे लोभका पार नहीं है। तो मजेमें उसे सन्तुष्ट करो। तुम्हारा मन्त्री होना उसके आहे आयेगा, ऐसा कहाँ है? तुम और घनश्यामदास साथ गये हो, अब तो मौत ही तुम्हें अलग कर सकती है। उन्हें, और मुझे भी, तुम्हारे. नैतिक बलकी, तुम्हारी आत्म-समर्पणकी शिवतकी आवश्यकता है। मन्त्रीका पद उसका द्योतक है। जब यह पद सँगालते हुए भी तुम आदिवासियोंको जितना समय चाहो दे सकते हो, तो मैं नहीं समझता कि इस सुविधाके होते हुए भी तुम मन्त्री-पद छोड़ना चाहोगे। तुम्हारी ही खातिर तो हमने दो शब्द लिखकर वैद्यनाथ अध्यरको रोक लिया था। दूसरे लोग काम नहीं करते, ऐसा योड़े ही था। लेकिन इस पापको घोने के लिए हमें साधु पुरुषोंका नैतिक वल चाहिए। इतना मत मूलना कि आजकल अस्पृष्यता-रूपी अधर्म धर्मके नामसे चल रहा है, जब कि आदिवासियोंके सामने यह वाघा नहीं है। लेकिन आदिवासियोंके लिए भी तुम अपने प्राण अपंण कर दो, तो मुझे कोई आपित नहीं होगी। हाँ, उस दूसरे कार्यसे सम्बन्ध-विच्लेद करके नही।

वापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११८८)से

१. हरिजन सेवक संघका

#### २५४. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्वा होते हुए १५ जुलाई, १९४१

चि० अमृत,

तुमारा खत मिला। आज तो विलकुल समय हि नींह है। ज॰ बुदीसे पहुंच गये होंगे। अच्छे होंगे।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८७५) से। सी० डब्ल्यू० ४२४३ से भी; सीजन्य : अमृतकीर

## २५५. पत्र: रधुनन्दन शरणको

[१६ जुलाई, १९४१ के पूर्व]

तुमने जैसे प्राथमिक सदस्योंका जिक्र किया है वैसे सदस्योंसे तुम्हें अपने नाम वापस छेने के लिए कहना चाहिए। यदि वे नहीं मानते तो तुम कार्रवाई कर सकते हो; किन्तु तुम्हें ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है, जिसका सीघा-सादा कारण यह है कि आजकल संस्था पूरी तरह कार्य कर ही नहीं रही है। किन्तु तुम्हें उनकी अनुशासनहीनताकी सार्वजनिक रूपसे निन्दा करनी चाहिए।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, १८-७-१९४१

१. जमनाळाळ बजाज

२. यह पत्र दिनांक "नई दिल्ली, १६ जुलाई" के अन्तर्गत प्रकाशित हुला था। १८०

### २५६. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए १४/१६ जुलाई, १९४१

त्रिय भगिनि,

तुभारे प्रश्न अच्छे हैं। अहिंसक युद्धमें पानीमें जहर देना या अनाज, तैल इ० जलाना निषिद्ध है और होना चाहिये। धनुसे असहयोग करना एक बात हं और उसको नुकसान करने के लिये पानी इ० रोक लेना दूसरी वात है। असहयोगी अपने पर दुःख लाता है। जैसे वकील असहयोग करके भूखों मर सकता है। मोतीलालजी' ने लाखोंका त्याग किया। विद्यार्थीओने अभ्यासका त्याग किया। नोकर लोगने नोकरीका त्याग किया। आद्रमण करनेवाले से हम थोडे मागनेवाले हैं और दुःख सहन न होने से भागे तो भी हमारी जायदाद ऐसे हि छोडव र हिजरत करेंगे जैसे दुखोबोरने सससे किया था। स्टेलिनको जो करना पडा ऐसा मौका अहिसामें आ हि नहिं सकता है।

सत्याग्रही अपना माल बचा निहं सकता है, उसके लिये जान स्रो सकता है। सत्याग्रही अपिएग्रही होना चाहिये। और अपिएग्रही रह कर दूसरोंकी रक्षा कर सकता है। इसीलिये मैंने कहा न कि इंग्रेज इंग्लंडको लूटने दे लेकिन अपना स्वमानमंग न करें। स्वमान बचाने के लिये और प्रतिस्पर्धीको हानि न करने के कारण उसको क्षणमर अपनी जायदाद लुटा देनी पहती है। शस्त्र युद्ध में भी हारने पर तो खो बैठेगा हि।

सरकारी पुलीसकी मदद छेने की प्रथा तो सहन की जाती है यद्यपि अहिंसाकी विरोधी है। दीवानाकी जबरदस्तीसे रोक छेने में कोई दोष नींह होगा अगर उसमें रोकनेवाछे का कुछ स्वार्थ नींह होगा तो। प्रत्येक ऐसा केसकी स्वतत्र परीक्षा करनी चाहिये।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९८) से। सी० डब्ल्यू० ३०९५ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

१. मोवीकाल नेहरू

२. रूसका एक धार्मिक सम्प्रदाय, जिसे सबसे पहले १८ वीं शताच्दीमें प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। अब उसके अञ्चयायी कनाडामें बसे हुए हैं।

# २५७. तार: रवीन्द्रनाथ ठाकुरको

वर्षा १६ जुलाई, १९४१

गु**रुदेव** शान्तिनिकेतन

अखबारोंकी रिपोर्ट चिन्तोत्पादक है। तारसे सही हालत सूचित करें।

गांधी

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ १०३१७)से। सौजन्य: विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

# २५८. पत्र: अमृतकौरको

१६ जुलाई, १९४१

त्रिय पगली,

कल में तुम्हें केवल पोस्टकार्ड ही लिख पाया। ये रहे तुम्हारे शिष्योंके लिखे दो पत्र। यदि मुझे तुम्हारा सन्देश याद रहता तो वे इससे पहले लिखे गये होते। लेकिन तुम्हारे पत्र पढ़ने के बाद नष्ट कर देने की तुम्हारी हिदायतके कारण बातोंको याद रखना और ठीक समयपर उन्हें कह पाना भेरे लिए कठिन हो जाता है।

खान साहब अपने सारे दाँत निकलवाकर नागपुरसे छौट आये है। कुछ तो इतने मजबूत थे कि निकालना मुश्किल था, लेकिन बरेटो सारे दाँत निकालने पर तुले हुए थे। उन्हें काफी दर्द हुआ। आज उनकी तबीयत पहलेसे बेहतर है। ठीक होते ही वे बुलके पास जायेंगे।

महादेव कल घनश्यामदासके साथ लौट आये। घनश्यामदास आबोहना बदलने के लिए श्रानिवारको नासिक जा रहे है। उनका स्वास्थ्य कोई बहुत अच्छा नहीं है।

हमारी कुटियापर दीमकोंने हल्ला बोल दिया है। रानी दीमक का पता लगाने के लिए रामदास हर चील खोद रहा है। इसका अर्थ हुआ दीवारें आदि फिरसे बनाना। इस सबके लिए और पैसा चाहिए। सोचने-मरसे परेशानी होती है!

प्रभा यहीं है और अभी कुछ दिन रहेगी। उसे जयप्रकाशके पास फिर जाना होगा।

तुम्हें सुशीलाकी परीक्षाके बारेमें चिन्ता नहीं करनी है। कर्नेल ए० ने उसे लिखा है कि वह कैसे और क्यों फेल हुई और पास होने के लिए उसे क्या करना चाहिए। उसे रोगोंके उपचारका पर्याप्त अनुभव नहीं है। इसलिए वह पन्द्रह दिनोंके लिए वस्वई गई है। यह तो शुरुआत है। कमाई और पढ़ाई, ये दोनों काम साथ-साथ करना मुक्किल चीज है। लेकिन उसे ऐसा करना ही होगा, क्योंकि वह किसी भी हालतमें छात्रवृत्ति स्वीकार करने को तैयार नहीं है। और मामलोंकी तरह इसमें भी वह अद्भुत है। और वह विकास कर रही है। अमतुल सलाम पहलेसे बेहतर है। सप्रेम.

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डक्ल्यू॰ ४०३३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३४२ से मी

## २५९. पत्र: जमनालाल बजाजको

१६ जुलाई, १९४१

चि॰ जमनालाल,

मेरा जी तुममें ही लगा रहेगा। यदि तुम्हें वहाँ इच्छित लाभ मिले तो मुझे बहुत शान्ति मिलेगी। बहुत-कुछ तो राजकुमारीके निर्मल प्रेमपर निर्मर है। लेकिन तुम्हारी मानसिक दृढ़ताका भी उसमें योगदान होगा। खाने में या और किसी चीजमें कुछ परिवर्तन करना हो तो मुझे लिखना या तार देता।

मदालसा आज मीरावहनके पास रह गई है। उसकी भावनाएँ तो बहुत केंची हैं। उसका शरीर ठीक हो जाये और प्रसृति निविष्न हो जाये तो मेरा विचार है

कि वह जरूर चमकेगी। विनीवाका शिक्षण सफल होना चाहिए।

वापूके आशीर्वाद

" [पुनश्च : ]

खान साहबके सारे दांत निकाल दिये गये हैं। गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१६)से

# ६०. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम १७ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

हाँ, तुम्हें जवाहरलालसे मिलने २४ तारीखको जाना चाहिए। महादेवका कहना है कि नन्दन २९ तारीखको नही जा रहा है।

आशा है कि जमनालाल वहाँ सकुशल पहुँच गये होंगे। हार्लीक मैने तार

देने को नहीं कहा था फिर भी उसकी अपेक्षा रखता हूँ।

अब तुम्हें गर्मीके मौसमके बारेमें पता चल गया होगा। जिस तरहकी चिन्ता मुझे तुम्हारे बारेमें रहती है वैसी दूसरोंके बारेमें नहीं रहती, क्योंकि तुम्हें लेकर शम्मीके प्रति, जिसे तुम्हारा मेरे साथ रहना पूरी तरह पसन्द नहीं है, मेरी एक जिम्मेदारी है। मुझे चिन्ता इसलिए होती है कि किस समय तुम्हारे प्रति मेरा क्या कर्त्तंच्य है, इसका मुझे सदा स्पष्ट मान नहीं होता। लेकिन इसका कोई महत्त्व नहीं है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजो (सी० डब्ल्यू० ४२४४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८७६ से भी

# २६१. पत्र: दुनीचन्दको

१७ जुलाई, १९४१

त्रिय लाला दुनीचन्द,

आपने जिन परिस्थितियोंका उल्लेख किया है, उनको देखते हुए मैं आपसे सहमत हूँ कि आपके सामने कांग्रेसके सभी उत्तरदायी पदोंसे इस्तीफा दे देने के अलावा और कोई चारा नहीं है। ४० वर्ष तक अविराम सेवा करने के बाद अब आप विश्रामके अधिकारी है।

जहाँतक ऑहसा, सत्याग्रह आदिके सम्बन्धमें आपके दृष्टिकोणकी जात है,

हमें आपसी मतभेदोंको वर्दाश्त करना होगा।

आपने जिस प्रसंगका उल्लेख किया है, उसमें असत्याचरणका कोई सवाल नहीं उठता। यह तो मूलतः आपके अपने ही क्रियाकलापकी व्याख्याका प्रदन है। मैं १८४ तो यह सब मूल चुका था। निःसन्देह आपकी पत्नीको आपके साथ रहना ही चाहिए।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

बंग्रेजीकी फीटो-नकल (जी० एन० ५५९३) से

#### २६२. पत्र: नारणदास गांधीको

१७ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारे पत्रका उत्तर में आज ही दे पाया हूँ। तुम्हारा मसीदा मुझे पसन्द नहीं आया। इसलिए अपनी पसन्दका पत्र मैंने जीवनजी को भेजा है। उसकी नवस्र इस पत्रके साथ है। होना होगा तो उसी पत्रसे सारा प्रयोजन सिद्ध हो जायेगा।

मेरा कातना तो निरन्तर चल ही रहा है। कमसे-कम ७५ तार कातने का प्रयत्न करता हूँ। मैं ७२ दिन तक यह प्रयत्न कर्षेंगा। इससे आगे वढने की मेरी हिम्मत नहीं होती।

वापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

'खादी पत्रिका'में तो तुम्हारा वक्तव्य प्रकाशित होगा ही। मेरी टिप्पणी भी। गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५८५ से भी; सौजन्य: नारणदास गांघी

१. यह उपक्रव्य नहीं है। २. देखिए "रेंटिया बारस", पु०१५०ा

# २६३. पत्र: सुरेश सिंहको

१७ जुलाई, १९४१

माई सुरेश<sup>4</sup>,

तुमने प्रश्न ठीक पूछा है। मुझे कुछ भी कहने का उत्साह निंह होता है। ऐसे काममें मैंने जवाहरलालको प्रधानपद दिया है, वह तो है निंह। जो उनकी नीति वह कांग्रेसकी नीति थी। वह जेलमे होने से मेरी बुद्धि इसमे निंह चलती है। रूस स्पेन, चीन जैसा देश निंह है। इंग्रेज तो मदद दे हि रहे हैं। स्टेलीन बौर लेनिनमें में बड़ा फरक पाता हूं। लेनिनका रूस आज निंह रहा है। लेकिन यह तो गुण-दोष देखने की बात हुइ। यह निरीक्षणमें मेरी गलती भी हो सकती है। जब तक में हुदयसे कुछ न कर सकुं तब तक मौन रखना हि मेरे स्वमावको अनुकूल है। अलसर दुरस्त हो गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० पून० ८६९२) से

# २६४. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा १८ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

जहाँतक सम्भव हो, मैं तुम्हें एक-दो पंक्तियाँ रोज लिख देना चाहता हूँ, किन्तु कई बार यह सर्वथा असम्भव हो जाता है।

जमनालालकी सकुशल पहुँचका तुम्हारा तार मुझे मिला। मै आशा करता हूँ

कि सब ठीक ही होगा।

मेरा वजन ९९६ व रक्तचाप १६०-९४ है। रक्तचाप रातको बढ़ जाता है। किन्तु फिर भी मैं बिलकुल ठीक हैं।

शेष समाचार महादेवसे।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८७७ से भी

रे. कालाकांकर रियासत (उत्तर प्रदेश) के कुँवर सुरेश सिंद्र १८६

#### २६५. पत्र: विजयराघवाचारीको

१८ जुलाई, १९४१

प्रिय मित्र.

निःसन्देह, मै आपके स्वास्थ्यके बारंमें पूरी जानकारी चाहता हूँ, क्योंकि मेरी कामना है कि आप पूरे सौ साल अच्छी तरह और स्वस्थ रहते हुए जियें। परन्तु मेरे द्वारा किये गये किसी कार्यकी स्मृतिको चिरस्थायी बनाने में मुझसे सहयोगकी अपेक्षा मत की जिए। मैं जो कार्य करता हैं, यदि उनमें जीवन-शवित नहीं है तो जन्हें नष्ट हो जाने दीजिए। और यदि है, तो फिर उन्हें किसी सहारेकी क्या आवश्यकता है ?

[अंग्रेजीसे ]

महादेव देसाईकी हस्तिलिखित डायरीसे। सौजन्य: नारायण देसाई

## २६६. पत्र: मोतीलाल रायको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए १८ जुलाई, १९४१

प्रिय मोती बाबू,

आपका शीघ्रतासे मेजा गया उत्तर पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। संघके कानूनी सलाहकारोंका आग्रह है कि प्रामिसरी नोटका होना आवश्यक है। अतः क्रपया आप प्राॅमिसरी नोट भेज दें।

में श्री जाजूजीसे कह रहा हूँ कि आप अ० मा० चरखा संघका प्रमाणपत्र पाने के इच्छुक है और रहे है तथा उसके लिए जो सामान्य कर्ते है उनका पालन करने के लिए भी तैयार है।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

[ पुनश्च : ]

आवा करता हूँ कि सापकी आँखें ठीक हो सकेंगी। साप और संघ डतने अभिन्न बन गये हैं कि उससे आपके नाममात्रको अलग होने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५५) से

१. देखिए पु०१४२ भी।

## २६७. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए १९ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

तुम्हारा छोटा-सा पत्र मिला।

तुम्हें भरपूर काम मिल गया है। परमात्मा तुम्हें पूर्ण मफलता दे। बाशा है, तुम्हारी दाँतकी तकलीफका पूरी तरह इलाज होगा। महादेव बम्बई जाने की तैयारी कर रहा है। आज और ज्यादा लिखना सम्भव नहीं है।

, सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४६) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८७८ से मी

# २६८. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

१९ जुलाई, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

अपनी तर्वायतकी और पहले ध्यान देना चाहिए, वादमें और सव वातोंकी ओर। ग्रामसेवाका अभ्यास-ऋम ठीक है। लेकिन उसका आरम्भ तुम्हें स्वयं व्यवस्थित तथा दढ़निक्चय होने से करना चाहिए।

वेद आदिका अध्ययन करना चाहो तो करो, लेकिन सेवाधर्मको जानना और

उसका पालन करना, यही सच्चा अध्ययन है।

रहने के लिए तो मैंने कहा ही है कि जहाँ कही व्यवस्था कर दूँ। खर्चेका प्रका उठता है क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५२०) से। सी० डब्ल्यू० ७११६ से भी; सौजन्य: मुझालाल गं० शाह

## २६९. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २० जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

वहाँ जमनालालके पहुँचने के बाद तुम्हारा यह पहला पत्र है। हमे उम्मीद करनी चाहिए कि शिमलाके मौसमसे उन्हे कोई परेशानी नही होगी।

यहाँ सब ठीक है। आज यहाँ कंचन व कुसुम आ गई है। शेष प्रभा लिखेगी। सप्रेम.

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४२४७) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन॰ ७८७९ से भी

## २७०. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

२० जुलाई, १९४१

तुम्हारा यह पत्र' ठीक है। खरीवारीके लिए वर्षा जाने का लोम छोडना। वह तब करना जब तबीयत ठीक हो जाये, क्योंकि वह काम तुम अच्छी तरह कर सकते हो। अभी तो मेरे कहे अनुसार बस खेतमें ही काम करो। वह भी जितना बने उतना हो। उससे स्वास्थ्य सुवरेगा। चिन्ता मात्र छोड़ दो। अधिकतर दूध-दहीपर निर्वाह करो। फल जो भी मिल सके, खाओ। रोटी कम ही खानी चाहिए। साग-भाजी खुब।

तुम्हारा दूसरा पत्र सुन्दर है। काम करके, सेवा करके निःस्वार्थ मावसे जो विश्वास उत्पन्न किया जाता है, वही सच्चा होता है। इसकी कुंजी "धात्मवत् सर्वभूतेषु" में है। इतना हृदयमें बैठ जाये तो दुःख कोई नही। तुम्हारे खर्वके वारेमें मेरी योजना यह है। मैं चाहता हूँ कि जो पैसे तुम्हारे खातेमें जमा है, वड़े-बड़े खर्चोंके लिए उन्हें निकालकर आखिर उन्हें विलकुल खत्म कर दिया जाये। एक बार वे समाप्त हुए कि तुम दोनोंकी प्रगति चुटिकयोंमें होगी। जवतक वे ई तव तक परिग्रह है, तबतक 'मेरापन' है। यह ठीक है कि तुम दोनोंने वे पैसे लगमग

१. १९ जुलाईका, जिसके ठीक नीचे गांधीजी का यह पत्र लिखा मिला है।

दान कर दिये हैं; फिर भी, वे तुम्हारे हैं, यह भान घातक है। यह भेद अगर समझमें न आये, तो पूछना।

कंचन आई है, इससे तुम्हारे मनमें जरा भी विक्षोम उत्पन्न नहीं होना चाहिए। वह आई, यह तो अच्छा ही हुआ। लेकिन उसपर मेरा अधिकार है, यह घारणा अपने मनसे निकाल दो। घर देरसे बसाओ, तब भी यदि यह मानो कि वह भी तुम्हारे समान ही स्वतन्त्रताकी अधिकारिणी है, तो उसके किसी क्रूत्यसे तुम्हें कोई रोष नहीं होगा। वह तुम्हारी जो सेवा करे, उसे स्वीकार मले करो, लेकिन यदि वह कम करे, तो तुम्हे बुरा नहीं लगना चाहिए। उसका भी विश्वास प्राप्त करना तुम्हारे लिए आवश्यक है न? तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहने के लिए तुम्हारा निरन्तर प्रसन्न रहना जरूरी है। इस बातको समझना।

बापूके अाशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८५१९) से। सी० डब्ल्यू० ७११७ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

# २७१. पत्र: सर्वपल्ली राधाकृष्णन्को

सेवाग्राम, वर्षा -२१ जुलाई, १९४१

प्रिय सर राधाकुष्णन् ,

में देखता हूँ कि आपकी गहन और व्यापक ज्ञान-साधनामें याचनाकी कलाका कोई स्थान नहीं था। उस कलामें मालवीयजी वेजोड़ है। आप तो उनके नामसे ही माँगेंगे। क्या आप सोचते हैं कि मेरी सिफारिशका कुछ अधिक प्रमाव होगा? अपनी स्वाभाविक विनम्नताके कारण आप यह देख नहीं पाते कि मुझसे परिचय-पत्र छेने की आपको कोई ज़रूरत पढ़ ही नहीं सकती। आपने जिन मित्रोंका जिक किया है, उनमें से कुछसे शायद में मिला भी नहीं हूँ। खैर, यदि मेरी सिफारिशका कुछ भी उपयोग हो सके, तो आप कृपया इस पत्रको इस्तेमाल कर छें और जिन मित्रोंसे भी आप मिलें उन्हें बता वीजिए कि मैं धनवान लोगोंका यह कर्त्तंव्य समझता हूँ कि वे आपके द्वारा उल्लिखित कर्जेंकी अदायगीके लिए दिल खोलकर पैसा दें और इस तरह बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके बारेमें मालवीयजी महाराजको चिन्तास मुक्त कर दें। मुझे पूरी आशा है कि आप अपने उद्देश्यमें पूर्णेत्या सफल होंगे।

आप जानते हैं कि आप जब भी आ सकेंगे आपका स्वागत होगा।

१. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके तत्कालीन उप-कुल्पति

सुन्दरम विश्वविद्यालयके लिए चन्दा इकट्टा करने का काम करते रहे है। उनकी सेवाओंका उपयोग क्यो नहीं करते?

मेरे स्वास्थ्यका हाल पूछने के लिए बन्यवाद। मैं स्वस्थ हूँ।

हृदयमे आपका, मो० क० गांधी

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

२७२. पत्र: अमृतकौरको

२१ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

तू, तुम, आप एक हि बात हो जाते हैं अगर मनमें भाव एक है तो। अगर भाव दूतरा है तो जो-कुछ कहो निर्यंक होता है। हिन्दीमें बोलने की और जिखने की मुझे तो मनाइ है न? अगर छुटसे हिंदीमें व्यवहार हो जाय तो 'तू' स्वामाविक बन जाय। वयों?

मैंने आज तुम्हें तार दिया है, जिसमें तुमसे आगराके कैदियों के वारेमें संयुक्त प्रान्त सरकार, अर्थात् मूढी को तार देने के लिए कहा है। उन्हें अविवेकी अथवा कंजूस नहीं होना चाहिए।

यहाँ भणसाली गठियासे पीड़ित हैं। वे उपवास कर रहे है और इसलिए आज बेहतर है। वीरम्मा अपने भावी पतिसे किसी बातपर नाराज होकर परमैंगनेट खा गई। लेकिन समयपर पता चल गया और उसे बचा लिया गया।

जमनालालजी को अत्यन्त साधारण सिक्जियाँ खानी चाहिए, स्टाचंवाली और तली हुई चीजें बिलकुल नहीं।

मैंने तुम्हें एक महीनेका समय दिया था। तुम्हारी राय थी कि कमसे-कम दो महीने होने चाहिए। इसल्लिए तुम अगस्तके अन्ततक रह सकती हो। लेकिन यदि जमनालालके स्वास्थ्यमें अच्छी प्रगति हो और उनकी खातिर ज्यादा देरतक

साधन-ध्वमें 'माज' है, जो मूळसे छिखा गया जान पहता है।

२. यह बनुच्छेद एिन्दीमें है।

३. ये कैदी भूख-इइताल कर रहे ये, जो २३ जुलाईको समाप्त हुई।

४. सर फ्रांसिस मूबी, मुख्य सचिव (कार्यवाहक), संयुक्त प्रान्त

५. जयकुम्ण प्रसुदास भणसाङी

रुकना जरूरी हो तो बेशक तुम रुकना। यदि वे शरीर, मन और आत्मासे स्थानतं बन जाते हैं तो वहाँ अधिक समयतक रुकना सार्थक होगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४२४८) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन॰

#### २७३. पत्र: जमनालाल बजाजको

२१ जुलाई, १९४१

चि॰ जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी प्रायंना तो जारी है ही, और तुम्हारे प्रयत्नपर भी मेरी श्रद्धा है। फिर, राजकुमारीका सत्संग है तथा और सब प्रकारसे भी वहाँ का वातावरण शुद्ध है। इसलिए मैं तो वहाँ तुम्हारे निवाससे वड़ी आशा किये वैठा हूँ। मदालसा खूब खुश है। वह ठीकसे खाती है। कुँवारका पाक उसे अच्छा लगता है। मैंने उसे यह पाक जितना चाहे खाने की छूट दे दी है। वह जो-कुछ खाती है, ठीक स्वादसे खाती है। जानकी देवी भी प्रसन्न रहती है, इसलिए इस बोर तो सब प्रकारसे कुशल है।

घनश्यामदास परसों गये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१८) से

## २७४. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

२१ जुलाई, १९४१

गाँवके लोगोंके बारेमें अन्तमें जो मार्ग वताया है, वही ठीक है। यदि हम इनके भीतरी झगड़ोंमें पड़ेंगे तो इनकी सेवा ही नहीं कर सकेंगे। इसलिए जो गरीब से भी गरीब है, उसकी जितनी वने मूक सेवा करो। वह फलवती हुए बिना नहीं रहेगी। इसी उद्देश्यसे मैंने वह एक-दो लड़कोंका सुझाव दिया था। उन्हें गढ़ते-गढ़तें तुम स्वयं गढ़ जाओगे और दूसरोंकी सेवा करना सीख जाओगे।

हमारे रहन-सहनका पंचायतपर जो प्रभाव पड़ना हो पड़ा करे। कृष्णदास और चिमनलालसे में कहुँगा तो जरूर, लेकिन सब-कुछ तुम्हारी सरलता और मिठास पर निर्मेर होगा। दूधमें जैसे चीनी घुल जाती है, वैसे तुम यहांके समाजमें घुल-मिल जाओ, तो तुम्हारा काम तीन्न वैगसे प्रगति करेगा।

परिप्रहके बारेमें जो तुम लिखते हो ठीक है। जमीन आदि सभीका समावेश उसमें होता है। यदि तुम समस्त व्यवसायों तथा स्वत्वोंसे मुक्त हो जाओ, तो फूल-जैसे हलके हो जाओगे।

् इस तरह, लगता है, तुम्हारे सब प्रश्नोंका उत्तर दिया जा चुका है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ८५१६)से। सी॰ डब्स्यू॰ ७१४८ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं॰ शाह

## २७५. पत्र: नारणदास गांघीको

२१ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारे पत्रका उत्तर दे चुका हूँ। काम ठीक ढंगसे चल रहा है। अवस्य फल-

दायी होगा।

चि० छगनलालके बारेमें हम सबको लगा कि उसके वीजापुरमें रहने से नुक-सान ही होगा। अब उसे कोई निर्धारित काम नहीं करना चाहिए। वह या तो यहाँ कृष्णाके पास रहे या प्रमुदासके पास या राजकोटमें तुम्हारे पास। ऐसा होने से काशी भी स्वतन्त्र रह सकेगी और छगनलाल भी अकेलेपनका अनुभव नहीं करेगा। प्रमुदासने, कृष्णदासने और बहुत करके काशीने भी तथा मैंने भी, हम सबने स्वतन्त्र खपसे यह अनुभव किया है कि बीजापुर अब उसके लिए नहीं रहा। लेकिन यदि यह योजना छगनलालको पसन्द न हो, तो मैं उसे जबरदस्ती और कही विलक्षल नहीं भेजना चाहता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइकोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८६ से भी; सौजन्य: नारणदास गोंघी

१. छगनलाल गांधी, नारणदास गांधीके वहे भाई

२. कृष्णदास, छगनछाळ गांघीके पुत्र

३. छगनकार गांधीके पुत्र-

४. इरानकाक गांधीकी पत्नी

# २७६. पत्र: अमृतलाल वि० ठक्करको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २१ जुलाई, १९४१

वापा,

मैसूर कांग्रेसमे जितनी मदद हमें लेनी हो, लें, और उसकी जितनी मदद करनी हो हम करें। आखिर उसकी नीति तो जो है बही रहेगी। यहाँ भी हम, जहाँ जरूरत होती है, कांग्रेसकी मदद लेते हैं या उसकी मदद करते हैं। इस प्रकार मुझे सन्तोष है कि कांग्रेसी ही हमारी ज्यादांग-ज्यादा मदद करते आये हैं। हम उनकी अन्य प्रवृत्तियोंसे अछूते रहे तो काफी है। इसमें तुम्हे और कोई सन्देह होता है क्या?

वापू

गुजरातीकी फोटो-नक्छ (जी० एन० ११८९)से

## २७७. पत्र: दिलखुश दीवानजीको

२१ जुलाई, १९४१

भाई दिलखुश,

'कांतण प्रवेधिका'' ध्यानपूर्वक पढ़ गया। नाम ठीक नही है। यह 'प्रवे-शिका' नहीं है। जिसने प्रवेश कर लिया है, उसे यह उपयोगी मुझाव देती है। इसलिए मैं तो इसे 'कांतनारने उपयोगी सूचनो' अथवा 'कांतनारने'' नाम दूँगा।

तुम्हारे सुझावोंमे बहुत-कुछ अधूरा है। तुमने मान लिया है कि तकुआ टेढ़ा है या नहीं अथवा उसकी नोक ठीक है या नहीं, यह कातनेवाला वरावर समझ जाता है। मेरा अनुभव है कि १०० में से ९५ यह नहीं समझ पाते। इसलिए तकुआ टेढ़ा कैसे जाना जाता है या नोक ठीक कैसे मानी जाती है, यह समझाना चाहिए। इसी प्रकार अच्छी पूनीकी पहचान आदि सब बातें बतानी चाहिए।

- १. कवार प्रवेशिका
- २. कातनेवाचे के लिए उपयोगी सुशाव
- ३. कातनेवाके के लिप

[सूतका] अंक निकालने की तीसरी और सरलसे-सरल रीति वह नहीं है जो तुमने बताई है। इकन्नीके वजनके सूतमें जितने तार हों, उतने अंक मानना चाहिए। तुमने जो रीति बताई है उसमें इसका समावेश तो हो जाता है, लेकिन नौसिखियोंको यह बात सूक्षेगी नहीं। मुझे तो अनुभवसे यह अपनी सुझाई रीति सबसे सरल लगी। यरवडामें रोज अपने सूतके अंक निकालते-निकालते मुझे उपरोक्त रीति सूझी थी।

तुम नारियलका तेल काममें लाने की बात लिखते हो। मेरा अनुभव है कि नारियलके तेलसे भी बास आने लगती है और उसपर चीटियाँ भी आने लगती हैं। मैं तो नारियलके तेलमें एक-चौथाई या कुछ ज्यादा मिट्टीका तेल मिलाता था। इससे चींटियाँ नहीं आतीं और तेलमें कचरा भी कम जमा होता है।

इतने पर से अन्य सुमार तो तुम्हें अपने-आप ही सूझेंगे। मनमें तो और वातें भी उठी थीं, लेकिन इस समय वे कलमपर नहीं उतर रही। इतना कहने के बाद मेरी यह राय तो है ही कि तुम्हारी पुस्तिका सुन्दर है। वह पूर्ण हो जाये, इस उद्देश्यसे उपरोक्त सुझाव दिये हैं।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २६४९) से

२७८. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम २२ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

मुझे तुम्हारा एक और लम्बा पत्र मिला। मुझे तुम्हारी समझदारी और विवेकशीलता पर पूरा मरोसा है। शम्मीके मजाक उड़ाने के वावजूद टेनिस खेलने के बारेमें मेरी वही सलाह है। उनका खेलना पेशेवर खिलाड़ियोंके-जैसा तो नही होगा, किन्तु वै बल्लेसे गेंदको उछालकर तो तुम सवका मनोरंजन कर सकते है। मतलब तो सिफं इतना है कि वे खुली हवामें आधा घंटा खालिस मनोरंजनमें वितायें।

उनके पास कामसे मिलने आनेवालोंको अधिक संख्यामें मत आने दो।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३४) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३४३ से भी

#### २७९. पत्र: अनन्तराय ठक्करको

सेवाग्राम, वर्घा २२ जुलाई, १९४१

भाई अनन्तराय<sup>1</sup>,

जिस तरह मुझे किसी अंग्रेज युवक द्वारा गुजरातीमें लिखने की बात पसन्द नहीं है उसी तरह मुझे तुम्हारा अंग्रेजीमें लिखना नापसन्द है। दोनों ही अपना फर्ज भूल गये है। बहरहाल अब सब-कुछ खत्म हो गया। लेकिन तुम्हारा पत्र पढने के बाद मझे खलाई आने लगी। तमने जहरके प्यालेमें कलम दुबोकर लिखना शुरू किया और अन्तमें सारा जहर उँड़ेल दिया। यह सब क्यों? मुझे विश्वास था कि डाँ० अरुण्डेल अवस्य आयोंगे। यदि आते, तो वै निश्चय ही अंग्रेजीमें बात करते। मैने विश्वनायदासको बहत हिचकके साथ अंग्रेजीमें बात करने की अनुमति दी थी, लेकिन डाँ० अरुण्डेलको में सहर्ष अंग्रेजीमें बात करने देता। इसमें सन्देह करने का सुम्हारे पास कोई ठोस कारण नहीं हो सकता। मेरे मनमें डॉ॰ अरुण्डेल अथवा किसी अंग्रेज के प्रति कोई वैरमाव नहीं है। जनरल डायरके प्रति भी भेरे मनमें कोई वैर-माव न था और श्रीमती एनी बेसेन्टका तो मैं उपासक था। मैं तो उस समय ही उनका मक्त बन गया था जब कदाचित् तुम पैदा भी नहीं हुए थे। यह १८८९-९० की बात है। लेकिन यदि उस समयतक तुम्हारा जन्म हो चुका हो ती मुझे क्षमा करना। मुझे उस बैठककी कोई स्मृति नहीं है जिसमें श्री अय्यंगार भी उपस्थित थे। श्रीमती एनी बेसेंटकी प्रतिमा स्थापित किये जाने की बातका मला में क्यों विरोध करने लगा? मुझे इस बारेमें कुछ भी याद नहीं है। तुम्हारे पास जो प्रमाण है यदि वह तुम मुझे दोगे तो तुम्हारा आभार मान्गा।

अन्तमें तो तुम सीमाका अतिक्षमण कर गये हो। अपने लोगोंको बुरा-मछा कहते हुए तुमने जैसी अंग्रेजीका प्रयोग किया है उससे तो तुमने अंग्रेजी भाषाका ही

अपमान किया है। कदाचित् तुम गुजरातीमें इतना जहर नहीं उँड़ेलते।

चूँकि तुम्हारे परिवारके साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध है, इसलिए तुम्हारे पत्रसे मुझे आघात पहुँचा है। तुम्हारा पत्र अविनय और अज्ञानसे मरा हुआ है। मेरे पत्रको ध्यानसे पढ़ जाना और ईश्वरसे प्रार्थना करना कि वह तुम्हारे अज्ञानको दूर करे।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

[गुजरातीसे] महातमा, जिल्द ६, पू० ४८ और ४९ के बीच प्रकाशित प्रतिक्वतिसे

१. एक थिथोसॉफिस्ट

#### २८०. पत्र: घनक्यामदास बिङ्लाको

सेवाग्राम २२ जुलाई, १९४१

माई चनश्यामदास,

'बापू' अभी पूरी की। दो तीन जगह हकीकत दोष है। अभिप्रायको हानि

नहिं पहुंचती है, निशानी की है।

बछड़ाके बारेमें जो दलील की है वह कर सकते हैं। लेकिन उसमें कुछ मौलिक दोष पाता हूं। रावणादिके वषके साथ यह वघ किसी प्रकार मिलता निंह है। वछड़े के वषमें मेरा कुछ स्वार्थ नींह था, केवल दु:ख-मुक्त करना हि कारण था। रावणादिके वषमें तो मौलिक स्वार्थ था, पृथ्वी पर भार था उसे हलका करना था। उसका संहारक साक्षात राम रूपी ईश्वर था। यहां तो संहारक कोई काल्पनिक अवतार न था। मेरा तो कथन यह है कि मेरी हालतमें सब कोई ऐसा कर सकते हैं। अंबालालने ४० कुत्तोंको मेरी प्रेरणा या प्रोत्साहनसे मारे। इसमें लौकिक कल्यांण था सही, लेकिन इसमें और रावणादिके वधमें वड़ा अन्तर है। और मैने तो इन चीजोंका खलग अर्थ किया है। उसकी चर्चा वहां आवश्यक थी। ज्यादा और कोई समय आवश्यक समजा जाय तो। माषा मधुर है। कोई जगह दलीलकी पुनरुक्ति हो गई है। यह काम पुफ सुधारमें हो सकता था। उससे माषाके प्रवाहमें कुछ क्षति नहीं आती। शायद दूसरे तो इस पुनरुक्तिको देख भी निंह सके होंगे। अब तो तबीयत अच्छी होगी।

वापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०४६)से। सौजन्य: घनश्यामदास विडला

रे. यह पत्र वापूके संशोधित संस्करणमें प्रकाशककी एक टिप्पणीके साथ दिया गया है। २. देखिए खण्ड ३७, पृ० ३२३-२७।

# २८१. भेंट: 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

२२ जुलाई, १९४१

जिस समय में गांधीजी से मिलने गया वे चरला चला रहे थे। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने सरकारी विज्ञप्ति पढ़ी है, तो उन्होंने कहा कि नहीं पढ़ी है। उन्होंने मुझसे उसे पढ़ कर सुनाने को कहा। मैंने गांधीजी को विज्ञप्ति पढ़कर सुनाई, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद्के सदस्योंकी सूची भी थी। जब मैं विज्ञप्ति पढ़ रहा था, गांधीजी बराबर चरला चलाते रहे, वीच-बीचमें वे सूत लपेटने के लिए थोड़ी देर एक जाते थे। जब मैंने पढ़ना खत्म किया तो गांधीजी ने मेरी ओर देखा और जोरसे हेंसते हुए पूछा कि क्या मैंने पूरी विज्ञप्ति पढ़ डाली। मैंने कहा कि हां, मैंने पूरी विज्ञप्ति पढ़ डाली। मैंने कहा कि हां, मैंने पूरी विज्ञप्ति पढ़ डाली। गांधीजी बोले कि उन्हों कोई वक्तव्य नहीं देना है। उन्होंने कहा:

मैं तो [इस विषयमें] मौन रखना चाहूँगा — सोमवारवाला मौनं — मले ही इसका कुछ भी अर्थ क्यों न हो और आप समाचारपत्रोंमें ऐसा कह सकते हैं।

यह पूछने पर कि क्या इसका मतलब यह है कि उन्हें इस घोषणामें कोई दिलचस्पी नहीं है, उन्होंने कहा:

में ऐसा नहीं कह सकता। यह तो शेखी बघारना होगा।

तब मेंने गांबीजी को एक कागज दिया, जिसमें मेंने पहलेसे कुछ प्रक्त लिख रखें थे। गांघीजी ने उन प्रक्तोंको पढ़ा और बोले:

मैं इनमें से कुछ प्रश्नोंके जवाब दे सकता हूँ। लेकिन मैं नहीं जानता कि उससे क्या फायदा होगा।

मेरे यह आग्रह करने पर कि वे जो-कुछ कहना चाहते हों, कहें, गांधीजी ने मेरे पहले सवालका जवाब दिया। मेरा सवाल यह या कि क्या भारत सरकारकी घोषणाका कांग्रेसके रुखपर कुछ असर पड़ेगा और उससे क्या कांग्रेसकी माँग किसी हदतक पूरी होती है?

कांग्रेसने जो रुख अपनाया है उसपर इस घोषणाका कोई असर नहीं होगा और इससे कांग्रेसकी माँग जरा भी पूरी नहीं होती।

 पह विश्विष्त भारत सरकार द्वारा २१ जुळाईको शिमकासे जारी की गई थी। इसमें बाइसराय की कार्यकारिणी परिषद्के विस्तार कौर यक राष्ट्रीय सरक्षा परिषद्का गठन किये जाने की दोषणा थी।
 १९८ मेरे धगले सवालके जवाबमें, जिसमें मेने पूछा था कि यदि अ० भा० कां० कमेटीके सदस्योंको जेलसे रिहा कर विया जाता है तो क्या उन्हें देशमें हालमें हुई घटनाओंको घ्यानमें रखते हुए धर्तमान स्थितिपर विचार करने दिया जायेगा, गांधीजी ने कहा:

मेरे खयालसे आपका आशय यह है कि क्या में अ० मा० कां० कमेटीके सदस्योंको, यदि उन्हें रिहा कर दिया जाता है तो, वर्त्तमान स्थितिपर विचार करने दूंगा। यदि आपके कहने का आशय यही है तो में विना किसी हिचकके यह कह सकता हूँ कि अ० मा० कां० कमेटीके सदस्योंको कुछ मी करने से रोकने का मुझे कोई अधिकार नहीं है। अ० मा० कां० कमेटीने मुझे जो अधिकार दिया है वह मुझे उसके सदस्योंकी पूर्ण स्वतन्त्रतामें हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं देता। और हर हालतमें जिस संस्थाने मुझे अधिकार दिया है वह किसी भी समय उससे इनकार कर सकती है अथवा उसे वापस ले सकती है।

मैसूर विधान परिषद्ने जो माँग की है उसे मैं निश्चय ही एक मर्यादित और समयानुक्छ माँग मानता हैं।

जब मैंने गांधीजी से पूछा कि वेशकी वर्तमान स्थितिको देखते हुए क्या मन्विरोंमें कृरिजन-प्रवेशका कार्यक्रम शुरू करना समयानुकूल होगा, तो गांधीजी ने कहा:

सच पूछा जाये तो यह कार्यक्रम बहुत पहले शुरू कर दिया जाना चाहिए था। देशकी वर्त्तमान स्थितिको हरिजनोंके प्रति बुनियादी न्याय किये जाने के मार्गमें बाघक नहीं बनने दिया जा सकता।

मैंने उत्तसे पूछा कि सरकार युद्ध-विरोधी नारे लगानेवाले सत्यापिहयोंको जो गिरफ्तार नहीं कर रही है उसका क्या यह अर्थ लगाया जा सकता है — जैसा कि कुछ लोग लगाते जान पड़ते हैं — कि सरकारने युद्ध-विरोधी प्रचारकी छूट दे दी है, तो गांधीजी ने कहा:

लोगोंके ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। कुछ प्रान्तीय सरकारोंने तो स्पष्ट स्पसे यह कह दिया है कि वे उन सदस्योंको गिरफ्तार नहीं करना चाहती जिन्हें वे महत्त्वपूर्ण नहीं समझतीं। लेकिन जिन्हें वे महत्त्वपूर्ण समझती है उन लोगोंको युद्ध-विरोधी नारे लगाने पर अवश्य गिरफ्तार किया जा रहा है।

[ अंग्रेजीसे ] हिन्दू, २४-७-१९४१

माँग वह थी कि सरकार एक समिति नियुक्त करे, जो सरकारके अधीनस्य मन्दिरों तथा अन्य धार्मिक संस्थानीमें इरिजरोंको प्रवेश करने देने के सनाक्ष्यर कोक्सवका पता कगाये।

## २८२. पत्र : मिर्जा इस्माइलको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २३ जुलाई, १९४१

प्रिय सर मिर्जी,

महादेव बम्बईमें है। मैंने उसको लिखा आपका पत्र पढ़ा है। यह "मिस्टर महादेव" क्यों?

फिलहाल तो मुझे सम्मेलनोंमें कोई आस्था नहीं है। जबतक लोग कुछ मान-सिक संकोच लेकर सम्मेलनों बाते हैं, तबतक हम कुछ नहीं कर सकते। लेकिन जिन लोगोंको सम्मेलनोंमें विश्वास है, उन्हें मैं रोकता भी नही। अतः यदि आप अथवा सर तेज कोई सम्मेलन आयोजित करें और मुझे बुलाना चाहें, तो मैं अपनी निजी हैसियतमें खुशीके साथ आऊँगा। किन्तु मेरे कारण शायद मतमेद ही पैदा होंगे, और कुछ नहीं।

पूरे परिवारको और ज्यादा प्यार।

आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८३) से

# २८३. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

सेवाग्राम, वर्षा २३ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृतलाल,

तुम तो झपाटेके साथ जीवन-पथ तय करते जा रहे हो और मैं यही माने बैठा हूँ कि मैने जैसा तुम्हें पहली बार देखा था, उसमें और आजमें कोई अन्तर नहीं है। अब इस विरोधाभाससे कैसे मुक्त हुआ जाये? जैसे थे वैसे ही बने रहो और कालको लिज्जत करो।

ं 'बापूके' आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८०१)से

 मैदरके भूतपूर्व दीवान
 निर्देशीय राजनैतिक नेताओंका सम्मेलन पूनामें २६ और २७ जुलाईको सर तेजनहादुर सम्भूकी मध्यस्तामें हुना था।

# २८४. भेंद्र: ए० एस० एन० मूर्तिको

सेवाग्राम सायं ४ से ४.२० तक, २३ जुलाई, १९४१

अभिवादन करने के बाद जब मैं अण-भरको ठिठका, तो गांधीजी ने कहा कि में आपकी बात सुनने के लिए तैयार बैठा हैं। मैने कांग्रेसके पूना प्रस्तावके उल्लेखके साथ अपनी बात शुरू की। मैंने उनसे पूछा कि अगर मेल-मिलापका कोई रास्ता निकल सके, तो कांग्रेसके पूना प्रस्तावके आधारपर कोई समझौता होने की सम्भावना उनकी रायमें क्या है। इसपर महात्माजी ने कहा कि पूना प्रस्तावकी पुनरुज्जीवित नहीं किया जा सकता। उसके उपयक्त मनःस्थिति अव देशमें नहीं रही है। देशमें दिनों-दिन जो अञ्चान्ति फैलती जा रही है उसका जिक्र करते हुए मैंने उनसे कहा कि यदि कांग्रेस अपना दृष्टिकोण नहीं बदलती तो वह अपना आधार खो देगी। इसके उत्तरमें उन्होंने कहा कि यदि कांग्रेसको रेगिस्तानमें भी जाना पड़े तो देशके हितका बलिदान करने की अपेक्षा वह उसे ज्यादा पसन्द करेगी, और फिर विनोद-पूर्वक बोले कि कभी-कभी रेगिस्तानकी हवा स्वास्थ्यके लिए अच्छी होती है। मैने उनसे इस बातका जिक्र किया कि कांग्रेस मन्त्रिमण्डलोंके त्यागपत्र देने से. जनताकी जो थोड़ी-बहुत भलाई करने की कोशिश की गई थी, उसे वीचमें ही छोड़ देना पडा। उन्होंने उत्तर दिया कि वास्तविक स्थितिका सही जायजा छेने पर प्रगतिके लिए किये गये प्रयत्नोंपर बहुत ज्यादा जोर देना बेकार था, वर्योकि उससे कहीं अधिक महस्त्रपूर्ण मसले उस समय सामने थे। जब कांग्रेस साम्राज्यवादको जत्म करने के लिए क्तसंकल्प है, ये सारी बातें महत्त्वहीन हैं। यदि कांग्रेस अहिसाका परि-त्याग कर दे, तो भी हमने यह देख लिया है कि एक विशुद्ध राजनीतिक उपायके रूपमें पूना प्रस्तावको पुनरज्जीवित नहीं किया जा सकता।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५४)से

र. किशोरकाल मशक्वालाने २७ जुलाईको सर्वेदय भवन, इतरपुरके श्री प० एस० प्त० पूर्विको पात्र लिखा था, यह उसके साथ संकात था। उन्होंने किखा था: "जापके २४ तारी इते एमके लिए भन्यवाद। गांधीजी के साथ हुई मेंटकी जापकी रिपोर्ट उनके द्वारा संशोधित स्पर्मे में इसके साथ मेज रहा हूँ। इस प्रस्पर इस वातपर सहमत है हो कि यह इमारी निजी जानकारीके लिए हैं।" किशोरकाल मशक्वाला इस मेंटके समय मौजूद थे।

## २८५. पत्रः अमृतकौरको

सेवाग्राम २४ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

यह पत्र लिखने की खातिर ही लिख रहा हूँ। आशा है कि जमनालालने खोई हुई शक्ति फिरसे पा ली होगी। मुझे मालूम है कि उनकी अत्यन्त स्नेहपूर्वक देख-भाल की जायेगी। उनका कहना है कि उनकी देखभाल इतने यत्नपूर्वक की जाती है कि उन्हें संकोच होता है।

जवाहरलालको मेरा ढेर सारा प्यार देना। तुम आनन्दमयी देवीसे मिलनेकी कोशिया करना। वह देहरादूनके पास ही कही है। वह कमलाकी गृर थीं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३५) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४४ से भी

## २८६. पत्र: शारदाबहन गो० चोखावालाको

२४ जुलाई, १९४१

चि॰ बबुड़ी,

तरा पत्र मिला। तुने वहाँके वातावरण पर ठीक प्रकाश डाला है। जिन्हें अलग होना है, अच्छा है अलग हो जायें। मुझे तो यह अच्छा लगेगा। वे लोग लड़ाईका रहस्य नहीं समझते। चोखावाला झपाटेसे फिर अपना वजन बढ़ा लेंगे। 'मुनि'की पुस्तक वाजारमें नहीं मिलती। मैं दिल्लीसे प्रवन्ध करूँगा। आनन्दको दस्त आने का कारण स्पष्ट है, इसलिए घवराने की कोई बात नहीं है। जो खुराक तू दे रही है, ठीक है। तुम लोग क्या अभी वहीं रहोगे? सुक्षीलावहन कल का रही है। वह २८ को यहाँसे दिल्ली जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३३) से। सौजन्य: शारदाबहन गो० चोखावाला

१. कमला नेहरू

# २८७. पत्र : डाँ० एस० के० वैद्यको

[२४ जुलाई, १९४१]

भाई वैद्य,

तुम्हारा कातना तुम्हें अवष्य फलेगा। जब छुरे हमारे सामने मौके जाते हैं, तो हम बेचैन हो जाते हैं। लेकिन हमसे दूर रोज लाखों आदमी मरते हैं और बड़ी मेहनतसे बनाये गये घर आदि क्षण-मरमें नष्ट कर दिये जाते हैं, उनका क्या? अशान्त होकर हम यह सब नहीं रोक सकते, लेकिन शान्त रहकर यह सब रोकने की शक्ति प्राप्त करना हमारा धर्म है। मेरी मान्यता है कि यदि इस संकल्पके साथ चरखेको हाथमें लिया जाये तो सार्थक होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७५२) से

#### २८८. पत्र : जमनालाल बजाजको

सेवाग्राम [२४ जुलाई, १९४१ के आसपास]

चि॰ जमनालाल,

तुम्हारे बुखारकी खबर पढ़कर में कुछ घवरा तो जरूर गया था, लेकिन तारसे तसल्ली मिली। वहाँ तबीयत बिलकुल अच्छी हो जानी चाहिए। सेवासे डरने का कोई कारण नहीं। उसे प्रभुके नामपर स्वीकार करना चाहिए और आधा करनी चाहिए कि ईश्वर तुम्हें इस योग्य बनायेगा कि तुम इस सेवाके वदले सौ गुनी सेवा कर सकोगे। यह सारा परिवार ही सेवा-मावसे खोतप्रोत है। इसके पिता मी ऐसे ही सरल थे। वस्तुतः देखा जाये तो इन्हें ही कपूरथलाका राजा होना चाहिए था, लेकिन ईसाई धर्म अंगीकार कर लेने के कारण गद्दी दूसरेको मिली।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१७)से

१. डाककी मुहरपर से

२. पत्रमें जमनाकालके बीमार होने के वल्लेखसे कगता है कि यह पत्र भी उसी समय विखा गया जिस समय अमुतकौरको पत्र किखा गया, देखिए पू० २०२। जमनाकालने पत्रका उत्तर २७ जुलाई को दिया था। देखिए अगका शीर्षक भी।

३. अमृतकौरके

## २८९. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्षा [२५ जुलाई, १९४१]

प्रिय पगली,

तुम्हारा हस्बमामूल पत्र मिला।

मेरा खयाल था कि मैने तुम्हें बता दिया है कि मेरा वजन डेढ़ पींड बढ़ गया है।

तुम्हें अथवा शम्मीको गुजरातके ै लिए कुछ देने की जरूरत नहीं है। नोआखली

और मलाबारका हक ज्यादा है। दोनों जगहों में बेहद नुकसान हुआ है।

पृथ्वीसिंहके बारेमें जो-कुछ किया गया है उसकी मीराको पूरी जानकारी है। सुशीला बम्बईसे वापस आ गई है। बम्बईके अनुभवसे उसे निश्चय ही लाम हुआ है, हार्लांक यह अनुभव बहुत कम समयका था। और उसने हमारे बहुत सारे रोगियोंकी जाँच मी की।

महादेवको चन्दा इकट्ठा करने में कुछ दिक्कतों पेश आ रही है, लेकिन वह रकम इकट्ठा कर ही लेगा।

खान साहब खुर्शेंदसे मिलने के लिए आज बम्बई गये हैं। मुझे आशा है कि जमनालालके स्वास्थ्यमें निरन्तर सुघार हो रहा है। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३६) से ; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३४५ से भी

१. डाककी मुहरपर से

२. यहाँ बाशय बहमदाबादके दंगोंके सिख्यस्थिमें चल रहे राहत-कार्यसे हैं। ३ बौर ४. इन जगहों पर जो सूकान बाया था, यहाँ संकेत उसकी जोर है। २०४

#### २९०. पत्र: कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम २५ जुलाई, १९४१

चि० कुण्णचंद,

यह सबकी सब मेरी हि गलती है। मैंने कहा है ना कि इनकी वरदास्त करना होगी। मैंने उस रोज सुना कि स॰ तेल निंह है तो दाक्तरको देने के लिये, पुम्हारा समय बचाने के लिये, जब झवेरमाई आये मैंने कहा अगर तेल है तो मेज दो। यह बात है। सही है कि तुमको कहना चाहिये था। मैंने मंगाया भी तो तुमको कहना भी चाहिये था। इस वक्त तो हो चुका। अब खबरदारी रखने की कोशीश करंगा, लेकिन बहूत दिनोंकी मेरी आदत है।

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९६) से

२९१. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम २६ जुलाई, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुमने अवश्य ही सुना होगा कि आगराकी हड़ताल खत्म हो गई है। अच्छा

तो अब जमनालालके वस्त्रादिकी व्यवस्था भी तुम ही कर रही हो।

आज चूँकि तारा यहाँ आनेवाली थी, इसलिए मैंने यह घर उसके लिए खाली कर दिया है और स्वयं डिस्पेंसरीमें चला गया हूँ। डाँ० दास अपने मरीजोंके साथ जानकीबहनके यहाँ चले गये हैं। अतः मैं वास्तवमें अनिकेत, वेघर हूँ। मुझे कोई परवाह नहीं है।

१. सरसों

२. यह शब्द देवनागरीमें है।

सुवीला प्रमानती व कुसुमके साथ प्यारेलालसे मिलने गई है। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२४९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८८१ से मी

## २९२. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

२६ जुलाई, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

मुझे दुःख है कि तुम्हारा पुत्र बीमार है। आशा है, वह पहलेसे अच्छा होगा। टाइफाइडका इलाज तुम्हें मालूम है। तुम्हें डाक्टरकी शायद ही जरूरत हो। टाइफाइडमें कड़ी परिचर्या और उपवास ही जरूरी है।

जमनालालजी कह रहे थे कि वीणाको महिला आश्रममें भरती नहीं किया जा सकता। उसकी जगह तो तुम्हारे पास अथवा बाड़ीमें रमाबाईके पास है। उसे अपनी आजीविका कमानी होगी। कदाचित् उसके लिए सबसे अच्छा यही है कि वह विवाह कर ले। यदि अकेली आमा ही आश्रम आना चाहे तो मैं उसे आजमाइशके तौर पर आश्रममें रखूँगा। वा आभाके वारेमें चिन्तित है। आमासे उसे बहुत मोह है, और उसके बारेमें वह अकसर मुझसे बात करती है। लेकिन यदि वह आये तो उसे एक बदली हुई लड़कीके खपमें आना होगा।

शैलेन और धीरेन पर निगरानी रख रहा हूँ।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३१८)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

#### २९३. पत्रः आभा चटर्जीको

[२६ जुलाई, १९४१]

चि॰ आभा,

तेरा खत मिछा। पिताजीके खतमें मैंने छिखा है। वे तुझे समजावेंगे। अगर यहां अकेछी आ सकती है और ठीक नियमन में रह सकती है तो यहां रखुंगा। महिलाश्रममें नींह। वीणाको शेठजी वहां नींह रखेंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३५४)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

## २९४. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

२६ जुलाई, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

मैंने तो तुम्हें बिलकुल मुक्त कर दिया है। ऐसा करते-करते कभी तो तुम स्थिर होगे। यहाँ आजादी नहीं है आदि बातें केवल तुम्हारी कल्पनाकी उपज है। मन ही हमारे बन्धन अथवा मोक्षका कारण है। सभी प्रकारसे विचार करना विलकुल छोड़कर जब काम, और केवल काम ही करोगे, तभी शान्त होगे, फिर चाहे वह सेवाग्राममें हो या हिमालयकी चोटी पर। हाँ, एक बात है — जो चोटीपर चढ़ता है उसे गिरने का डर रहता है। सेवाग्राम-जैसी तलहटीमें यह डर विलकुल नहीं है। वापुके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४९५) से। सी० डब्ल्यू० ७१५० से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

शह पत्र पिछ्ळे जीवैककी पीठपर किला हुना है।

२. जमनाहाङ नजाज

#### २९५. पत्र: वालजी गो० देसाईको

२६ जुलाई, १९४१

चि॰ वालजी,

तुम्हारा तार मिला। मैं तो लिख चुका हूँ कि जहाँतक की रिपोर्ट तैयार हो वहाँतक की भेज दो, तो काफी होगा। रिपोर्ट आई कि तुरस्त तुम्हें लिखूँगा और दिन भी मुकरंर कर दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४९५)से। सौजन्य: वालजी गी० देसाई

## २९६. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

[२६ जुलाई, १९४१]

भाई नटवरलाल,

्र तुम्हारा पत्र मिला। मैं भाई महादेवको लिख रहा हूँ। मेरी स्वतन्त्र राय तो यही है कि तुम्हारे पास जो सामग्री है, उसपर से अपनी रिपोर्ट तैयार करो। लेकिन महादेवने इस समस्याका अध्ययन किया है, इसलिए अगर उसकी जुदा राय हो, तो मुझे अवश्य इसपर पुनर्विचार करना पढ़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१३१)से

२९७. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम २७ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

तुम्हारी हिन्दी दिनोंदिन अच्छी होती जा रही है।

मुझे जमनालालके बारेमें कोई चिन्ता नहीं है। जब यह पत्र शिमला पहुँचेगा तब तुम देहरादूनमें होगी। वहाँकी यात्राके वारेमें तुमसे पूरे विवरणकी अपेक्षा रहेगी। तुम्हारे रानीके साथ न होने की बातपर मुझे कोई हैरानी नहीं हुई।

**१. वाककी सुहरपर** से

बाजपेयीने वर्माके साथ कितना खराब समझौता किया है! इस समय अधिक नहीं। सुशीला कल दिल्ली जा रही है। सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३७) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३४६ से भी

## २९८ तार: इपितखारुद्दीनको

[२८ जुलाई, १९४१ या उसके पूर्व ] लायलपुर जेलके राजनीतिक वन्दियोंसे भूख-हड़ताल बन्द करने को कहो। [अंग्रेजीसे] हिन्दू, ३०-७-१९४१

#### २९९. पत्र: उमेशराव एम० वकीलको

२८ जुलाई, १९४१

[घटनाओं की ] तारी खें भेजिए और क्या आप उनकी सत्यताकी जिम्मेदारी छे सकते हैं?

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपसें। सौजन्ये: प्यारेलाल

र और २. सर गिरिजाशंकर बाजपेषी, बाइसरापकी कार्यकारिणी परिषद्के सदश्य; मारत सरकार की बोरसे उनके नेतृत्वमें एक प्रतिनिधि-मण्डल बर्मा गया था, जिसका चर्देश वर्मामें भारतीयोंक प्रवेशको नियमित बौर सीमित करने के प्रश्नपर विचार-विमर्श करना था। २८ जूनको सर गिरिजाशंकरने भारत-वर्मो समझौतेपर हरताक्षर किये, और २१ जुलाईको शिमलासे यह समझौता दोनों सरकारिके संयुवत वक्तव्यके रूपमें प्रकाशित किया गया। गांधीजी के वक्तव्यके लिप देखिए "वक्तव्य: समाचारपत्रोंको ", २४-८-१९४१।

३. तारकी रिपोर दिनांक "लाहौर, २८ जुलाई" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

४. रिपोटैमें यह भी कहा गया था कि इंक्तिखारुदीनने यह निर्देश जेलके अधीक्षक माध्यमसे बन्दियोंको पहुँचा दिया था और साथ ही लायलपुर जिला कांग्रेस कमेटीको भी स्वित कर दिया था।

५, उमेशराव वक्तीलने अपने १८ जुलाईके पत्रमें दक्षिण कनारा जिलेके कासरगोड वाल्लुकेक दक्षिणी भागके कृषकोंकी दयनीय हालवकी स्त्वना देते हुए पुल्सिकी ज्यादवियोंके कुछ हटान्त मी दिये वे ।

## ३००. पत्र: इपितलारुद्दीनको

सेवाग्राम, वर्षा २८ जुलाई, १९४१

प्रिय इपितखार,

तुम्हारा इसी २५ तारीखना पत्र मिला। तुम अच्छा काम कर रहे हो। मुझे उम्मीद है कि जिला कमेटियाँ ऐसा काम करेंगी कि पंजावमें गुण्डागर्दी पनपने ही न पाये। यदि यह प्रयास सफल हो जाता है तो इसका सारे हिन्दुस्तानपर जबदंस्त प्रभाव पड़ेगा। में तुम्हारे इस कामको अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, जेल जाने से भी कही अधिक महत्त्वपूर्ण, समझता हूँ।

जो लोग अपील करने के कारण छोड़ दिये गये हैं वे यदि फिर जेल नहीं जाते तो इसके लिए तुम्हें जिन्ता करने की जरूरत नहीं है। उनके नाम सूचीसे काट

दिये जाने चाहिए।

किसी भी सदस्यने अपना नाम सूचीमें रहने देने के लिए मुझसे इजाजत नहीं माँगी है। ऐसी इजाजत देने की बात मैं सोच भी नहीं सकता। इस तरहके हर मामलेको और अन्य मामलोंको भी मैं सदा तुम्हारे पास ही भेजता रहा हूँ।

मैने डॉ॰ सत्यपालके बारेमें सव-कुछ पढ़ लिया है। तुम्हें उनका तथा उनका अनुकरण करनेवालों का इस्तीफा स्वीकार कर लेना चाहिए। संसदीय [बोडं] से त्यागपत्र देने से सम्बन्धित मामला तुमने राजेन्द्रवावूको भेजकर ठीक किया, लेकिन यह तो स्वामाविक ही है कि यदि [बे] कांग्रेसकी चवन्नी सदस्यता त्याग देते हैं तो उन्हें दूसरे सभी पदोंसे भी त्यागपत्र दे देना चाहिए।

मेरा अपना खयाल यह है कि समाचारपत्रोंमें दिये गये उनके वक्तव्योंपर

तुम्हें कोई व्यान नहीं देना चाहिए।

तुमने ब्रह्मदत्तके वारेमें जो-कुछ किया, बिलकुल ठीक किया है। उसने मुझे लिखा है कि अपने व्यवहारके लिए उसने माफी माँग ली है। वह बहुत जल्दी आवेशमें आ जाता है।

लाला दुनीचन्दको मेजे अपने पत्रकी नकल यदि मेरे पास रखी होगी तो

तुम्हें भेज दूंगा।

लाला शामलालके विषयमें मुझे भी दुःख है,। मैं सीधे कोई इस्तीफा स्वीकार नहीं करूँगा। इसके साथ मैं भिवानीसे आया एक पत्र मेज रहा हूँ। पत्र-लेखकने

१. पंजाव कांग्रेस कमेटीके भूतपूर्व अध्यक्ष, जिन्होंने २१ जुलाईको लाहीरमें अपने एक वक्तव्यमें गांधीजी से स्थितिपर पुनर्विचार करने के लिए कहा था और सुझाब दिया था कि वे सत्याग्रह-आन्दोलनके बजाय, जिससे किसीका भी भला नहीं हो रहा है, ऐसा कोई रास्ता निकाल जो वस्तुतः लाभदायक हो।

२. देखिए ५० १८४-८५।

इस वातकी शिकायत की है कि अपने दौरेके दिनोंमें जब तुम भिवानी गये थे, तब तुमने वहाँ बहुत कम समय दिया। उनका कहना है कि वहाँका वातावरण

बहुत तनावपूर्ण है। तुम देख लेना।

फारकी मुझसे नाराज है, क्योंकि मेरे साथ हुई मुलाकातके बारेमें उन्होंने जो वक्तव्य लिखा था उसे मैंने स्वीकृति नहीं दो। मैंने उन्हें लिखा था कि उनका वक्तव्य विज्ञापन-जैसा लगता है, और उसके साथ ही मैंने एक संक्षिप्त वक्तव्य लिखकर उनके पास भेज दिया था। उनका गुस्सेसे भरा जवाव आया है कि मेरा तैयार किया हुआ वक्तव्य एक विज्ञापन (मेरे खयालसे शायद मेरा अपना विज्ञापन!) है।

तुम्हें व इस्मतको प्यार।

तुम्हारा, वापू

संलग्न :

१. मिवानीके राजेन्द्रप्रसाद जैनका पत्र, २६-७-४१

२. फाटकके श्रीराम शर्माका पत्र, २७-६-४१

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सीजन्य: प्यारेलाल

## ३०१. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

२८ जुलाई, १९४१

प्रिय रथीन<sup>1</sup>,

तुम्हारा इसी २४ तारीखका पत्र मिला। वह अपील इस समय मेरे पास नहीं है। मेरा विचार है कि प्रस्तावित योजनाका समावेश उद्देश्योंमें किया गया है। यदि ऐसा है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु दूसरोंसे भी पूछ लो और उनकी सहमति ले लो।

तुम्हारा, मो० क० गांधी

श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर 'उत्तरायण' शान्तिनिकेतन, वंगाल

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० १०३१९) से। सीजन्य: विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

१. रवीन्द्रनाय ठाकुरके पुत्र

# ३०२. पत्र : सर रॉबर्ट ई० हॉलैंडको

सेवाग्राम, वर्वा होते हुए २८ जुलाई, १९४१

प्रिय मित्र,

विलम्बसे उत्तर देने के लिए क्षमा चाहता हूँ।

मैने उमय पक्षोंसे अपनी गतिविधियाँ रोकने को नहीं कहा है। मैने तो केवल यह कहा है कि अपनी माँगें पूरी कराने के लिए गुण्डागर्वीका सहारा न लिया जाये। मुस्लिम लोग पाकिस्तानकी अपनी माँग करती रह सकती है और इस माँगका विरोध करनेवाले इसका विरोध करते रह सकते हैं, वशर्ते कि ऐसा वे अहिसक ढंगसे ही करें। फिलहाल मैने विवादास्पद प्रश्नोंपर मतैक्यके लिए कोशिश नहीं की है। मैने तो केवल इस वातकी कोशिश की है कि दोनों पक्ष अहिसापर, अर्थात् शान्तिपूर्वक बातचीतके उपायपर सहमत हो जायें।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डव्ल्यू० १०४५२)से। सौजन्य: सर रॉवर्ट ई० हॉलैंड

#### ३०३. पत्र : नारणदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २८ जुलाई, १९४१

चि० नारणदास,

इस पत्रके साथ जेटालाल भाईका कार्ड है। मैने कोई जवाव नही दिया। तुम्हें कुछ लिखना हो तो सीघे लिखना। अगर समझते हो कि मुझे लिखना चाहिए तो मुझे बताना।

बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

'खादी जगत' के बारेमें कोई सुझाव देना हो तो देना।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५८७ से भी; सीजन्य: नारणदास गांची ३०४. पत्रः कृष्णचन्द्रको

२८ जुलाई, १९४१

चि० कृष्णचंद्र,

यह बात तो हो हि गई है कि महमानोंका तुमारे हि देखना है। कोई अचानक आ जावे तो चि॰ को उसी वक्त निर्णय करना होगा। मुझे पता नींह है तुमारी खास मुसीबत क्या है। स्पष्ट करोगे तो मैं अधिक मदद दे सकुंगा। जिनका मैं प्रवंय नींह कर लेता हूं उनको कहां विठाना वगैरा तो तुमारे हि देख लेना है। तुमको नाटी सभी जितनी जल्दी मिल सके देनी होगी।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९८)से

३०५. पत्र: कृष्णचन्द्रको

२८ जुलाई, १९४१

चि० कुष्णचंद्र,

[कूड़ा तुमने] अदावतते जलवाया ऐसा ध्विन मैने व० के खतमें निह पाया। खतमें तो उनका दुःख ही है। करीब र सब कचरा खाद है, फूटा ग्लास इ० छोड़कर-ब० का कहना ठीक लगता है कि जलवाने के पहले उनको पूछना अच्छा होता। जब मदद मांगी तो उनको देनी चाहिये थी। सब बात है कि किसानका जी जलेगा यदि उसका खाद जला ले। व० को शांत करो।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९७)से

१. चिमनलाल नख्यालाल शाह

२. नोटिस

३. बळवन्तसिंह

#### ३०६. पत्र: लक्ष्मी गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए २८ जुलाई, १९४१

चि॰ लक्ष्मी,

बा ने कल खत भेजा। उसीमें मेरे पास कुछ लिखवाना चाहती थी। लेकिन खत गलती से चला गया। बच्चोंकी वीमारीके वारेमें मैं भी कुछ आश्वासन दूं यह मत-लब था, लेकिन बच्चे तो अच्छे हो गये हैं और न भी हो तो तुझको आश्वासन क्या? भगवानके हाथोंमें हम सब पड़े हैं। हां, प्रयत्न करना हमारा काम है, सो तो तू करती है। भाईयोंको और पापाको मेरे आशीर्वाद। सुशीला आज दिल्ली गई। आश्रममें कितने भी मकान बनाकर भरता हि जाता है। शायद दे वै यहाँ होकर दिल्ली जायेगा।

तुम सबको

बापुके आशीर्वाद

श्री लक्ष्मीबहन गांघी माफंत श्री च० राजगोपालाचारी बाजुलूल्ला रोड त्यागराज नगर मद्रास<sup>8</sup>

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २००१) से

१. छह्मी गांधीकी बढ़ी बहुन

२. देवदास गांधी

<sup>.</sup> रे. साधन-प्त्रमें पता रोमन किपिमें है।

## ३०७. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

२९ जुलाई, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

मैंने तुम्हें सब स्पष्ट लिख दिया है। लेकिन तुम्हारा चित्त डांबाडोल होने के कारण तुम्हें अस्पष्ट-जैसा लगता है। मेरी सलाह है कि तुम्हें आग्रहपूर्वक यहाँ रहने का निश्चय करना चाहिए और जो काम मिले वह करके सन्तोप करना चाहिए। यही राजमागं है और यही राजयोग। लेकिन अगर यह विलकुल न कर सकी, तो यात्रा करो और जब या यदि थक जाओ तो वापस आ जाओ। एक भी चिन्ता साथ लेकर मत जाना। कंचन भले यहीं रहे। इन दो के सिवाय तीसरा मार्ग नहीं है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४८८) से। सी० डब्ल्यू० ७१५१ से भी; सीजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

## ३०८. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २९ जुलाई, १९४१

चि॰ अमृत,

पत्ता लिखने की तुमारी मनाई तो है लेकिन क्या करुं? आज तुमारा खत निंह है। और मेरे सामने खूब खत पड़े हैं। आज तो इस वक्त तुम देहरादूनमें हो। यहां सब कुशल है। मिस मूरे इतवारको जानेवाली है। वारीश निंह होती है। इ[स] से फिकर हो रही है।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८८२) से। सी० डब्ल्यू० ४२५० से भी; सीजन्य: अमृतकौर

१. देखिए ए० २०७।

## ३०९. पत्र: अमृतकौरको

ें सेवाग्राम ३० जुलाई, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारे दो पत्र एकसाथ मिले।

तुमने देखा कि यह चीज दोनों तरफसे समान रूपसे काम करती है। हमें जीवनकी ये छोटी-छोटी तकलोफें सहन करनी ही चाहिए।

यदि जमनालालका वहाँसे जल्दी चल देना जरूरी है, तो उन्हें रोकना नही चाहिए।

मुझे खुशी है कि तुम आगरावाले मामलेमें आगे कार्रवाई कर रही हो। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४७ से भी

#### ३१०. पत्र: जमनालाल बजाजको

सेवाग्राम ३० जुलाई, १९४१

चि॰ जमनालाल; 🏾

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अच्छा लगे, तमीतक वहाँ रहना है। यदि तुम इस परिवारके साथ मुझसे बेहतर सम्बन्ध बना लो तो मुझे अच्छा ही लगेगा, ईर्ष्या नहीं होगी। लेकिन आज जो तुम वहाँ रहने में ही डरते हो तो भला मेरा-जैसा सम्बन्ध कैसे जोड़ोगे? जबतक रा० कु० वहाँ रहे तबतक रहने में कोई हर्जं नहीं है। परन्तु तुम्हें जैसा ठीक लगे, वैसा करना। जबाहरलालसे मिलो, यह तो अच्छा ही है। लेकिन मिलने की खबर प्रकाशित न होने देना। देहरादूनके पास आनन्दमयी देवी रहती है। वे कमलाकी गुरु थीं। वे साब्बी महिला कही जाती है। उनसे मिल सको तो मिल लेना। लेकिन बहुत दौड़-घूप न करना।

बापूके आंशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०१९) से

१. देखिए "पत्र: अमृतकौरको ", प० १९१-९२ भी।

#### ३११. पत्र: शारदाबहन गो० चोखावालाको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए ३० जुलाई, १९४१

चि॰ बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। जबतक तेरी इच्छा हो, वहाँ जरूर रहना। जब यहाँ आने की इच्छा हो, तब आ जाना।

साथका पत्र तुम दोनों पढना। मैने भाई अहमद कुरैशोको तुम दोनोसे मिलने को कहा है। यह भी लिखा है' कि आश्रमका जीवन बड़ा कठिन होता है। एकान्त-जैसी कोई चोज यहाँ नही होती। अब तुम दोनो उस दम्पतिका मार्ग-दर्शन करना। क्या असर पड़ता है, मुझे लिखना।

आनन्द मजेमें होगा।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्स्यू० १००३४) से। सीजन्य : शारदावहन गो० चोखावाला

#### ३१२. पत्र: कृष्णचन्द्रको

३० जुलाई, १९४१

चि० कुष्णचंद्र,

चि० के वारेमें तुमने लिखा है उसमें मैं कोई नैतिक या अन्य दोप नींह पाता हूं। यह दूसरी बात है कि हम जिसे न्याय कहे वह भी हमें न मिले या देरसे मिले तो उसे सहन करना। यह तो एक अनोखी संपत् है।

रामज़ीसे बात हो रही है।

वापके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३९९) से

## ३१३. पत्र: हरिभाऊ उपाध्यायको

सेवाग्राम ३० जलाई, १९४१

भाई हरिभाऊ,

वालकृष्णजी से मैंने तो खशखबरीके उपरान्त कोई वात ही नहीं की। समय कहां है ? उनको मैने ४ वजे मिलने का तो कहा था — लेकिन कुछ कहना नहीं चाहते थे।

भाई कोतवालको मैने उत्तर दिया था -- ऐसा ख्याल है। मैं उनका अजमेरमें जेल जाना विलकुल पसंद नहीं करता हूं। यहां आने की तो आवश्यकता ही नहीं है। जेलमें जायं ही क्यों? इन्दौरमें ही जो रचनात्मक सेवा कर सके सो किया करें। यह मेरा उत्तर समझे अगर मेरा खत न मिले तो।

मिश्रीलालजी ने वजन बहुत गमाया। अब वह आराम करें। ऐसे ही कन्हैयालाल खादीवालेका। यु० पी० में काफी निकम्मे आदमी जिला गये हैं। उसका मझे पता है।

हरिलालके खबर ठीक दिये। वा की तबीयत आजकल बहुत अच्छी रहती है। तुम्हारे आराम छेना चाहिये। वर्म समझकर।

हम वारिशको इन्तजारीमें हैं। न पड़े तो लोग परेशान होंगे।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: हरिमाळ उपाच्याय पेपसं ! सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहाण्य तथा पुस्तकालय

#### ३१४. पत्र: 'टाइम्स ऑफ इंडिया को

सेवाग्राम, वर्षा ३१ जुलाई, १९४१

प्रिय महोदय,

इसी २९ तारीखने 'टाइम्स ऑफ इंडिया'की सम्पादकीय टिप्पणीके अन्तमें आपने लिखा है:

या तो उन्होंने (श्री गांधीने) सत्याग्रहके अपने नियमोंकी व्यारवामें डील की है, अथवा जिन लोगोंके नाम पेश किये गये उनमें से ज्यादातरने उन्हें घोखा दिया है। इनमें से कौन-सी बात सही है यह तो श्री गांधी ही ठीक वता सकते हैं।

में एक तीसरा विकल्प सुझाता हूँ। मैंने न तो सत्याग्रहके अपने नियमोंकी व्याख्या करने में ढोल वरती है और न ही मैं किसीसे छला गया हूँ। आप मेरी स्वीकारोक्तिमें से एक वाक्य पढ़ना भूल गये हैं: "यह अनिवाय है।" १९२० में आन्दोलनके प्रारम्भसे ही अहिसाको एक नीतिके रूपमें स्वीकार किया गया है, सिढान्त के रूपमें नहीं। वम्बईमें अ० भा० कां० कमेटोकी वैठकमें पूना-प्रस्तावका निराकरण करने के सवालपर बोलते हुए मैंने कहा था कि अधिकाश लोगोंके लिए अहिसा मात्र एक नीति है। इसलिए कमजोरी तो आन्दोलनमें अंतिनिहत ही थी। यह नहीं भूलना चाहिए कि मैं देशकी राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए अहिसाक उपयोगका महान् प्रयोग कर रहा हूँ। मेरे लिए निस्सन्देह अहिसा स्वयंमें एक साध्य है, हालाँकि यह देशकी स्वाधीनता प्राप्त करने का एक साधन भी है। काग्रिसयोकी विशाल बहुसंख्याके लिए यह एक साधन है और साधन ही रहेगी। इसलिए यह बात खेदजनक होते हुए भी कमजोरी तो अन्तिनिहत ही है। आक्चय तो यह है कि इस कमजोरीके वावजूद २० वर्षके अनुभवने कांग्रेसी लोगोंको अहिसाकी नीतिस विलग नहीं किया है, हालाँकि यदि काग्रेस चाहे तो किसी भी समय अपनी इस नीतिमें परिवर्तन कर सकती है।

मैने जो सूचना प्रदान की है उसको घ्यानमें रखते हुए आप कदाचित् यह स्वीकार करेंगे कि आपने मेरे और कांग्रेसियोके विरुद्ध जो आरोप लगाया है वह

टिक नहीं सकता।

हृदयसे आपका,

[अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४२, फाइल सं० ३/४२/४१-गृह विभाग, पॉलि० १ । सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

१. देखिए परिशिष्ट ६।

२. देखिए खण्ड ७३, ए० ५-१४।

# ३१५. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम ३१ जुलाई, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

हाँ, मैते अन्तरंग रूपसे यह सन्देश भेजा था कि मूख-हड़ताल खत्म कर दी जानी चाहिए। किंकिन यह समाचार वाहर कैसे चला गया, सो मै नहीं जानता।

फारकीने भेंटकी जो रिपोर्ट लिखी थी उसे मैंने प्रकाशित करने से मना किया, इसलिए वे मुझसे नाराज हो गये थे। उसके बदले मैंने उन्हें कुछ वाक्य लिखकर भेजे थे। वे उन्होंने वापस कर दिये। भेरी रिपोर्ट उन्हें विज्ञापन-जैसी लगी और उन्हें मुझसे फिर मिलने में कोई फायदा दिखाई नहीं दिया। लेकिन उन्होंने आज मुझे एक शिष्टतापूर्ण पत्र भेजा है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि आवश्यकता पड़ने पर वे मुझसे मिलेंगे।

इफ्तिखारने अपनी यात्राके वारेमें एक लम्बा और दिलचस्य पत्र मुझे भेजा है। तुम्हारे बारेमें जो खबर है वह परेशान करनेवाली है। तुम अपनी कमजोरी दूर करो, वरना लौट जाओ।

सप्रेम,

बापू

#### [पुनश्च : ]

७२ वर्षके एक बूढ़ेके बारेमें यदि ऐसा कहा जा सके तो कहूँगा कि मेरी तबीयत असाधारण रूपसे अच्छी है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०३९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४८ से भी

# ३१६. पत्र: मीराबहनको

३१ जुलाई, १९४१

चि० मीरा,

इन्हें मैने कल रात पुस्तकालयमें समाप्त किया। अन्ततः यह संग्रह अच्छा रहेगा।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ६४८६) से; सौजन्य: मीरावहन। जी॰ एन॰ ९८८७ से मी

## ३१७. पत्र: लीलावती आसरको

३१ जुलाई, १९४१

चि॰ लीली,

तेरा पत्र मिला। सुवीलाको तेरे बारेमें कोई डर नहीं लगा। वह मानती है कि अगर तू ठीकसे खाये-पियेगी और बताई दवा लेगी, तो जरूर अच्छी हो जायेगी। कड़क चाय मत पीना। दूघ बरावर पीना या फिर दही लेना। मुझे नियमपूर्वक खबर देती रहना। अगर ताकत न लीटे तो जरूर यहाँ आ जाना। [अध्ययनका] एक बरस खराब होना हो तो हम होने देंगे। अध्ययन तो तुझे हर हालत में पूरा करना ही है। अभी तू जिन्हें नीरस विषय मान रही है, उनपर अधिकार प्राप्त कर लेने पर वे ही तुझे रोचक लगेंगे। बा बारम्बार तेरी याद किया करती है। वापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

मेरी तबीयत अच्छी है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डव्ल्यू० १०११०)से। सीजन्य: लीलावती आसर

१. देखिए "पत्र: मीरानहनको", ए० १३६ और १३७ भी।

## ३१८. पत्र: पृथ्वीसिहको

३१ जुलाई, १९४१

भाई पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत किशोरलालभाई पर पढ़ा। तुमा[रा] खत मुझे मिल गया था। पढकर मुझे बहूत आनंद हुआ। कुछ लिखने जैसी नहिं था इसलिये पहोंच तक न लिखी। तुमारा काम चल रहा है यह खुशीकी बात है।

वापुके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

गोपाल राव अच्छे होंगे। परीक्षा हुई? सरदार पृथ्वीसिंह अहिंसक व्यायाम संघ रामबाग, मलाड, वस्बई

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६४९) से। सी० डब्ल्यू० २९६० से भी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

#### ३१९ पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए १ अगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

भेरे पास वक्त नहीं है। आज तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। कनु राजकोट जा रहा है। मोतियाविन्दके कारण उसकी माँ की एक आँख खराव हो गई है और दूसरीके खराव होने का डर है। वेचारा!

सप्रेम,

वापू

#### [पुनश्च:]

प्रभा लीट आई है। श्री राजकुमारी अमृतकौर मैनरविल, शिमला

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४०)से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३४९ से भी

नारणदास गांधीके पुत्र

२२२

#### ३२० पत्र: नारणदास गांधीको

१ अगस्त, १९४१

चि॰ नारणदास,

क्या तुम सन्त रह गये हो ? रह भी गये हो, तो तुम-जैसे व्यक्तिके लिए तो वह क्षणिक ही होगा। तुम अनासक्त हो, भक्त हो, श्रद्धालु हो, इसलिए जो भी आ पड़े, हैंसते-हेंसते सहन करोगे।

माई नानालालके पास जो ११,००० रुपये आये है, भेज देंगे। वे मै तुम्हारी थैलीमें डाल दूंगा। मुझे याद है, एक लाखका बंक मैने तुम्हारे पत्रसे लिया या, तुम्हारे वक्तव्यसे नहीं। लेकिन जो भी हो, ईश्वर हमारी लाज रखेगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५८८ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

# ३२१. भाषण: खादी विद्यालयके उद्घाटनके अवसरपर

वर्घा १ अगस्त, १९४१

हम सत्य और ऑहसा द्वारा विश्वका कल्याण करना चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप, इस विद्यालयके विद्यार्थी, चरला और खादीका वैज्ञानिक ढंगसे अध्ययन करें और नये आविष्कारों द्वारा उनमें सुधार करके गाँववालोंकी सेवा करें।

जिस तरह सूर्यं ग्रहमण्डलका केन्द्र है, उसी तरह खादी हमारे आर्थिक अथवा ग्रामीण ढाँचेका केन्द्र है। सूर्यके विना संसारका नाक हो जायेगा, उसी तरह चरखेके बिना, जो हमारा त्राता और अन्नदाता है, हम विफल हो जायेंगे।

यदि खादी स्थायी हो जाये, तो सब-कुछ ठीक हो जायेगा। खादीकी तरवकी और सुघारके लिए आप अपनी वृद्धि और हाथ दोनोंका उपयोग करें। खादीके इस मन्त्रका आविर्माव उस समय हुआ जब मैं १९०८ में दक्षिण आफिकामें या। उस समय स्वर्गीय मगनलाल गांघी भी मेरे साथ थे, जिन्होंने खादीकी तकनीकमें

- १. देखिए पिछला शीर्षक।
- २. देखिए "रॅटिया बारस", पृ० १५०।

सुधार करने के लिए अनेक प्रयोग किये थे। हम मधीनोंके विरुद्ध नहीं है, लेकिन हमें मशीनोंका सामना अपने खादी-शास्त्रमें नई-नई खोजें करके और गाँववालोंको रोटी और रोजी देकर करना होगा। आप अपने मन और वृद्धिको विज्ञानपरक वना-इए, जिससे कि आप विद्यार्थी लोग अपने देशको वेहतरीके लिए हमेशा नई-नई बीजों की खोज करते रहें। हमारी भगवानसे यही प्रार्थना होनी चाहिए कि हम हिन्दुओं, मुसलमानों तथा सभी अन्य कौमोंकी सेवा करें। इस तरह भारतकी सेवा करते हुए हम विश्वको सेवा कर सकेंगे, क्योंकि हमारा उद्देश्य शोषण, दमन और घृणाको समाप्त करना है। इसके लिए तपश्चर्याकी जरूरत है, जिससे हमारे ज्ञानमें अभिवृद्धि होगी।

मारतीयोंकी और वादमें मानव-मात्रकी सेवाकी कसौटीपर खरा उतरने के लिए हमें और ज्यादा परिश्रम करना होगा। जिस तरह सौरमण्डलकी निदेशक शिक्त सूर्य है, उसी तरह अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ और तालीमी संघकी केन्द्रीय शिक्त अथवा केन्द्र चरला संघ है। इस विद्यालयकी स्थापनासे हम एक छोटी-सी शुक्रआत कर रहे हैं, और यदि आप अपने त्याग, तपस्या, कण्ट-सहन तथा चारित्रिक शुद्धताके वलपर गरीव ग्रामवासियोंकी सेवा करंने, उन्हें रोटी-कपड़ा मुहैया करने के लिए व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक रीतिसे चरला-शास्त्रका अव्ययन करेंगे, तो इस छोटी-सी शुक्रआतके बेहतर परिणाम हो सकते हैं और हमारे सपने पूरे हो सकोंगे। सच तो यह है कि इस तरह हम केवल भारतकी ही नही, विलक संसारकी भी सेवा करेंगे।

[अंग्रेजीसे] बॉम्बे फॉनिकल, २-८-१९४१

३२२ पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र खराव है! इस तरह अपनी वीमारी अथवा कमजोरीको छिपाने से क्या लाम है? इससे तो परेशानी और बढ़ती है। यदि मेरे साथी मुझसे सत्यको छिपायें तो मैं चिन्तामुक्त नहीं हो सकता। चिन्तामुक्त होना तो मैं तमीं सीख सकता हूँ जब मेरे चफादार साथी अपने सुख-दु:खका सच्चा अनुभव मेरे सामने रखें। जल्द चंगी और सशक्त हो जाओ।

अन्य लोगोंके पत्रोंपर न लिखने की तुम्हारी हिदायतोंकी मै समझता हूँ। तुमने जिस पत्रका जिक्र किया है उसके मैंने उस भागपर लिखने का व्यान रखा था जिसे तुम आसानीसे काट सकती थी।

जमनालाल हर बार तुमसे वाजी ले जाते हैं। चलो, उन्हें जीतका सुख लेने दो। देहरादूनके सम्बन्धमें जुम्हारी रिफोर्ट आह्वादकारी है। जो बात तुम मुझे पत्रोंमें नहीं बता सकती वह बात यहाँ आने पर भी नहीं बता सकोगी। तुम जानती ही हो कि पिछली बार तुम असफल रही थी। लेकिन इसकी मुझे परवाह नहीं। इसके प्रत्युत्तरमें यदि तुम यह कहों कि मैं तुम्हे कभी समय ही नहीं देता, तो तुम्हारा ऐसा कहना ठोक ही होगा। इसीका नाम जिन्दगी है। मैं जानता हूँ कि जो बात सबमुख बताने लायक है उसे तुम मुझे बताने से कभी चूकोगी नहीं। लेकिन सामान्यतः सबमुख बताने लायक बात लिखी जा सकती है, और इसमें देर नहीं करनी चाहिए।

यह रही शैंलेनकी डायरी, या चाहे इसे कुछ मी कह लो। के० एस०। सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०४१) से; सीजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३५० से भी

## ३२३. पत्र: शान्तिकुमार न० मोरारजीको

'२ अगस्त, १९४१

चि॰ शान्तिकुमार,

मैंने सर पुश्वीतमदास ठाकुरदासको लिखा है। मुझे तो कई उपाय सूझ रहे है। मै तो यह समझता हूँ कि यह मामला ठीक किया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७३४) से। सौजन्य: शान्तिकुमार न० मोरारजी

## ३२४. पत्र: नारणदास गांधीको

सेवाग्राम २ अगस्त, १९४१

चि॰ नारणदास,

कनैयो बहुत घवरा गया है। तुम उसे आश्वस्त अवश्य करना। मुझे उसते वहुत काम है; लेकिन अगर उसकी इच्छा वहाँ रहने की हो, अयवा तुम उसे वहाँ रखना जरूरी समझो, तो फिर मेरा विचार करने की जरूरत नहीं है। प्रारम्भे हो मैने अपना यह घर्म माना है कि जिसे मेरे साथ रहने की इच्छा हो उसके माध्यमसे जो

१. देखिए पू० ५८, पा० टि० २।

२. भारत-वर्मी भाप्रवास समझौता

**68-84** 

काम बन सके, करूँ। अन्य किसी प्रकारसे सत्यका आग्रह असम्मव है। अन्य किसी रीतिसे ईश्वरदर्शन भी असम्भव है। गृहस्थाश्रमके त्यागमें भी यही भावना निहित है। इसिलए कनैयोका कल्याण देखना और तुम्हारी सुविधाका विचार करना सहज ही मेरा धर्म हो जाता है। वाकी सव तो कनैयो तुमसे कहेगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीको माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५८९ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

## ३२५. पत्रः इन्द्रवदन दिव्येन्द्रको

२ अगस्त, १९४१

भाई इन्द्रवदन,

तुम्हारा पत्र मिला। दूबके वारेमें मेरी राय ज्यों-की-त्यों वनी हुई है। लेकिन मैं ही जिस रायपर अमल नहीं कर सका, उस रायकी कीमत भी क्या? इसलिए फिलहाल मेरी रायको भूल जाओ और जितना पने उतना गायका दूब और घी मजेमें खाना।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४६)से

# ३२६. पत्र: कुँवरजी खे० पारेखको

२ अगस्त, १९४१

चि॰ कुँवरजो,

इन सुझावों पर यथोचित अमल करना। उसने तुम्हारे वारेमें डाँ० जीवराज को भी लिखा है। तुम उनसे मिलोगे न? लेकिन पहले उनसे पूछ लेना, फिर जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस०.एन० ९७५१) से

## ३२७. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए ३ अगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। समझमें नहीं आता डाक मिलने में यह अनियमितता नयो है। तुम्हारे यहाँ ही कुछ गड़बड़ो है। लेकिन जिसका कोई इलाज न हो उसे सहन तो करना ही होगा।

खुर्शेदका इस तरह सार्वजनिक रूप से अपहरण' किया जाना बहुत मयंकर बात है। मैं नहीं जानता कि महिलाओं दिष्टिकोणसे तुम्हारे संगठनको इस मामलेको हाथमें लेना चाहिए या नही। तुम्हे इसपर सावधानीके साथ विचार करना चाहिए। और वह भी भागत रक्षा अध्यादेशके अन्तर्गत। कितना बढ़ा झूठ है यह !

तुम्हारा बीमार होना मन को शान्ति नही देता। शिमलामे तुम्हारी हालत इससे पहले तो इतनी खराब कभी नहीं रहीं?

तुम्हें कोशिश करनी चाहिए और पूर्णतया स्वस्थ हो जाना चाहिए। कहीं यह बात तो नहीं कि तुमपर बुढ़ापा आ रहा है?

प्रोफेसर कीन है ? मैं पहुंचान नहीं पा रहा हूँ। सरनको नि.सन्देह जाने के लिए जल्दवाजी नहीं करनी चाहिए।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४२) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३५१ से भी

१. देखिष "वनतन्य: समाचारपत्रांको", ए० २२८-३२ भी।

२. अखिल भारतीय महिला परिषद्

३. साधन-सूत्रमें इस शब्दका संक्षिप्त रूप देवनागरीमें है।

#### ३२८. पत्र: रत्नमणि चटर्जीको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए ३ अगस्त, १९४१

प्रिय रत्नमणि,

डॉ॰ दासके सम्बन्धमें न्योरेवार लिखकर तुमने अच्छा किया। उनकी मृत्युसे हमें मारी क्षति हुई है। हम तो केवल इतना ही कर सकते हैं कि देशके हित-साबनमें और भी तेजीसे जुट जायें। उनकी वूढ़ी माँको मेरी समवेदना पहुँचा दो।

हृदयसे तुम्हारा, बापु

भी रत्नमणि चटर्जी जिला कांग्रेस कमेटी जी॰ टी॰ रोड पोस्ट ऑफिस श्रीरामपुर, जिला हुगली बंगाल

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०२६) से। सी० डब्ल्यू० १०३४२ से भी; सौजन्य: रत्नमणि चटर्जी

#### ३२९. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

सेवाग्राम ४ अगस्त, १९४१<sup>३</sup>

खुर्शेदवहन नौरोजी भारतके पितामह स्वर्गीय दादाभाई नौरोजीकी सबसे छोटी पोती है। अपनी अन्य बहनोंकी तरह उन्होंने भी अपना जीवन भारतकी, बस्तुतः

१. डॉ० आज़ुतीव दास, आई० एम० एस०, ने असहपोग आन्दोलनके दौरान स्थापी कमीशनसे स्वागपत्र दे दिया या और हुगळी जिलेके एक गाँव हरिपालमें काला आजारके उन्मूलनके लिए कार्य किया था। व्यक्तिगत सिननप अवज्ञा करने पर उन्हें जेल जाना पदा और रिहा होने के कुल समय नाद ही मलेरियासे उनकी मृस्य हो गई।

 अ० मा० क्रां० क्रमेटी फाइल सं० १३६३, १९४१ में उपलब्ध इस वृत्तत्वके मसीहेमें ३ अवस्त, १९४१ की तारीख दी गई है, लेकिन बॉम्चे क्रॉनिकल में प्रस्तुत वृत्तत्व्य "वर्षा, ५ अवस्त" के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था। मानवताकी, सेवामें समापत कर दिया है। कुछ वर्ष पहले उन्हें लगा कि उन्हें सीमा प्रान्त जाकर पठानोंके बीच काम करना चाहिए तथा अहिंसा धर्मका प्रचार करना चाहिए। उन्होंने पिछले सविनय अवज्ञा आन्दोलनमें भी भाग लिया था। पिछली बार सीमा प्रान्त वे डकैती और अपहरणकी घटनाओं मिलसिलेमे गई थी। वे वहादर और निर्मीक महिला हैं, इसलिए उन्होंने योजना बनाई कि यदि सम्भव हो सके तो कवायली इलाकेमें जाकर काम किया जाये और ढाकुओंसे सम्पर्क स्थापित करके उन्हें सही रास्ते पर लाया जाये। उन्होंने कई महीने सीमा प्रान्तमे काम किया और वे सीमा पार करने के लिए सरकारकी अनुमति प्राप्त करने की कोश्चिश कर रही थी। उन्हें अनुमति नहीं मिली, हालाँकि वे जिन अधिकारियोंके सम्पर्कमे आई उन्होंने जनकी योग्यता. पारदर्शी निश्छलता तथा सीमा प्रान्तमें उनकी गतिविधियोमें किसी भी सरहका छिपाव न होने को स्वीकार किया। उनके पास अधिकारियोंके जो पत्र है उनसे यह बात स्पष्ट है। जब वे इन्तजार करते-करते थक गई, तो उन्होंने सीमा प्रान्तकी सरकारको सीमा पार करने के अपने इरादेकी सचना दी। लेकिन वे गिरणतार कर ली गई, उनपर मुकदमा चलाया गया और उन्हें १०० रुपये जुर्माना अथवा जुर्माना न देने पर तीन महीनेकी जेलकी सजा दी गई। उन्होंने जेल जाना मंजूर किया - अर कैंदकी मियाद पूरी होने पर उन्हें सीमा प्रान्तसे निकालकर वम्बई द्वीपमें नजरबन्द कर दिया गया। उन्होंने सरकारके इस आदेशका विरोध किया और अधिकारियोंके साथ पत्र-व्यवहार किया। अधिकारियोंको लिखे उनके पत्र मैं नोचे उद्धत कर रहा है:

> ७८ नेपियल सी रोड, वस्बई ३१ मार्च, १९४१

सर रिचर्ड टोटेनहम भारत सरकारके अतिरिक्त सचिव गृह विभाग, पॉलिटिकल (१) नई दिल्ली महोदय,

१८ फरवरी, १९४१ का भारत सरकार आदेश सं० ७५/७/४१ पॉलिटिकल (१) मुझे ४ मार्च, १९४१ को पेशावर सेन्द्रल जेलसे रिहा होने से सरन पहले दिया गया था। उसके सम्बन्धमें मुझे यह कहना है:

भेरा विचार है कि इस आदेशकी भाषा अस्पब्ट है और मैं जो कार्य कर रही थी उसे देखते हुए मुझपर लगाये गये प्रतिबन्ध अनुचित हैं। मैं आपके सामने कुछ तथ्य पेश कर रही हूँ।

४ दिसम्बर, १९४० को अपनी निरम्तारीसे पहले लगभग नी महीनेसे मैं पित्रचमोत्तर सीमा प्रान्तके बन्नू जिलेमें काम कर रही थो और अहिसाके आवर्शको लोगोंके दिलोंमें बैठाने की कोशिश कर रही थो। मैं गांव-गाँव जाकर पीरों, मलिकों, खानों और डाकुऑतक से मिली। उनमें से बहुतोंने धोरजके साथ मेरी बात सुनी, जिसके लिए में उनकी आभारी हूँ। मैने उनसे कहा कि असहाय मदों, औरतों और बच्चोंका अपहरण अयवा उनकी हत्या करना कायरता और कूरता है। मैने डाकुओं और कवायिलयोंको यह समझाने की कोशिश को कि अपने साथो इन्सानोंको हत्या करना अमानुषिकता है। मैने गाँववालोंको इस बातके लिए तैयार करने की कोशिश की कि गाँवोंको सामूहिक रक्षाको जिम्मेदारी उनकी है। मैंने हिन्दुओंसे अनुरोध किया कि वे अधिक साहसका परिचय दें और अपने पठान पड़ोसियोंके साथ सहानुभूतिका एक जीवन्त सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करें। मैने पठानोंसे अनुत्य-वितय की कि वे दुर्बलोंकी रक्षा करने और अपने वन्धु-बान्धवोंतक की नृशंसताका विरोध करने की अपनी परम्परापर चलें। पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तके सम्बन्धित जिलेके सरकारो अधिकारियों द्वारा उपर्युक्त तथ्योंकी पुष्टि की जा सकती है।

अधिकारियोंको विधिवत सुचित करने के बाद ४ दिसम्बर, १९४० को जब मैं कवायली इलाकेमें चालो तांगी जा रही थो तब मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। वालो तांगी में अपहरण किये गये कुछ हिन्दुओंको छुड़वाने के लिए जा रही थी, जिनमें एक स्त्री भी ज्ञामिल थी, और मेरा इरादा वहाँ कुछ समयतक और आबदयकता पड़ने पर अपना उद्देश्य पूरा होने तक एकने का था।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, सीमा प्रान्तके ग्रामीणोंके साथ मेरी निर्जा अथवा सार्वजनिक बातचीतके दीरान कमते-कम एक गुप्तचर अधिकारी हमेबा मौजूद रहता था और मेरी सारी बातें सुनता था और सम्भवतः उनकी रिपोर्ट सम्बद्ध सरकारी विभागको दे दी जाती थी।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तमें मैने जो भी कार्य किया अथवा जो-कुछ कहा उसका ब्योरा भेने दे दिया है और भै आपसे यह पूछना चाहूँगी कि इस सबको क्या किसी भी तरह युद्धके कारगर संचालनमें, ब्रिटिश भारतको सुरक्षा में अथवा सार्वजनिक ब्यवस्था बनाये रखने में वावक माना जा सकता है।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्तमें किये अपने कार्यको मै तत्वतः लोकोपकारी मानती हूँ। मुझे इस बातका पूरा यकीन है कि मुझे मेरी उपरोक्त गितिबिधियोंके कारण सीमा प्रान्तसे विहिष्कृत नहीं किया जा सकता था। यि सरकारके पास इसके विपरीत जानकारी है तो उसे विल्कुल गुमराह किया गया है। जिस प्रमाणके आधारपर सरकारने मेरे विष्ट उपरोक्त आदेश जारी किया है, मुझे उसका खण्डन करने का अवसर दिया जाना चाहिए।

क्या भें इसका जल्दी उत्तर पाने की आज्ञा कर सकती हूँ?

आपकी विश्वस्त, (हस्ताक्षर) के० ए० डो० मीरोजी सरकारी अधिकारियोंने खुर्शोदके इस प्रतिवादकी जोर कोई ध्यान नही दिया। इसिक्ट उन्होंने, राहत न पाने की सूरतमें, नजरवन्दीके आदेशको तोड़ने का निष्चय किया और अधिकारियोंको निम्निक्खित नोटिस दिया:

प्रिय महोदय,

आपके पिछले पत्रके सम्बन्धमें मैं आपसे यह कहना चाहूँगी कि मैने उस पत्रको ध्यानपूर्वक पढ़ा है और उसमें मुझे वम्बई द्वीपमें मेरी नजरवन्दीका तिनक भी औचित्य दिखाई नहीं दिया।

ब्रिटिश सरकार आज जिस ततावपूर्ण दौरसे गुजर रही है उसमें कुछ समयके लिए मुझे सीमा प्रान्तमें न जाने देने की वातको में समझ सकती हूँ। छेकिन मुझे इस तरह बम्बई द्वीपमें कैद रखने की बात मेरे गले नहीं उतरती। मैं इसे स्पष्ट अन्याय और विलकुल अनावश्यक मानती हूँ और मेरी आत्मा इसके विरुद्ध विद्रोह करती है। इससे मेरी बुद्धिका अपमान होता है। इसलिए यदि प्रतिबन्धके आदेशको सीमा प्रान्ततक हो सीमित नहीं कर दिया जाता और मेरे घूमने-फिरने की स्वतन्त्रतामें अन्यया कोई बाधा डालो जाती है और धिद सरकार आदेशमें ऐसा संशोधन करके, जिसकी कि प्रायंना की गई है, मुझे ३० जूनतक उत्तर नहीं दे देती, तो में इस आदेशका पालक नहीं करूँगी।

आपको विश्वस्त, (हस्ताक्षर) के० ए० डी० नीरोजी

मेरा खयाल है कि सरकारको चूंकि अपनी इस कार्रवाई पर शमें आई! इसलिए और शायद इसलिए भी कि उसने यह महसूस किया कि खुर्शेंदवहनको इस तरह वम्बईमें नजरबन्द करना ऐसी घाँघलेबाजी है जो किसी तरहशे न्यायोचित नहीं ठहराई जा सकती, उसने आदेशमें ढील कर दी और नजरवन्दीके क्षेत्रको बढ़ाकर पूरी वम्बई प्रेसीडेंसी कर दिया।

उससे खुर्शेंदबहनको कोई राहत नहीं मिली। सरकारी कार्रवाईमें उनके प्रति
जो अविश्वास निहित था उसपर उन्हें एतराज था। मैने यहाँ जो पत्र-ध्यवहार दिया है
उससे यह देखा जा सकता है कि वे सीमा प्रान्त न जाकर अधिकारियोंकी बात यथासम्मव मानने को तैयार थीं। लेकिन बम्बई प्रेसीडेंसी तक अपने-आपको सीमित रखने का
विचार उनके लिए असद्य था। वे वर्षा जाकर मुझसे सलाह-मशिवरा क्यों नहीं कर
सकती अथवा कमला नेहरू अस्पतालके निरीक्षणके लिए — जिसकी कि वे अभी हाल
तक एक सिक्षय न्यासी और मन्त्री थी — इलाहाबाद क्यों नहीं जा सबती अथवा
कमरातके किसी अन्य मागकी — जहाँ उनके अनेक मित्र ई और उहीं देशमें चल रहे

१. देखिए "पत्र: देवदास गांधीको ", १३-८-१९४१।

बहुत- उरचनात्मक कार्यों में उनकी सेवा बहुत मूल्यवान हो सकती है — यात्रा क्यों नहीं कर सकती, इसका कोई भी तो कारण दिखाई नहीं देता। इस तरह उनके साथ जो विचित्र व्यवहार किया जा रहा था उससे तंग आकर आखिर उन्होंने ३१ जुलाई, १९४१ को बम्बईके पुलिस कमिश्नरको नोटिस दिया कि यदि उन्हें स्वतन्त्र रहने दिया गया तो उनका इरादा पहली अगस्तको वर्षा जाने का है। तब पहली अगस्तकी सुवह, बिना किसी मुकदमेके, मैं तो कहूँगा कि उनका अपहरण करके, उन्हें यरवडा जेल पहुँचा दिया गया।

सरकारकी इस कार्रवाई पर में हैरान हूँ और यह कार्रवाई खुद वाइसरायकी परिषद्के तथाकथित विस्तार आदिकी बड़ी सटीक और महत्त्वपूर्ण आलोचना है। लोगोंको समझ लेना चाहिए कि खुर्शेदवहनके कार्यका युद्धके विरोधसे कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन बहुत कम लोगोंको यह मालूम है कि बहुत सारे व्यक्तियोंको उनपर कोई मुकदमा चलाये विना गिरफ्तार कर लिया गया है और हिरासतमें रखा गया है, हालाँकि, जहाँतक मुझे मालूम है, उनके विरुद्ध कांग्रेसके अभियानके अन्तर्गत अथवा उससे बाहर रहते हुए युद्धका विरोध करने का कोई आरोप नहीं है। उन्हें जिन कारणोंसे हिरासतमें रखा जा रहा है उनके वारेमें न तो वे लोग स्वयं कुछ जानते हैं और न जनताको ही कोई जानकारी है। क्या खुर्श्वेदबहनका मामला इस वातका सुचक है कि इस तरहके अन्य मामलोंने सरकारने क्या किया है?

#### [अंग्रेजीसे]

कांग्रेस बुलेटिन, सं० ६, १९४१, फाइल सं० ३/४२/४१- गृह विमाग, पॉलि० (१); सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार। बॉम्बे कॉनिकल, ६-८-१९४१ मी

## ३३०. वक्तव्यः समाचारपत्रोंको

वर्षागंज ४ अगस्त, १९४१

मैंने एक भेंटकी प्रेस रिपोर्ट पढ़ी है, जिसके वारेमें कहा गया है कि यह भेंट मैंने एक अमेरिकी पित्रका 'लुक' को दी थी। यह विलक्षुल मनगढ़न्त है। इससे पहले मैं इस पित्रकाके नामतक से परिचित नहीं था। मेरा रुख वहीं है जो मैं कई बार बता चुका हूँ। कांग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रतांस कम किसी भी चीजसे सन्तुष्ट नहीं होगी।

[अंग्रेजीसे] बॉम्बे ऋॉनिकल, ५-८-१९४१

## ३३१ पत्र: अमृतकौरको

[४ अगस्त, १९४१]

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। इसके साथ तुम्हारे लिए एक पत्र है। तुम्हें इस लड़की की याद होगी।

फिलहाल तुम्हें कुछ भी करने की जरूरत नहीं है।

यदि जमनालाल इस महीने के मध्यमें वहाँसे रवाना हो जाते है तब तो तुम्हारे पास कोई काम नहीं रह जायेगा!

हाँ, तुम्हें सामान बाँघने और सामान्य सुगढ़ताके लिए अञ्चल दर्जेका प्रमाण-पत्र दिया जा सकता है। लेकिन तुम्हें शारीरिक दृष्टिसे सामान्य रूपसे स्वस्य होने का प्रमाणपत्र प्राप्त करना होगा। अभी तो परिवारके लोग तुम्हें इतनी नाजुक समझते हैं कि तुम्हारे साथ चाहे जैसा व्यवहार नहीं किया जा सकता।

शम्मीसे पूछना कि मिक्खियोंसे कैसे निपटा जाये। इस समय तो वे एक वला बनी हुई है। यदि वर्षा लम्बे अरसे तक न हुई तो वे हमें सा जायेंगी। मैं चाहूँगा कि जबतक तुम कोई विशेष उपाय न ढूँढ़ छो, जो अचूक हो, तबतक मिक्खयोके खिलाफ लड़ाईमें हिस्सा न लो।

सप्रेम.

वापू

#### [पुनश्च:]

वीरमा व करिआप्पा कर्नाटक चले गये है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५२ से मी

१. डाककी मुहरपर से

२. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", ए० १९१-९२ भी।

#### ३३२. पत्र: ना० र० मलकानीको

४ अगस्त, १९४१

प्रिय मलकानी,

तुमने मुझे लम्बी प्रतीक्षाके बाद पत्र भेजा है, लेकिन मैं विलम्बका कारण समझता है।

मैं देखता हूँ कि तुम्हें ग्रामीणोंके साथ सम्बन्द स्थापित करने में बहुत ज्यादा कठिनाई हो रही है। लेकिन यदि तुम्हारे पास सही ढंगके कार्यकर्त्ता हैं और यदि जनमें सच्ची लगन है तो तुम्हें सफलता अवस्य मिलेगी।

क्या तुम अपने औजार स्वयं वनाते हो? इसके लिए तुम्हें सावरमती अथवा नालवाड़ी पर निर्भर नहीं करना चाहिए। यदि हम दूरस्थ डिपो पर निर्भर रहेंगे तो हम अवश्य विफल होंगे। सफलताके लिए जितना ज्यादा हो सके उतना ज्यादा विकेन्द्रोकरणका होना आवश्यक है। ठीक इन्हीं कारणोंसे मैं चाहूँगा कि तुम खहर के स्थानीय उत्पादनपर अधिकाधिक निर्भर करो।

न्या मैने तुमसे कभी क्वेटा जाने और वलूनिस्तान कांग्रेसको रचनात्मक कार्यके वारेमें सलाह देने के लिए कहा था? मौलवी अव्दुस्समद उसके अध्यक्ष अथवा मन्त्री हैं। मैने उन्हें वचन दिया था कि मै तुम्हें वहां जाने और कुछ दिन लगाने के लिए कहूँगा। मेरा खयाल है कि मैने तुम्हें जल्दीमें लिखा इस आशयका एक पत्र मेजा था। लेकिन चूँकि तुमने उसका कोई जिक्र नहीं किया है, इसलिए पता नहीं उसका क्या हुआ।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९४०) से

# ३३३. पुर्जा: मीराबहनको

४ अगस्त, १९४१

इससे निम्नलिखित उद्धरण याद आता है: "उसके शत्रुकोंको हतबुद्धि कर, उनकी कुटिल चालोंको व्यर्थं कर"।

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ६४८७) से; सीजन्य: मीरावहन। जी॰ एन॰ ९८८२ से भी

#### ३३४. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको

वर्वागंज ५ अगस्त, १९४१

गुजरात जेल (पंजाब) से ४८ व्यक्तियोंने जो पत्र मुझे लिखा बताते है उसका सारांश मैंने समाचारपत्रोंमें पढ़ा है। सन्देशमें जो प्रश्न पूछा गया है वह यह है: "क्या कांग्रेसके किसी सदस्यके लिए गम्भीर और उत्तेजक स्थितिमें एक हिंसक डाकूका हिंसक साधनोंसे मुकाबला करना, और फिर भी कांग्रेसमें बने रहना सम्भव है?"

बेशक, यह सम्भव है, यहाँतक कि उन लोगोंका भी कांग्रेसमें वने रहना सम्भव है जो जान-बूझकर कांग्रेसका हर नियम भंग करते हैं। लेकिन यदि मुझसे कोई पूछे कि क्या ऐसे लोगोंको कांग्रेसमें रहना चाहिए, तो मैं पूरे जोरके साथ जवाब दूंगा—'नहीं'। यह तो हुआ सार्वजिनक आचरणके सम्बन्धमें। व्यवितगत आचरणके लिए कांग्रेसमें किसी नियमका विधान नहीं किया गया है। कांग्रेस ऐसे किसी भी व्यक्तिके आचरणके सम्बन्धमें अपना निर्णय नहीं देगी, और उसे देना भी नहीं चाहिए, जो अपनी सम्पत्तिपर हाथ डालनेवाले लुटेरे अथवा अपनी लड़की का शील भंग करनेवाले व्यक्तिका ताकतसे मुकावला करता है।

परन्तु, पूनाके कांग्रेस अधिवेशनमें जो प्रस्ताव पास किया गया था उसमें स्पष्ट रूपसे कहा गया है कि कांग्रेसने आत्मरसाके उद्देश्यसे जिन स्वयंसेवक संस्थावोंका गठन किया है अथवा जिनसे कांग्रेसी लोग सम्बद्ध है उन्हें अहिंसाका पालन करना होगा। लेकिन जो लोग इस सिद्धान्तको भंग करते हैं अथवा यह कहते हैं कि कांग्रेसियोंको ऐसी स्थितियोंमें हिंसाका प्रयोग करना चाहिए उन लोगोको कांग्रेससे निकाल देना चाहिए या नहीं, यह एक भिन्न प्रदन है।

इस मामलें में मेरा निजी द्िष्टकोण स्पष्ट है। जरूरी नहीं कि मैं ऐसे लोगोंको कांग्रेससे निकाल दूँगा। दिल्ली कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको लिखे मेरे पत्रको गलत रूपसे पेश किया गया है या उसे समझने में गलती हुई है। उसमें मैंने जान-वृक्षकर कांग्रेससे निकालने के विषद्ध सलाह दी है। मेरी हमेशा यह मान्यता रही है कि बिरले ही मामलोंमें ऐसी कार्यवाई की जानी चाहिए।

में जानता हूँ कि मैंने श्री मुन्शोको जो सलाह दी है उसका अर्थ कुछ लोगों ने कांग्रेससे निकाला जाना लगाया है। श्री मुन्शोने जो कदम उठाया है वह मेरी दृष्टिमें एक महान आत्माके योग्य है। उन्होंने खुल्लमखुल्ला कोई कार्रवाई नहीं की थी। उनके मनमें सच्चा घर्म-संकोच था। उन्होंने मुझसे सलाह माँगी और मैंने उनके तथा कांग्रेसके हितमें उन्हें कांग्रेससे अलग हो जाने की सलाह दी। इसमें प्रच्छन्न रूपसे अथवा अप्रत्यक्ष ढंगसे भी दवाव डालने-जैसी कोई बात नहीं थी। कांग्रेससे उनका अलग होना सवंथा स्वैच्छिक था और ऐसा उन्होंने विशुद्ध नैतिक मान्यताओंके कारण किया। मैंने उन्हें जो सलाह दी उसपर पदचात्ताप करने-जैसी कोई वात नहीं है और ऐसी सलाह मैं ऐसे मामलोंमें निस्संकोच देता रहेंगा।

सन्देशके शेप भागपर विचार करने की कोई जरूरत नहीं है। [अंग्रेजीसे]

वॉन्बे कॉनिकल, ६-८-१९४१। अ० भा० कां० कमेटी फाइल सं० १३६३, १९४१ भी; सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

# ३३५. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्षा ५ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। मैने तुम्हें तुरन्त तार भेज दिया था। भेरा दृढ़ विश्वास है कि उन्हें कुछ समयतक विलकुल चुप रहना चाहिए। इस संयमसे उनकी वाणी और सुवरेगी। तुम सब कारण समझ लोगी।

- १. ४ जुलाई, १९४१ के हिन्दू में उक्त पत्र इस प्रकार उद्धृत किया गया था: "यदि कांग्रेसका कोई भी चवन्ती सदस्य प्रत्यक्ष व्यथना परोक्ष रूपसे शुद्ध-प्रयासमें भाग के तो उसे कांग्रेसकी सदस्यतासे हृदा हेना चाहिए।" देखिए "पत्र: र्धुनन्दन शरणको", पु० १८० भी।
  - २. देखिए " वन्तव्य : समाचारपत्रींको ", पृ० १२५-२७।
  - ३. जमनाकाक बजाजको

उन्हें हरिद्वार न जान देकर भी तुमने ठीक ही किया। जो-कुछ भी हो, उन्हें हर हालतमें बरावर वही रहना चाहिए। और तुम पूरी सचाईके साथ कह सकती हो कि उन्हें वहांकी-जैसी शान्ति, सुविधा, मोजनकी अच्छी और साफ व्यवस्या मी अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो सकती। ईश्वर करें कि इन सब सुविधाओं परिणामस्वरूप उनके तन और मनको स्थायो लाम हो।

सप्रेम,

वापू

#### [पुनश्चः]

शैलेनके बारेमें तुम्हारा कहना विलकुल सही है।

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०४४) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन॰ ७३५३ से भी

# ३३६. पत्र: शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

५ अगस्त, १९४१

प्रिय शैलेन,

मैने संलग्न पत्र पढ़ लिया है। राजकुमारीने जो आलोचना की है वह विल-कुल सही है। उसने जो गलतियाँ गिनाई है वे अक्षम्य है। यदि तुमने गम्भीरता-पूर्वक सुवारकी कोशिश नहीं की तो तुम कभी तरक्की नहीं कर सकोगे। तुम्हारी गलतियाँ पूरी तरह लापरवाहीके कारण है।

> तुम्हारा, वापू

ं अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३४३) से । सीजन्य : अमृतलाल चटर्जी

# ३३७. पत्र: शार्दूलसिंह कवीश्वरको

५ अगस्त, १९४१

प्रिय कवी स्वर,

तुम्हारा पत्र मिला। भेरी शंकाएँ तो कायम हैं। परन्तु मै हर समय तैयार श्रीर तत्पर हूँ, वशर्ते कि कोई सामान्य आधार हो।

हृदयसे तुम्हारा, , मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सीजन्य: प्यारेलाल

#### ३३८. पत्र: वालजी गो० देसाईको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए ५ अगस्त, १९४१

चि० वालजी,

मेरे हामी भर लेने के बाद तुम्हारे निर्णय करने की बात कहाँ रह जाती है? लेकिन तुम जो निर्णय चाहते हो वह निर्णय देने में तो मेरी जान निकल जायेगी। मैं तो सारा मामला एकसाथ तय करना चाहता हूँ। दुर्गा वायु-परिवर्तनके लिए इस समय बलसाड़में अपने बहनोईके यहाँ है।

बापूके आशीर्वाद

प्रोफेसर वा॰ गो॰ देसाई देवगिरि पूना-४

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४९६) से। सौजन्य: बालजी गो० देसाई

शार्द्ं लिसिंह कवीस्वरने मुहम्मद बली जिल्लाको लिखे अपने पत्रको एक नकल गांधीली को मेली
 थी, जिसमें उन्होंने कांग्रेस और मुस्किम लीगकी बाक्चीतके लिए कोई विधि मुझाई थी।

'२, देखिए "पत्र: बालजी गी० देसाईको ", पू० ७५ और २०८।

## ३३९. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए ६ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

जिस वातके लिए तुम मेरी आलोचना करती हो वही काम तुमने किया है — पत्रके खाली हिस्सेपर लिख दिया है। तुलसीदासने ठीक ही कहा है:

समरय कहुँ नहिं दोषु गुसाई।

हरिजन कर्त्याण-कार्यमें तुमने जो प्रगति की है उससे उल्लिसित होकर तुम चाहो तो ऐसा कर सकती हो।

तुम्हारी रक्षा [राखी] मिल गई है और कल उसका यथावत् उपयोग किया जायेगा। मदालसा बड़े पैमाने पर राखियाँ बाँटने की खूब तैयारियाँ कर रही है। वह राखीके लिए खास घागे और फूल बना रही है। रामकृष्ण ९ तारीखको रिहा होगा और जितनी जल्दी हो सके सत्याग्रह करके वापस जेल पहुँच जायेगा।

कनुने पत्र द्वारा सूचित किया है कि उसकी मौका ऑपरेशन सफल रहा। वरसात अभीतक शुरू नहीं हुई। इससे झुँझलाहट होती है। किसान बहुत चिन्तित हैं। एमरीके बारेमें तुम्हारी बात विलकुल सच है। क्या तेंदुआ अपनी चित्तियाँ बदल सकता है?

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०४५) से; सौजन्यः अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३५४ से भी

१. रामचरितमानस, बाल्काण्ड, १/६८/८

२. यह शब्द देवनागरीमें है।

३. देखिए पृ० २२२ मी।

## ३४०. पत्र: विजया म० पंचोलीको

६ अगस्त, १९४१

चि॰ विजया,

तू तो बहुत व्यस्त जान पड़ती है। नीरस पत्र लिखती है और वह भी देर-देर से। क्या बात है? राखी कल वाँघूँगा। तुम दोनोंकी तवीयत ठीक होगी। नाना-भाई कैसे हैं? शाला कैसी चल रही है? वा मजेमें है। मेरी तवीयत ठीक है। कुसुम अभी यही है। प्रभावती १५ को आयेगी। अमतुल सलामने सब दाँत निकलवा दिये हैं। तबसे उसका दमा गायव हो गया है। हार्लांक बहुत-से नये घर वन गये हैं तिसपर भी आश्रम पूरा भरा हुआ है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१३८)से। सी० ढब्ल्यू० ४६३०से भी; सौजन्य: विजयावहन म० पंचोली

## ३४१. पत्र: विट्ठलदास जेराजाणीको

६ अगस्त, १९४१

भाई विट्ठलदास,

माई जाजूजीने तुम्हारा बजट मुझे देखने के लिए भेजा था। मैने तो विना कुछ सोचे-विचारे सुझाव दिया था। चरला संघके काममें तुम भी उतने ही डूवे हुए हो, जितने जाजूजी और मैं। अतः हम अपने-अपने दृष्टिकोण तुम्हारे सामने रखें और फिर तुम जो सुझाव दो उनसे सहमत हो जायें। सामान्य नियम तो यही है न कि ज्यों-ज्यों विक्री बढ़तो है खर्च कम होता जाता है? अर्थात् या तो छागत कम हो जाती है अथवा लाम बढ़ जाता है? अब चूँकि हमें लाम नही चाहिए, इसिलए हमें कीमतें कम कर देनी चाहिए। लेकिन मैने सोचा था कि तुम दुकानों की संख्या बढ़ा रहे हो इसिलिए शुक्में तो शायद खर्च बढ़ेगा, लेकिन अन्तमें तो कम हो ही जायेगा। अगर मेरा यह अनुमान ठीक हो तो तुम्हें मुझे बताना चाहिए कि खर्चमें कमी कबसे शुरू होने की सम्मावना है।

बापूके आसीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९८००) से

१. श्रीकृष्णदास जानू

#### ३४२. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

६ अगस्त, १९४१

माई नटवरलाल,

तुम्हारा पत्र और उसके सायका साहित्य मिल गया है। इसका अध्ययन करने के बाद यदि कुछ लिखने-पूछने को हुआ तो लिख्ना, पूर्छ्गा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२२)से

# ३४३. शोक-सन्देश: रथीन्द्रनाथ ठाकुरको'

वर्घा ७ अगस्त, १९४१

तुम्हारी क्षति मेरी भी क्षति है, बल्कि राष्ट्रकी या कहें संसारकी क्षति है।
गुरुदेव एक संस्था बन गये थे। हम अपने आचरणसे उनके योग्य बनें। मै तुम
सब लोगोंके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूँ।

[अंग्रेजीसे] बॉम्बे फॉनिकल, ८-८-१९४१

#### ३४४. श्रद्धांजलि: रवीन्द्रनाथ ठाकुरको

७ अगस्त, १९४१

रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी मृत्युसे हमने न केवल अपने युगका महानतम किव खोया है, वित्क एक उत्कट राष्ट्रवादी भी खोया है, जो राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ मान-बतावादी भी था। सार्वजिनक जीवनमें शायद ही कोई ऐसी प्रवृत्ति होगी जिसपर उन्होंने अपने सञ्चक्त व्यक्तित्वकी छाप न छोड़ी हो। शान्तिनिकेतन और श्रीनिकेतन के रूपमें वे सारे राष्ट्रके लिए, वित्क सारे विश्वके लिए, एक विरासत छोड़ गये

१. ७ अगस्तको रबीन्द्रनाथ ठाकुरके निधनपर

हैं। भगवान उनकी आत्माको शान्ति प्रदान करे, और जिन लोगोंको वे शान्ति-निकेतनका भार सौंप गये हैं वे उसके अनुरूप उतरें।

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं; सौजन्य: प्यारेलाल। बॉम्बे कॉनिकल, ८-८-१९४१ से भी

#### ३४५. पत्र: के० ए० चिदम्बरमको'

सेवाग्राम ७ व्यास्त, १९४१

आपके द्वारा रेखांकित अंश विलकुल झूठा है। लॉर्ड अविनके वारेमें कही गई बात भी ऐसी हो है। हमारी मुलाकात विशुद्ध राजनीतिक थी।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिकृतिसे: बॉम्बे फॉनिकल, २८-९-१९४१

१. यह पत्र उस पृष्ठके मध्यमें प्रतिकृति-रूपमें छपा था जिसमें के० प० चिदम्बरमका यह छेख था: "ऑडवेन प्रंट पेन न्यून! दुढे, ऐन विकोर, द महारमा प्रोनाहब्स मटीरियल कॉर स्कृप्स — पढ होन्सेन!"

२. अपने छेखमें के० प० चिदम्बरमने पिक्चर पोस्ट में प्रकाशित "कुछ कथित गांधी-अर्वित उपारवानों" का उल्लेख करते हुए उनमें से एकको उद्धृत मी किया था, जो इस प्रकार था: "वे (छाँड अर्विन) भारत गये और वहाँ पाँच वर्ष रहे। वहाँ वे मोहनदास क० गांधीसे मिछे। धार्मिक उरसाहकी दृष्टिते वे छस श्लीणकाप मारतीय संतसे भी बद्द-बदकर थे। इसी धार्मिक उरसाहके कारण छन्दोंने उनको मात दे दी। एक बार एक छम्बी मुखाकातके बाद, जिसमें महारमाजी इसी तरह मात खा गये थे, बाहर निकछने पर उन्होंने [अर्थात् गांधीजीने] कहा: 'मळा कोई ईसा मसीहसे मी तकें कर सकता है।'"

३. के० ए० चिदस्वरसंके छेखमें उसी खुलसे यह भी उद्भूत किया गया था: "गांधीजी बीच-बीचमें जो भूख-इडताल करते रहते हैं, उन्होंमें से एकके दौरान लॉर्ड हैं लिंफीक्स [जो पहले लॉर्ड अर्विन ये] ने बड़ी ही मार्मिक बात कही थी, 'गांधी अभी उस सावामें बोल रहे हैं जिसे मारतीय समझते हैं। यदि में भी नई दिल्लीकी सरकारी इमारतोंकी डबोड़ीमें कैठ जाजें और जबतक मारतीय सिवनय अवशा आन्दोलन सही रास्ते पर न आ जाये, तबतक कुळ न खाजें तो कुछ ही दिनोंमें यह इक्षिट खरम हो जाये। अलवता यह जरूर है कि ये चन्द दिन बीतने के पहले ही उन्दनके मेरे लिवरल, कुँजरविद्यि और देवर दलेंकि सहयोगी मुझे जिटेन बापस बुला होंगे और वहाँ पहुँचते ही मुझे पागळखाने का रास्ता दिखावेंगे।"

## ३४६. पत्र: अमृतकौरको

७ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

लखनकसे मिला एक पत्र इसके साथ है।

शैलेनकी गलतियाँ यदि तुम पहले ही सुवार नहीं चुकी हो तो अब सुधारने की कोई जरूरत नहीं। मैंने उसकी भारी लापरवाहीके सम्बन्धमें उसे एक कड़ा पत्र लिखा है।

मेरे पास हिन्दू-कानून सिमितिकी रिपोर्ट नहीं है। लेकिन इसपर 'इंडियन सोशल रिफॉर्मर' में प्रकाशित दो लेख और कुछ अन्य समीक्षाएँ में पढ गया हूँ। मुझे यह एक अच्छो रिपोर्ट जान पड़ी। मैं नहीं जानता कि इस सारी कोशियामें कुछ बननेवाला है या नहीं। (मैं यह पत्र व्यवधानोंके बीच लिख रहा हूँ।)

तुम्हारा पत्र चिन्तामें डालनेवाला है। वायु-परिवर्तनसे तुम्हें उतना फायदा नहीं हुआ है जितनी मुझे आशा थी। इसीलिए तुम्हे सन्देह है कि तुम इस महीनेके अन्ततक भी वापस आ सकोगी या नहीं। मैं आशा करता हूँ कि तुम्हारा सन्देह निराधार है।

कनुकी जगह, जहाँतक कार्यालयके कार्यका प्रश्न है, लक्ष्मीदासने ले ली है और मालिशका काम घीरेन करता है।

अमतुल सलामकी तवीयत अच्छी है और वह ठीक तरहसे खाती है। हमारे बीच गर्मागर्मी तो होती है, लेकिन यह एक आम वात है।

सप्रेम.

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४६) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५५ से भी

१, देखिए पृ० २३७।

२. इस समिविकी नियुक्ति जनवरी, १९४१ में बी॰ प्ल॰ राक्की अध्यक्षतामें इस उद्देश्यसे की गई थी कि "(१९३८ के अधिनियम ११ द्वारा संशोधित) १९३७ के हिन्दू स्त्रियोंक सम्पत्ति-अधिकार अधिनियमकी, विशेष रूपसे पाँच गैर-सरकारी विधेषकींक सन्दर्भमें, जाँच की जाये।" २६ जुलारको नई दिल्लीसे प्रकाशित इसकी रिपोर्टमें "युत्रीको युत्र-वधूके बरावर हिस्सा देने की व्यवस्था अविल्यन करने "की सिकारिश की गई थी। इसमें "कुषि-भूमिके सम्बन्धमें भी विध्वाओं को सम्पत्तिक अधिकार दिलाने के लिए पूर्व-प्रभावी कानून बनाने का" सुझाव दिया गया था। समिविने यह सिकारिश की थी कि "कमशः हिन्दू कानूनोंकी एक पूरी सहिता तैवार की जाये" और इसकी शुरुआत उत्तराधिकार कानून ही। हिन्दू कानूनोंकी सहिताबद करने का काम समिविने ४ अगस्त, १९४१ को पूरा किया था।

#### ३४७. पत्र: कोतवालको

७ अगस्त, १९४१

भाई कोतवाल,

तुम्हारा पत्र मिला। अगर तुम अधीर हो रहे हो, तो जरूर [जेल] जाखो। वैसे मेरी वर्त्तमान मनोवृत्ति अवस्य यह है कि जो अहिंसाका रहस्य समझते हैं, उन्हें रचनात्मक कार्योमें जुटे रहना चाहिए। अन्तमें तो सबको जाने का मौका मिलेगा। 'अजमेर, नहीं'; यह तो जरूर मूलसे लिखा गया है।' यदि जाना ही हो तो अजमेर ही जाना और वहाँकी समितिकी अनुमति लेना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३६०१)से

## ३४८. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए
े अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा हिन्दी पत्र मिला। आशा है कि शम्मीके नुस्केसे तुम पूरी तरह स्वस्थ हो जाओगी। मुझे खुशी है कि जमनालालके स्वास्थ्यमें वीरे-वीरे सब तरहसे सुद्यार हो रहा है।

महादेव कव वापस आयेगा, यह कहा नहीं जा सकता। वम्बईका काम खत्म करके उसे अहमदावाद जाना है।

सरदार यरवडामें अस्वस्थ चल रहे हैं। यह खेदकी बात है कि हम लोग जेलमें अच्छा स्वास्थ्य नहीं रख पाते।

कनुको आज वम्बई पहुँच जाना है। उसकी माताका आँपरेशन हुआ था, जो सफल रहा है।

देखिए "पत्र: हरिमाक वपाध्यायको", प० २१८।

लो, अव मुलाकाती आ रहे हैं। सप्रेम,

वापू

मूल वंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०४७) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन• ७३५६ से भी

#### ३४९. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

८ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारी रिपोर्ट पढ़ गया हूँ। देखता हूँ, तुम्हें खासी मेहनत करनी पड़ी है। जेबसे खर्च भी काफी किया लगता है। कागज और टाइपिंगपर ही कुछ कम खर्च नहीं हुआ होगा। यह खर्च तुम जरूर बसूल करना और अगर फीस लेना उचित जान पड़े तो वह भी लेना।

अगर रिपोर्टकी नकलें ज्यादा कराई हों तो एक माई गोपालनको और एक माई चन्द्रशंकरको भेजना। अगर तुम्हारे पास नकल तैयार न हो तो मैं यहाँ करा लूँगा। इसके लिए मेरे पास खूब सुविधा है।

तुमने कष्ट उठाया, इसके लिए तुम्हारा आभारी हूँ।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२३) से

## ३५०. पत्र: प्रभावतीको

८ अगस्त, १९४१

चि॰ प्रभा,

तेरा पत्र मिला। राजेन्द्रवायूका समाचार दुःखद है। अपना काम निपटाकर ही आना। राजेन्द्रवायूके लिए अगर रुकना पड़े तो रुक जाना। यहाँ आज ही बारिश हुई और सबकी चिन्ता मिटी। कंचनवहन बीमार पड़ गई है। बाकी सब कुशल है।

वापूके आशीर्वाद

ं गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५६२)से

#### ३५१. पत्र: नारणदास गांधीको

८ अगस्त, १९४१

चि॰ नारणदास,

तुम्हारे पत्र मिले। तुमने अन्तिम निर्णय कर लिया, यह अच्छा किया। नाना-भाई, बड़े भले और उदार वृक्तिके व्यक्ति हैं। कनैयोके वारेमें समझा। जमनाकी तबीयत ठीक होगी। उसकी आँख साफ बच गई होगी।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८५९० से भी; सीजन्य: नारणवास गांधी

## ३५२. पत्र : विद्याबहनको

८ अगस्त, १९४१

चि॰ विद्या,

राखी मिली। वांघी। और कातो, अच्छा कातो, मजबूत कातो, वारीक कातो। धुनकी चलाजो। चर्खा शास्त्रका अभ्यास करो।

वापुके आशीर्वाद

श्री विद्यावहन शान्ति निवास सियालकोट सिटी पंजाव

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८९४५)से

## ३५३. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए [९ अगस्त, १९४१]

चि॰ अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला। हाँ, तुम मिल्खयोंको कुटियामें आने नही देना। शम्मीने जो सुझाव दिये हैं उनके लिए उसको धन्यवाद। र

देखता हूँ कि तुमने मुझे एक पासंल भेजा है। जाजूजी अभी-अभी आये हैं। इसके साथ दो पत्र है। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०४८)से; सीजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन॰ ७३४७ से मी

## ३५४. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

९ अगस्त, १९४१

प्रिय अमृतलाल,

तुम्हें कष्ट उठाने पड़ रहे हैं, उसका मुझे दुःख है। आशा है कि तुम्हारी बेटी अब खतरेसे बाहर होगी।

जहाँतक आमाका सवाल है, उसे तवतक तुम्हारे पास रहना चाहिए जयतक तुम्हें उसकी जरूरत है। उसे भेज सकने की स्थिति होते ही तुम सतीयवाव या अन्नदासे कोई ऐसा व्यक्ति ढूँढ़ने को कहना जो उसे पहुँचा जाये। वेशक, उसका किराया में दूंगा।

१. डाबकी मुहरपर से

२. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पृ० २३३ मी।

३. बमृतकाक चटर्जीकी चीसरी पुत्री अणिमाको टाइफाइट इ गया था।

वीणा एक कठिन समस्या है। चित्तरंजन सेवा सदन नयों नही? सप्रेम.

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०३२०)से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

## ३५५. पत्र: अब्दुल रहमानको

९ अगस्त, १९४१

प्रिय अ० र०,

बहुत-बहुत घन्यवाद ! तुमने निश्चय ही स्पष्ट कर दिया है कि एस० का 'विल यू?' से क्या अभिप्राय है। अब मुझे बताओं कि क्या ऐसी घोषणा करने का समय आ गया है, और यह घोषणा कौन करें और इसमें क्या कहा जाये। मैं मैंने यह प्रश्न मदद पाने के खयालसे पूछा है, क्योंकि उक्त प्रश्नोंके बारेमें मेरे सामने कुछ स्पष्ट नहीं है।

हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य: प्यारेलाल

## ३५६. पत्र: अन्तदाशंकर चौधरीको

सेवाग्राम ९ अगस्त, १९४१

प्रिय अन्नदा,

आपका पत्र मिला। परिवर्तन इसिलए करना पड़ा कि वंगाल शाखाके विरुद्ध कुछ आरोप थे, जिनका स्पष्टीकरण आवश्यक था। खादी प्रतिष्ठानका मामला विलक्षुल कलग ढंगका है। उस समय प्रश्न यह था कि क्या उन्होंने दूसरोंकी अपेका सस्ते दामोंपर खादी वेची। अगर उन्होंने ऐसा किया तो इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। वंगाल शाखा पर तो यह आरोप है कि उसने खादीके दामोंमें अनुचित

#### १. कल्कताका

२. अन्दुछ रहमानने अपने ६ अगस्तके पत्रमें "समी सदाशयी छोगीके विचारार्थं एक 'एक पक्षीय वक्तव्य' स्वीकार किये जाने का" ग्रुसाव दिया था। वृद्धि करके उसे दूसरोंकी अपेक्षा महुँगे भावपर वेचा। यह काफी गम्भीर वात है। वास्तवमें क्या हुआ, इसके वारेमें मैं स्वयं भी आक्वस्त होना चाहता हूँ। इन दोनों मामलोंमें अन्तर आप देख रहे हैं न? इसलिए जांचका विषय इस प्रकार होना चाहिए:

'क्या १९३७ और १९३९ के वीच वंगाल शाखाने खादीके दामोंमें अनुचित वृद्धि की और उसे मुनासिवसे कही अधिक दामोंपर वेचा? इन सालोंमें कुल लाम कितना होना चाहिए था और कितना हुआ ? ऊँची कीमतोंका यदि कोई कारण है तो वह कारण, और लामका उपयोग किस प्रकार किया गया, यह भी वताया जाना चाहिए।'

आपका,

अंग्रेजीकी नकलंसे: प्यारेलाल पेपसं। सीजन्य: प्यारेलाल

# ३५७. भेंट: 'हिन्दू 'के प्रतिनिधिको

[१० अगस्त, १९४१ या उसके पूर्व]

मुझे हैरानी होती है कि ऐसी वार्ते समाचारपत्रोंमें प्रकाशित कैसे होती है, जब कि उनका कोई आधार ही नहीं है। मुझे मौलाना साहबकी ओरसे अथवा किसी अन्य कैदीकी ओरसे कोई पत्र नहीं मिला है; और न इस आशयके निवेदनोंको लेकर कोई सन्देशवाहक ही मेरे पास आया है।

यह पूछे जाने पर कि जेलोंमें पड़े हुए जो कांग्रेसी यह महसूस करते हैं कि देश और संसारकी बदली हुई स्थितिको घ्यानमें रखते हुए कांग्रेसकी नीतिपर पुर्नीदचार किया जाना चाहिए उनको स्थिति क्या है, गांधीजी ने कहा:

यदि उनका दृष्टिकोण बदल गया है और वे अपनी आस्था बदलना चाहते है तो वे निश्चय ही किसी भी समय वैसा कर सकते हैं। उनके ऐसा कहने-भरकी देर है, सरकार सहर्ष उनकी बात मानेगी।

मेरे यह पूछने पर कि क्या अभी हालमें देशमें अथवा देशसे बाहर ऐसी कोई बात नहीं हुई जिसके कारण सत्याग्रह आन्दोलन बन्द कर देना चाहिए, गांधीजी ने कहा:

जहाँतक मेरा सम्बन्ध है; ऐसी कोई वात नहीं हुई है।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, १२-८-१९४१

१. यह मेंट दिलांक "नागपुर, १० अगस्त" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।

२. पत्र-प्रतिनिधिने महारमा गांधीका ध्यान इस रिपोर्टकी कोर खींचा था कि "नैनी जेलके ४० कैदियोंने, जिनमें कांग्रेस अध्यक्ष मौजाना अयुक्त कलाम आजाद भी शामिल हैं, उन्हें निवेदन भेजे हैं। इनमें उन्होंने गांधीजी से अनुरोध किया है कि वे बदली हुई अन्तर्राष्ट्रीय परिश्यितिको ध्यानमें रखते हुए कांग्रेसको नीतिमें परिवर्तन करें।"

## ३५८. पत्रः अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए १० अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र चिन्तित करनेवाला है। मला तुम्हें इतना सक्त सिरदर्द क्यों होता है? तुमने क्या किया था? तुम्हें अवक्य स्वस्थ और सवल होना चाहिए। सेव पहुँच गये हैं।

अभी भी वारिश हो रही है।

कविवर की मृत्युसे जो स्थान रिक्त हो गया है उसे कभी भरा नहीं जा सकता। उनमें साबृता और प्रतिभाका अनुठा संगम था।

मुझे खुशी है कि जमनालालके स्वास्थ्यमें वरावर सुवार हो रहा है। सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६३७)से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ६४८५ से भी

#### ३५९. पत्रः सिकन्दरको

१० अगस्त, १९४१

प्रिय सि०,

तुम्हारा उतावली-भरा पत्र मिला। जल्दीमें कोई कार्रवाई करने की जरूरत नहीं है। जल्दीका काम शैतानका। समय हमेशा सत्यका साथ देता है। तुम 'प्रैक्टिस' करो, इसमें कोई हर्ज नही है। लेकिन तुम्हें 'प्रैक्टिस' शान्तिमे करती चाहिए, बहुत भाग-दौड़ नही करनी है।

राजकुमारी इस महीनेके खत्म होने से पहले तो नहीं लौटेगी। और तवका भी पक्का नहीं। उसका आना उसके स्वास्थ्यपर निर्भर करेगा। उसका पता है . . . ।

तुम्हारा,

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सीजन्य: प्यारेलाल

' १. साधन-स्वमें यहाँ कुछ शब्द छूटे हुए हैं।

## ३६० पत्र: शान्तिकुमार न० मोरारजीको

१० अगस्त, १९४१

चि० शान्तिकुमार,

तुम ठीक सामग्री भेज रहे हो। वर्माके लोग भी आनेवाले हैं। सबसे मिल लेने के बाद ही मैं अपना मत प्रकट करूँ, यही ठीक लगता है। मुझे वर्मा समझौतेकी एक प्रति चाहिए।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीको फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७३५)से। सौजन्य: शान्तिकुमार न० मोरारजी

## ३६१. पत्र: सुशीला गांधीको

१० अगस्त, १९४१

चि॰ सुशीला,

तेरा पत्र मिला। मेरीबहन अभी मिलने नहीं आई। इस वार मैंने तुझे वरावर पत्र लिखे हैं, लेकिन डाक विभागकी लापरवाहीके वारेमें क्या किया जाये? मणिलाल तो आलसी है ही। लेकिन तेरा सत्संग भी अगर उसका आलस नहीं निकाल सका, तो वह किस कामका? या मणिलालके स्वभावमें आलस इतना समाया हुआ है कि सत्संग भी कुछ असर नहीं कर पाता?

किशोरलालभाई और गोमतीबहुन फिलहाल यहीं रहते हैं। महादेवभाई दौरे

पर हैं, इसलिए वे मेरी मदद कर रहे है।

बरसातकी यहाँ बहुत कमी थी, लेकिन अब वारिश हो रही है, इसलिए शायद

इस साल फसल अच्छी हो।

सीता तेरी मदद करती है, यह बात मुझे अच्छी लगी। अरुण भी रास्ते पर आ जायेगा।

१. एफ़ मेरी बार, जो उन दिनों दक्षिण व्यक्तिकार्में थीं। २ और ३. सुक्रीका गांधीकी पुत्री व पुत्र साथका पत्र ई॰ एम॰ पारेखको पहुँचा देना। उसका पता मेरे पास नही है। बाकी समाचार किशोरलालमाई देंगे। दोनोंको

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९२१)से

## ३६२. पत्र: शारदाबहन गो० चोखावालाको

१० अगस्त, १९४१

चि॰ बबुड़ी,

चोखावालां से कहना कि उसने विना सोचे-विचारे अपनी राय दी है। तेरा स्वास्थ्य तो जन्मसे ही खराब था। अगर तू सब-कुछ खाती-पीती रहती तो चोखावालां से शादी करने के लिए जिन्दा ही नहीं वचती। जो दूब, घी, फल और साग-माजी खाता है, वह कमजोर रह ही नहीं सकता। अपने आसपास नजर घुमाकर देखें, तो [गोवर्घनदास] देखेंगा कि जो वेशुमार लोग वीमार दिखाई देते हैं, वे सब तेल-मिर्च खानेवाले हैं। अस्पतालमें जाकर देखें तो उसे ऐसे ही लोगोंसे भरा पायेगा। इसलिए बचपनमें तो आनन्दको दूब, दही, फल, साग-भाजी और रोटीपर ही बढ़ने दे। बड़ा होने पर वह स्वयं अपनी रुचि बना लेगा। कूनेकी पुस्तक खरीदने का प्रयत्न कर रहा हूँ। यदि वह व्यक्ति नहीं आता, तो तेरे लिए कुछ करन को नहीं रह जाता।

दोनोंको

वापूके आशीर्वाद

· मूळ गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३५) से। सीजन्य: शारदावहन गो० चोखा-वाला

## ३६३. पत्र: अमृतकौरको

मेवाग्राम, वर्चा होते हुए ११ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने यह नहीं बताया कि तुम्हारा सिरददं दूर हो गया या नहीं और वह हुआ क्यों था। तुम्हारे जमनालालको एक सालतक बन्दी बनाये रखने में मुझे कोई एतराज नहीं, वशर्ते कि उस सारे समयमें तुम्हे भी उनके साथ न रहना पड़े। मैंने सुना है कि शिमलामें सबसे अच्छा मीसम सर्दीका होता है और सस्ता मो खूब होता है — किराया नाममात्र और सिन्जियां और फल कौड़ियोंके मोल बिकते हैं। वालजी एक वार सर्दीके मौसममें शिमला गये थे और उन्हें वहां रहने से फायदा भी हुआ था।

[तुम्हारे] लिए एक और काम है। किसीसे पता लगाओं कि दोमकोंसे छुट-कारा पाने के लिए क्या करना चाहिए? हमारे यहाँ तो उनका भारी प्रकोप है। अब तो उन्होंने मेरे स्नानघर पर भी हमला बोल दिया है और अगर उनके उत्पातको समय रहते नहीं रोका गया तो वे सारी जगह फैल जायेंगी।

कृषि-विमागके पास इसका अवश्य कोई इलाज होगा।

क्या मैंने तुम्हें यह नहीं बताया कि मालिशका काम धीरेन करता है और दफ्तरका काम लक्ष्मीदास करता है?

अमतुल सलामकी तबीयत विलकुल ठीक है। उसका वजन सात पीण्ड वढ़ गया और वह सारा दिन सिक्रय रहती है।

सप्रेम,

वापू

#### [पुनश्च : ]

क्या सेव तुम्हारे बागके हैं?

मूल अंग्रजी (सी० डब्ल्यू० ४०४९)से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३५८ से भी

# ३६४. पत्र: कन्हैयालाल मा० मुन्जीको

११ वगस्त, १९४१

भाई मुन्शी,

तुम्हारा पत्र मिला। पत्र स्पष्ट है। अव चन्द्रवदनको लिखना आसान होगा। इसका पत्र मिलने के पहले मुझे कुछ भी मालूम नही था। उसके पत्रके वाद तुम्हारा भाषण मैने 'सोशल वेलफोयर'में पढ़ा था।

तुम्हें जब आना हो चले आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ ७६६५)से। सौजन्य: कन्हैयालाल मा॰ मुन्शी

### ३६५. पत्रः मणिबहन पटेलको

११ अगस्त, १९४१

चि॰ मणि,

तेरा पत्र मिला था। किशोरलालभाईने तो उसका जवाव दे ही दिया है। भानुमतीको ऐसा क्योंकर हुआ ? डॉक्टर क्या कुछ भी नहीं कह सकते ? बच्चेका जीना कठिन है। अगर जिया, तो भी शायद दुवंलता रह ही जायेगी।

नया बापूके पास मेरे पत्र पहुँचे ? जल्दी पहुँचे, इसके लिए मैंने तो दोहरी

सावघानी वरती थी।

तरे परेशान होने का कोई भी तो कारण नहीं है। हर हालतमें जेल जाना धर्म थोड़े ही है। बाहर रहकर तू वापूका ही काम कर रही है। यदि, इस समय जेलमें जायेगी तो मनको झूठा सन्तोष देगी। जाने का समय आने पर तुझे एक झणके लिए भी नहीं रोकूँगा। फिलहाल तो जो गुजराती काम करना चाहें उन्हें तुझे काम देते रहना है।

मुझे पाँच पाँड सूखे अच्छे अंजीर भेजना।

वह व्याकरण मिल गया है।

महादेव आ गया होगा। अबतक कितना चन्दा हुआ ? यहाँ ठीक चल रहा है।

[गुजरातीसे]

बापूके आशीर्वाद

बापुना पत्रो - ४: मणिबहेन पटेलने, पृ० १३०

१. वरकममाई पटेल

## ३६६. पत्र: पुरुषोत्तम का० जेराजाणीको

सेवाग्राम ११ अगस्त, १९४१

माई काकुमाई,

खर्चके बारेमें तुम्हारा जवाब मिला। इससे ठीक-ठीक समझमें आता है। तुममें और विदुलदासमें मैं कोई भेद नहीं करता। यदि मैं तुम्हें लिखता हूँ तो इसमें वह भी शामिल होता है, और इसी तरह जब मैं उसे लिखता हूँ तो उसमें तुम भी आ जाते हो।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०८५१)से। सीजन्य: पुरुपोत्तम का॰ जेराजाणी

### ३६७. पत्र: ब्रह्मानन्दको

११ अगस्त, १९४१

भाई ब्रह्मानंदजी,

आप जिसमें विरोध पाते हैं सो विरोध नींह है। रोगकी वर्दास्त तो सबको करनी है। और रोगी होते हुए सेवा भी करें। मिल्टनने अंधापनमें अपनी कलमसे की ऐसे हि सुरदासने। जो तंदुरस्त है वे शरीरसे, मनसे, आत्मासे करें।

> आपका, मो० क० गांधी

श्री ब्रह्मानन्द 'बन्धु' मार्फंत बा॰ दयाराम बोहरा मन्दिर मुजफ्फरनगर, यू॰ पी॰

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७७६) से

#### ३६८. वक्तव्यः समाचारपत्रोंको

वर्षा १२ अगस्त, १९४१

१७ तारीखकी गुरुदेवका श्राद्ध-दिवस है। जिन लोगोंके लिए श्राद्ध-कर्मका धार्मिक महत्त्व है, वे निश्चय ही उस दिन पूरा उपवास करेंगे अथवा फलाहार करेंगे और प्रार्थनामें लोन रहेंगे। प्रार्थना ज्यक्तिगत रूपसे अथवा सामूहिक रूपसे भी की जा सकती है। गुरुदेवकी रचनाओं और जीवनमें मनुष्यको ऊपर उठानेवाला जो सन्देश है, उस मन्देशको हर शहर और हर गाँवमें जिन लोगोंने ग्रहण किया है वे सब अपनी मुविधानुसार किसी एक समय इक्ट्रा होंगे और उनके उदास जीवनपर विचार करेंगे तथा देशकी सेवाके लिए अपनेको समर्पित करेंगे।

गुरुदेव शान्ति और सद्भावनाके पक्षघर थे। वे साम्प्रदायिक बन्धनोंको नही मानते थे। इसल्लिए मैं आशा करता हूँ कि सभी वर्गोंके लोग इकट्टे होकर यह पृण्य-दिवस मनायेंगे और साम्प्रदायिक सद्भावनाको बढ़ावा देंगे।

मैं सब लोगोंको यह भी याद दिलाना चाहूँगा कि दीनवन्धु-स्मारक कोषके लिए अभी अधिकांश पैसा इकट्ठा होना वाकी है। मुझे यह कहते हुए दु:ख होता है कि दीनवन्धु-स्मारक अब गुरुदेव-स्मारक भी वन गया है। इसका सीधा-सादा कारण यह है कि स्मारकका सारा पैसा शान्तिनिकेतनके रख-रखाव और विस्तारपर ही खर्च किया जायेगा और शान्तिनिकेतनमें विश्वभारती और श्रीनिकेतन भी शामिल हैं। इसका मतलव यह नहीं है कि गुरुदेवके लिए एक पृथक् और विशेष स्मारक नहीं बनाया जायेगा, लेकिन जवतक उस स्मारकको साकार नहीं कर दिया जाता जिसकी कल्पना स्वयं गुरुदेवने की थी, तवतक उनके किसी स्मारककी वात सोचना भी हास्यास्पद होगा। यदि कार्यकर्त्ता और संगठनकर्त्ता स्मारकके लिए चन्दा इकट्ठा करने और उसे सर्वश्री वच्छराज एंड कम्पनी, ५१ महात्मा गांधी रोड, वम्बईके पते पर भेजने का निश्चय कर लें तो यह इस पावन दिवसकी समृचित परिणित होगी।

[अंग्रेजीसे] बॉम्बे कॉनिकल, १४-८-१९४१

## ३६९. पत्र : अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए १२ अगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

तुमने मुझे अच्छी खबर दी है। मुझे आशा है कि सुघार जारी रहेगा। गुरुदेवके वारेमें मैने जो सन्देश' जारी किया है उसे देखना।

अींबके अप्पा एक हपतेके लिए यहां आ रहे हैं। वर्माका शिष्टमण्डल १५ तारीखको आयेगा। और इस तरह दिन भरता जाता है। डॉ॰ ब्यामाप्रसाद चाहते हैं कि मैं कलकत्तामें गुरुदेवकी स्मृतिमें होनेवाली समाका सभापतित्व करूँ। मैने 'नाही' का तार भेज दिया है, क्योंकि पहले मुझे एन्ड्रबूज-स्मारकका कार्य समान्त करना है।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३५९ से भी

## ३७०. पत्र : मिर्जा इस्माइलको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय सर मिर्जा,

मुझे आपका बहुत ही दिलचस्प प्रस्ताव मिला, जिसके लिए बहुत-बहुत घन्य-वाद। वह मुझे आकर्षित नहीं करता और इसका सीधा-सा कारण यह है कि मुझे यह विश्वास नहीं है कि ब्रिटिश सरकार उचित कार्रवाई करेगी। इसके अलावा, सरकार द्वारा बुलाये गये सम्मेलनोंमें शामिल होने का अर्थ ही यह होता है कि सम्मेलनमें भाग लेनेवाले लोग युद्ध-प्रयत्नोंमें सहायता देंगे। ऐसा मैं नहीं कर सकता, मुझे नहीं करना चाहिए।

सारे परिवारके लोगोंको मेरा स्नेह।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८४) से

- १. देखिए पिछला शीपैक।
- २. बप्पासाहेब पंत
- ३. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, अ० मा० हिन्दू महासमाके अध्यक्ष

### ३७१. पत्र : अरुणचन्द्र गुहको

१२ ब्रेंबगस्त, १९४१

प्रिय अरुण बाबू,

मुझे आपका दिलचस्प पत्र मिला। आपकी अहिंसा-सम्बन्धी सीमाको मानने में मुझे कोई दिक्कत नहीं है। जब अहिंसापर ईमानदारीसे आचरण किया जाता है तो उसका स्वयमेव ही विस्तार हो जाता है। किन्तु मेरे लिए तो इतना ही काफी है कि आप साम्प्रदायिक झगड़ों आदिमें अहिंसाके उपयोगको स्वीकार करते हैं।

वत्तंमान संघर्षकी आपकी व्याख्या विल्कुल सही है। सब मित्रोंको अभिनादन-सहित.

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६६९) से

## ३७२. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय कु [मारप्पा],

बौद्योगीकरण पर तुम्हारा लेख मेरी समझमें हलका है। तुमने मरे घोड़ेको हाँकने की कोशिश्च की है। हमें तो उद्योगवादके समाजीकरणका विरोध करना है। वे लोग अपनी वातकी पुष्टिमें सोवियत संघकी उपलिवयोंका उदाहरण देते हैं। यदि तुम दिखा सको, तो तुम्हें आँकड़ोंको मददसे यह दिखाना चाहिए कि हाथकी बनी चीजें शक्ति-चालित यन्त्रों द्वारा तैयार वस्तुओंसे बेहतर है। अपने लेखके अन्तिम अनुच्छेदोंमें तुमने इस दावेके औचित्यको लगभग स्वीकार भी किया है।

इसका उत्तर देने का कष्ट मत करना, किन्तु अगले अंकमें तुम इसपर चर्चा कर सकते हो।

> तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५५) से

 यह छेल "पब्लिक कॉस्ट्स ऑफ सेन्ट्रेलाइक्ड प्रोडक्शन" शीर्षकरे प्राम उद्योग पश्चिका के अगस्त मासके अंकमें छपा था।

#### ३७३. पत्र: भगवानदासको

१२ अगस्त, १९४१

'प्रिय बाबूजी,

यह बड़ी वात है कि आप बच गये। ईश्वरकी अनुकम्पा ही है। मुझे पूरी आज्ञा है कि आप अपने जरीरको पर्याप्त आराम देंगे।

आपका सुझान मेरे लिए नई चीज नहीं है। लेकिन भानी सामाजिक व्यव-स्थाका ढाँचा कौन तैयार करेगा? काग्रेस पहलेसे ही इस कार्यको कर नही सकती, क्योंकि कांग्रेस एक ऐसी संस्था है जिसकी रायमें समय-समयपर अवस्य परिवर्तन होता रहेगा। यदि आपका कहना है कि मुझे यह कार्य करना चाहिए, तो मैं तो अ० मा० चरखा संघ, अ० मा० ग्रामोखोग संघ और तालीमी संघके जरिये उसकी इस्परेखा प्रस्तुत कर ही चुका हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि फिल्हाल आप अपने ऊपर किसी प्रकारका बोझ न डाले।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सीजन्य: प्यारेलाल

# ३७४. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको

१२ अगस्त, १९४१

प्रिय भगिनि,

महादेव संकट निवारणके पैसे इकट्ठा कर रहा है। रामचंद्रनका १८ जुलाई का खत मैंने देखा नींह है। भेजो और मैं लिखुंगा। अच्छी होगी।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९९९) से। सी० डब्ल्यू० २०९० से भी; सीजन्य: रामेश्वरी नेहरू

## ३७५. पत्र : हीरालाल शर्माको

१२ अगस्त, १९४१

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। मेरी गलतफहमी नहिं है। तुमने तो कहा हि है कि आखर तो मैं कहुं सो सही होगा। यह काफी निहं है। तुमारा अभिप्राय स्पष्ट निहं हो तो मेरा निर्णय निकम्मा माना जाय। द्रौपदीकी मी हार्दिक सम्मति निहं है तो मो यह दान दूषित समझा जाय। कोई त्याग वगैर वैरागके अचल निहं रहता है। मैंने तो नैतिक वात उठाई है।

बापुके आशीर्वाद

वापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३०२ और ३०३ के वीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे

# ३७६. पत्र: बैंक ऑफ नागपुर लि० के मैनेजरको

सेवाग्राम १३ वगस्त, १९४१

मैनेजर वैंक बाँफ नागपुर छिमिटेड वर्षा प्रिय महोदय,

#### सन्दर्भ : जलियाँवाला वाग स्मारक कोप

आपके वैकमें इस कोषकी जो राशि साविध जमाखातेमें है, आप उसकी अविध कृपया समाप्तिकी तिथिसे तीन वर्षके लिए बढ़वा दीजिए। जैसी कि फोन पर आपसे बात हुई थी, यदि रकमको नियत तिथिसे पहले न निकाला गया तो ज्याजकी सालाना दर ४% होगी। यदि इसे एक वर्ष वाद निकाला गया तो व्याजकी दर ३३% होगी और दो वर्षके बाद निकालने पर ३३%। यदि इसे निश्चित

- हीरालाळ शर्माकी सृत्युके उपरान्त प्राकृतिक चिकित्साल्यको वेचने से प्राप्त होनेवाले ध्वके उपयोगके विषयमें
  - २. हीरालाल शर्माकी पत्नी

अविविसे पूर्व निकालना पड़े तो इसके लिए आपने कमसे-कम १० दिन पहले सूचना देने को कहा है। इस शर्तका पालन किया जायेगा।

क्रुपया इसकी पृष्टि करके पावती भेजिए।

हृदयसे आपका. मो० क० गांधी सध्यक्ष जलियांवाला वाग स्मारक कोप

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ३७७ पत्र: अमृतकौरको

१३ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली.

में बासानीसे अपराध स्वीकार कर सकता हूँ। अमतुल सलामके मामलेमें मै जो-मुछ कहता और करता रहा, यदि उसमें में हमेशा सही ही होता तो उसका वैसा विकास न हुआ होता जैसा कि हुआ है। किन्तु जैसा मैंने तुम्हें दूसरे सन्दर्भमें बताया है, मैं लाइलाज नहीं हैं। मैं सुभर सकता हूँ और सुभर रहा हूँ।

मैं अब तुम्हारे बारेमें समझ गया हूँ। मैं तुमसे सहमत हूँ कि जवतक तुम अपनी खोई शनित और वजन पूनः प्राप्त न कर ली, तबतक तुम्हे नहीं लीटना चाहिए। किन्तु ऐसा भी हो सकता है कि अन्ततः तुम ऐसा केवल यहाँ आकर ही कर सको। कारण, जाड़ेका मौसम यहाँ सदा अच्छा होता है। लेकिन मैं भविष्यकी चिन्ता नही करता।

कंचन बीमार थी; अब खतरेसे बाहर है।

मुझे अभी-अभी बुलका तार मिला है कि वह रिहा कर दी गई है, किन्तु उसने कहा है कि वह यहाँ नहीं आ सकती। इसके बारेमें मुझे कलतक अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त हो जायेगी।

इसके साथ तुम्हारे लिए एक पत्र है। तुम उसे बता देना कि अभीतक

मुझे समय नहीं मिला है।

सप्रेम.

वापू

मूल अंग्रेज़ी (सी॰ डन्ल्यू॰ ४०५१) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन० ७३६० से भी

#### ३७८. पत्र: सी० माघवन पिल्लैको

१३ अगस्त, १९४१

त्रिय मित्र,

में यह तो नहीं कह सकता कि मैं काम-वासनांसे मुक्त हो गया हूँ, लेकिन यह कह सकता हूँ कि मेरा उसपर नियन्त्रण हो गया है और आशा है कि प्रयास करते रहने से मैं इससे मुक्त हो जाऊँगा। पूर्ण ब्रह्मचर्य एक ऐसा लक्ष्य है जिसे शायद लाखों में कोई एक व्यक्ति प्राप्त कर पाता है। ईमानदारीसे व लगातार किये गये प्रयत्नमें ही सफलता निहित है।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

श्री अयरूर सी० माघवन पिल्लै पेरूर, मांगदी न्विलोन (त्रावणकोर)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २३०) से

## ३७९. पत्र: टी० पालनिवेलुको

१३ अगस्त, १९४१

प्रिय पालनिवेलु,

सत्यको केवल पवित्र जीवन व संसारके घर्मग्रन्थोंके श्रद्धापूर्ण अध्ययन द्वारा ही पाया जा सकता है।

मेरे पास आने की कोई आवश्यकता नहीं है।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

श्री टी॰ पालनिवेलु मन्त्री, आर्य समाज ४६, पंडी रोड विल्लुपुरम्

> अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०९१)से २६२

#### ३८०. पत्र: देवदास गांधीको

१३ अगस्त, १९४१

चि॰ देवदास,

तुझे 'श्रेम' (शर्म) समझ लेना चाहिए था। मैने 'फॉर वेरी शेम' लिखाया

खुर्येदबहनके छूटने का तार अमी-अभी मिला। क्या हुआ, यह तो आगे माल्म होगा। इस लेखमें दो मूलें हैं। वह सरहदके उस पार नहीं गई थी। पहला हुक्म तब नहीं बदला गया जब उसने उसका प्रतिवाद किया बिल्क तब बदला गया जब उसने उसकी अवज्ञा करने का नोटिस दिया। लेकिन ऐसी मूलें हो ही जाती है। जलदीमें पढ़ने में जो समझमें आता है वही लिखा जाता है।

जयकर-सम्बन्धी लेख ठीक है। 'न्यू स्टेट्समैन' वाला अच्छा है।

लक्ष्मी एक दिन भी यहाँ रह जाये तो मुझे अच्छा छगेगा। अब तो यहाँ मौसम काफी ठंडा हो गया है। बारिश हो गई, इससे वड़ा चैन मिला।

[भारत ]-वर्मा समझौता बड़ा भारी घोखा है। तुझे उसका अध्ययन करना चाहिए और किसी विशेषज्ञसे उसपर विस्तारसे लिखवाना चाहिए। महादेव अभी भी वम्बईमें भिक्षा मौग रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीको फोटो-नकल (जी० एन० २१४८) से

# ३८१. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्वा होते हुए १४ अगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

बात यह है कि सेवाग्रामसे केवल एक ही बार डाक निकलती है और वह समय है शामको साढ़े चार बजे। उत्तर और पूर्वके लिए डाक वर्धासे अगले दिन सबेरे मेजी जाती है। लेकिन कमी-कमी मैं साढ़े चार वजेके बाद पत्र लिखता हूँ और

१. देखिए ए० २३१।

२. महादेव देसार सहायता कोणके लिए चन्दा क्कट्टा कर रहे थे।

उसे किसी विश्वसनीय व्यक्तिकी मार्फत भेजता हूँ। विश्वसनीय होने के वायजूद, हो सकता है, वह उसी दिन शामको डाकमें डालना भूल जाये। ऐसी हालतमें पत्र एक दिन देरसे पहुँचेगा। इस तरफ गड़वड़ीकी मुझे और कोई सम्मावना दिखाई नहीं देती। और यह भी याद रखों कि कभी-कभी तुम्हारी डाक भी इसी तरह मिलती है, दो पत्र एकसाथ मिलते हैं। इसलिए हम दोनोंको यह खुशीसे सहन करना चाहिए।

इस पत्रमें तुमने अपने वारेमें कुछ नहीं लिखा है। क्या इसका अर्थ यह हुआ कि सब-कुछ ठीक है?

वुलका पत्र आया है। यह नहीं लगता कि उसकी स्थित पहलेसे अच्छी है। आदेश अभी भी वही है। लगता है कि सरकारका इरादा उसपर मुकदमा चला कर उसका जुमें सावित करना है। उससे कहा गया है कि वह वर्वा जाने के लिए आवेदनपत्र दे। उसने तार द्वारा आवेदनपत्र भेजा है। देखें, क्या होता है।

सारंगघर दासका पत्र भेज रहा हूँ। मैने इसकी एक नकल महादेवको भेजी है और नामोंका उल्लेख न करते हुए इसका उपयोग करने के लिए कहा है। तुम सारंगघर दासको पत्र लिखना। कदाचित् मैं भी उसे कुछ पंक्तियाँ लिखुँ।

सप्रेम,

वापू

मूळ अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५२) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६१ से भी

#### ३८२. पत्र: मदालसाको

१४ अगस्त, १९४१

तुम दोनों ठहरे कि ि तिसपर यह भी सच है कि वह [श्रीमन्तारायण] कि होने के वावजूद घरतीसे चिपका हुआ है, इसिल्ए अपने काममें मस्त रहता है। तू गगनिवहारिणी है, इसिल्ए विचारों में मग्न रहती है। इसिल्ए तू हमेशा नौकरों से असन्तुष्ट रहती है। जवतक यह असन्तोष रहेगा तवतक तू गृहिणिके रूपमें घरको कैसे शोमान्वित कर सकेगी? ले इतना लम्बा [आशीर्वाद]। पे

वापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे] पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२०

र. मदालसा और उनके पति श्रीमन्नारायण

२, मदालसानहतने कवितामें पत्र लिखकर गांधीजी से आशीर्वाद माँगा था।

#### ३८३. पत्र: जमनालाल बजाजको

१४ अगस्त, १९४१

चि॰ जमनालाल,

तुम्हारी तबीयत वहाँ सुवर रही जान पड़ती है। डॉ॰ मेंकलके कहने से मालूम होता है कि घुटनेकी तकलीफ तो बनी ही रहेगी। अगर उत्तने ही पर रुक जाये तो मुझे कोई हर्ज नजर नहीं आता। जबतक वहाँ मानसिक शान्ति नहीं मिले, तबतक न खिसकना।

[सर फ्रांसिस] नाइलीसे मिलने का आग्रह न करना। सहज ही उनसे भेट हो जाये तो हर्जं नहीं; लेकिन यदि प्रयत्न करने से उनसे भेंट होती हो तो यह अच्छा नहीं।

रामकृष्णसे मिलकर बहुत सन्तोष हुआ। वह जेलका पूरा लाभ उठा रहा है। वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२०) से

#### ३८४. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

१४ अगस्त, १९४१

भाई वल्लभभाई,

कल तुम्हारा पत्र मिला। पत्र पाकर खुशी हुई, लेकिन पढकर दुख हुआ। तुम्हारी तबीयत खराब होने के बारेमें महादेवने मुझे लिखा तो जरूर या, लेकिन तुम्हारे पत्रसे पता चलता है कि तुम्हारी तवीयत बहुत ज्यादा खराब है; और यदि अभी भी वैसी ही है तो डॉ॰ गिल्डरकी उपस्थित किस काम की है? यदि वह तुम्हारी तबीयतको सुभार नहीं सकते तो तुम्हारी छुट्टी हो जायेगी।

मुझे स्वयं तो तुम्हारा फलोंके रसपर रहना पसन्द है। खेँतिइयोमे यदि बुछ हुआ तो निकल जायेगा। अंगूर, मोसम्बी, अनार, अनन्नासका रम जितना पिया जा सके उतना पीने से अवश्य लाभ होना चाहिए। पुष्कल रस पीने से — करीव माठ औंस रस पीने से — कमजोरी अवश्य दूर होगी। इसके साथ-साथ यदि रातको तुम पेडू पर मिट्टीको पट्टी रखो तो मुझे विश्वास है कि अवश्य लाभ होगा। बीमारीके

कारण तुम्हें रिहा करना पड़े, ऐसा अवसर नहीं आने देना चाहिए। मुझे वरावर समाचार लिखते रहना। अधिक नही तो पोस्टकार्ड अवस्य लिखना।

गुजरातके सेवकोंको कसौटी पर कसा जा रहा है। ये लोग ठीक-ठीक काम करते जान पड़ते हैं। महादेव मी खासा अनुभव प्राप्त कर रहा है। मुझे खास दिक्कत नहीं होती। किशोरलाल यहीं रहता है और वह वराबर मेरी मदद करता है। सामान्यतया मेरी तवीयत ठीक कही जा सकती है।

बा के शरीरमें काफी शक्ति आ गई है। शामको लगमग पौन मील चल लेती है। काम तो सारा दिन करती रहती ही है। ठीक खा लेती है। चिन्ता करने की तिनक भी जरूरत नहीं।

जमनालाल भी अच्छे हैं। शिमलाकी हवा खा रहे हैं। उनमें ताकत आती जा रही है। वे राजकुमारीके कैदी है। वह जो खिलाती है वही खाते हैं। रोज आठ मील घूमते हैं, शतरंज वर्णेरह खेलते हैं और मौज करते हैं। उन्हें मनपसन्द वाता-वरण मिल गया है।

जानकी बहन और मदालसा मेरे साथ ही है और मेरे साथ ही खाना खाती हैं। दोनों अच्छी है। जानकी बहन तो चार-पाँच मील दौड़ सकती हैं। मदालसाका सातवाँ महीना चल रहा है। उसके मुँहमें छाले हो गये थे, अब नहीं है। इस बार प्रसव निर्विष्न होने की सम्भावना है।

गुरुदेवके त्वले जाने से दीनवन्धु स्मारक कोष जल्दसे-जल्द इकट्ठा करने का दायित्व मुझपर आ पड़ा है। जो ईश्वरकी मर्जी।

कुसुम [देसाई] फिल्हाल यहीं है। थोड़ी-थोड़ी मेरी मदद करती है। एकाय महीना रहेगी, कदाचित् उससे भी ज्यादा रहे। यह बात मैने उसपर छोड़ दी है।

तुम्हारे सव साथियोंको तथा तुम्हें

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

वापुना पत्रो - २: सरदार वल्लभभाईने, पू० २४९-५०

#### ३८५. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए १५ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। सारंगधर दासको लिखे अपने पत्रकी एक नकल मुझे तुम्हे भी भेजनी चाहिए थो। लेकिन क्या किया जाये? ऐसे काम जैसे किये जाने चाहिए, वैसे मैं नहीं कर पाता!

तुम्हारे सेब बहुत ही अच्छे है। वा को वेहद पसन्द आये है। कहने की जरूरत नहीं कि मुझे भी बहुत पसन्द आये। लेकिन इसका मतलब यह न समझना कि मैं और भेजने को कह रहा हूँ। शिमलामें सर्दियोंमें इस फलकी क्या कीमत होती है?

एक पूरी भीड़ अन्दर आ रही है। शिमलामें थोड़ा-बहुत चन्दा जरूर इकट्टा करना। मैं देखता हूँ कि यह पत्र तुम्हें अवसर वीत जाने के बाद ही मिलेगा। अतः यह सुझाव मैं वापस लेता हूँ।

सत्रेम,

्वापू

मूळ अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६२ से भी

पडौँ संकेत १७ अगस्तको रबोन्द्रनाथ ठाकुरका आद-दिवस मनाये जाने की ओर है।
 देखिए "बक्तव्य: समाचारपत्रोंको", पृ० २५६ ।

## ३८६. पत्र: रेहाना तैयबजीको

१५ अगस्त, १९४१

बेटी,

आज उर्दूमें नहीं लिखूँगा। तू काकासाहबके पास है, यही उनकी आधी दवा हो गई। मनचाहा संग मिले, साथ ही मनपसन्द संगीत मिले, तो फिर और क्या चाहिए? अब काकासाहबको अच्छा करके ही तुम दोनों वहनें वहाँसे खिसकता। फिर तो मैं पेट-भर खाखरा सरोजको खिलाऊँगा और तुझे दूँगा एक थप्पड़।

वापूकी दुआ

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६८३)से

### ३८७. पत्र: दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

१५ अगस्त, १९४१

चि० काका,

तुम्हारी आधी दवा तो आराम और रेहानाका संगीत कर देगा। तिनक भी जल्दी नहीं करना। डॉक्टरके कहे अनुसार चलना। तुम्हारे सामने इस समय एक ही चिन्ता होनी चाहिए — अपनी तवीयत सुवारना।

बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्चः]

सायका पत्र रेहानाके लिए है। । गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९४९) से

- १. सरोज नानावटी
- २. देखिए पिछ्छा शीर्षका।

### ३८८ पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए १६ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

जहाँतक तुम्हारे अपने घरके सेबोंका प्रश्न है, तुम जब-जब चाहो भेज सबती हो। में उन्हें लगभग रोजाना लेता हूँ और वा भी लेती है। लेकिन वाजारसं खरीदकर भेजे गये सेबोंकी कीमत मुझे अवश्य बताओ।

मुझे खुशी है कि जमनालाल अपनी इच्छा पूरी कर सके। उन्हें जो ठीस लाभ हुआ है वह कभी नष्ट नहीं हो सकता।

तुम्हें यह जानकर दुःख होगा कि वल्लभभाईके मलाशयमें एक फोड़ा है और कैन्सरका सन्देह है। जनकी सेहत काफी गिर गई है।

तुम्हारे गठियेका क्या कारण है? यहाँ जो तकलीफ थी, क्या वही बढ़ गई है, या यह कोई नई तकलीफ है?

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०५४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३६३ से भी

# ३८९. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए १७ अगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

-तुम्हारा पत्र मिला। आज श्राद्ध-दिवस है। हम सब व्यस्त है। तुम्हे अवय्य ही शीघ्र चंगा हो जाना चाहिए।

सत्रेम,

वापू

· मूल अंग्रेजी (सीर्० डब्ल्यू० ४०५५) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३६४ से भी

#### ३९०. पत्र: जमनालाल बजाजको

सेवाग्राम १७ अगस्त, १९४१

चि॰ जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँ आ जाना। बादमें सीकर आदिके बारेमें विचार करेंगे। आज श्राद्धमें लगा हूँ। मृदुं आई हुई है, इसलिए अविक नहीं लिख्ना। ओम और उसके पतिदेवकों आगीर्वाद।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२१) से

# ३९१. भेंट: यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधिकों

वर्षागंज १७ अगस्त. १९४१

अमेरिका और ग्रेट त्रिटेन यदि निरस्त्रीकरणका सिद्धान्त अपना छें तो मैं उन्हें तत्काल अपनी हार्दिक वधाइयाँ भेजूँगा और इसमें मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। मैं इसे अहिंसाकी विजय कहुँगा।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, १९-८-१९४१

र. मृदुष्ठा सारामाई

२ और ३. जमनालाल बजाजकी पुत्री तमा और राजनारादण अग्रवाल

४. यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधिने गांधीजी से पूछा था कि चर्चिछ-स्प्तेवट घोषनामें "राष्ट्रों द्वारा बळ-प्रयोगका परिस्थान करने और निरस्त्रीकरणके लिखान्तको कपनाने"के सन्वयमें जो पारा है उसके बारेमें उनकी क्या राय है। 'बटलंडिक चार्टर'के नामसे विश्याद वह घोषना १४ बगस्त, १९४१ को बिधकृत स्पत्ते जारी की गई थी।

# ३९२ पत्रुः जे० सी० कुमारप्पाको

सेवाग्राम, वर्वा १८ बगस्त, १९४१

प्रिय कुमारप्पा,

में तुम्हारा मसीदा सरसरी नजरसे पढ़ गया हूँ। पढ़ने में ठीक लगता है। तुम उसे सब लोगोंमें धुमा सकते हो। लेकिन तुम मिली, इसके पहले मैं इसे साव-घानीपूर्वक पढ़ जाऊँगा।

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५७)से

## ३९३. पत्र: अमृतकौरको

१८ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

डाकको छेकर तो सचमुच झुँझलाहट होती है। लेकिन गाँवके डाकघरका किया भी क्या जा सकता है?

दूसरी झूँझलानेवाली चीज है तुम्हारी ढुलमुल सेहत। तुम एकदम स्वस्थ महसूस क्यों नहीं करती? कही इसकी वजह यह तो नहीं है कि तुमने जमनालाल की देखभालमें अपनी शक्तिसे अधिक परिश्रम किया? तुम सबने — अर्थात् तुमने और तुम्हारे . . . १ ने उनपर जो प्रेम बरसाया वे उसका बखान करते नहीं अधाते। यह विचार अभी-अभी मनमें आया और मैंने तुम्हें बता दिया। वहरहाल, अब तुम्हें पूर्णंतया स्वस्थ हो जाना चाहिए।

आजका दिन बहुत शानदार रहा। हमारे यहाँ प्रार्थनाएँ हुई, जिनमें गुरुदेवके गीत गाये गये; सबेरेकी प्रार्थनामें 'जीवन जखन' सुशीलाने गाया और शामकी प्रार्थनामें प्रमाकरने 'आनन्द लोके' गाया। प्रभाकर एक अच्छा गायक सिद्ध हो रहा है। हमने हर वयस्क व्यक्तिसे एक पैसा और जो लोग ज्यादा दे सकते थे उनसे ज्यादा पैसा इकट्ठा किया। आश्रमवासियोंके पास अपना कोई पैसा न होने के

रे. साधन-एशमें वहाँ कुछ छोड़ दिया गया है। २ और ३. साधन-एशमें वे शब्द हिन्दीमें हैं। कारण उन्होंने एक घंटे सूत काता और उनमें से प्रत्येकको उस सूतका वाजारके मावपर एक पैसा मिला। मगनलालने २,५०० रुपये, जानकीवहनने ११० रुपये और सुशीलाने १० किस्तोंमें ५०० रुपये, अर्थात् अपने वेतनमें से ५० रुपये दिये। इस तरह सेवा-ग्राममें हमने अच्छी रकम इकट्ठी की है। आज्ञादेवी चन्दा इकट्ठा करने और प्रार्थनाके लिए वर्षामें अन्यत्र भी गईं। मुझे अभी पूरा समाचार नहीं मिला है। लेकिन वहाँ भी स्थिति अच्छी रही।

वल्लभभाईकी हालत खराब है। तुमने खबर पढ़ी होगी। देखें, क्या होता है। मेरे मनपर यह एक भारी बोझ है।

मृदुला आज वम्बईके लिए रवाना हो रही है। वह अपनी छोटी-मोटो समस्याओं का समाधान करने के लिए आई है।

क्षाज मैं तुम्हें ज्यादा समय नहीं दे सकूँगा। वहाँ इस बार खादीकी विश्वी कैसी है?

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५६)से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३६५ से भी

### ३९४. पत्र: कृष्णचन्द्रको

१८ अगस्त, १९४१

चि० कु० चं०,

सबके हाळ तुमारे जैसे है ऐसा समजो। फरक मात्राका ही है। तुमारे खाने की बारी (वही शब्द है क्या) निश्चित कंरनी चाहिये। और भोजनका माप। ऐसा कुछ अर्से तक होगा तो सब अच्छा हि हो जायगा। प्रयत्नके बाद परिणामके बारेमें निश्चित हो जाना।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४००) से

### ३९५. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए १९ वगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

तुम्हारा पत्र मिला।

कितने आश्चर्यकी बात है कि इधर मैंने तुम्हें पत्र भेजा और उधर तुम्हारा आया। तुमने भी लगभग ऐसे ही अथवा इन्ही शब्दोंका प्रयोग किया है। अब तुम्हें अपनी वीमारीसे छुटकारा पा लेना है। यदि शम्मी और अन्य लोग तुम्हें छुट्टी दें और ऐसा समझें कि साधारण रहन-सहनवाले परिवेशमें सम्भवतः तुम अच्छी हो जाओगी, तो मैं सहबैं अपनी परिचर्यांसे तुम्हें स्वस्थ बना दूँगा। यदि सारी जिम्मेदारी मुझे सौंप दी जाये तो मुझे धवराहट नहीं होगी।

आज अधिक नहीं।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्स्यू० ४०५७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६६ से भी

# ३९६. पत्र: ताराचन्दको

१९ अगस्त, १९४१

प्रिय डॉ॰ ताराचन्द,

आपके चेकके लिए बहुत-बहुत घन्यवाद। इसे मैं दीनवन्धू-स्मारक कोपमें भेज रहा हूँ। यदि आपको इसका यह उपयोग ठीक न लगे तो मै आसानीसे इसमे परि-

वर्तन कर सकता हूँ।

ढाका और अन्य स्थानींपर होनेवाले भीषण इंगोंके कारण मैंने जान-वृक्षकर हिन्दीके मामलेमें कुछ नहीं किया है। मामला तो तय करना ही होगा, परन्तु आज मूच्य बदल गये हैं। आज जैसे आसार है जनसे मुझे लगता है, इस मामलेको दुकड़ों में नही सुलझाया जा सकता। मैंने अपने वक्तल्यका जो मसौदा तैयार किया था वह सुन्दरलालजी को खास पसन्द नहीं आया। इसी बीच, दंगोसे मुझे गहरा आधात लगा और तुरन्त कार्रवाई करने का विचार मैने स्थगित कर दिया, यद्यपि इस विषयमें मेरे विचार अब भी वहीं हैं।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ३९७. पत्रः इन्द्रवदन दिन्येन्द्रको

१९ अगस्त, १९४१

भाई इन्द्रवदन,

तुम्हारे भेजे लिफाफेकी खोज करने में समय नष्ट होगा; और फिर तुमने जो खर्च किया उससे एक पैसा ज्यादाका माल तुम्हें मिल रहा है। इसलिए तुम्हें कोई शिकायत भी नहीं होनी चाहिए। अगर हम अकेली गायकी ही सेवा करें, तो भैस नष्ट नहीं होगी; लेकिन अगर अकेली भैसकी ही सेवा करेंगे, तो भैंस और गाय दोनों नष्ट हो जायेंगे। गाय और भैस दोनोंकी सेवा करने से भी दोनों नष्ट हो जायेंगे। संसारमें मुख्यतः गायका ही दूध काममें लाया जाता है। फिर, वैद्यकी दृष्टिसे भी गायका दूध अधिक हितकारी है।

मो० क० गांधीके ब० मा०

माई इन्द्रवदन एन० दिव्येन्द्र गुड्ज श्रॉफिस साबरमती, बी० बी० एण्ड सी० आई० रेळवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२१)से

# ३९८. पत्र: मुन्नालाल गं० शाहको

२० वगस्त, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

तुमने जो लिखा है, बिलकुल ठीक है। मैं तो घंटा बजने के साथ ही उठता हूँ। उस समय घड़ी देखता हूँ और उसके बीस मिनट बाद प्रार्थना शुरू करवाता हूँ।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४८६) से। सी ० इटल्यू० ७१५२ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

#### ३९९. पत्र: देवदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा होते हुए २० अगस्त, १९४१

चि॰ देवदास,

महादेवको लिखा तेरा पत्र पढ़ा। महादेव तो वस्वईमें फैंस गया है।

मेरे खयालसे ऐसी खबर तुझे पक्की जाँच किये बिना प्रकाशित नहीं करनी
चाहिए थी। और फिर प्रकाशित करने के बाद विना आधारके उसकी आलोचना
करना, यह तो दोषपूणं बात है। . . . ' तुझे बचा नहीं सकेगा। और फिर तूने
मुख्य न्यायाधीशका नाम दे दिया है। मुझे डर है, तू अपराधी सिद्ध होगा। शायद
अच्छा यह होगा कि तू अदालतमें जाने से पहले माफीकी एक ऐसी टिप्पणी प्रकाशित
कर दे कि तैरा संवाददाता अपनी खबरको सही सिद्ध नहीं कर सका। मेरी रायमें
यह शोमनीय होगा या फिर अदालतमें अपना बचाव किये बिना माफी मांग ले।
लेकिन यह सब तो मैं नैतिक तथा कानूनी दृष्टिसे लिख रहा हूँ। आखिर तो तू वही
करना, जो सर तेजबहादुर या मुन्ती कहें। इस पत्रकी नकल और तेरा पत्र महादेव
को भेज रहा हूँ। तूने हस्ताक्षर तो पूरे किये हैं, लेकिन न 'देवदास' पढ़ा जाता
है, न 'गांघी'। सम्य समाजका नियम तो यह है कि हस्ताक्षरके अक्षर भी मोतीके
दानों-जैसे होने चाहिए।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४२)से

#### ४००. तार: जमनालाल बजाजको

[२१ अगस्त, १९४१ या उसके पूर्व]

जमनालालजी शिवालय, देहरादून प्रसन्नता हुई । जितने समय चाहो रहो।

वापू

[अंग्रेजीसे] . पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २४२

#### ४०१. पत्र: उत्तिमचन्द गंगारामको

सेवाग्राम २१ अगस्त, १९४१

प्रिय उत्तिमचन्द,

मुझे सरकारी हुण्डियाँ मिल गई हैं, जिनमें ५०० रु० हैं। मैं ३ प्रतिश्वत ब्याजवाली हुण्डियाँ (२०० रु०) हरिजन सेवक संघके लिए दे रहा हूँ और वाकी के ३०० रु० दीनवन्धु-स्मारकके लिए, क्योंकि मैं जानता हूँ कि गुरुदेवने यह रकम इस स्मारक-कोषको ही दे दी होती। आप जानते हैं कि इस कोषका उपयोग पूर्ण रूपसे शान्तिनिकेतनके लिए किया जानेवाला है।

ज्यामितिमें मेरी दिलचस्पी कभी कम नहीं होगी, और मैं आपका प्रथम 'विद्यार्थी' हूँगा। लेकिन इन दो त्रिभुजोंको ठीक-ठीक काटने में सफल हो पाऊँगा या नहीं, यह मैं नहीं जानता।

आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलते: प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य: प्यारेलाल

 साधन-धनके अनुसार यह तार जमनाळाळ बजाजको २१ अगस्तको मिळा था।
 जमनाळाळ बजाजने आनन्दमधी देवीके आल्लममें कुछ दिन और ठहरने के छिए गांधीजी से अनुमत्ति माँगी थी। देखिए "पत्र: अग्रतकौरको", प० २७९।

#### ४०२. पत्र: जकातदारको

२१ अगस्त, १९४१

प्रिय जकातदार,

इस उम्रमें भी आपने इतना अच्छा कार्य किया है कि आपको फिरसे सिवनय अवज्ञा करने की आवश्यकता नहीं है। यदि सरकार आपको आपकी किन्ही भी गित-विधियोंके कारण जेल भेज देती है तो वह अलग वात है।

में चाहूँगा कि आप अपने जिलेमें कांग्रेसका रचनात्मक कार्य करके आहिसाक

सिद्धान्तका प्रचार करें।

आशा करता हूँ कि आप ठीक होंगे।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ४०३. पत्र: कंचन मु० शाहको

२१ अगस्त, १९४१

चि॰ कंचन,

इस पत्रसे तो तुझे सन्तोष होना चाहिए। तू वहाँ आरामसे पहुँच गई होगी। अब खान-पानमें सावधानी वरतना और अच्छी हो जाना। अपने अध्ययनकी व्यवस्था कर लेना। मुझे बरावर लिखती रहना।

वापुके आशीर्वाद

#### [पुनश्चः]

'आत्मकथा' के वारेमें मैने लिख दिया है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७३) से। सी० डव्ल्यू० ७१५४ से भी; सीजन्य: मुलालाल गं० शाह

#### ४०४. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

२१ अगस्त, १९४१

माई वल्लभभाई,

मुझे तो पहले ही डर था कि तुम्हें छोड़ दिया जायेगा। वे भी क्या करें? अब तो बिलकुल अच्छे होकर ही काममें लगना। काम तो बहुत है। [तुम्हारा] ऑपरेशन होने तक मुझे चैन नहीं पड़ेगा। समाचार बरावर भिजवाते रहना। मेरा पत्र क्या वे लोग तुम्हें सचमुच देते थे?

वापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २ : सरदार वल्लभभाईने, पू० २५०

४०५. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

२१ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। अभी तो मैं तुम्हें कष्ट नहीं दूँगा। अपनी रिपोर्टमें तुमने मुझे काफी सामग्री दे दी है। अभी भी कुछ वाकी हो, तो मुझे लिखना। खाता-बहियों में तुम प्रत्येक पृष्ठपर मुहर लगाओंगे न? जहाँ काटपीट हो, वहाँ हस्ताक्षर ही कर दो, तो काफी होगा। वाउचरों पर नम्बर आदि तो होंगे ही। तो अब तुम सारे खाता-बही आदि नवजीवन कार्यालय को वापस भेज दो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकछ (सी॰ डब्ल्यू॰ १०१२४) से

## ४०६. पत्र: अमृतकौरको

२१ अगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

आज तुम्हारा खत निह है। आशा है कि कुछ वीमारीके कारण निह होगा। जमनालालजी को आनंदमयी देवीका आश्रम अच्छा लगा। वहां शांति भी मिली। मुझको तार दिया कि मैं वहां कुछ दिन ठहरने की इजाजत दूं। मैंने दी है। जिं से खूब बातें की, फलाहार भी किया, इंदूसे मिला।

यहां सब कुछ ठीक है। सरदार रिहा हुए। आज फोनसे वात भी हूई। यह खत पढ़ने में तो दिक्कत नींह आई होगी। हिंदीमें भले लिखा न?

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८८३) से। सी० डब्ल्यू० ४२५१ से मी; सीजन्य: अमृतकीर

# ४०७. पत्र: रामनारायण चौधरीको

२१ अगस्त, १९४१

चि० रामनारायण,

तुम्हारा खत तो अच्छा है ही; मर्यादासे बाहर नहीं जाना। अगर क्षणिक जोश कारण नहीं है तो त्याग टिकेगा। अन्यया ज्यादा कष्टका ही कारण होगा। बरसोंकी आदत बड़ी दृढ़ताके सिवा नहीं छूट सकती है। ईश्वर तुम्हें वल दे। वापूके आशीर्वाद

बापू: मैने क्या देखा, क्या समझा?, पृ० १४३-४४

१. देखिए पृ० २७६।

२. जवाहरळाळ नेहरू

३. इन्दिरा नेहरू

४. रामनारायण चौधरीने मोजन, वस्त्र बादि पर होनेवाछे पारिवारिक खर्चेमें कटौठी करने का निवच्य किया था। उनके विचारते ये खर्च बाशमपर बोझ थे।

#### ४०८. तार: जमनालाल बजाजको

वर्धागंज २२ अगस्त, १९४१

जमनालालजी शिवालय रायपुर, देहरादून

महेश<sup>1</sup> ठीक है लेकिन निगरानीकी जरूरत है। मदालसाके लिए अच्छा साथी है। तुम्हें बहुत ज्यादा जरूरत न हो तो उसे रहनेकी अनु-मित दो।

वापू

[अंग्रेजीसे] पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २४२

## ४०९. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्घा होते हुए २३ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

साथमें तुम्हारे लिए दो पत्र है।

में देखता हूँ कि तुम बुखार और खाँसीसे कैसे जूझ रही हो। मेरी कामना है कि तुम्हें सफलता मिले।

तुम धर्म यश देवको लिखना कि अपने प्रति सच्चा होने के लिए उन्हें पहले

अपनी शुद्धि करनी होगी।

सुशीला वम्बई जाते हुए दो दिनके लिए यहाँ रुकी। वह 'ड्यूटी लीव' पर है। उसे एनेस्थीसियामें अधिक अनुभव प्राप्त करने के लिए वम्बई भेजा गया है। उसके पिछले अनुभवके वलपर वे लोग एक ऐसे कीमती यंत्रका उपयोग करने में सफल हुए जो वेकार पड़ा हुआ था।

- १. महेशदत्त मिश्र
- २. मरीजको ऑपरेशनसे पहले वेहोश करने का शास्त्र

कंचन कुछ महीनोंके लिए अपनी मांके पास गई है।

में पहले दीनवन्यु-स्मारकके लिए पैसा इकट्ठा करने का काम पूरा कर रहा हूँ; यह स्मारक अंशतः [रवीन्द्रनाथ] ठाकुर-स्मारक भी है। मै तुमसे उसके लिए समय आने पर सबसे ज्यादा चन्दा लूँगा। तुम देखती ही हो कि मैने सुगीलाम ५०० रुपये लिये हैं; बेशक किस्तोंमें लिये है।

हाँ, तुम स्प्रे (पिचकारीसे छिड़कने की देवा) भेज सकती हो। मैं देखता हूँ कि यह महेंगा है, लेकिन यदि कीड़े-मकोड़ों पर प्रभावकारी सिद्ध हुआ तो यहुत महेंगा नहीं है। मैंने तुमसे यह भी कहा था कि तुम महीनेमें दो बार सेव भेज सकती हो।

अव मुझे समाप्त करना चाहिए। ओह, मैं तो भूल ही गया। सरदारकी बीमारी तो कोरा वहम थी। सात डाक्टरोको पोलीपस (ट्यूमर) दिखाई नहीं दिया। इसलिए चिन्ता करने का कोई कारण नहीं।

सप्रेम,

वापू

[पुनश्च:]

पोलीपस [शब्द] में एक 'एल' होता है। यह गलती मैंने की थी।

मूळ अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०५८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३६७ से भी

#### ४१०. पत्र: जी० रामचन्द्रनको

२३ अगस्त, १९४१

प्रिय रा[मचन्द्रन],

रामेश्वरी नेहरूको लिखा तुम्हारा पत्र मैंने अभी-अभी पढ़ा है। वे जानना चाहती हैं कि उसका क्या उत्तर दिया जाना चाहिए। दिल्लीमें संघकी जिल्दा निश्चय ही बहुत ज्यादा है। लेकिन तुम्हारा और सुन्दरमका वावणकोरमें काम करना और भी ज्यादा जरूरी है। मुझे इस बातमें तिनक भी सन्देह नहीं है कि

१. देखिए " पत्र: अमृतकौरको ", पृ० २७१-७२।

२. देखिए "पत्र: अमृतकीरकी", पृ० २६९।

३. हरिजन सेवक संघ

४. जी० रामचन्द्रनकी परनी

त्रावणकोरमें रहकर तुम हरिजन-कार्य ज्यादा अच्छी तरहसे कर सकोगे। इसिछए तुम्हारे पत्रसे उठनेवाले अन्य प्रश्नोंकी मैं कोई चर्चा नहीं करूँगा।

तुम दोनोंको प्यार।

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०००) से। सी० डल्ल्यू० ३०९८ से भी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

# ४११. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको

२३ अगस्त, १९४१

प्रिय भगिनि,

तुम्हारा खत आज मिला। साथमें रामचंद्रनको जो उत्तर दिया है उसकी नकल भेजता हूं। अच्छा लगता है कि अच्छी हो।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०००) से। सी० डब्ल्यू० ३०९७ से मी; सौजन्य: रामेश्वरी नेहरू

# ४१२. प्रस्तावना : 'ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस के लिए'

सेवाग्राम २४ अगस्त, १९४१

'ए डिसिप्लिन फाँर नौंन-वायलेंस' पुस्तिकाकी रचना श्री रिचर्ड वी० ग्रेगेन पिचमके उन लोगोंके मार्गदर्शनके लिए की है जो सत्याग्रहके सिद्धान्तका अनुसरण करना चाहते हैं। मैने 'शान्तिवाद' शब्दका प्रयोग न करके सत्याग्रह शब्दका प्रयोग जान-वृज्ञकर किया है। शान्तिवादके नामसे जो चीज जानी जाती है वह सत्याग्रह नहीं है। श्री ग्रेग अत्यन्त परिश्रमी और व्यवस्थित ढंगसे काम करनेवाले व्यक्ति हैं। भारतमें रहने के कारण, और सो भी लगातार एक वर्षतक सावरमती आश्रममें रहने के कारण, उन्हें सत्याग्रहका प्रत्यक्ष अनुभव है। उनकी पुस्तिका समयानुकूल है और इससे भारतके सत्याग्रहियोंको अवश्य मदद मिलेगी। कारण, हार्लांक पुस्तिका ऐसे

#### १. देखिए पिछ्छा शीर्षका।

२. यह प्रस्तावता उनत पुस्तकके प्रथम मारतीय संस्करणके लिए लिखी गई थी, जिसे नवकीवन पन्छिशिंग हाउस, महमदावादने प्रकाशित किया या।

ढंगसे लिखी गई है जो पश्चिमके लोगोंको आकर्पक लगे, तथापि इसमें जो विषय-वस्तु है वह पूर्व और पश्चिम दोनोंके सत्याग्रहियोंके लिए समान है। इसलिए भार-तीय पाठकोंके लिए इस पुस्तिकाका एक सस्ता स्थानीय संस्करण इस आधारे प्रकाशित किया जा रहा है कि बड़ी संख्यामें लोग इसे पढेंगे और इसमे लाभ उठायेंगे। भारतीय सत्याग्रहियोंके कन्योंपर एक विशेष जिम्मेदारी है, वयोंकि श्री ग्रेगने भारतमें सत्याग्रहका जो प्रयोग देखा उसके आधारपर ही उन्होंने अपनी इस पुस्तिकाकी रचना की है। श्री ग्रेगकी यह निर्देशिका सबद्ध नियमावलीके रूपमे चाहे कितनी ही प्रशंसनीय क्यों न हो, लेकिन अगर भारतका यह प्रयोग अमफल रहता है तो यह भी अपने प्रयोजनमें निष्फल सिद्ध होगी।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे] ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस

### ४१३. वक्तव्यः समाचारपत्रोंको

वर्धा २४ अगस्त, १९४१

आवजनकी समस्याओंसे मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है तथा मैं दक्षिण आफ्रिकामे कीस वर्षीतक रह चुका हूँ। इस कारण भारत-वर्मा आव्रजन समझौतेमें स्वभावतः मेरी बहुत रुचि है। इस समझौतेसे मुझे गहरा दुःख पहुँचा है। इस विषयपर जितनी भी लिखित सामग्री प्राप्त हो सकी मैने एकत्र कर ली है। कोई राय बना सकने के लिए इसमें से जितना पढ़ना आवश्यक था, और मेरे पास उपलब्य सीमित समयमें जितना सम्भव था, उतना मैने पढ़ लिया है।

इस अध्ययनसे में इस निष्कर्पपर पहुँचा हूँ कि यह एक दुर्भाग्यपूर्ण

समझौता है।

यह समझौता घबराहटमें किया गया है और दण्डात्मक है। अलवारोमें मुझे ऐसी कोई बात पढ़ने को नहीं मिली जिससे किसी प्रकारकी घवराहट पैदा होने का कोई सबव नजर आता हो, और न ऐसी कोई बात देखने को मिली जिससे वर्मामें रहनेवाले भारतीयोंके साथ किये गये कठोर दण्डात्मक वरतावका औचित्य सिद होता हो।

वर्मामें रहने का अधिकार सिद्ध करने का जिम्मा हर मामलेमें भारतीय प्रवासी के ऊपर लाद दिया गया है। किसीको भी लगेगा कि कमसे-कम इतना तो किया ही जाना चाहिए था कि समझौतेके लागू होने की तारीखको जो भी भारतीय बमॉ में मौजूद थे, उन सभीको वहाँके पूर्ण अधिवासीके रूपमें स्वामाविक रूपन मान्यता

मिल जाती।

दक्षिण आफ्रिका तथा दूसरे देशोंके आवजन कानूनोंसे मैं परिचित हूँ। वहाँ जो भी प्रतिवन्य लगाये गये कानून पास करके ही लगाये गये हैं और जनमतकी अभिव्यक्तिके लिए काफी समय देने के बाद जब कानून बनाया गया है तब उससे भी पहले कानूनके मात्र प्रस्तावपर विचारोंकी अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त कालका अन्तराल दिया गया है।

केकिन इस मामलेमें समझौतेको गोपनीयता और रहस्यके पर्देमें छिपाकर रखा गया, और अकस्मात ही जब जनतापर इसे प्रकट किया गया उस समय तक किसीको इसकी कोई भनक भी नहीं थीं।

जब हम स्मरण करते हैं कि अभी कुछ वर्ष पहले तक वर्मा भारतका एक अभिन्न अंग था, तव तो यह सारी चीज आर भी वीमत्स प्रतीत होती है।

क्या [भारत आर वर्माका] विभाजन हो जाने से भारत ऐसा अस्पृथ्य देश बन गया है कि वर्मामे रहनेवाल भारतीय निवासियोंको भारी दण्ड मोगना पड़े और अपराधियोंको भाँति अनुमति-पत्र अपने पास रखना पड़े? इन अनुमित-पत्रको 'पासपोर्ट' और 'परिमट'-जैसे निव्होंप नाम देने से ही वह कुछ कम आपित्रजनक नहीं हो जाता। 'पासपोर्ट' और 'परिमट' प्रणालोकी आवश्यकता स्पष्ट हपसे सिंढ कर दी जाये, तभी मैं इस व्यवस्थाके आंचित्यको स्वीकार करने को तैयार हो सकता हूँ। मैं विलकुल नहीं मान मकता कि यह समझौता उस महान वर्मी राष्ट्रकी हुदयकी पुकारके उत्तरमें किया गया है जिसके साथ भारतवासियोका कभी कोई झगड़ा नहीं हुआ और जिसके साथ पिच्चमें विदेशियोंके आगमनके बहुत पहलेसे ही भारतका सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है।

वर्मामें भारतीय या भारतमें वर्मी लोग कभी भी उस अर्थमें विदेशी नहीं हो सकते जिस अर्थमें कि पश्चिमके लोग विदेशी हैं। सैकड़ों वर्णोंसे वर्माके साथ उन्मुक्त व्यापार होता रहा है और भारतके लोग वर्मा जाते रहे हैं।

यह कठोर समझौता भारत और बर्मा दोनोंके लिए एक ऐसा कलंक है

जिसके वे पात्र नहीं हैं।

यह समझीता निर्मम रूपसे यह याद दिलाता है कि भारत तथा वर्मा दोनों बिटिश हुकूमतके पैरों तले दवे हुए हैं और यह भी कि भारत ज्ञासन अविनियम (गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट) और वर्मा श्वासन अविनियम (गवर्नमेंट ऑफ वर्मा एक्ट) ने दोनों देशों के निवासियों को कोई वास्तिवक स्वतन्त्रता नहीं प्रदान की है। वे हमें पूर्ण विकासका कोई अवसर नहीं देते। मुझे यह आर्णका है कि वर्माक प्रवानमन्त्रीको भेरा यह कथन पसन्द नहीं आयेगा। शायद उनके मतमें यह समझौता एक लोक-प्रिय कानून हो। यदि वे अभीतक नहीं समझे हैं तो शीघ्र ही समझ जायेंगे कि यह वात गलत है और इस कदमको उटाकर उन्होंने अपने देशवासियोंकी सेवा नहीं की है बल्कि वे उन लोगोंके हाथोंमें खेल गये हैं जो वर्माका निद्धेन्द्र शोपण करता चाहते हैं। मैं मानता हूँ कि वर्माके लोगणमें भारतीय लोग भी पश्चिमी लोगोंके साझीदार रहे हैं, किन्तु मीलिक अन्तर यह रहा है कि पिक्चमके लोग बन्दूके लेकर वर्मा पहुँचे, जब कि भारतीय वर्मावासियोंकी दयापर आधित होकर गये, जैसे कि वे संसारके सभी भागोंमें गये हैं और हमेशा गये हैं।

वर्मा-वासियोंके सद्भावके विना तो हम एक दिन भी वर्मामे नहीं टिक सकत । में वर्माके मन्त्रियों और वर्माकी जनतासे प्रार्थना कहेंगा कि व बायजनका नियमन तबतकके लिए रोक रखें जबतक कि हम दोनों ही देश ऐसा नियमन करने के लिए स्वतन्त्र और स्वाधीन नहीं हो जाते। मैं यह विश्वास सँजीय हैं कि जब वह शुभ दिन आयेगा - क्योंकि आयेगा वह अवश्य - तब ये सब मामल अपने-आप सलझ जायेंगे. क्योंकि तब हम दोनोंमें से कोई भी देश अपने नागरिक दूसरे देशपर थोपना नही चाहेगा।

किन्त मैं प्रस्तत विषयसे वहक गया। इस समय तो मिरा उद्देष्य यह सिद्ध करने का है कि यह समझौता अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टाचारके प्रत्येक नियमका उल्लंघन करता है और इसलिए रह किया जाना चाहिए। यह समझौता करने के लिए किसी अंग्रेजके बदले एक भारतीयको भेजा गया, यह तथ्य इस समझीतेको और भी अवांछनीय बना देता है। किसी अप्रिय कार्यको सम्पादित करने के लिए किसी भार-तीयको आगे कर देना तो एक प्रानी सुपरिचित चाल है। और यह कहना भी अप्रासंगिक है कि इस समझौतेके पीछे [वर्माके] स्थानीय भारतीयोंकी सहमति थी। कारण, यह समझौता केवल उन्हीं व्यक्तियोंके लिए अपमानकारी नहीं है जिनके कि वर्मामें आधिक हित निहित है, विलक समूचे राष्ट्रका अपमान है। लेकिन यदि इन स्थानीय भारतीयोंकी राय प्रासंगिक भी हो तो भी इस बातका प्रमाण होना चाहिए कि यह राय कितनी व्यापक थी और उसका स्वरूप क्या था।

बेक्स्टर रिपोर्टका, जिसने इस समझौतेकी मूमिका तैयार कर दी, अध्ययन करने पर में देखता हूँ कि उसमें कुछ भी ऐसा नहीं जिससे समझौतेका अीचित्य सिद्ध हो सके। श्री वेक्स्टरके सम्मुख विचारणीय विषय ये थे:

निम्न विषयोंपर जानकारी प्राप्त करने के निमित्त जांच की जायेगी:

१. भारतीय आव्रजनका परिमाण;

२. यह आव्रजन किस हदतक मौसमी और अस्यायी होता है, और किस हदतक स्यायी होता है;

३. भारतीय मुख्यतः किन घन्धोंमें नियुक्त किये जाते है और किस हवतक

वे बेकार या आंशिक रूपसे वेकार रहते है;

४. क्या इन नियुष्तियोंमें भारतीयोंने बर्मियोंको अपदस्य कर दिया है या क्या उनके स्थानपर वर्मी लोग काम सँभाल सकते है, इस वातकी जांच इन धन्घोंके पूर्व-इतिहास और उनकी आर्थिक आवश्यकताओंको ध्यानमें रखकर की जायेः

सर गिरिजार्शकर वानपेयी; देखिए "पत्र: अष्टक्कौरको", ए० २०८-२०९।

२. जेम्स वेवस्टर वर्मा सरकारके वितीय सलाहकार थे। वर्मा सरकारने उन्हें और दो निर्धारकों — क टिन-टुट तथा रतिलाल देसाई-को बर्मीमें भारतीयोंके आवजनके प्रस्तका मध्यपन करने के लिए नियुक्त किया था। बेक्स्टरने अपनी रिपोर्ट वर्मा सरकारको अक्तूबर, १९४० में दी थी।

५. इन सब उपलब्ध ऑकड़ों और दूसरे सम्बद्ध तथ्योंको नजरमें रखकर देखा जाये कि बर्मी लोगोंकी आवश्यकताओंके साथ भारतीय अप्रशिक्षित श्रमिकोंकी संख्याका तालमेल बिठाने की किसी व्यवस्थाकी आवश्यकता है या नहीं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह केवल एक तथ्य-शोवक आयोग था। आयोग ने जिस तथ्यका पता लगाया वह निम्नलिखित है:

ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला जिससे यह प्रकट हो कि जिन नौकरियोंपर बर्मी लोग पहलेसे काम कर रहे थे उनसे भारतीयोंने उन्हें अपदस्य किया हो। ... अबतक भारतीय मजदूर बर्मी मजदूरोंके स्थानपर नियुक्त नहीं किये गये हैं, बल्कि उनके पूरक ही रहे हैं।

इससे तो स्पष्ट ही है कि बर्मामें भारतीयोंके आवागमनपर इस समझौतेके द्वारा लादे गये प्रतिवन्धोंका औचित्य सिद्ध नहीं होता। रिपोर्टमें दिये हुए सुझाव मुझे विचारणीय विषयोंके क्षेत्रसे वाहर प्रतीत होते हैं, इसलिए उनका कोई महत्त्व नहीं होना चाहिए। इसके साथ एक यह तय्य भी जोड़ दीजिए कि निर्वारकोंके मतको रिपोर्टमें स्थान ही नहीं मिला। आयुक्तने उसको कोई महत्त्व वेशक न दिया हो, किन्तु उसका जिक्र तो रिपोर्टमें अवश्य आना चाहिए था।

अब मैं एक क्षण अधिनियमकी प्रासंगिक धाराओं की भी जाँच करूँ। वे इस प्रकार है:

बर्मा सरकार अधिनियम, १९३५ की घारा ४४(३) में कहा गया है:

इस घाराकी उपघारा (२)की व्यवस्थाएँ भारतमें वसी हुई ब्रिटिश प्रजा-पर और किसी भी भारतीय रियासतकी प्रजापर उसी प्रकार लागू होती हैं जिस प्रकार वे यूनाइटेड किंग्डम (ब्रिटेन) में बसी हुई ब्रिटिश प्रजापर लागू होती हैं, किन्तु उस उपघाराकी उक्त व्यवस्थामें जहां-जहां यूनाइटेड किंग्डम कहा गया है वहां-चहां ब्रिटिश भारत, या प्रसंगानुसार सम्बन्धित भारतीय रियासत कहा जायेगा:

शतं यही है कि इस उपधारामें उल्लिखित किसी बातका भारतमें रहने-घाली बिटिश प्रजा या किसी भारतीय रियासतकी प्रजाके वर्मामें प्रवेशके अधिकारपर कानूनन लगाये हुए किसी प्रतिबन्धपर या ऐसे किसी व्यक्तिके वर्मा-प्रवेशकी शतंके रूपमें कानूनन लगाये हुए प्रतिबन्धपर कोई प्रभाव नहीं पढ़ेगा। उसी अधिनियमकी घारा १३८ इस प्रकार है:

सम्राट परिषवीय आदेश द्वारा निर्देश दे सकते हैं कि आदेशमें निर्दिण्ट प्रतिबन्ध उसीमें निर्दिण्ट कालके अन्तर्गत भारतीयोंके बर्मामें आप्रवासपर लागू किये लायें (ये प्रतिबन्ध इस अधिनियमके लागू होने से पहले ही वर्माके सपरि- षड् गर्बनेर तथा भारतके सपरिषद् गर्वनेर-जनरलके वीच तय किये हुए होंगे और इन्हें भारत-मन्त्रीका अनुमोदन भी प्राप्त होगा या, पारस्परिक सहमितिके

अभावमें, भारत-मन्त्री द्वारा ही निर्वारित होंगे ), उनके अलावा कोई दूसरे

प्रतिबन्ध लागु नहीं होंगे:

शर्त यही है कि इस अधिनियनके लागु होने के बाद वर्माके गवर्नर और भारतके गवर्नर-जनरल या सपरिषद् गवर्नर-जनरलके बीच हए किसी समझौते को कार्यान्वित करने के लिए सम्राट जिस रूपमें आवश्यक समझें सपरिपद आदेश निकालकर पूर्वादेशमें कुछ परिवर्तन कर सकते हैं।

पहली घाराको समग्र रूपसे पढ़ने पर ऐसा कुछ भी प्रकट नहीं होता कि वर्तमान आवासी भारतीयोंके मामलेमें कोई दखल दिया जायेगा। दुनरी घारा निर्णायक है।

इस घाराके अनुसार [वमिक ] वर्तमान भारतीय प्रवासियोगर समझीतेके

बारा कोई प्रतिबन्ध थोपा नहीं जा सकता।

मुझे इस विषयमें कोई शंका नहीं है कि भारत-मन्त्रीको सपरिपद् आदेश नहीं निकालना चाहिए और उन्हें समझीते पर अपना अनुमोदन भी रोक लेना चाहिए। जो भी प्रतिबन्ध हो वह बर्माकी विवानसमा कानून बनाकर लगाये और ऐसा वह भारत सरकारके परामर्श और सहयोगसे ही करे।

समझौतेकी जाँच करते समय यह जान लेना भी समीचीन है कि अधिनियमके पारित होने के समय सम्राटके मन्त्रियोने कैसी घोषणाएँ की थी। तत्काळीन समन्वयन तथा प्रतिरक्षा मन्त्री सर टॉमस इंस्किपका इस विषयपर निम्नलिखित आश्वासन था:

कोई व्यक्ति भारतमें रहनेवाली विटिश प्रजा या भारतीय रियासतोंकी प्रजाके बीच उनके बर्मा जाने पर भेदभाव करना नहीं चाहता, ठीक वैसे ही जैसे कि ब्रिटिश भारतमें जाते समय ब्रिटिश लोगोंमें भेदभाव नहीं किया जाता।

तत्कालीन अवर भारत-मन्त्री श्री वटलरने भी काँमन्स समामें कहा था:

अकुशल भारतीय श्रमिकोंके विषयमें दर्माके गवर्नरसे कहा गया है कि वे वर्मामें इन श्रमिकोंके आप्रवासका नियमन करने के निमित्त भारतके गर्वनर-जनरलसे परामर्श करें। हम इस विषयपर कोई सामान्य नियम इस कारण नहीं बना सकते क्योंकि हमें अक्रुशल श्रमिकोंके मामलेमें यह विभेदीकरण तो करना है, किन्तु साथ ही सामान्यतः भारतीयोंके उन्मुक्त रूपसे वर्मा-प्रवेशको भी हम रोकना नहीं चाहते।

अदालतमें इस अधिनियमकी व्याख्या निर्वारित करने में ऐसी घोषणाओंको कोई मान्यता भले न हो, किन्तु राजनीतिक रूपमें उनका महत्त्व हुण्डीके समान ही

है या होना चाहिए।

यह समझीता कपर उद्भृत की गई घोपणाओंका स्पष्ट अतिक्रमण है। मुझे प्रसन्नता है कि जिम्मेदार भारतीय जनमत खूव स्पष्ट शब्दोंमें समझौतेकी मत्सना कर रहा है।

[अंग्रेजीसे] बॉम्बे फॉनिकल, २५-८-१९४१

#### ४१४. पत्र: विजया म० पंचीलीको

सेवाग्राम, वर्वा होते हुए २४ अगस्त, १९४१

चि॰ विजया,

जूनागढ़ से लिखा तेरा पत्र मिला। तुझमें अवल होती, तो तू जूनागढ़का विव-रण लिख मेजती कि वहाँ क्या देखा, क्या सीखा, आदि-आदि। क्या नानाभाई तुझ से कभी नहीं पूछते कि कमाई हुई सारी अक्ल तूने कही सेवाग्राममें गैंवा तो नहीं दी? मेरी तवीयत वहुत अच्छी है, वा की भी। मैंने तुझे लिखा था या नहीं कि प्रभावती और कुसुम फिलहाल यहीं हैं? राजकुमारी सभी भी शिमलामें है, और उसे वुखार और खाँसी है, इसलिए अभी जल्दी यहाँ नहीं आयेगी।

दोनोंको या तीनोंको(?)

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१४०) से। सी० डब्ल्यू० ४६३२ से भी; सौजन्य: विजया म० पंचोली

## ४१५. पत्र: देवदास गांधीको

२४ अगस्त, १९४१

चि० देवदास,

तेरा पत्र मिला। तूने ठीक तर्क किया है। जोखिम तो उठानी ही चाहिए। लेकिन सवाल यह है कि इसमें भी विवेक और मर्यादाकी आवश्यकता होती है। तूने और अधिक सुचना दी है इसके वावजूद तुझे मुख्य न्यायाधीशको लपेटने का अधिकार नहीं मिल जाता। अन्य प्रकारसे भी तू उसका कड़ा विरोध कर सकता है। उस मजिस्ट्रेटने इसे जो स्वैच्छिक कहा, उसकी भी अच्छी तरह खबर ली जा सकती है। उस पंजाबीने जो किया उसपर विस्तारपूर्वक लिखा जा सकता है। यदि तू जोखिम उठाने में अन्तिम सीमातक जाना चाहे तो उसमें मेरी सहमित होगी। किन्तु यहाँ मुझे तेरा मामला कमजोर नजर आता है। किन्तु यदि वकील लोग अनुमित दें तो तुझे तदनुसार करना चाहिए। मैं तेरे उतसाहपर तिनक भी पानी नहीं फैरना चाहता।

महादेव भी वस्वईसे तुझे लिखेगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४३) से

#### ४१६. पत्र: जमनालाल बजाजको

२४ अगस्त, १९४१

चि॰ जमनालाल,

तुम्हारे तारका जनाव दिया है; अब उसका जनाव भी आ गया। महेन्नके विषयमें निश्चिन्तता नहीं है। वर्षोंका रोग भान्त है; पर उसे जड़-मूलसे समाप्त हुआ नहीं मान सकते। वह विशेष खुराक आदि ले रहा है। उसे थकावट भी हो जाती है। ऐसी स्थितिमें उसे खास कामके विना वाहर नहीं निकलना चाहिए। तुम्हें किसी मददकी जरूरत है क्या? है, तो किस तरहकी?

शान्ताको वहाँ बुलाने में मुझे कोई सार दिखाई नहीं देता। अगर उसके हितके लिए है, तो तुम वहाँ पूरा अनुभव लो, उसके बाद उसे स्वतन्त्र रूपमें भेज दिया जायेगा। अगर [तुम्हें] उसकी सेवाकी जरूरत हो तो मुझे लगता है कि उस विषयमें संयम रखने से हो वहाँका पूरा लाभ मिल सकता है। यह मेरी निजी राय है। इतने पर भी तुम जैसा चाहोगे, वैसा मैं करूँगा। शान्तासे पूछना तो अभी बाकी है।

वल्लमभाई छूट गये हैं। उनको पोलीपस की वीमारी नहीं है। इसलिए उनको लेकर जो बहुत डर था, वह तो खत्म हुआ।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२२)से

## ४१७. पत्र: शारदा गो० चोखावालाको

२४ अगस्त, १९४१

चि० वबुड़ी,

मुझे तो मालूम है कि साथ मिलकर रहने में जो आनन्द और जो सुभीता है, वह अकेले रहने में नहीं है। इसीलिए कहा गया है कि स्तेही जनोंकी भीड़ भी अच्छी। आनन्दके दस्तोंके लिए दूषमें एक चम्मच चूनेका पानी मिलाना चाहिए या सौंफका पानी। चूनेका पानी घरमें तैयार किया जा सकता है। कलर्डके चूनेमें अपरसे पानी उँड़ेलने से उसमें उफान आयेगा और बादमें आकाश जैसा निर्मल पानी अपर नियर आयेगा। इस नियरे पानीको शीशीमें भरकर रख लेना चाहिए और एक चम्मच दूषमें डालकर देना चाहिए। एक चम्मच सौंफ आठ आउन्स पानीमें उवालकर पानीको छान लेना चाहिए और उसको एक चम्मच दूषमें डालना

१. ज्ञान्ता रुस्या

त्राहिए। इस प्रकार एक वार चूरेका और एक वार सींफका पानी देते रहना चाहिए। इससे लाभ अवस्य होगा। रोटी एक-दो दिन मत देना।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३६) से। सीजन्य: शारदा गी० चोखावाला

## ४१८. पत्र: अद्वैतकुमार गोस्वामीको

२४ अगस्त, १९४१

भाई अद्वैतकुमार,

तुम्हारा खत मिला है। तुमको सलाह देना कठिन है। वगैर परिचयके क्या कह सकता हूं। फिर भो इतना तो स्पष्ट है कि तुम्हारे निश्चयनान् वनने के लिये सब छोड़कर कुछ अरसेके लिये कुछ ऐसा उद्यम करना चाहिये जिससे तुम्हारा खर्च अच्छी तरह निकल सके। जो मनुष्य अपना बोज अपने आप उठाता है और किसीको कष्ट निह देता है वह भो एक प्रकारकी देशसेवा करता है।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १४९) से। प्यारेलाल पेपर्संसे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

#### ४१९. तार: जमनालाल बजाजको

वर्वा २५ अगस्त, १९४१

सेठ जमनालालजी शिवालय रायपुर, देहरादून

शान्ताकी अपनी कोई इच्छा नहीं। आप जैसा चाहें वैसा करने को तैयार हैं। मेरी राय है कि उसे वहाँ वादमें भेजना ठीक रहेगा। क्या आपको किसी सेवाकी जरूरत हैं? कल [मैने आपको] विस्तारसे छिखा है।

वापू

[अंग्रेजीसे] पाँचवें पुत्रको वापूके आशीर्वाद, पृ० २४३

१. देखिए प्र २८९।

### ४२०. पत्र: अमृतकौरको

२५ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

आज तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया। इसिल्ण् तुम देखोगी कि यह अनिय-मितता इकतरफा नहीं है। और यह तो नियमित अनियमितता हं! लेकिन हमें भगवानका आभार मानना चाहिए कि और ज्यादा अनियमितता नहीं है अथवा हमें कैसी भी डाक-सेवा उपलब्ध है। आज जैसी डाक-व्यवस्था है वैसी पचास वर्ण पूर्व नहीं थी। राजकोट और पोरवन्दरके बीच हमें विशेष सन्देशवाहक भेजने पड़ते थे। इसिल्ण् जब मुझे कोई पत्र मिलता है तो इतने हे ही सन्तुष्ट हो जाता है। अधिकारोंका परित्याग करने से विशेष सुखका अनुभव होता है।

अन्तपूर्णा मन्द ज्वरसे विस्तरपर पड़ी है। कारण समझमें नही आता। आशा है, थोड़े दिनोंमें ज्वर उत्तर जायेगा।

सप्रेम,

वापू

मूळ अंग्रेजी (सी॰ डव्ल्यू० ४०५९) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३६८ से भी

#### ४२१. पत्र: चन्देलको

२५ अगस्त, १९४१

भाई चन्देल,

तुमने अपने कार्यंका जो विवरण दिया है वह बहुत आकर्षक है। निःस्वायं भावसे किये गये कामका परिणाम हमेशा अच्छा होता है। जो लोग इसका विरोध कर रहे है उनकी और ध्यान न दो, विल्क उनके प्रति दया-भाव रखों और जब-कभी तुम्हें सेवा करने का मौका मिले तब उनकी मदद करने की भरसक चेष्टा करों, अर्थात् यदि वे बीमार पड़ जायें तो ठीक करने की कोशिश करो। घृणाको प्रेमन और फोचको धैर्यसे जीतने का यही तरीका है। अपने प्रति कहे गये कटु चचनों का उत्तर हमें हमेशा मौन रहकर देना चाहिए।

वापूके आशीर्वाद

[अंग्रेजीसे] बापू - कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद महात्मा गांघी, पृ० १९५-९६

#### ४२२. पत्र: वी० राघवय्याको

२५ अगस्त, १९४१

प्रिय राघवय्या<sup>1</sup>,

आपका कहना ठीक है। एक बार सत्याग्रहमें माग छेने का निश्चय करने के वाद आपको इस आधारपर उससे छुटकारा माँगना कोई वाजिव कारण नहीं है कि आप दूसरे काममें व्यस्त हैं। छेकिन यदि आप आग्रह करते तो मैं फिर भी आपको छूट दे सकता था। छेकिन आप-जैसे व्यक्तिके छिए कुछ समयके छिए सत्या-ग्रहकी सूचीसे अपना नाम वापस छे छेना ही अच्छा है। इससे आपपर कोई दोष नहीं आयेगा। छेकिन इसका निर्णय मैं आपपर ही छोड़ता हूँ।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

श्री वी॰ राघवय्या, वी॰ ए॰, वी॰ एछ॰ नेल्लूर

अग्रेजीकी नकल (सी० डक्ट्यू० १०४४७) से। सीजन्य: के० लिंग राजू

## ४२३. पत्र : सर्वपंत्ली राधाकृष्णन्को

२५ अगस्त, १९४१

प्रिय सर रा[धाक्काण्णन्],

आपका आग्रह टाल सकना असम्मव है। मेरे लिए आगामी २१ जनवरीकी तारीख आप अस्थायी तौरपर तय कर सकते हैं। अवसे २१ जनवरीके वीच क्या-कुछ हो जाये, मैं खुद नहीं जानता। जवतक सम्मव हो, तवतक कृपया इसका प्रचार न करें।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

[अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२. एक कांग्रेसी तथा आदिवासी समाज-करपाण कार्यंकर्ता, जो येनादि राघवय्यांके नामसे प्रसिद्ध थे।

२. बनारस हिन्दू विश्वविद्याध्यके रजत-जयन्ती समारोहके छिप २९२ं

#### ४२४. पत्र: जमनालाल बजाजको

२५ अगस्त, १९४१

चि॰ जमनालाल,

इसके साथ शान्ताका पत्र है। वहाँ पहुँचते-पहुँचते अक्षर अस्पष्ट हो जायें और न पढ़े जायें तो पढ़ने की तकलीफ मत उठाना। उसका सार मैने आजके तारमें दिया है। ज्ञान्ताकी इच्छा नहीं है और अनिच्छा भी नहीं है। वह तो तुममें समा गई है। अर्थात्, जो तुम्हारी इच्छा वही उसकी इच्छा। यह है भी ठीक। इस कारण प्रश्न केवल उसके हितका रहता है। यदि तुम वहाँ बहुत अधिक समय रहनेवाले हो तो शान्ता वहाँ जाकर कुछ प्राप्त भी कर सकती है। मेरे खयालसे तो उसे वहाँ तुम्हारी अनुपस्थितिमें रहना चाहिए। कदाचित उसे वहाँ रहने की जरूरत भी न हो। मन्ति तो उसमें है। अब विचारणीय यह है कि वहाँका वातावरण उसे सिक्रय बनाता है या नहीं। वह इस जन्ममें तो किसी अन्यको गुरु बनानेवाली नहीं है। उसके गुरु तो तुम ही हो। इस कारण तुम्हें तो उसे आज्ञा ही देनी है। इस पत्र-व्यवहारमें ही तुम्हारा वहाँ रहने का समय पूरा हो जायेगा। अगर तुम्हे वहाँ शान्ति मिलती हो, और जो चाहते हो वह मिल जाता हो, तो वहाँसे हटना नही। अगर वहाँ रहने का निश्चय करो या और कुछ तय करो, लेकिन अगर पान्ताकी वहाँ उपस्थिति चाहते हो तो तार देना। मैं उसे रवाना कर दूँगा। तुम्हारे तारमें विचारके लिए अवकाश था। इस कारण ही तार भेजा और जवाव मेंगवाया। महेश और शान्ता, दोनोंके विषयमें विचार करने की बात तो यी ही। इससे तो मैंने यही समझा कि दोनोंको उनकी खातिर वुलाया गया है, तुम्हारी सेवाकी खातिर नहीं। अगर बुलाने का हेतु सेवा ही हो तो इसपर अलग ढंगसे विचार किया जाना चाहिए।

अाज सरदारके कोई खास समाचार नहीं हैं। आशा है कलका पत्र मिल गया

होगा। मदालसा मजेमें है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२३)से

#### ४२५. पत्रद्धः दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

२५ अगस्त, १९४१

चि॰ काका,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अगर अगस्तके अन्ततक रोगमुक्त हो जाओ, तो बहुत अच्छा हो। लेकिन जल्दी विलकुल मत करना। यदि तुम पूर्ण रूपसे स्वस्थ हो जाओगे, तो निश्चिन्त होकर काम कर सकोगे।

इलाहाबाद तो जरूर जाना। वहाँ जाने से पहले मेरे साथ चर्चा कर लेना। अमृतलालने मुझसे कुछ नहीं कहा। अरे जो भूल न करे, वह भी नया आदमी? चींचल क्या करता है? और मैं भी क्या करता हूँ? मुझे याद है कि देशबन्धु दासने मुझपर इसी शब्दकी वर्षा की थी। हम जब जानें, तब भूल सुधार कर आगे बढ़ें। फिर भूलें, फिर सुधारें। और अब तो रेहाना तुम्हारे पास है, वह हिम्मत बैंघाती होगी। हाँ, यह बात जरूर है कि मैं तुम्हारे ऊपर कोई नई जिम्मे-दारी नहीं लाईंगा।

सम्मेलनके साथ सम्बन्ध क्रुत्रिम उपायोंसे नहीं टूटेगा। जब इसे टूटना होगा तब तो यह स्वमेव टूट जायेगा। हमारा प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि यह सम्बन्ध टूटे नहीं। श्रीमनको इलाहाबाद जरूर जाना पड़ेगा।

तुम प्रयाग जरूर जाना। वहाँ तुम वहुत-से काम सहज ही निपटा छोगे।

लेकिन जाना बिलकुल स्वस्थ होकर ही।

रेहानासे कहना कि उसके दोनों पत्र मिल गये हैं। दोनों ही ऐसे हैं जिनका जवाब दिया जाना चाहिए, लेकिन मैं चुप्पी साधे रहूँगा। पत्रके द्वारा थप्पड़ मारने के बदले जब वह यहाँ आयेगी तब खुद ही उसे थप्पड़ लगाऊँगा; सरोजको भी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ १०९५०)से

व० मा० हिन्दी साहित्य सम्मेखन

२. श्रीमन्तारायण

#### ४२६. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

२५ अगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

अब तुम्हारो बोरसे कोई नई सामग्री नहीं आनी चाहिए। अब जो रिपोर्ट भेजो, वह अन्तिम होनी चाहिए। दोनों पक्षोंमें सं यदि कोई और कुछ कहना चाहे, तो वह अपना वक्तव्य सीधे मेरे पास भेजे। तुम्हारी रिपोर्ट मिल जाने के बाद मैं तुम्हें जिम्मेदारीसे मुक्त मानूंगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२५) से

### ४२७. पत्र: हीरालाल शर्माको

२५ अगस्त, १९४१

चि० शर्मा,

तुमारा १६ ता॰ का खत मिला है। आज तार मिला। तार क्यो? मैं कैसे तारसे जंतर दूं? मेरा मतलब स्पष्ट था। जो वस्तु दे दी गई है उसमें से हम और हमारे आशा न रखे। द्रौपदीकी दलीलको स्थान नहिं है। तुमारा कहना ठीक है कि तुमारे परिश्रमका नतीजा यह न होना चाहिये कि उस वस्तुका दूसरा उपयोग न हो। इतना भय क्यों? अविद्वास क्यों? तुमारे कार्यमें रत रहो और सब अच्छा हि हो जायगा।

दा॰ सुशीलाकी मदद तो हम ले सकेंगे। यह वर्ष उसके लिये कठिन है। एम॰ डी॰ की तैयारी कर रही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३०३। प्यारेलाल पेपर्स मी; सीजन्य: प्यारेलाल

१. हों॰ सशीला नैयर

#### ४२८ पत्र: मीराबहनको

२६ अगस्त, १९४१

चि॰ मीरा.

ऋग्वेद यहाँ कल पहुँच जाना चाहिए।

अपनी बीमारीके वारेमें तुमने कुछ नहीं वताया। दवाका क्या असर हुआ? साथमें ईसवगोल भेज रहा हूँ। अगर तुमने कसकरा नहीं लिया हो तो ईसवगोलके बीजका आवा चम्मच जैसा-का-तैसा लो। निगलने के लिए ऊपर से पानी पी लो। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ६४८८) से; सौजन्य: मीरावहन। जी॰ एन॰ ९८८३ से भी

#### ४२९. तार: श्रीनारायण जयनारायणको'

२७ वगस्त, १९४१

यदि प्रान्तीय अध्यक्ष सहमत हों तो मुझे कोई आपत्ति नही है। गाँधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सीजन्य: प्यारेलाल

यह तार श्रीनारायण जयनारायणके २५ अगस्तके तारके जबाबमें था, जिसमें उन्होंने गांधीजी से अनुरोध किया था कि चिखली नगरपाल्किकों अध्यक्षको अपना त्यागपत्र अस्थायी तौरपर बापस के केने की अनुमति प्रदान की जाये, क्योंकि काम अधुरा पड़ा है।

### ४३०. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम, वर्षा (सी॰ पी॰) होते हुए २७ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

बेशक मैंने अपने जीवनकालमें स्वराज देखने की बाशा नहीं छोड़ी है। तुम्हारे छीटने पर मैं इस वातका खयाल रखूंगा कि तुम्हारे सन्दूकको कांडे क्षति न पहुँचे।

मुझे खुशी है कि तुम प्रकाशसे मिली और उसे आमन्त्रित किया। उराका विवाह अभी नहीं हुआ है। जिसका विवाह हुआ या वह तो सत्या है। प्रकाण बेतियामें है।

कुसुम आज जा रही है। सप्रेम.

वापू

पूनश्च:

. अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके कामसे गोसीवहन यहाँ आई हुई है। केसकर । का पत्र साथमें है। नरेन्द्रदेवको तुम जानती होगी। म॰ या जिसे तुम चाहो उसे लिखना और जो-कुछ किया जा सकता हो, करना।

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०६०) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन० ७३६९ से भी

१. बालकृष्ण विश्वनाथ केसकर

सांग्रेस समाजवादी दलके नेता भाषाय नरेन्द्रदेव, जो उन दिनों छेलमें बहुत बीमार ये।

### ४३१. पत्र: शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

२७ अगस्त, १९४१

प्रिय शैलेन,

तुम तो कभी कुछ सीख ही नहीं सकते। "Encloser" गलत है; "Enclosures" होना चाहिए। "Newspaper" एक शब्द है, इसे अलग-अलग "news paper" नहीं लिखना चाहिए। "Hope you must have decided" नहीं, "Hope you have decided" होना चाहिए। कुछ तय नहीं हुआ है। कोशिश कर रहा हूँ। तुम्हें डायरी लिखना बन्द कर देना चाहिए। यह समय की बर्बादी है। तुम जो पुस्तक पढ़ रहे हो उसका आशय अपने शब्दोंमें लिख मेजो। शब्दकोष पास रखी।

तुम्हारा, बापू

#### पुनश्च : ]

परिचय परीक्षा में घीरेन अच्छा रहा है। तुम्हें भी अपनी हिन्दी ठीक करनी चाहिए।

श्री शैलेन्द्रनाथ चटर्जी प्रीमियर स्टोसं सप्लाई कं० सीताबल्डी नागपुर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्स्यू० १०३२१) से। सीजन्य: अमृतलाल चटर्जी

र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्षा द्वारा बायोजित परीक्षा २९८

#### ४३२. पत्र: मार्गरेट जोन्सको

२७ अगस्त, १९४१

प्रिय कमला,

तुम्हारा पत्र मिला था। तुम्हारी वात ठीक है। स्थायी मूल्यकी चीजोमें शहर के लोग रुचि नहीं लेंगे। मेरीके आने में विलम्बसे खीज होती है। सप्रेम,

वापू

[अंग्रेजीसे] बापू - कन्वर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पोंडेन्स विद सहात्मा गांघी, प्० १९६

## ४३३. पत्र: घीरूभाई भू० देसाईको

२७ अगस्त, १९४१

चि॰ घीरूमाई,

तेरे बारेमें मेरे पास काफी शिकायतें आई है। कहा जाता है, तू जहाँ-तहाँ कहता फिरता है कि यह छड़ाई अब वन्द होनी ही चाहिए, और हमें फिरसे धामन की वागड़ोर अपने हाथमें छे छेनी चाहिए, वगैरह, वगैरह। अगर यह वात सच हो तो मुझसे कहना चाहिए न? अगर तेरे ऐसे विचार हों तो उन्हें प्रकट करने में कोई दोष नहीं है। लेकिन यदि तेरे ऐसे विचार हों तो फिर तू बी॰ पी॰ सी॰ का अध्यक्ष कैसे रह सकता है? हाँ, एक शर्तपर रह सकता है—यदि वी॰ पी॰ नी॰ सी॰ के बहुमतके भी ऐसे ही विचार हों। लेकिन अगर ऐसा हो तव भी मुझे खबर तो मिलनी चाहिए। जैसा हो मुझे निःसंकोच लिख। अगर ईमानदारीसे हमारा कोई मत हो तो उसे खिपाने की कोई जरूरत नहीं है।

तुम दोनों को

मूल गुजरातीसे: मूलामाई देसाई पेपर्स । सीजन्य: नेहरू स्मारक मंग्रहालय तथा पुस्तकालय

### ४३४. पत्र: बलवन्तिंसहको

२७ अगस्त, १९४१

चि॰ बलवन्तसिंह,

तुम्हारे मनमें खयाल यह रहना चाहिये कि यदि तुम्हारी तपश्चर्या शुद्ध होगी तो यहीं वापिस आ जाओगे। कहीं भी रहो, उर्दूका अभ्यास नहीं छूटना चाहिये। हिन्दी अक्षर अच्छे बनाने चाहिये। खेती और गोपालनके शास्त्रका अभ्यास बढ़ाना।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें, पृ० २८९

# ४३५. पत्रः अमृतकौरको

२८ अगस्त, १९४१

प्रिय पगली,

देखता हूँ कि वहाँ भी मैं तुम्हें काममें व्यस्त रख सकता हूँ। कल मैंने तुम्होरे पास नरेन्द्रदेवका मामला भेजा है। संलग्न कतरन पढ़ लेना। इस सम्बन्धमें अगर कुछ कर सको तो करना। शायद तुम सबसे उपयुक्त माध्यम हो। सरूप कुछ कर रही है। समाचारपत्रोंके विवरण इतने एकतरफा हैं कि सही वात मालूम करना कठिन हो गया है।

भारत और वर्माके वाहियात समझीते पर मैंने एक वक्तव्ये दिया है। पता नहीं, जो अखवार तुम्हें मिलते हैं उनमें वह प्रकाशित हुआ है या नहीं। वाजपेयीसे मिलो तो कहो कि इस राष्ट्रीय अपमानमें उनको शरीक देखकर मुझे वहुत दुःख हुआ है। उनके पास अपनी सफाईमें कुछ कहने को हो तो मैं उसे जानना चाहूँगा। इस मामलेमें उनका जो हाथ है, उसके सम्बन्धमें मैंने वहुत थोड़ा कहा है।

सप्रेम.

वापू

- गांधीजी के अनुरोधपर बळवन्तसिंहने सेवाग्राम बायम छोड़ हेने का फैसळा किया था, न्योंकि वह अपने गुस्सेपर कालू पाने में असमर्थ थे। छेकिन बाखिरकार वे बायम छोड़कर नहीं गये।
  - २. यह उपकन्ध नहीं है।
  - ३. विजयलक्सी पण्डित
  - ४. देखिए पु० २८३-८७।

#### [पुनश्च:] ।

इतना डाक आने से पहले लिख चुका था। सेवांके लिए कोई जल्दी नहीं है। इजाजत तो मैने दें दी है, लेकिन कोई अधिकार नहीं प्राप्त किया है।

शाहका पत्र साथमें मेज रहा हूँ।

जैसा ठीक लगे वैसा करना। जन्हे अपनी लड़ाई आप ही लड़ने देना शायद बेहतर होगा।

प्रमाकरको कल ज्वर था। अन्नपूर्णाको मन्द ज्वर रहता है।

बेशक, और वहुत-सो चीजोंकी तरह तुम्हारे हिज्जे मी पहलेसे वेहतर है। तुम्हारा स्वास्थ्य भी पहलेसे अच्छा होना चाहिए।

सप्रेम,

वापू

#### [पूनः पुनश्च:]

अभी-अभी मालूम हुआ है कि विपाणु और कीट-नाशक दवा रामदासने पहले ही मैंगा ली थी। अतः अगर तुमने न मैंगवाई हो तो रहने देना।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६१) से; सीजन्य : अमृतकीर। जी० एन० ७३७० से भी

# ४३६. पत्र : शैलेन्द्रनाथ चटर्जीको

२८ अगस्त, १९४१

प्रिय शैलेन.

तुम्हें वापस तो आना ही है। इसिलए जितनी जल्दी हो सके, आ जाओ। हृदयसे तुम्हारा,

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०३२२) से। सीजन्य: अमृतलाल चटर्जी

गांचीजी के कहने पर शैकेन्द्रनाथ चटर्जी हिसाब-किताब रखने का काम सीखने नागपुर गये थे ।

### ४३७. पत्र: जी० एल० खानोलकरको

सेवाग्राम २८ अगस्त, १९४१

प्रिय खानोलकर,

आपका तार मिला, और पत्र भी। मेरा विजयलक्ष्मीवहन व अन्य लोगोंस पत्र-व्यवहार चल रहा है और मैं अपनी ओरसे हर सम्भव प्रयत्न कर रहा हूँ। आपको उस प्रकारके व्यवहारके वारेमें पता कैसे चला? या आप समाचारपत्रोंमें प्रकाशित खबरोंपर निर्मर कर रहे हैं? आपको जो भी जानकारी मिल्ल सके, मेरे पास मेजते रहिए। कानपुरमें आप क्या कर रहे हैं?

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

### ४३८. पत्र: नटवरलाल वेपारीको

२८ वगस्त, १९४१

भाई नटवरलाल,

तुम्हारा २५ तारीखका पत्र आक्चर्यमें डाल्नेवाला है। तुम हिसावकी जांच करनेवाले के बदले शिकायत करनेवाले हो गये। तुम्हारे खिलाफ अगर मुझे शिकायते मिलें भी, तो मैं उनकी जांच थोड़े ही करनेवाला हूँ। मेरी नजरमें तो अपनी रिपोर्ट पेश करके तुम जिम्मेदारी से वरी हो गये हो। सच तो यह है कि हिसावकी जांच करके तुमने उपकार किया है। तुम दुःखो क्यों होते हो? जो कागजात तुम्हारे पास हैं उनपर तुम जैसी चाहो वैसी टिप्पणी लिख सर्कते हो। यदि तुम्हें ठीक लगे तो कागजात वच्छराज कम्पनीको सींप दो। या तुम कहो तो वे लोग किसी वक्तिलके यहाँ रख दें। नवजीवन कार्यालयको हिसावकी वहियोंकी वार-वार जरूरत पड़ती रहती है। तुमने उन लोगों पर जो आरोप लगाया है, उसकी जांच मैं करूँगा तो अवक्य, लेकिन मुझे स्वीकार करना चाहिए कि उनकी जांच करने का जिम्मा मैंने नहीं लिया और न उनपर मुझे कोई सन्देह ही है। सबने चन्ट- शंकरके साथ मिलकर षड्यन्त्र किया है, यह सब मैं जल्दी नहीं मान सकता। तुम्हारी लिखी कुछ वार्ते मुझे विचित्र लगी हैं, लेकिन उनके लिए मैं तुम्हें दोप ३०२

नहीं देता। इंमानदारीसं जो तुम्हारी समझमें आया, वह तुमने लिखा है। अब मुद्दों इस सबमें से सत्यको खोज निकालना है।

वापूके आधीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०१२६) मं

४३९. पत्र : हर्षदा दीवानजीको

२८ अगस्त, १९४१

चि० हर्षदा,

तुम्हारा पत्र और दस रुपयेका नोट, दोनों मिलं। तुम्हारा नियम-पालन करने का ढंग बहुत अच्छा है। सूत मुझे भेजने की जरूरत तो है ही नहीं, वित्य काकू-भाईको न भेजो, तो भी कोई हर्ज नहीं। तुम उसे बेशक खरीद सकती हों। अतः तुम उसकी जितनी कीमत समझों, उतने पैसे भेज दों, तो यह काफी होगा।

चि॰ अभिमन्युकी आँटी बहुत अच्छी है। सूत महीन और एकसार लगता है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९९५५) से

४४०. पत्र : शिवानन्दको

२८ अगस्त, १९४१

चि॰ शिवानन्द,

तुमने अच्छा विस्तृत पत्र लिखा है। फूलचन्दसे कहना कि हिम्मत न हारे।
मृत्युक्षस्या पर पड़े लोग उठ बैठे हैं, और हुष्ट-पुष्ट दिखाई देनेवाले लोग जमुहाई
लेते-लेते कूच कर गये हैं। हम लोग नटके इशारे पर नाच रहे हैं, इसलिए सम्चित
प्रयत्न करने के बाद भी अगर जाना पड़ा तो हँसते-हँसते जाना चाहिए।

फूलचन्दने तो बहुत-कुछ किया है। यह वाक्य लिख ही रहा था कि मिलने-

वाले लोग आ पहुँचे।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ २८७२)से। सीजन्य: शारदा फूलचन्द शाह

१. कूकचन्द कस्त्र्वन्द शाह

#### ४४१. पत्र: लीलावती आसरको

२८ अगस्त, १९४१

चि॰ लीली,

तेरा पत्र मिछा। मुझे लगता है कि तूने जो पत्र लिखा है वह अच्छा नहीं कहा जा सकता। और फिर उसे न्यासियोंको भेजने की क्या जरूरत थी? उसमें तेरा भी दोष तो था ही। नौकरोंके साथ छात्रोंका कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। अगर वे सौंफ नहीं देते, तो उससे क्या हुआ? और यदि तुझे चाय न मिले तो गम खाना चाहिए। ऐसी तुच्छ बातोंके लिए झगड़ने की शिक्षा भी क्या तूने यही पाई है? जो हो, तेरी तरफरी महादेवको तो माफी माँगनी ही पड़ी है।

और तेरा लिखाई-पढ़ाईके मामलेमें हिम्मत हारना भी ठीक नहीं है। वहाँ तो कोई गुलाम नही है। लेकिन हाँ, तू अपने व्यसन और अपने कोवकी गुलाम जरूर है। यह सब तुझे सुधार लेना चाहिए। लेकिन अगर तू यह किसी प्रकार सुधार ही न सकी, तो मैं समझता हूँ कि तेरा वहाँ रहना मुश्किल होगा। ईरानीकी चाय पीने की भी भनाही समझ, क्योंकि आदेश तो यह है कि चाय एक ही बार मिलेगी? महादेवभाईके पास ही जाकर धीरंजके साथ उनसे अपने वर्मको समझ और उसका पालन कर।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८२) से। सी० डब्ल्यू० ६६५७ से भी; सौजन्य: लीलावती आसर

## ४४२. पत्र: कंचन मु० शाहको

२८ अगस्त, १९४१

चि० कंचन,

तेरे कार्डका क्या यह मतलव है कि तेरे वहाँ जाने से खर्चका बोझ बढ़ गया है और इसिल्ए तुझे नहीं जाना चाहिए था? अगर ऐसा कुछ हो, तो यह मानने की कोई जरूरत नहीं है कि तुझे वहाँ रहना ही चाहिए। तू वापस भी आ सकती है, या फिर सावरमती या और कहीं भी जा सकती है। मुझे ज्योरेवार लिखना। आशा है, तेरी तबीयत ठीक रहती होगी। चौलाई या इसी तरहकी कोई माजी खाना। आञा है, फल तो तू खाती ही होगी। पाखाना साफ होना चाहिए। क्या वहाँ बारिश अच्छी हुई?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७२) से। सी० डब्ल्यू० ७१५५ मे श्री; सीजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

## ४४३. पत्र: प्रफुल्लचन्द्र घोषको

२९ अगस्त, १९४१

त्रिय प्रफुल्ल,

तुम्हारे पत्रका उत्तर देने में देर हुई है।

जिस खतरेकी आशंका थी, सरदारको वह नहीं है। क्षीण तो बहुत हो ही गये हैं और उन्हें अभी बराबर ठीक देख-रेख में रहना है।

किशोरलाल आश्रममें ही है। वस स्वस्य ही है।

खान साहबने सारे दाँत निकलका दिये। निकलकाना ही ठीक या। राजेन बाबू अभी भो ठीक नहीं है। सितम्बरमें उनके यहाँ आने की उम्मीद है।

हाँ, डाँ० आशुतोष दासकी मृत्युका समाचार मिला था। मैंने एक समवेदना सन्देश भी भेजा था। वै वास्तवमें एक महान और अच्छे राष्ट्र-सेवक थे। ऐसे दु:खद प्रसंग तो आते ही रहेंगे। हमें उन्हें सहना है। आश्रममें मलेरिया लगभग नहीं है। लेकिन जब-तब आश्रमवासियों पर ज्वरका प्रकोप होता रहता है। यह कैंसा ज्वर है, मालूम नहीं है। ठीक शुश्रूषासं ज्वर दूर हो जाता है।

आज्ञा है, तुम सब ठीक-ठाक होगे।

तुम्हारा, वापू मो० क० गांघी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७८२) से

१. देखिए "पत्रः रत्नमणि चटर्नीको", ए० २२८। ७४--२०

#### ४४४. पत्र: नारणदास गांधीको

सेवाग्राम २९ अगस्त, १९४१

चि० नारणदास,

तुम बहुत दिन जियो और खूव सेवा करो। मैं जाजूजीको वहाँ भेजूँगा। तुम तो जानते ही हो, वे साधु पुरुष है। चरखा संघके प्राण है। वे वड़े वकील थे, किन्तु आज फकीरकी तरह रहते हैं।

वह तुम्हें एक हफ्ता देंगे। यदि इससे कममें काम चला सको तो देखना। मुझे तारीख वगैरह लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५९१ से भी; सीजन्य: नारणदास गांधी

## ४४५. पत्र: अमृतकौरको

२९ अगस्त, १९४१

चि॰ अमृत,

आज मैने अ० मा० ग्रामोद्योग संघकी एक वैठक रखी थी। अभी-अभी खत्म हुई है, श्रामके लगभग साढ़े चार वजे। आशा है अब तुम काफी बेहतर होगी। सप्रेम,

बापू

श्री राजकुमारी अमृतकौर मैनरविल शिमला

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६२) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३७१ से मी

## ४४६. गुरुदेव

सर्वेदिय सर्वके उदयके लिए है। गुरुदेव भी हिन्दुस्तानकी सेवाकी मारफत सारे जगत्की सेवा करना चाहते थे। और संवा करते-करते चले गये। चले गये — लेकिन प्रयोग अबूरा है। उनका शरीर ही गया है। उनकी आत्मा तो अमर है, जैसे हम सबकी है। और इस अर्थमें न कोई मरता है, न जन्मता है। गुरुदेव विशेष अर्थमें जिन्हा है। उनकी प्रवृत्तियाँ ऐसी व्यापक थी और प्राय. सभी ऐसी पारमाधिक थी कि उनकी मारफत वे अमर रहेंगे। शान्तिनिकेतन, श्रीनिकेतन, विश्वभारतो — ये सब एक ही कृतिके नाम है। वे गुरुदेवका प्राण थी। उन्हींके लिए ही दीनवन्यू गये और वादमें गुरुदेव। लेकिन गुरुदेव आज कही भी विराजमान हों, वहींस वे अपनी कृतिको देख रहे हैं। उसीको स्थिर रखने में हम यथाशिवत हिस्सा ले, यही सच्ची श्रद्धांजिल है।

सेवाग्राम, ३० अगस्त, १९४१ सर्वोदय, सितम्बर, १९४१

#### ४४७. तार: जमनालाल बजाजको

वर्घागंज ' ३० अगस्त, १९४१

सेठ जमनालालजी मार्फत हरनन्दराय सूरजमल कनखल सबकी ओरसे माताजी का स्वागत है।

वापू

[अंग्रेजीसे] पाँचवें पुत्रको वापूके आशोर्बाद, पृ० २४७

 अपने २६ अगस्त, १९४१ के पत्रमें जमनाष्ठाळ बजाजने सुद्धाव दिया था कि भानन्दमपी देवीको गांधीजी से मिळने के लिए वर्धा माने को निमन्त्रिन किया जाये।

## ४४८. पत्र: जे० सी० कुमारप्पाको

३० अगस्त, १९४१

प्रिय कु[मारप्पा],

तुम तो जल्दवाजी कर रहे हो। जब तुम अपने सी वर्ष पूरे कर छोगे और तवकी उम्रको देखते हुए तुम्हारा रक्तचाप सीमासे अधिक नहीं बढ़ेगा, तब तुम पुर-स्कारके अधिकारी बनोगे।

सप्रेम,

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५८)से

#### ४४९. पत्र: लीलावती आसरको

३० अगस्त, १९४१

चि॰ लोली,

तेरा पत्र मिला। तिलोत्तमाको लिखा तेरा पत्र अच्छा है। आशा है, वहां सब ठीक हो गया होगा। देखना, अब ऐसी मूल मत करना। इस बातका ब्यान रखना जरूरी है कि तू वहां मुफ्त रहती है। जब तेरा अपमान हो ही जाये तो उसका उत्तर किसीका अपमान करना नहीं, बल्कि उस संस्थाका त्याग ही हो सकता है। लेकिन ऐसा तो वहां होता ही नहीं। परोपकारी संस्थामें ऐसा हो नहीं सकता। अपना सच्चा अपमान तो हम स्वयं ही करते हैं।

अगर तेरा मन शान्त हो गया हो तो यहाँ आने की जल्दी मत करना। थोड़ी-सी आवश्यक मदद लेकर अपनी पढ़ाई पक्की कर ले और उसमें होशियार वन जा। प्यारेलाल खूटकर आ गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३८३) से। सी० डब्ल्यू० ६६५८ से मी; सौजन्य: लीलावती आसर

### ४५०. प्रस्तावना: 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस'के लिए

यह मात्र एक संयोग है कि 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस' पर लिखे ये लेख पुस्तिकाक रूपमें रिचर्ड ग्रेगकी 'एडिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस" के साथ-साथ प्रकाशित किये जा रहे हैं। अहिंसा-मक्तोंको दोनोंको साथ-साथ पढ़ना चाहिए। किरोरलाल मश्रक्ष्वाला रिचर्ड ग्रेगकी ही तरह अहिंसा ग्रास्त्रके गम्भीर अध्येता है। यद्यपि उनका पालन-पोषण ही उस आस्थाकी गोदमें हुआ है, फिर भी वे किसी चीजको आंख वन्द करके कभी स्वीकार नहीं करते। वे उसीमें विश्वास करते हैं जिसकी सचाईको वे परख चुके होते हैं। इस तरह अहिंसाको उन्होंने बहुत सोच-समझकर अपनाया है। अपने जीवन और व्यवहार द्वारा राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और घरेलू आदि विभिन्न क्षेत्रोंमें वे इसकी प्रभावकारिता सिद्ध कर चुके है। इसलिए उनके लेखोंका अपना अलग महत्त्व है। जो अहिंसामें विश्वास करता है उसके विश्वासको वनाये रखने में ये उसकी मदद करेंगे, और जो ईमानदार है पर जिन्हें अहिंसामे सन्देह है उनके सन्देहको ये दूर करेंगे।

मो० क० गांधी

सेवाग्राम, ३१ वगस्त, १९४१ [अंग्रेजीसे] प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस

## ४५१. एक कूट समस्या

जिसका मन शास्त्रीय है वह किसी वस्तुकी सत्यता या यथार्थताको मान नहीं लेगा, उसे अपने लिए सिद्ध करेगा। ऐसा करके वह अपनी वृद्धिका विकास करेगा और वस्तुकी शक्तिका ज्ञान हासिल करेगा। ग्रेव क्यों नीचे गिरता है, वृक्षसं छूटते ही क्यों ऊँचे नहीं चला जाता? कहते हैं कि यह प्रवन न्यूटनके मनमें उपस्थित हुआ और उसने गुरुत्वाकर्षणकी शोव की। पृथ्वी थाली-आकारकी क्यों? स्थिर क्यों? ऐसे प्रकार्भर से गैलीलीयोने कहा कि पृथ्वी तो नारगी-जैसी गोल है, और अपनी घुरी पर घूमती है। ऐसी-ऐसी शोवोंमें में महान परिणाम पैदा हए हैं।

गांधीको द्वारा किखी इस पुस्तिकाको प्रस्नावनाके छिए देखिए १० २८२-८३।

ठीक इसी तरहका मानस खादी-सेवकका होना चाहिए। न्यूटन या गैळी जीयो के सामने दिरद्वनारायण नही था और न दिद्वनारायण की सेवाका प्रश्न था; उनके सामने एक सात्विक कौतूहल था। खादी-सेवकके सामने तो भूखंसे पीड़ित करोड़ों लोगोंकी भूख काटने का प्रश्न है। इसिलए उनका मानस तो अत्यन्त शास्त्रीय होना चाहिए।

खादी क्यों ? स्वदेशी मिलका कपड़ा क्यों नहीं, विदेशी भी क्यों नहीं ? हईका कपड़ा क्यों ? रेहामका क्यों नहीं ? सनका क्यों नहीं, ऊनका क्यों नहीं ? चरखा क्यों ? तकली क्यों नहीं ? ऐसे प्रश्नोंसे मैं पन्ने-के-पन्ने भर सकता हूँ, लेकिन यहाँ भेरा मतलव सब शक्य प्रश्न उठाने का नहीं है।

एक ही प्रश्तका मैं इसमें स्पर्श-मात्र करना चाहता हूँ। माना कि हिन्दुस्तान में किसी कारणवश्च मिलें नहीं चलती है या नहीं चल सकती हैं। माना कि वाहर से किसी भी प्रकारके कपड़े नहीं आ सकते हैं, तो क्या आज हम हिन्दुस्तानियोंकों काफी खादी दे सकते हैं? किसी-न-किसी तरह दे सकने से तो हमको सन्तोष नहीं होगा। ऐसा तो ईस्ट इण्डिया कम्पनीने किया, और उसके पहले भी कुछ अंशमें होता था। उस जमानेमें कमसे-कम दाममें सूत कातने एवं वुनने के लिए लोग मजबूर किये जाते थें। इस प्रथाका नाम वेगार था। दुःखके साथ कवूल करना होगा कि बेगार बहुत पुरानी प्रथा है। यह ब्रिटिशने दाखिल नहीं की है। वेगारसे शायद अब भी खादी पैदा हो सके, लेकिन ऐसे निर्दय कामके लिए खादी-सेवक थोड़े ही तैयार किये जा सकते हैं। हमारा मतलव तो यह है कि कित्तनोंको कमसे-कम इतना दाम मिले, जिससे आठ घण्टेकी मेहनतके बाद वे आरोग्यके लिए आवश्यक हो ऐसी खुराक, पहनने के लिए आवश्यक हो इतने वस्त्र, सुखसे रहा जा सके ऐसे घर, तथा अन्य आवश्यकताएँ, जो सुखी घरमें होती है, प्राप्त कर सकें। इस खतेंसे सिर्फ खादी नहीं वल सकती है ऐसा उत्तर मिले तो हमें नम्रतासे खादीकी मर्यादा कवूल करनी होगी। अपनी प्रवृत्तिकों भी मर्यादित करना होगा।

में यहाँ अपना मंतन्य रख दूं। मैने खादीको अपनाया है, इस दृष्टिसे कि खादीमें उपर्युक्त शक्ति है। इस मंतन्यके लिए मैं अकाट्य प्रमाण नहीं दे सकता हूँ। मेरे बहुत-से कामोंका आरम्भ विश्वाससे कही या अन्तः प्रेरणासे हुआ है। लेकिन वे प्रेरणासे ही चलाये नहीं हैं, उनका प्रचार करते-करते मैंने अपने विश्वासके आधार ढूँ हैं। बुद्धिके प्रयोग जितने कर सकता था, किये हैं, और अब भी करता हूँ और साथियों से कराता हूँ। प्रस्तुत प्रश्नका अन्त नहीं मिला है, शायद कभी न मिले। मैं जानता हूँ कि प्रश्न कठिन है, कूट समस्या है। इसमें गणित शास्त्रके ज्ञानकी तो आवश्यकता है हीं, साथ ही अर्थशास्त्रकी, मनुष्य स्वभावके ज्ञानकी, उसमें भी हिन्दुस्तानीके स्वभावकी, ऐसे ही नीति शास्त्रकी भी आवश्यकता है। सिर्फ गणित द्वारा सिद्ध करने से काम सिद्ध नहीं हो सकता है। केवल अर्थशास्त्रियोंके सम्मत होने से भी अर्थ-सिद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि अपने अचूक सिद्धान्तको हम नहीं छोड़ सकते हैं। जबदंस्तीसे हम खादीको ज्यापक बनाना नहीं चाहते हैं। लोगोंकी मान्यता, आवत

आदिको वदलकर ही हम अपना काम करना चाहते हैं। इसलिए सर्व-दृष्टिंग हमारी शोघ जारी रहनी चाहिए।

इस कठिन समस्याको हल करने में सब खादी-सबक परिश्रम टठावें। आज तो इतना ही।

खादी जगत, अगस्त १९४१

### ४५२. पत्र: अमृतकौरको

३१ अगस्त, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

में शायद तुम्हें लिख चुका हूँ कि मुझे तुम्हारे स्वास्थ्यकी चिन्ता नहीं होती। तुम ठीक-ठाक चल रही हो, यह मैं जानता हूँ। मैंने मनको इस बातके लिए समझा लिया है कि तुम्हारे लौटने में अनिश्चित कालका विलम्ब हो सकता है। इस समय तो मुझे खुशी ही है कि तुम यहाँ नहीं हो। बड़ी सख्त और ऊमस-भरी गर्मी पड़ रही है। तुम तो जानती ही हो कि पानी वरसने के बाद क्या हाल होता है। इस तेज धूपकी जब्दत फसलोंको तो है, लेकिन तुम्हें कमसे-कम नहीं।

तुम्हारा भेजा सेव आज खाया। बहुत अच्छा था।

पी० अभी बम्बई जायेगा और वहाँसे दिल्ली लौटकर सविनय अवज्ञामें भाग लेगा। इस बीच जसका 'कुरान'का ज्ञान स्पष्ट ही बढ़ा है। क्या तुम उर्द्-लेखनका अभ्यास नियमसे कर रही हो? अगर नहीं कर रही हो तो शुरू कर देना चाहिए।

अ [मतुल] स [लाम] बहुत ठीक है और रसोई आदिका काम करती है। अन्तपूर्णीको अभी मन्द ज्वरसे छटकारा नहीं मिला।

लीगके प्रस्तावों पर मैंने विचार नहीं किया है।

लेकिन तुमने जो आलोचना की है उससे मैं सहमत हूँ। हाँ, सत्यमूर्तिने बड़ा अविनेकपूर्ण काम किया।

सप्रेम.

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६३) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ৬३७२ से भी

१. मुस्लिम लीगकी कार्य-समिविने, जिसका अधिवेशन २६ अगस्त, १९४१ को समाप्त पुत्रा था, बाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद् और राष्ट्रीय रक्षा परिषद्में मुसल्मानीके शामिल किये जाने, देश की राजनीविक और साम्प्रदायिक स्थित, मारत-वर्मा समझौते और विद्वार श्रारीकि दंगीके विषयमें प्रस्ताव पास किये थे। समिविने बाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्के मनोनीस सदस्य सर मृल्सान

#### ४५३. पत्र: फरीद अन्सारीको /

सेवाग्राम ३१ अगस्त, १९४१

प्रिय फरीद,

व्रजकृष्णकी पाद-टिप्पणीके साथ तुम्हारा पत्र मिला।

मैंने सत्यवतीको सेवाग्राम आने को लिखा है। कोई उत्तर नहीं मिला है। जमनालालजी स्वास्थ्य-लाभ करने के लिए राजकुमारीके घर गये थे। आजकल वे देहरादुनके समीप आनन्दमयी देवोके आश्रममें है। वे २१ सितम्बर तक छौट आयों। वे ठीक है।

राधावहन उत्तीर्ण हो गई है, वह अच्छी है और रोग-निदानके रूपमें अनुभव प्राप्त कर रही है।

सरदार तात्कालिक खतरेसे तो वाहर हो गये हैं, किन्तु अभी पूर्ण रूपसे संकट-मुक्त नहीं हुए है। चिन्ताका कोई कारण नहीं है।

बाकी तुम जानते ही हो। सभीको मेरा अभिवादन। सप्रेम.

> बापू मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य: प्यारेलाल

#### ४५४. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

३१ अगस्त, १९४१

माई वल्लभमाई,

तुम्हारा पत्र मिला। फिलहाल मैं तुमसे पत्रकी आक्षा नही रखता। यदि तुम अपनेको विनयपूर्वक डॉक्टरोंके पंजेमें से मुक्त कर सको और यहाँ आ सको तो मुझे

अहमदसे, और राष्ट्रीय रक्षा परिषद्के सदस्यों — इतारीके नवाव साहन तथा वेगम शाहनवाजसे दस दिनके अन्दर अपने-अपने पदोंसे स्थागपत्र देने के छिप कहा था।

केन्द्रीय विचान-समामें कांग्रेस पार्टीके उपनेता एस० सरयमूर्तिने २७ अगरतको मद्रासकी एक समामें यह विचार व्यवत किया था कि कांग्रेसको प्रान्तोंमें फिरसे सरकारमें शामिल हो जाना चाहिय।

अच्छा लगेगा। मैं मानता हूँ कि तुम्हारी आँतोंको मिट्टी वगैरहके उपचार और भोजनमें हेरफोर करके अच्छा किया जा सकता है। आयुर्वेद पर मेरा बहुत दिखास नहीं जमता। वैद्य पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं करते। उनकी कुछ दवाइयां असर गरती है, परन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता कि वे यह जानते हो कि दवाइयां कैसे नाम गरती है, आदि। ये तो मेरे तर्क हैं। तुम्हें जिससे सन्तोष हो वही करना। मैंने तो मिफं अपना विचार बताया है। किसी भी तरह अच्छा अवश्य हो जाना चाहिए। मैं तुम्हें एक घंटा पाखानेमें तो हरिंगज नहीं बैठने दूंगा।

वापूके आजीर्वाद

[गुजरातीसे] बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, प्० २५१

४५५. पत्र: मणिबहन पटेलको

३१ अगस्त, १९४१

चि० मणि,

मैंने तुझे जान-बूझकर नहीं लिखा था। फिलहाल मैं तुझे जेल भेजना नहीं चाहता। समय आने पर तो मैं तुझे अवश्य मेजूंगा। बाहर रहते हुए भी तू काम तो करती ही है। तुझे भेजने का समय निश्चय ही आयेगा। फिलहाल तो निध्चित भावसे सेवा करती रहना और अपना स्वास्थ्य सुवार लेना।

वापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल ६८, मरीन ड्राइव बम्बई

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-४: मणिवहेन पटेलने, पृ० १३१

### ४५६. पत्र: इन्दिरा नेहरूको

३१ अगस्त, १९४१

चि० इन्दु,

तेरा खत मिलने से मुझे बहूत खुशी हुई। तेरी तवीयतकी तो मुझे खबर मिलती रही है। अच्छा है यहांकी हवासे कुछ नुकसान नींह हुआ है, कुछ फायदा हि हुआ है न?

लखनउ जहलके वारेमें मैं भी तजवीज तो कर रहा हूं। देखें क्या नतीजा आता है। पापूके वारेमें क्या हुआ मुझे बतायगी।

तू कितने दफे मिलती है?

राजा वौर कृष्णाको मेरे आशीर्वाद। उनके वच्चे अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९८०३) से। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय '

#### ४५७. तार: शिवानन्दको

१ सितम्बर, १९४१

शिवानन्द वढ़वान

मेरी समवेदना तुम्हारे साथ है। फूलचन्दकी मृत्युसे हमने एक अत्यन्त बहादुर और उत्कृष्ट कार्यकर्त्ता खो दिया है। अल्पवय होने पर भी उसने योग्य मृत्यु प्राप्त की। शारदाको और तुम्हें, जो उसके निकट थे, फूलचन्दके कार्यको आगे बढ़ाना है।

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३४४)से। सीजन्य: शिवानन्द

- १. जवाहरकाक नेहरू
- २ और ३. जवाहरलाल नेहरूके बहनोई गुणोत्तम हठीसिंह और उनकी पत्नी
- ¥. फूलचन्द कस्तूरचन्द शाहकी परनो

### ४५८. पत्र: अमृतकीरको

१ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा हिन्दीमें लिखा सुन्दर पत्र मिला।

महिलाओं की सभा तुम शिमलामें ही क्यों नहीं करती? उसमें भाग लेने वाली अधिकांश महिलाएँ घनी परिवारोंसे हैं, है न? किन्तु यह बहुत महत्त्वपूर्ण न हो तो. बेहतर यह होगा कि यह सभा तुम्हारी अनुपस्थितमें हो। सभा तुम्हारी उपस्थितिमें हुई तो उससे तुमपर श्रम तो पड़ेगा।

सत्यमूर्तिको लिखे अपने पत्रकी प्रतिलिपि भेज रहा हूँ। पढ़ने के बाद नष्ट कर देना।

मैं नहीं चाहता कि तुम मूडीको लिखो। जो-कुछ तुम कर चुकी हो, वह काफी है। सरूप और कृपलानी स्लोनसे मिल चुके हैं। उन्हें कुछ सन्सोप भी प्राप्त हुआ है।

सप्रेम,

वापू

[पुनश्च : ]

रथीका पत्र अच्छा है। मैंने तुम्हें साथ न ले जाकर अच्छा ही किया। अब तुम्हें सहायतार्थं वहाँ जाने का कोई अवसर ढूंढ़ना चाहिए। लेकिन इसके बारेमें बादमें।

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०६४) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन॰ ৬३७३ से भी

१. टेनंट स्लोन, संयुक्त प्रान्तके गर्वनरके सलाइकार

२. खीन्द्रनाथ ठाकुरके पुत्र रथीन्द्रनाथ ठाकुर

## ४५९. पत्र: भगवानजी पु० पंडचाको

१ सितम्बर, १९४१

चि॰ भगवानजी,

तुम्हारा पत्र आदिसे अन्ततक पढ़ गया। मेरे ऊपर उसका कोई असर नहीं हुआ। तुमने अपनी आँखोंसे कुछ नहीं देखा है। सब सुनी हुई वातें हैं। इसके आवारपर अपने साथीके ऊपर सन्देह नहीं किया जा सकता। यदि क० भाई चरित्र-हीन होते, तो उनकी पोल कब-की खुल गई होती। और वे इतने आदिमयोंको साथ लेकर न चल सकते। ऐसे आदमी सतत उद्योग नहीं कर सकते। वैसे मैंने ल० माईसे वात तो की ही है। वे सब वातोंसे इनकार करते हैं। अतः जबतक कोई प्रत्यक्ष प्रमाण न मिले, तवतक मैं तो उनपर विश्वास करने को कहता हूँ। मुझे यदि कोई कुछ लिखना चाहे तो लिख सकता है। तुम स्वभावसे बहमी तो हो ही। प्रमाणोंकी छानबीन तुम नहीं कर सकते। फिर भी मैं तुम्हारा पत्र नरहिर के पास मेज रहा हूँ। जो आवश्यक होगा सो वह करेगा। अव्हार्से का पाप सदा ही छिपा नहीं रह सकता।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३९४) से। सौजन्य: भगवानजी पु० पंड्या

### ४६०. पत्र: नरहरि द्वा० परीखको

१ सितम्बर, १९४१

चि॰ नरहरि,

ये साथके कागज फुर्सतसे पढ़ना, और कुछ करना जरूरी हो तो करना। भगवानजीका पत्र पढ़कर उन्हें लौटा देना। उन्होंने जो नाम दिये हैं, उनमें से यदि किसीसे मिलने की जरूरत समझो तो मिलना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२४) से

र. देखिए अगळा शीर्षक।

## ४६१. पत्र: डॉ॰ नायूभाई पटेलको

१ सितम्बर, १९४१

माई नाथूमाई,

तुम अपनी गुजरातीके लिए श्वरमाते क्यों हो? हम सब एक ही नावके मुसाफिर हैं। चाहे जैसी क्यों न लिखते हों, लेकिन अपनी मातृभाषा हमे प्यारी ही लगनी चाहिए।

तुमने मुझे अच्छी खबर दी और बात भी ठीकसे समझाई। मुझे आजा तो है कि सरदारको समझाने-भरका तुम्हारा काम मैं कर दूंगा। लेकिन पहले एक बार तुम उन्हें बिस्तरसे उठाकर खड़ा करो। तुम सब डाक्टरोंके वहाँ होते हुए वे पाखानेमें एक घंटा क्यों बैठे रहते हैं? यह तो मौतको न्योता देने-जैसा हुआ।

यह तो जानते हो न कि दुर्गा पूरी तरह अच्छी नहीं हुई? उसे डकार आती है और पाँवोंमें दर्द रहता है। अभी तो वह अहमदावादमें है। शायद दुम्हें मालूम न हो, इसलिए तुम्हारी जानकारीके लिए यह लिखा है।

महादेव तो अच्छा हो ही जायेगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५७) से। सीजन्य: डाँ० नायूमाई पटेल

## ४६२. पत्र: एफ० मेरी बारको

२ सितम्बर, १९४१

चि॰ मेरी

आखिर तुम आ ही गई। और अब तुम्हारे आने के बाद ऐसा महसूस हो रहा है कि तुम कभी भारतसे गई ही नहीं थी। तुम्हारे सेवाग्राम आने की मैं वीरजके साथ प्रतीक्षा कहाँगा। मुझे आशा है कि दक्षिण आफिकाकी यात्राम तुम्हारे शरीरको लाभ हुआ होगा।

सप्रेम,

वापू

[पुनश्च:]

में कमलाको यह बताना भूल गया था कि रेडफाँस आदिके बारेमें उसका दृष्टिकोण सही था। तुम बता देना। उसके स्वास्थ्यके बारेमें तुम्हारा कहना ठीक है। गलती उसीकी है। वह अपने आवश्यक आहारका प्रबन्ध बड़ी आसानीसे कर सकती है।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०८२)से। सी० डब्ल्यू० ३४१२ से मी; सौजन्य: एफ० मेरी बार

#### ४६३. पत्र: के० बी० मेननको

सेवाग्राम २ सितम्बर, १९४१

प्रिय मेनन,

तुम्हारे दो पत्र मिले। मैं तुम्हारे लिए कुछ भेजने की कोशिश करूँगा। ठक्कर बापा तो तुम्हारे मार्ग-दर्शनके लिए वहाँ है ही। इसलिए मैं जयनारायणजी के मामलेमें कोई चिन्ता नहीं कर रहा। र

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ४६४. पत्र: वल्लभराम वैद्यको

२ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लभराम,

तुम अच्छा अनुभव प्राप्त कर रहे हो। उसके परिणामस्वरूप तुम्हारे हाथसे जनताकी सुभ सेवा हो।

श्री वल्लभराम वैद्य विड्ला भवन डाकखाना – उत्तर काशी जिला – टिहरी गढ़वाल

गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ २९१५) से। सौजन्य: वल्लभराम वैद्य

१. देखिए "पत्र: के० बी० मेननको", ५० ४२।

## ४६५. पत्रः कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

२ सितम्बर, १९४१

भाई मुन्शी,

तुम्हारा पत्र मिला। चि॰ सरला चली आये।

तुमने अच्छा दौरा किया। मैने सब तो नही पढ़ा, लेकिन एक अन्दाज हो गया है। तुमने बंगालकी स्थितिका जैसा विवरण दिया है, वरसोंसे वैसी ही है। वापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६६) से। सौजन्य: क० मा० मुन्धी

४६६. पत्र: उमादेवी अग्रवालको

२ सितम्बर, १९४१

चि० ओम,

आखर में खत लिखने की तकलीफ उठाई सही। अब तो काकाजी आ हि जायेंगे। और कितना और कैसा नया अनुभव लेकर। तेरी जगह ऐसा वर्णन देती है कि दिल चाहता है कि मेरे सब मरीजोंको तेरे पास भेज दूं। सिर्फ जानकी देवी और मदालसा निंह? क्यों?

दोनोंको

वापुके आशीर्वाद

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३४४-४५

रै. क० मा० मुन्दीकी ज्येष्ठ पुत्री सरका श्रेठ, जो बम्बई उच्च न्यायालयकी सोंक्सिटर थीं। २. जमनाकारू बजाज, उमादेवीके पिता

#### ४६७. पत्र: कृष्णचन्द्रको

२ सितम्बर, १९४१

चि० कु० चं०,

२५ वर्ष पहलेका स्वरूप कल्पनामें तो देख हि सकते हो। मैं कमरेमें पड़ा रहता हूं और सेवा लेता हूं। उसके बदलेमें ज्यादातर शारीरिक काम करता था औ[र] सब प्रवृत्तिमें शामील रहता था। एक फरक था। जहां मैं काम करता था वहां प्रायः सब आ जाते थे।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०१) से

### ४६८. पत्र: पोखराजको

२ सितम्बर, १९४१

भाई पोखराजजी,

दा० हसनने आप पर खत भेजा है। मैने पढ़ा। मेरी दृष्टिसं अब कोई बजह नहीं है कि कागज किमशनर साहबसे न मंगवाया जाय। अगर काउन्सिलकी इजाजतकी आवश्यकता मानी जाय तो लेनी चाहिये।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सीजन्य: प्यारेलाल

## ४६९. पत्र: जुगलिकशोर बिङ्लाको

सेवाग्राम २ सितम्बर, १९४१

माई जुगलकिशोरजी,

तुम्हारा मीठा खत मिला है। मैं समझता हूं फिर मी कुछ रहता है। खास आने की आवश्यकता नहीं है। फुरसत मिलने से आ जाओगे। सब शुभ काममें मेरे आशीर्वाद तो है ही।

वापुके आशोर्वाद

सेठ जुगलिकशोर विङ्ला ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता

पत्रकी नकलसे: व्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. आगेका अंश उपकव्य नहीं है।

३२०

#### ४७०. पत्र: जयनारायण व्यासको

२ सितम्बर, १९४१

माई जयनारायण,

तुम्हारा पत्र मिला है। जो नीति ब्रिटिश हदमें अख्तियार की है यही देशी राज्यों में भी [करनी]' चाहिए ऐसा नियम न माना जाय। मेरी निजी राय तो है ही कि जो अहिसा नीतिका पालन करना चाहते हो वे चालू झंझटोमें न पड़े।' वापुके आशीर्वाद

जयनारायणजी न्यास ब्रह्मपुरी जोधपुर, मेवाड़

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ४७१. पत्र: अमृतकौरको

२/३ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

अब मैंने तुम्हारे लिए काम भेजना आरम्भ कर दिया है। तुम तो जानती ही हो कि रतलाम रियासतने प्रजा परिषद्के कुछ सदस्योंको ऐसी सजाएँ दो है जिनका औचित्य किसी तरह सिद्ध नही किया जा सकता। जिन्हे सजा दी गई है, वे महत्त्वपूर्ण लोग है। वहाँ किसीको जानती हो क्या? अगर इसके सम्बन्धमें कोई सामग्री चाहिए तो वह भेजी जा सकती है। न जानती हो तो तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

सप्रेम,

वापू

१. साधन-सत्रमें यहाँ जगह खाली है।

२. जयनारायण न्यासने गांधीजी से पूछा था कि जोधपुर सरकार दारा इवाई इमलेसे वचावके लिए बनाई गई सलाइकार-समितिमें उन्हें शामिल होना चाहिए अथवा नहीं। [पुनश्च:]

तुम्हारा हिन्दीमें लिखा पत्र मिला। [तुम्हारे यहाँसे] जो सेव आये छनमें से हरएक अलग-अलग कागजमें नहीं लिपटा हुआ था। ऐसा नया नहीं होना चाहिए था?

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६५) से ; सीजन्य : अमृतकीर । जी० एन० ७३७४ से भी

## ४७२. पत्र: शारदा फू० शाहको

३ सितम्बर, १९४१

चि॰ शारदा,

मैने तार तो दिया है। मैं भूलचन्दको भूल नही पाता। लगता है, उनकी आत्मा मेरे आसपास रम रही है। अब तूने क्या सोचा है? तू शोक मनाने में एक क्षण भी मत गैंवाना। भूलचन्द जो काम छोड़ गये हैं, उसे कैसे चलाया और बढ़ाया जाये, यही विचारणीय है। और यह याद रखना कि जब यहाँ आने की इच्छा हो, तब निस्संकोच चली आना और सब हाल-चाल लिखती रहना।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० २८७३) से। सीजन्य: शारदा फूलचन्द शाह

## ४७३. पत्र: मणिवहन पटेलको

सेवाग्राम ३ सितम्बर, १९४१

चि० मणि,

तेरा पत्र मिला। तूने सारा व्योरा भेजकर ठीक किया। मैने कल जस्सावाला का पत्र भेजा है। उसके अनुसार मैं तो तुरन्त इलाज शुरू कर देने का आग्रह करूँगा। तवीयत बहुत गिर जाने के बाद इलाज बेकार भी जा सकता है। डॉ॰ नायूभाईसे चर्चा कर लेने की मैं तो जरूरत महसूस करता हूँ।

मुझे पूरे समाचार देती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ४:मणिबहेन पटेलने, पु० १३१

र. देखिए "तार: शिवानन्दको", पृ० ३१४।

२. बम्बईके एक प्राकृतिक चिकित्सक

## ४७४. पत्र: अमृतकौरको

४ सितम्बर, १९४१

चि॰ अमृत,

्रियाँ इपितखारुद्दीन यही हैं, मुंशीजी की लड़की सरला और अन्य लोग भी यहीं है। यह पत्र सिर्फ यह बताने के लिए भेज रहा हूँ कि तुम्हारा पत्र मिल गया और यहाँ सब ठीक है। श्रेष कल।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६६) से ; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३७५ से भी

#### ४७५. पत्र: सच्चिदानन्द करकलको

४ सितम्बर, १९४१

प्रिय सच्चिदानन्द,

निस्सन्देह तुम और दूसरे विद्यार्थी मुझसे मार्ग-दर्शन . . . । तुम जवर-दस्तीके आगे झुकने से साफ इनकार कर सकते हो और उसका जो परिणाम हो उसे खुशी-खुशी झेल सकते हो। तुम्हें झमा-याचनाकी मांग करके कांग्रेसके अपमानपर अपना रोष प्रकट करना चाहिए। . . . जवतक वह शिक्षक क्षमा-याचना न करे उसकी कक्षामें प्रवेश . . . । लेकिन याद रखो कि हर आलोचना अपमान नहीं होती। कोई सरकार-मक्त अगर कहे कि कांग्रेसके विरोधके वावजूद प्रिटिश काफिला आगे वढता जा रहा है, तो इसमें कोई आपत्तिजनक वात न होगी।

हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांधी

श्री सिच्चिदानन्द करकल मकान नं० ५०२०, श्रिश्चियन कॉलोनी सेटिलमेंट हुवली

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८८०७) से

१ मीर २. इन दोनों प्वित्योंमें कुछ शब्द बस्पष्ट हैं।

### ४७६. पत्रः भगवानजी पु० पंडचाको

४ सितम्बर, १९४१

चि० भगवानजी,

तुम्हारा दूसरा पत्र मिला। मैं मामला दवाना नहीं चाहता। तुम जानते हो कि मैंने अपने सगे बेटेका मामला मी नहीं दवाया। तो फिर ल० का नयों दवाऊँगा? लेकिन जैसे मणिलालके खिलाफ देवदासके सबूत देने पर भी मैंने नहीं माना था, वैसे ही ल० के खिलाफ भी एकाएक नहीं मानूंगा। देवदासने प्रत्यक्ष नहीं देखा था, जैसे तुमने नहीं देखा। अन्तमें, मेरे अमीम विद्वासने ही मणिलालको पिघलाया और उसने सब कबूल कर लिया। वैसा ही ल० के मामलेमें क्यों नहीं हो सकता? ल० ने अपने विगत जीवनकी वातें नहीं छिपाईं, तो अब क्यों छिपायेगा और छिपाने से उसे क्या मिलेगा? फिर भी, मैं असम्भव कुछ नहीं मानता, और इसलिए तुम्हारी वात सुनने को तैयार हूँ। लेकिन तुम्हें प्रमाणोंकी जाँच करना सीखना चाहिए।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ ३९५) से। सीजन्य: मगवानजी पु॰ पंडचा

४७७. पत्र: पुरातन बुचको

४ सितम्बर, १९४१

चि० पुरातन,

भाई भगवानजीने तेरी डायरीमें से दादाके विरुद्ध उद्धरण मेजे हैं। भगवान-जीने मयंकर आरोप लगाये हैं, अथवा वे उन आरोपोंके वाहक बने हैं। इस सम्बन्धमें तू क्या जानता और क्या सोचता है, यह बताना। यह पत्र तू भाई भगवानजीको दिखा सकता है।

आशा है, तुम दोनों स्वस्य होगे।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८३) से

## ४७८. पत्र: अमृतलाल नानावटीको

४ सितम्बर, १९४१

चि॰ अमृतलाल,

तुम मान्यवान हो। किसीसे सेवा कराये विना पिताजी आखिरी नीदमें सो गये, इसमें शोक करने की गुंजाइश नहीं है। उनका चेहरा मेरी आँखोंके सामने तैर रहा है। वे वड़े पुण्यशाली थे। माँको सान्त्वना देना और कामकाज करके जल्दी वापस लौटना।

वापूके आगीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८०२) से

# ४७९. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुंजीको

५ सितम्बर, १९४१

माई मुंशी,

चि॰ सरला कल आरामसे यहाँ पहुँच गई। मैं कल ही तुम्हें लिखना चाहता था, लेकिन फिर इतने सारे लोग एक साथ मिलने आ गये कि समय ही नही मिला। सरला यथा नाम तथा गुण है। वह सबके साथ हिल-मिल गई है। आजा है, वह कमसे कम बुधवार तक तो रहेगी। तुममें से कोई उसकी तनिक मी चिन्ता मत करना।

इस पत्रके साथ सतीश कालेलकरका पत्र है। उसके पिछले पत्रमें से मैंने वे उद्धरण निकाल लिये हैं जिनका सम्बन्ध तुमसे हैं। मूल पत्र नित्यक्रमके अनुसार महादेव आदिको मेज दिया गया है। यह सोचकर कि पत्र तुग्हें देखना चाहिए, मैंने चि॰ सतीशको अनुमित मौगी, और साथका पत्र उसके जवावमें है। यह पत्र तो केवल तुमसे ही सम्बन्धित है, इसलिए जैसा-का-तैसा मेज रहा हूँ। इस पत्रके-आधारपर यदि मुझे कुछ लिखने लायक हो, तो लिखना।

वापूके आगीर्वाद

 सतीश काल्किकरने क० मा० मुशीके बनारसके भाषणके बारेमें शिकायत की थी; देखिए "पत्र: कन्हियालाक मा० मुशीको", २१-९-१९४१।

#### [पुनश्च:]

सतीशके पत्रका उद्धरण कल भेजूँगा क्योंकि कनैयो, जिसके पास उक्त पत्र है, वर्षा गया है और यह पत्र मैं रोकना नही चाहता।

गुजराती (सी॰ डब्ल्यू॰ ७६६७) से। सौजन्य: कन्हैयालाल मा॰ मुंशी

#### ४८०. पत्र: कृष्णचन्द्रको

५ सितम्बर, १९४१

चि० कु० च०,

निर्मेळींसहको जाने देने में गळती तो हुई। लेकिन ऐसी गळतीयां हुआ करेगी। सुधारने की तत्परता रहती है यह संतोषकी बात है।

पारनेरकर सैलनको ले सकते हैं। उनको बराबर सिखाना होगा।

बापुके आ०

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०२) से

### ४८१. पत्र : अमृतकौरको

बूबारा नहीं देखा

५ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

मौनके दौरान यह पत्र लिख रहा हूँ, यानी रातके भोजन और डाक निकलने से पहले।

मुझे न एगथाका कोई पत्र भिला है और न हेनरीका । लेकिन मैंने एक पित्रकामें हेनरीका वह लेख देखा जिसमें उसने चोट की है। मेरे मनमें आया कि उसे उसकी मूल बता दूं। यदि तुम लेख देखना चाहो तो मैं बुम्हें मेज सकता हूँ। हेनरीका पता मालूम न होने से मैंने एगथाको लिखा।

हैदराबादवाला निमन्त्रण अस्वीकार करके तुमने ठीक किया। दूसरे निमन्त्रणोंको अस्वीकार करके भी ठीक ही करोगी। मैंने तुम्हारे पास वह इसलिए मेजा या कि तुम उसे देखकर जवाब दे सकी। अस्वीकार तो तुम्हें करना ही था। कोई भी काम हाथमें लेने से पहले तुम्हें बिलकुल चंगा हो जाना है। अब मी तुम अच्छा काम कर रही हो।

 हेनरी सॉलोमन लियन पोलक, जो फीनिक्समें गांधीजी के साथ रहे और दक्षिण वाक्रिकांमें मारवीय बान्चीलनके उत्कट समर्थक थे। देखिए "पत्र: मिर्ज़ इस्माइलको", ५-१०-१९४२ भी। तुम्हें उस पुस्तिकाकी याद होगी जिसमें पाकिस्तान-सम्बन्धी लाहीर प्रस्ताव' छपा था। पुस्तकालयमें उसकी दो प्रतियाँ मिली है।

मैं अनिष्टकी आशंका करके नहीं चलता। इसलिए जबतक वह घटित ही न हो आये — और ऐसा नहीं होने दिया जायेगा — तबतक तुम्हारं प्रत्नका उत्तर स्थिगित कर रहा हूँ। क्या यह उत्तर — अगर यह उत्तर है तो — सन्तोपप्रद है? तुम्हें अपना प्रश्न तो याद है न?

फिल्हाल नरेन्द्रदेव के वारेमें सुम्हें कुछ नहीं करना है। मैं पूछताछ करूँगा। देहरादून प्रस्तावके वारेमें मैं कुछ नहीं जानता।

जयप्रकाश नारायणको अस्वस्थताके कारण किसी और जेलमें मेजने की दर-स्वास्त प्रभावतीने की थी। जयप्रकाश अस्वस्थ है यह तो सब जानते ही है। मगर उसकी दरस्वास्त तुरन्त रह कर दी गई। अधिकारीगण कोई काम इसीलिए करने-वाले नहीं है कि वह काम सही है। वे तो केवल दवावके आगे झुकते हैं — ऐसे दवावके आगे जो हिंसाकी सीमातक जाता हो। हम 'रामायण' के उस प्रकरणपर पहुँच गये हैं जिसमें नारदके मोहका वर्णन है। वे मोहमें इसीलिए पड़े क्योंकि उन्हें सही रास्ते पर लाना था। सत्य ही, ईक्वर जिसका विनाश करना चाहता है उसका विवेक पहले हर लेता है।

रतलामके बारेमें तार आया है, जो साथमें मेज रहा हूँ। उस मामलेके वारेमें तो सम्हें लिख ही चुका हूँ।

सप्रेम,

वापू

#### [पुनश्च:]

सायमें आन्छ्रसे प्राप्त एक पत्रकी नकल भी मेज रहा हूँ, इसलिए नहीं कि इस सिलसिलेमें जरूर कार्रवाई की जाये, वित्क तुम्हारी जानकारीके लिए और समय आने पर इस जानकारीका उपयोग किया जा सके इसलिए।

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ३६७७) से ; सीजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन॰ ६४८६ से मी

१. यह प्रस्ताव अखिल मारतीय मुस्लिम कीग द्वारा २३ मार्च, १९४० को पास किया गया था। देखिए खण्ड ७१, परिशिष्ट ८।

२. देखिए "पत्र: अमृतकौरको" पृ० ३२१।

# ४८२. भेंट: हरि विष्णु कामथको'

सेवाग्राम ५ सितम्बर, १९४१

प्रo: लड़ाईमें रूसके ज्ञामिल हो जाने से क्या युद्धका स्वरूप बदल गया है और उसके प्रति भारतके रुखमें परिवर्तन आया है?

उ०: रूसके शामिल होने से युद्धके स्वरूपमें कोई ठोस परिवर्तन नहीं हुआ है। रूसपर हमला हुआ, इसलिए उसके प्रति मौिखक सहानुमूति प्रकट करना वृरा नहीं है, लेकिन जवतक हम इस सहानुमूतिको कार्यरूपमें परिणत नहीं कर सकते, यह निष्प्रयोजन है। रूस पूर्णतः दोषमुक्त नहीं है, क्योंकि उसने साम्राज्यवादी ताकतसे गठबन्धन किया है; मले ही यह गठबन्धन उसने महल अपने अस्तित्वको बनाये रखने के लिए ही किया हो। जवाहरलालजी, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके अन्तरंग अध्येता रहे हैं। आज अगर वे जेलमें न होते और अपने विचार व्यक्त करने के लिए स्वतन्त्र होते, तो इस विषयमें वे जो राय जाहिर करते उसे मैं निश्चय ही महत्त्वपूर्ण मानता।

प्र० : महात्माजी, क्या आपको यह सम्भव दिखता है कि अटलांटिक घोषणा-पत्रसे दुनियामें एक नवीन ऑहसक समाज-व्यवस्थाका उदय हो सकता है ?

उ॰: नहीं, मैं नहीं समझता कि अटलांटिक घोषणापत्रसे दुनियामें मेरी कल्पनाको नवीन अहिसक समाज-व्यवस्थाका उदय हो सकता है।

प्रo: वाइसरायको कार्यकारिणी परिषद्में श्री अणे तथा श्री निलनीरंजन सरकार --जैसे कांग्रेसियोंके शामिल होने के बारेमें आपकी क्या राय है?

उ०: श्री अणे और निलनीबावू-जैसे कांग्रेसियों द्वारा सरकारी पद स्वीकार किया जाना मैं ठीक नहीं मानता। उनके इस आचरणसे ब्रिटिश सरकारको अमेरिकामें यह प्रचार करने का साधन मिल गया है कि अब मारतको सन्तुष्ट हो जाना चाहिए, क्योंकि प्रसिद्ध मृतपूर्व कांग्रेसी भी बाइसरायकी परिषद्में शामिल हो गये हैं।

प्र• : सत्याग्रह आन्दोलन जिस ढंगसे चल रहा है, क्या आप उससे सन्तुष्ट हैं ? १९३० के आन्दोलन से यह किन बातों में भिन्न है ? क्या सरकारको परेशानी

रै. मेंटका यह विवरण हरि विष्णु कामथने, जो बरु मारु कॉरवर्ड क्लाकि संयोजन मन्त्री है, वैपार किया था और गांधीजी ने कुछ स्थळॉपर उसमें छुधार किया था।

२. माषव श्रीहरि वणे, जिनको परिषद्में प्रवासी मारवीयोंके मामकेका जिम्मा सौंपा गया या ।

इन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और मूमि-सम्बन्धी मामळोंका जिस्मा सीपा गया था ।

४. दाँडी-मूच और तमक सत्याग्रह

में न ढालने की नीतिका कोई राजनीतिक मूल्य या महत्त्व है? यदि सरकार वाणीकी स्वतन्त्रता दे दे तो आपका रुख क्या होगा? क्या निकट भविष्यमें संघर्षके जोर पकड़ने की सम्भावना है?

जिं : सत्याग्रह आन्दोलन जिस ढंगसे चल रहा है, उससे मुझे पूरा गन्दोप है। यह ठीक है कि १९३० के आन्दोलनमें सरकारपर जितना जार उन्ला गया था जतना जोर इस आन्दोलनमें नहीं डाला जा रहा है, लेकिन आजके आन्दोलनमें उस आन्दोलनका स्वरूप मिन्न था। लेकिन मुख्य बात यह है कि संघर्ष जारी है। यह अपने-आपमे एक काफी बड़ा नैतिक दबाव है, जिसकी वजहमें अमेरिकामे ब्रिटिश सरकारकी स्थित अब बहुत सुखद नहीं दिखती। सरकारकों परेशानीमें न उन्लिन को नीति अहिंसाका तर्कसंगत परिणाम है, और इस लिहाजसे एक राजनोतिक आवश्यकता भी है। लेकिन मेरी उदारताके बदले ब्रिटिश सरकार उदारता वरनेगी, इसकी उम्मीद में नहीं करता। सरकार वाणीकी स्वतन्त्रताके अधिकारकों स्विकार करेगी, इसकी सम्मावना नहीं है, लेकिन अगर उसने ईमानदारीके साथ ऐमा किया तो मुझे आन्दोलनको समाप्त करना ही होगा। अहिंसक वाणोकी स्वतन्त्रताके मचमुच स्वीकार कर लिये जाने का मतलब यह होगा कि स्वतन्त्रताकी दिशामें एक बहुत बड़ा कदम उठाया गया है। जबतक युद्ध चल रहा है तवतक आन्दोलनमें तेजी आने की सम्मावना नहीं है। अगर जरूरी हुआ तो युद्ध समाप्त होने पर तेजी लाई जायेगी।

प्रo: स्थानीय किसान और मण्डूर संघर्षीके प्रति आपका क्या दृष्टिकीण है?

च ॰ : अपनी न्यायोचित मौगें पूरी करवाने के लिए किसानों और मजदूरों द्वारा चलाये गये सभी स्थानोय संघर्षोंके प्रति मेरी सहानुभूति है और इन तरहके संघर्षोंसे सरकार किसी परेशानीमें नही पड़ सकती। यह देखते हुए कि मैं गुद कमी ऐसे संघर्षोंका प्रवर्त्तक रहा हूँ, भेरा दृष्टिकोण इससे मिन्न हो भी नहीं मकता।

प्र०: कांग्रेसके संविधानमें "अहिंसा" शब्दका जिक्र नहीं है। इस वातको ध्यानमें रखते हुए अहिंसक आचरणके सम्बन्धमें कांग्रेसी लोगोंका क्या कलंब्य है?

उ०: "बहिंसा" शब्दका जिक यद्यपि काग्रेसके संविधानमें नहीं है, तथापि प्रस्तावोंमें तो इसका जिक है। अहिंसा पर काग्रेसके पूर्ण अधिवेशनका कोई प्रस्ताव मेले ही न हो, लेकिन जबतक अ० भा० कां० कमेटीके प्रस्तावमें कांग्रेमका पूर्ण अधिवेशन कोई संशोधन या परिवर्तन नहीं करता, तवतक कांग्रेसियोंने मैं यही अपेक्षा रखूँगा कि वे उस प्रस्तावका पालन करते रहे।

प्रo: हाल में ही आचार्य कृपलानीने सरदार शार्द्लसिंह कवीशारके एक प्रश्नके उत्तरमें कहा कि कॉरवर्ड ब्लॉक कांग्रेस संगठनका भाग नहीं है। कृपलानीके इस क्यनसे अनेक कांग्रेसियोंके मनमें बड़ी उलझन और गलतफहमी पैदा हो गई है। ने पृद यह मानता हूँ कि कांग्रेसमें फाँदवर्ड ब्लॉककी स्थिति वही है जो कांग्रेस समाजवादी दलकी है। क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि इस विषयमें आपकी क्या राय है?

उ०: यद्यपि कांग्रेस संविधान कांग्रेस संगठनके अन्दर अलग-अलग गुटोंको स्वीकार नहीं करता, तथापि यदि इस तरहके गुटोंका कांग्रेसके संकल्प और उसकी नीतिसे कोई विरोध न हो तो इन गुटोंमें निष्ठा रखनेवाले कांग्रेसियोंको व्यक्तिगत हैसियतसे कांग्रेसिमें रहने का पूरा अधिकार है। मैंने इस वातपर कभी जोर नहीं दिया कि जो कांग्रेसी ऑहंसाकी मेरी परिमाणका अनुमोदन नहीं क्रते उन्हें कांग्रेस छोड़ देनी चाहिए। जिस रूपमें फॉरवर्ड क्लॉक कांग्रेसका अंग नहीं है उसी रूपमें कांग्रेस समाजवादो दल मी उसका अंग नहीं है। इन दोनोंमें से कोई कांग्रेस संगठनका अंग है, इस तरहका कोई उल्लेख कांग्रेस संविधानमें नहीं है। जहाँतक कांग्रेस संगठनका माग होने की बात है, फॉरवर्ड क्लॉक और कांग्रेस समाजवादी दल, दोनोंको स्थिति एक-जैसी है।

प्र० : महात्माजी, क्या इस बातमें आपकी पूरी श्रद्धा है कि हमारा भाग्य ईक्वरीय क्षकित द्वारा निर्घारित होता है?

उ०: हाँ, मारत और विश्वके माग्यको दिशा देनेवाली कोई ईश्वरीय शक्ति है, इस बातमें मेरी पूरी श्रद्धा है। यही वह जीवन्त श्रद्धा है जो आजकी संकटकी घड़ीमें मुझे सम्बल प्रदान करती है।

[अंग्रेजीसे ] हिन्दू, ५-११-१९४१

#### ४८३. पत्र: सारंगधर दासको

सेवाग्राम, वर्वा ६ सितम्बर, १९४१

प्रिय सारंगधर दास,

राजकुमारी शिमलामें विश्राम कर रही है। अक्तूबरसे पहले वह नहीं आयेगी। उसको लिखा आपका पत्र एक करुणाजनक गाथा है।

मेरी राय तो इस प्रकार है। जिन लोगोंके वयानोंका आपन अनुवाद किया है उन्हें अहिंसाकी कार्य-पद्धितका कोई बोध नही था। यदि उनमें अहिंसा-जन्य साहस होता तो वे इस तरह जान वचाकर माग न आते, विल्क या तो प्रित्योधमें अपना हाथ उठाये बिना अपने ऊपर प्रहार करनेवाले तथाकथित पुलिसके लोगोंका हृदय-परिवर्तन करते अथवा वही मर मिटते। इसका मतलव उच्चतम कोटिकी अहिंसा होता। और यह दीघं कालके प्रशिक्षणके विना प्राप्त नहीं होती। यह बहुत कम देखने को मिलती है। लेकिन यदि कोई ऐसा साहस न दिखा सके तो उसे कायरताका व्यवहार भी तो नहीं करना चाहिए। आक्रमणकारीके प्रहारका अपनी पूरी शक्तिसे उत्तर देने का न केवल हमे अधिकार है, विल्क यह हमारा कर्तव्य भी है। इसके लिए भी बड़े साहसकी जरूरत है। मैने लोगोंको सफलतापूर्वक इसका

परिचय देते देखा है। विरोधी कितना प्रवल है, इसकी परवाह नहीं होनी चाहिए। प्रतिरोवमें मृत्यु भी हो सकती है। पाश्चिक और अपमानजनक व्यवहारको बर्दाप्त करने की अपेक्षा यह रास्ता बहुत अच्छा है। इस तरहकी आत्म-रक्षा काग्रेनियोंक लिए निषिद्ध नही है। अपने सम्मानकी रक्षा करना मनुष्यका सहज अधिकार और अनिवार्यं कर्त्तंच्य है। यदि कोई अहिंसक रोतिसे उसकी रक्षा करना जानता हो ना उस तरह रक्षा करे अन्यथा हिंसक रीतिसे करे। और कोई रास्ता नहीं है। जो हिंसक रीतिसे अपने सम्मानकी रक्षा कर सकता है वह शोध ही अहिंगाका गुण भी सीख ले सकता है। लेकिन यह तो मैं प्रसंगवश कह गया हूँ। मेरी मन्त्राह स्पष्ट और सुनिश्चित है। मुझे समय-समयपर जो वयान भेजे गये है वे अगर सच है तो यही निष्कर्प निकलता है कि उड़ीसामें इस तरहकी मारा-मारी बहुत अधिक हो रही है। यदि आपने मेरी सलाहको हृदयंगम कर लिया है तो आप तरीकेसे और विचारपूर्वक उसके अनुसार काम करेंगे। कैसे काम करना है, इनके एक सूविचारित कार्यक्रमके साथ आप चाहें तो इस पत्रको भी प्रकाशित कर सकते है। आप घोषणापत्रका मसौदा स्वीकृतिके लिए मेरे पास भेज सकते है या इन सम्बन्धमें आवश्यक कार्रवाई करने से पूर्व आप जब चाहे, विचार-विमर्ग करने के लिए मेरे पास आ सकते हैं। यह प्रश्न वहुत महत्त्वपूर्ण है, इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अंग्रेजीकी नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०४४३) से। सीजन्य: उड़ीसा सरकार

# ४८४. पत्र: एस० एम० मसूरकरको

६ सितम्बर, १९४१

प्रिय मसूरकर,

यदि वे कागजात जिनका आपने पिछले महीनेकी २६ तारीखके अपने पत्रमें जिक किया है मुझे मिल जायें तो मैं उन्हें गौरसे पढ़ने की काशिश करूँगा।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सीजन्य: प्यारेलाल

### ४८५. पत्रः अमृतकौरको

७ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

कल तुम्हें प्रमाके पत्रसे ही सन्तोष करना पड़ा। लेकिन उसके पत्र मेरे बहुत ही छोटे पत्रोंके अमावकी पूर्ति ही नहीं करते, बल्कि उससे मी कुछ ज्यादा ही देते हैं। और फिर वह लिखती मी अच्छा है।

बावलोकी चिट्ठी साथमें है।

अव यहाँ गरमी पड़नेवाली नहीं है। जब-तव पानी बरस जाता है। आकाश पर बादल छाये रहते हैं।

मीरा अपनी नई कुटियामें प्रसन्त है। वह दीवारींकी कलोत्मक सजावट कर रही है — केवल शुद्ध-पवित्र उपादानोंसे।

महादेव ठीक हो गया है, लेकिन अभी कमजोर है। उसे अहमदावादमें ही रहना है।

जाजूजीको नारणदासके पास जाना है। बुल मेरी बात उतनी आसानीसे नहीं मानती जितनी तुम। उसे मेजकर मुझे बड़ी खुशी होती। लेकिन उसका मन सीमा प्रान्तके काममें लगा है। उसने जैसी स्वतन्त्रता माँगी थी वैसी उसे मिल जाये तो जिस तरहका काम तुम सुद्धा रही हो, उसे हाथमें लेने के लिए उसे राजी किया जा सकता है।

में तुम्हें 'सर्वोदय' जरूर भेजूँगा।

सप्रेम,

वापू

#### [पुनश्च:]

११ का घंटा बज रहा है।

डाक मिलनेके बाद:

तुम्हारा पत्र मिला। इस सप्ताह मेरा वजन एक पाँड कम हुआ है। अगर तुम मुझसे आगे निकल जाओ — जो मृश्किल लगता है — तो यह तुम्हारी कामयाबी होगी।

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३७६ से भी

१. महादेव देसाईके पुत्र, नारायण देसाई

२. काका काळेळकर कौर दादा धर्माधिकारी दारा सम्पादित, गांधी सेवा संघकी हिन्दी मासिक पिका ३३२

### ४८६. पत्र: मिर्जा इस्माइलको

७ सितम्बर, १९४१

प्रिय सर मिर्जा,

अगर किसीने आपको पहले ही यह न मेज दिया हो तो अब आपके मनो-रंजनके लिए मेज रहा हूँ।

> ह्दयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८५)से

# ४८७. पत्र: पुरातन बुचको

७ सितम्बर, १९४१

चि॰ पुरातन,

तुझे जब आना हो आ जाना। वसुमतीवहनसे कहना, उसका पत्र मिल गया है। वह अपना कार्यक्रम आनन्दसे पूरा करे।

वापूके आशीर्वाद

#### [ पुनश्च : ]

तेरा पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई।
पुरातन बुच
हरिजन आश्रम
सावरमती

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१८४) से

## ४८८. पत्र: कुँवरजी खे॰ पारेखको

७ सितम्बर, १९४१

चि॰ कुँवरजी,

मैने सुशीलावहनको लिखा है। डाँ० मेहताने मुझे सन्देशा मेजा था, और अब तुम्हारा पत्र मिला। हाँ, सँमलकर चलने की जरूरत तो है ही; और अगर ऐसा किया तो कुछ नहीं होगा। दावत, त्योहारोंके मिण्टान्न आदिसे बचना चाहिए। खुली हवामें रहना चाहिए और इतना परिश्रम नही करना चाहिए कि थकावट मालूम हो। फल और सागमाजी वरावर खाते रहना चाहिए।

वापूके आशीर्वाद

श्री कुँवरजी खेतसी झंडू फार्मेसी दादर बम्बई-१४

मुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७५०) से। सी० डब्ल्यू० ७२९ से मी; सौजन्य: नवजीवन ट्रस्ट

# ४८९. पत्र: कंचन मु० शाहको

[७ सितम्बर, १९४१]<sup>१</sup>

चि० कंचन,

साथके पत्रमें सचाई कितनी है, यह मैं नहीं जानता। मू[न्नालाल ]का कहना है कि यह सीवा-सादा स्पष्ट सत्य है। लेकिन अगर ऐसा न भी हो तो भी हमारे बीच यह करार तो है ही कि तुझे किसी तरह बुरा नहीं मानना चाहिए।

वापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

न्या तु मंजुलावहनसे अपने स्वास्थ्यकी जाँच करायेगी?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२७१) से। सी० डब्ल्यू० ७१५६ से मी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

१. डाककी महरसे

338

### ४९०. पत्र : धीरूभाई भू० देसाईको

सेवाग्राम, वर्घा ७ सितम्बर, १९४१

चि॰ घीरूमाई,

तेरा पत्र मिछा। खरा है। मुझे सन्तोप हुआ। अन्य जो वाते मैंने मुनी हैं, उनकी मुझे कोई परवाह नहीं। उस सम्बन्धमें मैं समय मिछने पर लिखूंगा। मूलामाईकी तबीयतके वारेमें तूने कुछ नहीं लिखा। उम्मीद है, प्रसन्न होंगे।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सीजन्य: प्यारेलाल

# ४९१. सन्देश: अहमदाबादके लोगोंको

सेवाग्राम ८ सितम्बर, १९४१

जितना ज्यादा सोचता हूँ उतना ही मुझे विश्वास होता जाता है कि चरखा गरीबोंका उद्धारक है। चरखेकी खूबी इस तथ्यमें निहित है कि यदि महिलाएँ और १२ वर्षसे कम उम्रके वच्चे रोज अपना कुछ समय खादी-उत्पादनके कार्यमें छगायें तो भारत अपनी जरूरतका पूरा कपड़ा बना सकता है।

अगर ऐसा प्रयोग अहमदाबादमें छोटे पैमानेपर शुरू किया जाये तो भी मुझे विश्वास है कि मेरे कथनमें छिपे सत्यका प्रचुर प्रमाण सामने आ जायेगा।

मो० क० गांधी

[गुजरातीसे] गुजरात समाचार, १८-९-१९४१; वॉम्बे फॉनिकल, १९-९-१९४१ मी

यह सन्देश गांधीजी के जन्म-दिवसके व्यवसरपर भेजा गया था, जो विक्रम संवदके अनुसार
 सितम्बरको था।

### ४९२. पत्र: अमृतकौरको

८ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला।

कल तुम्हारे नाम दो पत्र आये थे, जिन्हें तुम्हारे मौजूदा पतेपर मेज दिया

था। आशा है, मिल गये होंगे।

तुम्हारी खाँसी ठीक होने में काफी लम्बा समय ले रही है। क्या बहुत ज्यादा बोलती हो? कुछ दिनोंका पूर्ण मौनव्रत नहीं रख सकती क्या? जादूकी तरह असर करेगा। रतलामके कागजात पढ़ने में बोझिल है। जबतक बहुत जरूरी नहीं समझूँगा, उन्हें तुम्हारे पास भेजकर तुम्हें क्लेश नहीं दूँगा।

सेवोंको कोई नुकसान नहीं पहुँचा था। अगर वे कागजमें लिपटे होते तो

शायद अधिक ताजे रह सकते थे। खैर, उनकी चिन्ता मत करने लगना।

बाकी प्रभा लिखेगी। मैं अस्पतालवाले कमरेमें हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०६८) से ; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३७७ से मी

# ४९३. पत्र : डाँ० बी० सी० लागूको

८ सितम्बर, १९४१

प्रिय लागू,

पत्रके लिए धन्यवाद। लक्ष्मीवाई खुशीसे प्रेमावाईके साथ ठहर सकती है। इससे उसे जो तंगी होगी वह बर्दाश्त कर लेगी। विच्छूके डंककी दवाका प्रयोग कर रहा हूँ। एक मामलेमें प्रयोग किया है। उसमें तो वह कारगर सावित हुई लगती है। तुम्हारा,

वापू

डॉ॰ बी॰ सी॰ लागू रामनिवास लक्ष्मी रोड, नारायण पैठ पूना-२

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३७५) से

### ४९४. पत्र: रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

८ सितम्बर, १९४१

त्रिय रथी,

तुम्हारे तारके उत्तरमें मैने तार में में विया था, इसीलिए तुम्हारे इसी १ तारी कि पत्रकी प्राप्ति स्वीकार करने में देर की है। अगर तुम और दूसरे लोग मुझे विश्वमारतीका अध्यक्ष बनाना चाहते हो, तो मुझे तुम्हारे साथ योजनाकी चर्चा करनी होगी। तुम सबोंके साथ मेरी मी हार्विक इच्छा यही है कि तीनों संस्थाओं को गुरुदेवकी गरिमांके अनुरूप बनाये रखा जाये। अभी तो मैं पाँच लाखकी राधि पूरी करने के लिए देशका दौरा करने की बात गम्भीरतासे सोच रहा हूँ — यानी यदि मेरी अपीलपर यह राधि एकत्र न हो सकी तो। शान्तिनिकेतनको सीधे जो-कुछ मेजा गया है, उसकी एक सूची मुझे मेजो।

सप्रेम,

मो० क० गांधी

श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर शान्तिनिकेतन बंगाल

अंग्रेज़ीकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ८७५२) से

र. यह उपलम्ध नहीं है।

२. विश्वभारती, शान्तिनिकेतन और सीनिकेतन

३. देखिए ए० २५६।

### ४९५. पत्र: भगवानजी पु० पंडचाको

८ सितम्बर, १९४१

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। माई पुरातनका पत्र भी मिला। उसे इस वातका दुःख है कि तुमने उसकी पाँच वर्ष पहलेकी टिप्पणी विना उसकी अनुमतिके भेज दी। उसका अब, अर्थात् पाँच वर्षके अनुभवके वाद, स्पष्ट मत है कि दादा विलक्षल निर्दोष और भोले हैं। माई पुरातनकी मान्यता है कि दादाके विरुद्ध यह अभियोग कुछ हरिजनोंका षड्यन्त्र है। मैं भी यही समझता हूँ। इन लोगोने इतने कष्ट सहे हैं कि ये अपना मनुष्यत्व खो बैठे हैं। वैसे यह सवपर लागू नही होता। यह सब सहन करने पर ही हमारा निस्तार होगा। लेकिन सहन करते हुए उनकी वार्तोमें आकर किसीपर सन्देह भी नहीं करना चाहिए।

नरहिरका छलाहना समझमें आता है। यह तो स्पष्ट है कि तुम सबूत इकट्ठा कर रहे हो। ऐसा करने से लोगों में कानाफूसी तो होगी ही। इससे वातावरण दूषित होगा। फिर तुम अपने कार्यक्षेत्रको अलग मूल रहे हो। इससे तुम्हारे कार्यमें अवस्य रकावट आयेगी। तुम आश्रमके किसी भी आदमीके पहरेदार क्यों वनते हो? इतना ही बहुत है कि तुम, मैं और हम सब अपने-अपने पहरेदार हो जायें। देखरेखका काम नरहिरका है। जिसे शिकायत करनी हो, वह उससे करे। तुम्हें तो अपने कान बन्द कर लेने चाहिए। मेरे पास तीन वन्दरोंकी एक मुन्दर मूर्ति है। वह मेरे सामने ही रहती है। उसमें एक बन्दरके तीन स्वरूप हैं। उस वन्दरके कान, मुँह और आँखें बन्द हैं। उससे शिक्षा यह मिलती है कि किसीके दोष सुने न जायें, देखे न जायें, कहे न जायें। इसका मूल तो जापानमें हजारों वर्ष पुराने एक ऊँचे स्तम्मपर खुदा हुआ है। इस उपदेशको हमें अपने हृदयमें खोद लेना चाहिए।

जब तुम आओगे, तब तुम्हारी सुनूँगा। फिलहाल मैं किसीको बुलाने को तैयार नहीं हूँ। मेरा मन यदि थोड़ा भी डिगेगा तभी तो मैं दूसरोंको बुलाऊँगा। लेकिन यदि नरहिरको दृढ़ विश्वास हो तो मैं उसकी उपेक्षा करके कोई जाँच नहीं करूँगा। तुम नरहिरकी सम्मतिसे चाहो तो यहाँ १५ दिन या अविक मी रह सकते हो। लेकिन नीमूकी खातिर खास तौरपर आने या रहने की जरूरत नहीं है। उसे किसी-न-किसीका साथ मिल जायेगा।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३९६)से। सीजन्य: भगवानजी पु० पंडचा

#### ४९६. पत्र: नारणदास गांधीको

सेवाग्राम ८ सितम्बर, १९४१

चि॰ नारणदास,

तुम्हारा १ तारीखका पत्र मिला। 'रैंटिया-बारस' के लिए मैं तुम्हें श्री जाजूजी का नाम तो भेज चुका हूँ। वह पत्र तुम्हें कंब-का मिल गया होगा। इसी कारण जाजूजी के अन्य कार्यंक्रम स्थिगत कर दिये गये हैं। वे तुम्हें आठ या दस दिन देने को तैयार रहेंगे। अब तो तुम्हारी ओरसे मुझे उनका कार्यंक्रम मिलना चाहिए।

छगनलाल यहाँ एक दिन रह गया। [रकम] पूरी करने का आक्वासन तो देगया है। जरूरत पड़ी तो वह रंगून तक जायेगा। तुम्हारे यहाँ बारिश होने की

खबर अखबारमें है। नया अच्छी वर्षा हुई ?

मेरा अविश्वास तो भाई प्रमाशंकरके प्रति है, लेकिन चम्पा भी तो उसमें सिम्मिलित मानी जायेगी न? वह बेचारी तो वही करेगी जो भाई प्रभाशंकर कहेगे और यह स्वामाविक भी है। मैंने तो यहाँतक जमा लिया था कि जब मगनमाई यहाँ हों, तभी वह आयें। अब तो महादेव दिल्लीमें है, और अक्तूबरमें लौटेगा। कुछ दिन यहाँ रहकर २० के आसपास रंगून जाने की सोचता है। तुम्हारा पत्र बादमें मिला। जाजूजीवाली खबर इसके साथ ही है। यह ठीक होगा कि मेरा सन्देश जाजूजी के साथ भेजा जाये। अभी भेजना तो बहुत जल्दी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५४३ से मी; सौजन्य: नारणदास गांधी

१. देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको ", ५० ३०६।

२. हॉ॰ प्राणजीवनदास मेहताके पुत्र

३. चम्पाके पिताइ

४. टॉ॰ प्राणनीबनदास मेहताके प्रत्र रतिलाल मेहवाकी परनी

५. म्यन्छाङ, प्राणनीवनदास मेहताने कनिष्ठ पुत्र

#### ४९७. पत्र: कृष्णचन्द्रको

८ सितम्बर, १९४१

चि० कु० चं०,

विकार मनमें आते हैं उसका अर्थ यह हुआ कि मन खाली है और कुदरतको खालीपनकी नफरत है। इसलिए जब मन राम-नामसे या उसके कामसे खाली है तो शैतान कब्जा लेता है। इसीमें जब विकार चढ़ाई करे तब और विकारोंको रोकने का एक हि तरीका है। राम-नाम रटण और रामका काम। इसमें हार होती ही नहि। जबतक जीत न मिले, मात्रा बढ़ाते रहना। अन्य कोई उपाय है हि नहि।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०३) से

### ४९८. पुर्जा: रामनारायण चौघरीको

८ सितम्बर, १९४१

चि॰ रामनारायण,

अंजनाका मैंने सुना था। दुःख हुआ लेकि (न) गमराहट-जैसी कुछ नहीं। आज प्रार्थनाके बाद शीघ्र मौन खुलेगा। तब हम तीन बैठ जायंगे। एकान्त ही होगा। घूमने के समय बात करना ठीक नहीं होगा।

बापूके आशीर्वाद

बापूं: मैंने क्या देखा, क्या समझा?, पू० १६७

रै. रामनारायण चौधरीकी पत्नी

२. रामनारायण चौधरीका स्वास्थ्य अचानक गिर जाने की बात सुनकर

### ४९९. पुर्जा: रामनारायण चौघरीको'

[ ६ सितम्बर, १९४१]

फजरमें

दूष ३० तोला १ मोसंबी

११ बजे

एक केला एक तोला घी

२० तोलेके कटोरेमें आरामसे जा सके इतनी माजी इस ग्रेनसे अधिक नमक नहीं

भाजोमें लींबू डाल सकते हो।

२ बजे भूख लगे तो ३० तोला छाछ और २० ग्रेन सोडा और मोसंबी एक ५-२० को

३० तोला दूव २० तोलेके कटोरेमें माजी

ककडी मिले तब पाँच तोला ककडी कच्ची

एक मोसंबी

रातको बहुत मूंख तो एक केला। कैला लेकर बराबर चवाकर लेना या मेश करके। यह ज्यादामें-ज्यादा है। तीन दिन दस्त न आये तो ऐनीमा लेना। मुझको रोजका हिसाब देना। अब तो रोज-कें-रोज क्योंकि कुछ परिवर्तन करना पढ़े तो करं। लिखके मेजो।

बापू : मैंने क्या देखा, क्या समझा ?, पू० १६७-६८

१ और २. यह तथ हुना था कि रामनारायण चौधरीको नालवाकी जाने से पहले सेवाप्राममें ही गांधीनी के इस नुस्तेकी आनमादश करनी चाहिय, जो इस वारीखके पुर्नेक साथ प्राप्त हुआ या; हेस्तिय पिछका शीर्षक।

#### ५००. पत्र: एम० जी० भावेको

सेवाग्राम ९ सितम्बर, १९४१

प्रिय मावेजी<sup>1</sup>,

आपका पत्र मिला। मेरी तो वही राय है जो पहले थी। हर चीजमें मै साम्प्रदायिकताके एकदम खिलाफ हूँ, लेकिन खेल-कूदमें तो और अधिक।

आप मेरी इस रायका जो भी उपयोग चाहें कर सकते है। क्रुपया इससे अधिक और कुछ करने के लिए मुझसे न कहें। मेरे पास समय नहीं है।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांघी

अंग्रेजीकी नकलसी: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

## ५०१. पत्र: आर० कृष्णमूर्तिको

सेवाग्राम, वर्घा (सी० पी०) १० सितम्बर, १९४१

त्रिय कृष्णमूर्ति,

मुझे आपका यह सुझाव पसन्द आया कि नेतागण मिलकर अपना एक सुवि-चारित निर्णय पेश करें। आप जनताका नाम लेते हैं, लेकिन बात अपनी कहते

- १. मन्त्री, महाराष्ट्र क्रिकेट पसीशिपशन
- एम० जी० सावेने अपने २६ बगस्त, १९४१ के पत्रमें साम्प्रदाविकतापर बाधारित क्रिकेटके
   खेड और इसमें हिन्दुब्लेंके हिस्सा छेने के विषयमें गांधीजीकी राय माँगी थी।
  - रे. देखिए खण्ड ७३, ए० २२९-३०।
  - ४. महासकी साप्ताहिक तमिल पत्रिका कृष्टिकके संस्थापक और सम्पादक
- ५. श्री आर० कृष्णमृतिने गांधीजी को अपने एक सम्पादकीय केवता अंग्रेजी अनुवाद भेजा या, जिसमें युद्धकी समाण्तितक स्वतन्त्रता-आन्दोक्रनसे अक्ष्म रहने के गांधीजी के निर्णयपर जनसाधारणमें ज्यापत निराशाको व्यवत किया गया था। केवमें राष्ट्रीय नेताओंसे इस वातकी जोरदार माँग की गई यो कि ने गांधीजी से संवर्धको पुनर्जीवित करने का अनुरोध करें।

हैं। क्या जनता मूक नहीं है? रही आपके सुझावकी बात, तो मैं यन्त्रवत् तो कुछ नहीं कर सकता। ईश्वरकी जो इच्छा होगी, वही होगा।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे] कल्कि, २६-१०-१९७५ में प्रकाशित प्रतिकृतिसे

### ५०२. पत्र: अमृतकौरको

१० सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

शुद्ध हिन्दीमें लिखा तुम्हारा पत्र मिला।

सरोजिनो कल चली गईं — हमेशाकी तरह उल्लासपूर्ण। उनकी बातें दिल-चस्प तो थी; लेकिन कुछ बतानेवाली नहीं। और वे नई बात बता भी क्या सकती थी?

सख्य अभी यही है। कल इलाहाबादके लिए रवाना होगी। उसीसे पता चला कि जर्े और र॰ ठीक है। वह खुद कुछ कमजोर हो गई है, लेकिन वैसे ठीक-ठाक है।

अन्नपूर्णा पहलेसे अच्छी है। राजेनबाबू आज ही सपत्नीक आये हैं। मेरी अभी मूलाकात नहीं हो पाई है। वे वर्षामें आराम कर रहे हैं। वे अभी कमजोर तो हैं, लेकिन वैसे ठीक है।

महादेव अहमदाबादका काम निबंटाये बिना यहाँ नही आयेगा।

वे लोग चाहते हैं कि मैं तुम्हें १ अवत्वरको अलवर भेजूँ। मैंने साफ मना कर दिया है। तुम्हारी तबीयत ठीक होती तो मैं तुम्हें जरूर भेजता। लेकिन तुम कब पूरी तरह स्वस्थ होगी, कहना मुक्तिल है। वापस आते समय किसीको अपने साथ लेती बाओ तो अच्छा होगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०६९) से; सीजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३७८ से भी

- **१. सरोजिनी नायद्**
- २. जवाहरकाक नेहरू
- ३. रणजीत पण्डित

#### ५०३. पत्र: जे० सी० कुमारप्पाकी

१० सितम्बर, १९४१

प्रिय कु[मारप्पा],

यह सुझात्र झवेरभाईका है। क्या यह तुम्हें व्यावहारिक और आवश्यक लगता हैं.? झ० से बात कर लेना।

मलाईका जो विश्लेषण तुमने भेजा है, वह गलत जान पड़ता है। मैं पूछ-ताछ कर रहा हूँ।

सप्रेम,

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५९) से

### ५०४. पत्र: कन्हैयालाल वैद्यको

१० सितम्बर, १९४१

में परदेके पीछे यथाशिकत यथासंभव कार्य कर रहा हूं।

वापू

मुल पत्रसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह शब्द देवनागरीमें है।

२. गांघीजी ने प्रस्तुत पत्र कन्दैयाळाळ वैद्यके ७ तारीखके पत्रपर ही क्लिस या, जिसमें केळके कर्ष्टों की रिपोर्ट थी।

### ५०५. पत्र: टी० एस० चोकॉलंगम्को

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय चोकलिंगम्',

आपको यहाँ आने का कष्ठ नहीं देना चाहूँगा, क्योंकि डाँ० सुब्बारायन खुद आ रहे हैं।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

श्री टी॰ एस॰ चोर्कालगम् 'दिनमणि' १०० माउण्ट रोड मद्रास

अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ २९७६) से। सौजन्य: टी॰ एस॰ चोकल्जिम्

५०६. पत्रः अमृतकौरको

११ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

तो अभी तुम बिलकुल ठीक नहीं हो पाई हो। यह मुँहका गठिया क्या होता है? यह तुम्हें होना ही क्यों चाहिए? कोई ज्यादा गम्भीर वजह होगी। तुम दिल्ली के हाडिंग कॉलेज अस्पतालमें पूरी तरह अपनी जाँच-इलाज करवा लो तो कितनी अच्छी बात हो। लेकिन शायद शम्मी नहीं मानेंगे। दूसरा सुझाव मैं बम्बईका दूँगा। सरदारका इलाज एक होमियोपैय कर रहा है और वै पहलेसे अच्छे हैं। मुख्य चीज है ठीक होना।

तुम्हारे शिष्योंके दो पत्र साथ भेज रहा हूँ।

शैलेन वापस आ गया, क्या यह बात मैंने तुम्हें बताई थी? मैंने उसे हिन्दी, और चरखेमें लगा दिया है। ज़सने नागपुरमें अपना समय व्यर्थ नहीं गैंवाया। वह पहलेसे अधिक अनुशासित हो गया है।

#### १. मदासके तमिल दैनिक दिनमणि के सम्पादक

सेवोंके वारेमें मैं जरूर पूछताछ करूँगा। अन्नपूर्णा डॉ॰ डेविडसे जाँच कराने के लिए नागपुर गई है। राजेन्द्रवावू अभी सेवाग्राम नहीं आये हैं। सप्रेम.

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७०) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३७९ से मी

#### , ५०७. पत्र: जी० रामचन्द्ररावको

११ सितम्बर, १९४१

ं प्रिय मित्र,

नास्तिकताका अर्थ अपने अस्तित्वको अस्वीकार करना है। इसके प्रचारमें अवतक कोई सफल नहीं हुआ है। आपको जो सफलता मिली है वह इसिल्ए कि आपने अपने आसपासके लोगोंकी शुद्ध सेवा की है। खेद है कि मैं आपको यहाँ आने को निमन्त्रित नहीं कर सकता। मेरे पास बातचीतके लिए समय नहीं है।

हृदयसे जापका,

[अंग्रेजीसे] एन एथीस्ट विद गांधी, पु० २६

२. जी० रामचन्द्ररावने लिखा था: "यक साळतक मैंने नास्तिकतावादी दृष्टिकोणसे बस्यह्यताकी समस्याको इल करने की कोशिश की है।... नास्तिकतावादी दृष्टिकोण मुख्यतः इस वातमें निहित रहा है कि यह हिन्दू, मुसळमान बोर ईसाई-जैसे साम्प्रदायिक विल्लोंको लस्बीकार करता है।... अवतक हमारा कार्यक्रम व्यवस्थित दंगसे समय-समयपर विभिन्त धर्मों के छोगोंके सहमोजके लायोजनतक सीमित रहा है।... गाँवके बातावरणमें, जहाँ जाति-बन्धन वहे कठोर हैं, खुळेलाम विभिन्न धर्मोंक छोगोंके सहमोजका लायोजन बातावरणमें, जहाँ जाति-बन्धन वहे कठोर हैं, खुळेलाम विभिन्न धर्मोंक छोगोंके सहमोजका लायोजन बातावरणमें, जहाँ जाति-बन्धन वहे कठोर हैं, खुळेलाम विभिन्न धर्मोंक छोगोंक सहमोजका लायोजन बातावरणमें मानवा पैदा होती है।..."

## ५०८. पत्र: अनुलानन्द चक्रवर्तीको

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय अतुलानन्द,

मुझे लगता है जो रास्ता तुमने चुना है वह तुम्हें अकेले तय करना है। तुम निश्चित मानो कि अगर कोई संस्था बनाने से प्रयोजन सिद्ध होता, तो मैंने अवश्य बनाई होती। एक बार कोशिश की मी गई, लेकिन फिर छोड़ देनी पड़ी। लेकिन मैं तुम्हारा विश्वास डिगाना नहीं चाहता। तुम डटे रहो।

> तुम्हारा, मो० क० गांधी

श्री अतुलानन्द चक्रवर्ती पी० १४८, जनक रोड पी० ६ रासविहारी एवेन्यू कलकत्ता

मूल अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी • डब्ल्यू ० १४८३) से । सौजन्य : ए० के० सेन

#### ५०९. पत्र: नलिनीरंजन सरकारको

११ सितम्बर, १९४१

प्रिय नलिनी बाब्,

मुझे स्वीकार करना होगा कि आपके सरकारी पद स्वीकार करने की बात सुनकर मैं आश्चर्यचिकत रह गया। मैं तो बस आशा ही कर सकता हूँ कि आपकी आशाएँ फळीमूत हों। आप जब भी लेना चाहें, मेरी सलाह आपको सदैव सुलभ होगी आपके पत्रसे पता चलता है कि यद्यपि प्रतिबन्ध हटा लिया गया है, पर आपने कांग्रेसमें पुनः प्रवेश नहीं किया है।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

# ५१० पत्र: कन्हैयालाल मा० मुंशीको

११ सितम्बर, १९४१

माई मुंशी,

तुम्हारा लम्बा पत्र पढ़ गया। मैं तुम्हारी व्यथा समझ सकता हूँ। लेकिन यह तुम्हें आगे ही ले जायेगी। अगर पहले तुम्हें मेरा सहारा था, तो आज भी तुम उससे वंचित नहीं हो। अनेक लोग तो यही समझते हैं न?

में यह विचार तुम्हारे मनमें से निकाल देना चाहता हूँ कि दूसरे राष्ट्रोंकी मददके बिना हमारा काम नहीं चलेगा। चीन, रूस और इंग्लैंडके उदाहरण हम पर लागू नहीं हो सकते। चीन स्वतन्त्र होने के बाद जापानसे जूझने के लिए दूसरोंकी मदद चाहता है। रूस और इंग्लैंड तो स्वतन्त्र है ही। स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने पर हम चाहे हजारोंसे मदद माँगें, लेकिन तभी, जब हमने शस्त्रोंके बलसे स्वतन्त्रता प्राप्त की हो। ऑहसासे प्राप्त स्वतन्त्रताकों किसी मददकी अपेक्षा नहीं होगी, अथवा होगी तो सारे जगत्से मददकी होगी। यह सब इतना स्पष्ट है कि तुम्हें समझने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए। लेकिन अगर हो, तो केवल इसी प्रश्तका निराकरण करने के लिए समय निकालकर आ जाओ। यह प्रश्न बहुत महत्त्वका है। जिस सन्दर्भमें तुमने ये शब्द कहे उसमें तो ये बिलकुल उचित नहीं लगते। पाकिस्तान-सम्बन्धी लड़ाई दो माइयोंके बीचकी लड़ाई है। उस लड़ाईमें एक माई दूसरेसे हार जाये, यह समझमें जाता है, लेकिन किसी तीसरेकी मदद लेकर जो जीतेगा वह खुद गुलाम बनेगा और दूसरेको भी गुलाम बनायेगा। आज अंग्रेज किसकी मदद कर रहे हैं? वर्तमान स्थितिमें पाकिस्तानको अस्तित्व ही कहाँ है? इसके विपरीत, अखण्ड हिन्दुस्तानका अस्तित्व कमसे-कम कल्पनामें तो है। उस कल्पनाको सत्य करने का हिन्दुस्तानका अस्तित्व कमसे-कम कल्पनामें तो है। उस कल्पनाको सत्य करने का

१. क० मा० मुंशीने लिखा था: "मारतकी राष्ट्रीयता और प्कताकी रक्षाके लिए किसी विदेशी ताकतकी मदद स्वीकार करने में मैं कोई हेठी नहीं मानता — वह ताकत बाज जिटेन हो सकता है, और कौन जाने युद्धके बाद कौन हो। चीन क्या कर रहा है? क्या रूस विदेशी सहायता नहीं के रहा है? क्या इंकेंड भी यही नहीं कर रहा है?"

२. तारवर्ष कि मा० सुझोंके क्वारसके भाषणमे हैं, जिसमें उन्होंने कहा था: "विमाजनको रोक्षने के छिए देशके कोने-कोने से छोग आपेंगे! अगर जरूरत हुई तो इम किसी मित्र देशकी मदद माँगेंगे! अगर जरूरत हुई तो इम विश्व जनमतके समक्ष उपस्थित होंगे और उससे अपनी मदद करने और एक ऐसे संकटको रोकने के छिए कहेंगे जो ४० करोड़ आदमियोंक जीवनको नष्ट कर देगा!"

३. क० मा० गुंशीने 'अखण्ड हिन्दुस्तान फ्रंट' नामक आन्दोलन चलाया था। सन्होंने अपने पत्रमें लिखा था: "मैं तो आकाश में उद्देनेवाला एक कण-मात्र हूँ, जब कि आप (गांधीजी) सौर-मण्डलके एये हैं।"

प्रयत्न करनेवाला चाहे आकाशमें उड़नेवाला एक कण ही हो, फिर भी वह उड़ तो रहा है। उसकी कल्पना उसे ऊँचा उठा रही है, नीचे नहीं गिरा रही। व्यक्तिस्वातन्त्र्यके अपने मावके बूते वह आकाशमें जगमगा रहा है। उसे किसकी मदद की जरूरतं है? और फिर यदि सारे कण एकत्र हो जायों, अर्थात् अपने व्यक्तित्वको पहचानें, तो वे ही आकाश हो जायों। क्या तुम बिना कणोंके आकाशकी कल्पना कर सकते हो? अतः अखण्ड हिन्दुस्तानके लिए लड़ने को कटिबद्ध तुम तो किसीसे मदद लेने का विचार मनमें ला हो नहीं सकते। यह तुम्हें शोमा नहीं देगा। यह तुम्हारे परिपक्व विचारोंको धुँचला कर देता है। अब और लिखना तो समय नष्ट करना होगा। लेकिन 'विज्ञेषु कि बहुना?'

बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:] -

चि० सरलाको उसके भागीदारोंकी ओरसे जवाब नहीं मिला, इसलिए वह कुछ खिन्न रहती है। तुम उन लोगोंकी तरफसे कह रहे हो या तुम दोनोंकी तरफसे? अगर भागीदारोंकी तरफसे न कहा हो, तो हो सके तो उनसे पूछकर अनुमति मेजना। अगर उन्हें अङ्चन हो और अनुमति न दे सकें, तो सरला तुरन्त वापस चली आयेगी।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६८) से। सौजन्य: कन्हैयालाल मा० मुंशी

### ५११. पत्र: सरस्वती गांधीको

११ सितम्बर, १९४१

चि० सुरू',

तरा खत मिला। तू दीर्घायुषी बन और शुद्ध सेविका बन, यह तुझे वा के और मेरे आशीर्वाद। कुछ-न-कुछ व्याघि तो शरीरके साथ रहती है, उसे सहन करना पड़ता है। कोई रोज तो मिलेंगे।

बापुके आशीर्वाद

चि० सुरू [मार्फेत] श्री कान्ति गांघी देवराज मोहल्ला मैसूर<sup>९</sup>

पत्रकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ६१८१) से। सी॰ डब्ल्यू॰ ३४५५ से मी; सौजन्य: कान्तिलाल गांधी

इरिकाल गांधीके पुत्र कान्तिलाल गांधीकी पत्नी
 पता सी० डम्ल्यू० प्रतिसे लिया गया है। यह रोमन क्रिपिमें था।

### ५१२. भेंट: 'हिन्दू'के प्रतिनिधिको

े वर्घागंज ११ सितम्बर, १९४१

मैंने आज गांघोजी से भेंट की और श्री चिंचलने हाउस ऑफ कॉमन्समें दिये हालके ही अपने भाषणमें भारतके विषयमें जो-मुख कहा था उसके बारेमें उनसे कुछ प्रश्न पूछे। गांबोजी ने किसी भी प्रश्नका उत्तर देने से इनकार कर दिया। तब मैने उनसे पूछा: "देखता हूँ, आप मेरे पूछे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और संगत प्रश्नोंके उत्तर देने को भी तैयार नहीं हैं। क्या आप सोचते हैं कि भारतकी स्वतन्त्रताके जिस ध्येयके लिए कांग्रेस संघर्ष कर रही है, उसमें आपकी चुप्पी किसी तरह सहायक होगी?" उत्तरमें गांधीजी ने कहा:

अगर मैं ऐसा न मानता तो आपके कुछ कहे बिना ही मैंने एक वक्तव्य जारी कर दिया होता। लेकिन मेरा हार्दिक विश्वास है कि मेरा मौन मेरे मुँहसे ु निकले किन्हीं भी शब्दोंसे कही अधिक मुखर है। अन्ततः शब्दोंका कोई महत्त्व नहीं होता, कार्यका ही महत्त्व होता है। मेरा कार्य समग्र मारतके — और अगर आप कहना चाहें तो कह सकते हैं कि — समस्त विश्वके सामने हैं।

[अंग्रेजीसे]

हिन्तू, १२-९-१९४१। सी० डब्ल्यू० ४०७५ से मी; सौजन्य: अमृतकौर

१. ९ सितम्बर, १९४१ को अपने माषणमें चिंचलने कहा था: "सारत, वर्मा या ब्रिटिश साझान्यके दूसरे मार्गोमें संवैधानिक शासनके विकासके सम्बन्धमें अपनी नीति बनाते हुए सरकारने समय-समय पर जो बक्तव्य जारी किये हैं उनमें इस संशुक्त बोषणासे कोई अन्तर नहीं आता। अगस्त १९४० की घोषणामें हमने यह बचन दिया है कि हम विभिन्न जातियोंके ब्रिटिश राष्ट्रकुळमें स्वतन्त्र और वरावरीके साझेदारका दर्जा हासिल करने में भारतकी सहायता करेंगे, लेकिन निःसन्देह मारतके साथ हमारे दीई सम्बन्धसे जो दायिस हमपर आये हैं और वहाँके विभिन्न पमाँ और जातियोंके लोगों तथा अलग्न मलग हितींके प्रति हमारी जो जिम्मेदारियों हैं उन्हें निमाने का खयाल तो रखना ही पहेगा।"

### ५१३. पत्रः अमृतकौरको

१२ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

बायें हाथसे लिखा तुम्हारा पत्र मिला। कैसी दु:खद बात है कि तुम अपने दाहिने हाथसे काम नहीं ले सकती! कलवाली सलाह आज फिर दोहरा रहा हूँ। इलाजके लिए दिल्ली चली जाओ, या यही आ जाओ। यहाँ ठीक नहीं हुई तो तुम्हें बम्बई भेजा जा सकता है। मेरा निश्चित मत है कि शिमला इस समय तुम्हारे लिए अनुकूल जगह नहीं है।

तुम जो-कुछ मी करो, उसमें शम्मीका हार्दिक सहयोग जरूर होना चाहिए। कुटिया रहने लायक बन गई हैं। दीवारोंका काम पूरा किया जा रहा है। लेकिन

रहने योग्य बन चुकी है।

म[हादेव] कुछ दिन और बाहर रहेगा। तार द्वारा सूचित करना कि क्या तय किया। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७१) से; सीजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३८० से मी

# ५१४. पुर्जा: मुन्नालाल गं० शाहको

१२ सितम्बर, १९४१

अब तो लिखकर जवाब देने की जरूरत नहीं है न? हो, तो लिखने की तैयार हैं।

बापू

् गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६४३) से

### ५१५ पत्र: मृदुला साराभाईको

सेवाग्राम, वर्षा १२ सितम्बर, १९४१

चि॰ मृदु,

तेरे एक प्रश्नका उत्तर देना तो मैं मूल ही गया था। आज सबेरे अचानक याद आ गया।

अन्दोलन' गुरू हुआ या १८ अक्तूबरको और जवाहरलाल पकड़े गये ३१ अक्तूबरको। दिवस मनाने में मुझे कोई दिलचस्पी नही है। कोई ऐसा महस्वपूर्ण दिवस ही मनाया जाना चाहिए जिसका लोगोंपर गहरा प्रमाव पड़े। दिवस मनाने का उपक्रम बहुत मामूली चीज हो गई है। जनताकी ओरसे उसका उत्तर भी वैसा ही मिलता है। ऐसी स्थितिमें दिवस मनाने की मेरी हिम्मत नहीं होती। यदि तू किसी ऐसे कार्यक्रमका सुझाव दे सके जो करोड़ों लोगोंका हृदय छू सके तो उसमें अपनी सहमति अवस्य दूँगा। सत्याग्रह-दिवस और जवाहरलालके पकड़े जाने का दिन, दोनों अलग-अलग हैं। इस बारेमें ठीक विचार करके तू रास्ता दिखा। महादेव के साथ और यदि हो सके तो सरदारके साथ, सलाह-महाविरा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

### ५१६. पत्र: घनश्यामदास बिङ्लाको

१२ सितम्बर, १९४१

माई घनश्यामदास,

हनुमानप्रसादजी का खत म० के मार्फंत परसों मिला।

किस्सा दु:खद है। स्पष्ट अभिप्राय है कि जो गळतीयां हुई है उसका पूर्ण स्वीकार करके हि राघवदासजी अपनी दुर्बळताको दूर [कर] सकते है। सिवाय ऐसी सुद्धिके उनके हाथसे हानि ही हो सकती है। वे सज्जन है इसिल्ये तो बिना स्वीकार ज्यादा हानि होगी। सज्जनताकी एक निशानी तो यह है कि गळतीका पूर्ण स्वीकार सारे जगत्के पास किया जाय। सत्याग्रहीके लिये तो दूसरा चारा हि नहीं

- १. व्यक्तिगत समिनय भवशा मान्दोलन
- २. बाबा राववदास, उत्तर प्रदेशके एक प्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता

है। इसिल्ये प्रथम कर्तव्य यह है कि कोई अच्छा सत्पुरुष उनसे मिले। तुमारे तरफ से कटीग मिली थी।

बापुके आशीर्वाद

मूल (सी॰ डब्ल्यू॰ ८०४७) से। सीजन्य: घनश्यामदास बिङ्ला

५१७. पत्र: कृष्णचन्द्रको

१२ सितम्बर, १९४१

चि० कृष्णचंद्र,

हमारी त्रूटीयांकी बरदाश्त दूसरे करते है ऐसे हि हम मी करें। इसका यह सर्थ कमी न किया जाय कि हम किसीको जान-वृह्मकर नियमोंका मंग करने दें। दो चीजमें फरक है न?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०४) से

५१८ पत्र: अमृतकौरको

१३ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। शुम समाचार मालूम हुआ। फिर भी तुम्हें शिमलासे तो निकल हो पड़ना चाहिए। मैं ऐसा ही सोचता हूँ। सुशीला भी कहती है कि गठियाके रोगियोंके लिए शिमला आदि ठंडी जगहें ठीक नही है। वह बम्बईके पक्षमें भी बहुत अधिक नहीं है।

हमेशाकी तरह इस बार भी तुम्हारी बात ठीक थी। पहले मेजे गये सेव कागजोंमें लिपटे थे। प्रभाने उन्हें अच्छी तरह पैक किया हुआ देखा था। काममें खामख्वाह की दखलन्दाजी करने की आदतवाले किसी व्यक्तिने कागज उतार दिये। अगली वार भेजे गये सेवोंकी संख्या भी लिखना।

बुलको सरकारसे इस आध्यंका उत्तर मिला है कि अगर वह सीमा प्रान्त और कवायली क्षेत्रमें प्रवेश न करने का वचन दे तो उसे स्वतन्त्र रहने दिया जायेगा। वह लिखने जा रही है कि वह इस तरहका कोई वचन देने को तैयार नहीं है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७२) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३८१ से भी

#### ५१९ पत्र : अमृतकौरको

१४ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

सुशीला कल आई और आज ही चली गई। प्रमा अपनी माँके अन्विविश्वासका तकाजा पूरा करने दो-तीन दिनोंके लिए उनके पास गई है। उसके माईके यहाँ बच्चा हुआ है। उसीके किसी संस्कारमें शामिल होने गई है। २३ को वापस आ जायेगी। अन्नपूर्णा इलाजके लिए सुशीलाके साथ गई है। तपेदिकका शक था, लेकिन डाँ० डेविड कहते हैं कि तपेदिकके कोई लक्षण नहीं है। लेकिन उसे हलका बुखार रहता है और वह कमजोर भी हो गई है।

दो शिष्टमण्डल मुझसे मिलने आये हुए हैं। एकमें अल्लाबस्वा और सिषवा

हैं। दूसरा बर्मासे आया है।

मुंशीकी बेटी सरला कुछ दिनोंके लिए यहाँ आई है। उसने प्रभाकी जगह छे ली है। बहुत अच्छी लड़की है। भारतकी तीन महिला वकीलोंमें से एक है। लेकिन उसकी रुचियाँ बहुत सादी हैं और उसने यहाँ समीसे दोस्ती कर ली है। कुछ दिन मेरे साथ बिताने के लिए आई है।

सप्रेम,

बापू

#### [पुनश्च:]

ु तुम्हारा पत्र मिला। श्री हेनकॉक २७ सितम्बरकी शाम ४ बजे मिल सकते हैं। तुम बेहतर हो, यह जानकर खुशी हुई।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३८२ से मी

१. सिन्धके मुख्य मन्त्री

२. सिन्व कांग्रेस विवायक दछके नेता आर० के० सिषवा

<sup>्</sup> ३. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", २५-९-१९४१ मी।

### ५२०. पत्र: दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

१४ सितम्बर, १९४१

चि॰ काका,

रेहानाके जाने के बाद तुम्हारी चिट्ठी मिली। मारतीय माषा संघकी अरिसे कन्नड़में 'नवनीत 'प्रकाशित करने में मुझे कोई हर्ज नहीं मालूम होता। उसके सदस्यों से सम्मति प्राप्त कर लेना। क्या तुम 'नवनीत' में कन्नड़के लेखोंका हिन्दी पाठ नहीं देना चाहोगे ?

सम्मेलनमें जो प्रस्ताव रखना जरूरी समझो, उनका मसौदा तैयार कर स्रो। राजेन्द्र बाबूसे मिस्रो। मुझसे जो मदद चाहिए सो लो। पुस्तक वापस मेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५१) से

# ५२१. पत्र : मनु सूबेदारको

सेवाग्राम १४ सितम्बर, १९४१

माई सुवेदार,

तुम्हारा पत्र मिला। भेरे खयालसे तुम फिर फैंस गये। कायदे-आजमने एक मी बात निश्चयपूर्वक नहीं कहीं। उन्हें दो राष्ट्रोंकी बात सिद्ध करनी है और देशका वेंद्रवारा कराना है। यदि कोई दो माइयोको अलग करना चाहे तो जैसे उसकी वात नहीं सुनी जाती, वैसा ही इस मामलेमें भी है।

कांग्रेसपर लगाये गये इलजाम झूठे साबित हो चुके हैं, और यदि न हुए हीं

तो वे पंचके सामने रखे जा सकते हैं।

सरकार और कांग्रेसके बीच रहकर जहाँसे ज्यादा मिल सके, वहाँसे ज्यादा लेकर आगे बढ़ने की नीति जबतक वे बरतते रहेंगे, तबतक समझौता होना असम्मव समझना चाहिए। इस नीतिसे कमी सन्तोष मिल ही नहीं सकता।

#### १. बाम्बंके एक वर्षशास्त्री

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि सिन्ध, ढाका और अहमदाबादके दंगे केवल काग्रेसको दवाने के लिए थे। फिर भी मैं उनकी उपेक्षा करने को तैयार हूँ। अर्थात् झगड़ेको जितनो बातें हैं वे सब पंचके सामने रख दी जायें। मेरा खयाल है कि इसके सिवा कुछ नही हो सकता।

यह मी याद रखो कि सारे प्रश्नोंका अन्तिम निबटारा लोग अपने-आप कर लेंगे और हम सब बीचमें लटकते ही रह जायेंगे। इसलिए मेरी तो सलाह है कि तुम इस झमेलेसे अपना हाथ खीच लो या फिर कुछ मौलिक सिद्धान्तोंको लेकर बात करो। यदि तुम एक बातपर मी डटे रहे तो इतना ही काफी होगा। जबतक वे आपसमें ही समझौतेका निश्चय न करें, तबतक कोई बात नही हो सकती।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २: सरदार वल्लभभाईने, प्० २५२-५३

### ५२२. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१४ सितम्बर, १९४१

माई वल्लममाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मैने 'सूबेदारको जो उत्तर' मेजा है उसकी नकल मेज रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि वह समझ जायेगा। हमें तो सभी तरहके और हर तरह की योग्यतावाले आदिमियोंसे यथासम्मव जितना लिया जा सके उतना काम लेना है न?,

फिलहाल तुम किसी तरहकी चिन्ता मत करना। तुम्हारी तबीयत विलकुल सुघर जानी चाहिए। यदि तुम होमियोपैथीसे अच्छे हो जाजोगे तो मेरा उसपर कुछ विश्वास जम जायेगा। मेरा उसपर कमी विश्वास वैठा ही नही। मैंने एक मामला उसके जानकारको सौंपा था, परन्तु कोई परिणाम नहीं निकला। ताराका मामला सौंपा था। पर यह तो यों ही लिख दिया है। मैं तो चाहता हूँ कि तुमको होमियोपैथीसे लाम हो। मैंने इसको तारीफ तो बहुत सुनी है। दास उसमें विश्वास एवं से से सोतीलालजी और गुरुदेवका भी विश्वास था। अपने लक्ष्मीदास भी तो उसीमें मरोसा रखते हैं न? परन्तु अन्तमें सब एकोपैथीके द्वारपर आ खड़े होते

१. देखिए पिछका शीर्षका।

२. तारा मशस्याण

३. चित्तरंजन दास

पत्र: अमृतकौरको

340

हैं। यह सब मैने व्यर्थ ही लिख दिया है, परन्तु जाने देता हूँ। हमें तो कामसे मतलब है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लममाई पटेल ६८ मैरीन ड्राइव बम्बई

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २: सरदार बल्लभभाईने, पृ० २५१-५२

५२३. पत्र: अमृतकौरको

१५ सितम्बर, १९४१ -

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी यह राय और मी दृढ़ होती जा रही है कि तुम्हें शिमला छोड़ देना चाहिए और यदि तुम्हें मरोसा हो और शम्मी पूरी तरह सहमत हों तो कही और भेजी जाने से पहले तुम्हें यहां आ जाना चाहिए। मैं अपने मनमें यह सुशक्तिमी पाले हुए हूँ कि सम्भवतः मेरे साथ रहने-मरसे ही तुम स्वस्थ हो जाओगी! मेरी वातपर विचार करो और अगर तुम्हारे मनको यह स्वीकार हो तो इस सुझावपर शम्मोके साथ तटस्थ भावसे चर्चा करके फैंसला करो। अगर यहाँ आना तय करती हो तो जल्दी आ जाओ। यहाँ आओ तो अपने साथ किसीको मददके लिए लेती आओ। अपनी तबीयतका हाल और अपना फैसला तारसे सूचित करो।

के० की किताबको खुदपर मार मतंबनने दो। ज्यादा समय लगे तो भी चिन्ता मत करना।

मुंशीकी बेटी अभी यही है। बहुत ही अच्छी, बड़ी मेहनती और बच्चोंसे प्यार करनेवाली छड़की है।

संप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०७४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३८३ से मी

## ५२४ पत्र: प्रफुल्लचन्द्र घोषको

१५ सितम्बर, १९४१

प्रिय प्रफुल्ल,

सरदार होमियोपैथिक इलाज करवा रहे हैं। पहलेसे कुछ बेहतर महसूस करते हैं। लेकिन उन्हें अपना ध्यान रखना होगा। उनकी आँतोंमें मरोड़ उठती है। राजेन बाबू यही है। वे पहलेसे ठीक है, हालाँकि कमजोरी अब भी है। वृखारसे छुटकारा पा गये हैं।

सुरेशके वारेमें सुनकर दुःख हुआ। आशा है, वह जल्दी ठीक हो जायेगा। उसे

अपना घ्यान रखना चाहिए।

सबको मेरी ओरसे प्रेम।

सप्रेम,

बापू (मो० क० गांधी)

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७८३) से

# ५२५. पत्र: इकबालकृष्ण कपूरको

सेवाग्राम १५ सितम्बर, १९४१

प्रिय कपूर,

में समझता हूँ, तुम्हारा मामला स्पष्ट है। आदेश अपमानजनक है। तुम आदेशकी अवज्ञा संघर्षके सत्याग्रहीकी तरह नहीं, बल्कि एक व्यक्तिकी हैसियतसे करो, जो तथाकथित स्वतन्त्रताकी अपेक्षा अपने आत्मसम्मानको अधिक मूल्यवान समझता है। इसलिए किसी आम निर्देशको आवश्यकता नहीं है।

> हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे] हिस्कूो ऑफ द इण्डियन नेशनल कांग्रेस, जिल्द २, पृ० २७५

 दो महीनेकी कैरसे रिहा होने के बाद इक्ष्माळकुल्ण कपूरको इस आश्यका निर्देश मिळा था कि वे "अपनी गतिविधियाँ कोठवाळो पुळिस स्टेशनकी सीमातक हो सीमित रखें, इक्तेमें एक बार कोठवाळी पुळिस स्टेशनमें हाजिरी दें और कांग्रेसकी प्रत्याग्रह आन्दोळन-सम्बन्धी प्रवृत्तियोंसे अलग रहें। "

### ५२६ पत्र: शौकत उस्मानीको

१५ सितम्बर, १९४१

प्रिय शौकत उस्मानी,<sup>\*</sup>

मुझे खुशी है कि तुम अहिंसाके प्रति आकर्षित हो रहे हो। अहिंसाकी मावना हमें बुरेसे-बुरे व्यक्तिसे भी घृणा करने से रोकती है।

> हृदयसे तुम्हारा, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

# ५२७ पत्र: हरिलाल मा० रंगूनवालाको

१५ सितम्बर, १९४१

माई हरिलाल,

जेलसे तुम्हारा पत्र आया था। उसका जवाब मैं दे चुका हूँ। अब जेलसे वाहर आने के वादका पत्र मिला। तुम रंगूनके बहिष्कारकी चिन्ता नहीं करते, यह अच्छा है। फिलहाल उसे चलने दो। जब बम्बई आफिस तुम्हें बुलाये तो फिर जेल चले जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४३) से

### ५२८. पत्र: विष्णुनारायणको

१५ सितम्बर, १९४१

माई विष्णुनारायण,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें खादी [का उपयोग करने]की मनाही नही की गई है। केवल अपना मत व्यक्त किया है। "ड्रिल क्लाय"के उपयोगका हुक्म नही दिया गया, उसे काममें लाने की आजादी दी गई है। इसलिए मेरी सलाह है कि तुम "ड्रिल क्लाय"के मावकी खादी प्राप्त करके खादीकी विदयौँ बनवाओ। मजबूत खादी खरीदना। यदि तुम चपरासियोंमें हिंच उत्पन्त कर सको, तो कोई अड्चन नहीं

१. प्रिजनसे कैम्प, बढ़ौदाके सेकेटरी

होगी। उनके साथ जबरदस्ती न की जाये। अनिवार्य कर्तव्यके रूपमें उनपर खादी न लादी जाये, वित्क उनमें खादीके प्रति प्रेम उत्पन्न किया जाये। अगर वे कातेंगे, तो खादी सस्ती भी पढ़ेगी। यदि तुम्हारा थोड़ा खर्च भी हो जाये तो उस खर्चको वर्दाक्त करके भी ऐसा करो, ताकि चपरासी लोग खुर्झासे खादी पहनने लगें।

जवतक वैंकके लिए तुम्हारी सेवाका मूल्य है, तवतक तुम्हारे लिए परेज्ञानी

की कोई सम्भावना नही है।

वापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

'सर्वोदय'के लिए कागज जुटाने की कोश्चिस हो रही है। गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० १९३२७) से

# ५२९. पत्र: पृथ्वीसिंहको

१५ सितम्बर, १९४१

माई पृथ्वीसिंह,

तुमारा खत और मुसाफरीका वयान पढ़ गया। अनुभव अच्छे मिले। मुझे खबर है कि अहिंसामें श्रद्धा वहूत पतली है। अगर दृढ़ होती तो आज हम वहूत उचे होते। मैं निंह मानता हूं कि माषणोंसे ज्यादा काम हो सकता है। अमृतकी शक्तिका ख्याल उसके गुणोंके वर्णनसे थोड़े हि आनेवाला है। वह तो उसका पान करने से या किसीको पान करते हुए और उसका असर देखने से हि आ सकता है। इसका मतलव यह निंह है कि भाषण होना हि निंह चाहिये?

अच्छेमें-अच्छे हि विद्यार्थी छेने का तुमारा निर्णय मुझे अच्छा लगा है।

वापुंके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६५०) से। सी० डब्ल्यू० २९६१ से भी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

# ५३०. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम १६ सितम्बर, १९४१

अपने कलके पत्रके उत्तरमें मैं गुरुवारको तार पाने की आशा कर रहा हूँ। यह पत्र आनेवाली डाकसे पहले लिख रहा हूँ।

साथके कागजके बारेमें क्या तुम कुछ बता सकती हो? जाजूजी चरखा सप्ताहके सिलसिलेमें राजकोट गये है।

कल रात संयुक्त प्रान्तका एक मूतपूर्व कैदी (सत्याग्रही) मुझसे मिलने आया। वह तपेदिकसे पीड़ित है। वेचारे चिमनलालसे उसे यहाँसे हटाते नहीं बना। उसने वरामदेमें ही उसके लिए बिस्तरका इन्तजाम करवा दिया। उसकी दशा बड़ी करण है। उसका इलाज करना कठिन है। इस तरहके अप्रत्याशित आगन्तुकोंसे संस्थाके कामोंमें कठिनाई पैदा हो जाती है। सौमाग्यसे ऐसी नाजुक घड़ियोंमें कार्यकर्ती स्थितिके अनुरूप कार्य करते हैं और इस तरह मेरे लिए ऐसी कठिनाइयोंका सामना करना आसान हो जाता है।

आज मुझे अल्ला बख्स और सिधवासे मिलना है। सप्रेंम.

बापू

#### पुनश्च:

देवदास अपना मुकदमा बड़ी मर्दानगीसे लड़ रहा है। तुम्हारा पत्र आ गया है। वेशक, शम्मी जो-कुछ कहते हैं उसे तो मानना ही है।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०७६) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३५७ से मी

१. वह<sup>ो</sup> उपलम्भ नहीं है। २. देखिए ए० २७५ और २८८।

## ५३१ पत्र: शान्तिकुमार न० मोरारजीको

१६ सितम्बर, १९४१

चि॰ शान्तिकुमार,

मेरी निश्चित राय है कि ब्रह्मदेश [वर्मा]में रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंको दो सरकारोंके बीच हुए इस समझौतेका सक्त विरोध करना चाहिए। इसमें डरने की कोई खरूरत नहीं है। हमारा ब्रह्मदेशके लोगोंसे कोई झगड़ा नहीं है। उन लोगोंकी कृपाके मरोसे ही हम उनके यहाँ रह सकते हैं। लेकिन उनकी इच्छाका पता कौन लगायें? और कैसे लगाया जाये, इसका भी निर्णय कौन करे?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७३६) से! सौजन्य: श्वान्तिकुमार न० मोरारजी

## ५३२. पत्र: कन्हैयालाल वैद्यको

१६ सितम्बर, १९४१

माई कन्हैयालाल,

तुम्हारा खत मिला। बात दुःखद है। मेरे तरफसे पैसेके वारेमें कुछ आशा न रखी जाये। मैं मेरी मर्यादामें रहकर और मेरे ढंगसे प्रयत्न करता हूँ। आज तो मेरा प्रयत्न सब परदेमें ही हो सकता है। सत्याग्रहका अनुकरण जो करते हैं उनको दुःखकी बरदाश्त करना ही है। उसीमें दुःखका निवारण भी है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

शिरप्तार सत्यायहियोंकी ओरसे मुकदमा छड़ने के छिए कन्हेपाछाछ वैद्यने गांधीजी से पैसोंकी माँग की थी।

## ५३३. पत्र: अमृतकौरको

१७ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

यह कागज तो वड़ा खराव है। इसके दोनों ओर नही लिखा जा सकता। तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा मामूली दवाएँ लेना स्वीकार करना तुम्हारे विनम्र स्वमावके अनुरूप ही है। वहाँ मी मेंट-मुलाकातका काम बन्द रखना।

आज तुम्हारा सेव लिया। यह किस्म पिछले सेवों-जैसी अच्छी नहीं है। बा ने मुझे बताया कि एक सेव तो खराव और पिछपिला हो गया था। इसे खरीदने-वाले की शिकायत मत समझना। केवल तुम्हारी जानकारीके लिए लिख दिया।

हमारा कमरा नये सिरेसे बन रहा है। बरामदेवाले छज्जेको उस द्वार पर लगाया जा रहा है जिसमें से वरसातका पानी आ जाता है। जिस बरामदेमें हम सोते थे उसे बढ़ाया जा रहा है। लगता है, घर-निर्माणका सिलसिला कभी खत्म नहीं होगा। फिर भी, भीड़ बढ़ती ही जा रही है। इस भीड़को कैसे रोका जाये, यह एक गम्भीर प्रश्न बना हुआ है।

गौवमें खूव चरखा-कार्य होने जा रहा है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०७७) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३८६ से भी

#### ५३४. पत्र: शारदा गो० चोखावालाको

१७ सितम्बर, १९४१

चि० वबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। कमलककड़ी और इलायची तो प्रसिद्ध पौष्टिक आहार है। यदि इससे तेरी समस्या हल हो जाती हो तो अच्छा है। खान-पानमें सावधानी मुख्य चीज है। यहाँ बीमारी तो खास नहीं है। ठीक चल रहा है। मीड़ खूव है। टाइफाइड होने का तो डर ही यहाँसे जाता रहा है, क्योंकि ठीक देख-भालसे सव केस अच्छे हो गये हैं। तुझे वहाँ अच्छी शिक्षा मिल रही है। सबके साथ दूधमें शक्करकी तरह धुल-मिल जाना। प्रभावती चली गई। २३ को वापस आयेगी।

वापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००३७) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

#### ५३५. पत्र: देवदास गांधीको

१७ सितम्बर, १९४१

चि॰ देवदास,

तेरा तार मिला। तेरा केस ठीक चल रहा है। मैं सब पढ़ता हूँ। शिवजी मी मुझे खबर देता रहता है। जज मी विचित्र हैं। लेकिन जो सबूत तुझे मिले हैं, अगर उन्हें तू पेश कर सका तो सब ठीक ही होगा। लेकिन हमारे आदिमियांमें इतनी कमजोरी आ गई है कि उन्हें मुकरने में देर नहीं लगती। लेकिन तेरा केस विलकुल सच्चा है, इसलिए मैं माने लेता हूँ कि ईश्वर अच्छा ही करेगा। वा चिन्ता करती है। मैने उसे समझाया तो है कि जल जाना तो हम लोगोंका पेशा हो गया है, इसलिए जेलसे तो डरना ही नहीं चाहिए। एक दृष्टिसे तो मुझे लगता है कि तुझे वहाँ कुछ आराम मिल जायेगा। लेकिन फिलहाल मुझे लगता नहीं कि तुझे जेल होगी। हाँ, यदि तेरे साथी ही मिट्टीके मावो निकल जायें, तो बात दूसरी है।

वापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

यह लिखा चुकने के बाद तेरा तार मिला। तू डटकर जूझना।
गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१३९) से

#### ५३६. पत्र: लक्ष्मी गांधीको

सेवाग्राम, वर्षा १७ सितम्बर, १९४१

चि॰ लक्ष्मी,

तू तो घमराहटमें नींह पड़ी होगी। जो होने का सी होगा ही। तुफानीको पित बनाया तो तुफानमें से तू कैसे नीकल सकती है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २१३९) से

## ५३७. पत्र: सुरेन्द्रनाथ सरखेलको

[१७ सितम्बर, १९४१ के पश्चात्]

माई सुरेन्द्र,

तुम्हारा खत मिला। मेरी एक ही सलाह। जो सत्य हो वही कोरटको कहो। बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ५३८. जिसे हर कोई कर सकता है

वालकों और स्त्रियोंके लिए मैंने एक पैगाम मेजा था, जिसका मतलब इस प्रकार था: "बारह साल तकके वालक और सारी स्त्रियों अपने फालतू समयके कुछ घंटे रोजाना कताई और खादो प्रक्रियांके लिए दें तो काफी खादो तैयार हो सकतो है।" इस कथनको सिद्ध करने के लिए कुष्णदास गांधीसे मैंने कुछ हिसाब करनाया है, जिसे सार छपमें नीचे देता हूँ।

- सुरेन्द्रनाथ सरलेख्का पत्र जेळ-अधिकारियोंने १७ सितम्बर, १९४१ को गांघीजी को भेजा
   था। यह पत्र गांधीजी ने उसीके जवाबमें किया था।
  - २. देखिए ए० ३३५ ।

सन् १९३१ में जो मर्दुमशुमारी हुई थी उसमें हिन्दुस्तानकी आवादी करीब ३५ करोड़की पाई गई थी। ८ से १२ सालतक की आयुक्ते वालक करीव ४।। करोड़ थे। तथा १२ सालसे अधिक आयुकी लड़कियाँ और स्त्रियाँ मिलकर करीव ११ करोड़ थी। यदि वालक-वर्ग रोजाना ४ घंटे ओटने, धुनने व कातने में दे तथा स्त्री-वर्ग ओटने, धुनने, कातने व वुनने में ४ घंटे दे, तो काफी खादी तैयार हो सकती है। हिसाव करके ऐसा वतलाया जा सकता है कि वालक रोजाना ९० छाख वर्गगज खादीके लायक १० से १२ अंकका सत तैयार कर सकते है, जब कि औरतें यह ९० लाख वर्गगज कपड़ा बुनने के अतिरिक्त प्रतिदिन २ करोड वर्गगणकी २० अंककी खादी तैयार कर सकती हैं। कपास ओटने से लेकर २० अंकका एक वर्गगज कपड़ा तैयार करने में एक व्यक्तिका १८ घंटेका काम माना गया है। आवा घंटा ओटने में, दो घंटे घनने में, बारह घंटे कताईमें, एक घंटा सूत खोलने में, एक घंटा ताना करने, मांडी लगाने और ताना जोड़ने में एवं डेढ़ घंटा प्रत्यक्ष वनने में लगेगा। इस प्रकार यह १८ घंटेका कल हिसाव होता है। यह हिसाव सामान्य मनुष्यकी सामान्य शक्तिका ही लगाया गया है। कुशलता हासिल की जाये तो यही काम केवल पन्द्रह घंटेमें हो सकता है। मामूली हिसावसे इतने वालक और कित्तनें मिलकर पूरे साल-भरमें कुशलताके हिसावसे केवल ३०० दिनोंमें ४ घंटे काम करके देशके हरएक व्यक्तिके लिए करीब ३० वर्गगज खादी पैदा कर सकती हैं।

इस हिसाबको प्रकाशित करने का मेरा हेतु तो यह है कि कोई मी संस्था प्रयोग करके इसे सिद्ध कर सकती है। कोई भी कुटुम्ब अपने घरमें ही चरखा और करघा चलाकर अल्प प्रयाससे ही अपना कपड़ा तैयार कर सकता है। मान लीजिए कि एक संस्थामें ३५ आदमी हैं। उसमें ८ से १२ सालके ४ बच्चे है तथा १३ सालसे बड़ी ११ स्त्रियाँ हैं। पुरुष-वर्ग सारा-का-सारा अन्य प्रवृत्तियों में हका है। ११ में से १० स्त्रियाँ रोजाना ४ घंटे और वालक रोजाना ३ से ४ घंटे ओटना, धुनना, कातना व बुनना आदि सब कामोंको सुविधानुसार कर लेते हैं। उन १० में से एक स्त्री ४ वालकोंकी सहायता और उनका सूत बुनने का काम कर लेती है। शेष ९ स्त्रियाँ ओटाईसे बुनाईतक का काम करती हैं। प्रारम्भमें दिये गये हिसाबके अनुसार, ४ वालक और एक स्त्री मिलकर रोजाना १० से १२ अंकका कमसे-कम ३/४ वर्गगल और ९ स्त्रियाँ रोजाना २० अंकका २ वर्गगल कपड़ा आसानीसे पैदा कर लेगी। सालमें ३०० दिनके हिसाबसे २२५ वर्गगल मोटा व ६०० वर्गगल महीन कपड़ा पैदा कर लेगी। इस प्रकार ८२५ वर्गगल कपड़ा अधानति छिए तैयार होगा। अर्थात् प्रति व्यक्तिको २३।। गल कपड़ा मिलेगा। कुशलता हासिल करने पर प्रति व्यक्ति पीछे उन्हें २७।। वर्गगल कपड़ा मिल सकेगा। यह याद रहे कि आजके संशोधित नये चरले व चुनकियोंका उपयोग किया

यह याद रहे कि आजके संशोधित नये चरले व घुनिकयोंका उपयोग किया जाये तो इससे भी कम समयमें इतना कपड़ा पैदा हो सकता है। अगर घर-घरमें चरला एवं करघा चल्ने तो अल्प प्रयासमें हम अपना कपड़ा तैयार कर सकते हैं। ऐसा करने से कितना संतोष पैदा हो सकता है, जीवनपर उसका कितना प्रमाव पड़ सकता है और लोगोंमें कितना उत्साह फैल सकता है, इसकी तो आज हम कल्पना-मात्र ही कर सकते है। लेकिन उसका अनुमव प्रत्येक मनुष्य अपने लिए त्रन्त कर सकता है।

सेवाग्राम, चरखा द्वादशी, १८ सितम्बर, १९४१ खादी-जगत्, सितम्बर, १९४१

## ५३९. सिपाहियोंके लिए कम्बल

यह अच्छी बात है कि अहिंसाके पुजारी बहुत सूक्ष्म प्रश्न खड़े करते हैं। यह आदत तारीफ़ के लायक है। इसीसे आदमी आगे बढ़ता है। लेकिन एक वर्त है। ऐसा न होना चाहिए कि दूधमें पड़े कणके कारण दूध तो फेंक दें और हर घड़ी जो जहर पीते रहें उसकी परवाह तक न करें। ऐसे प्रश्नोंसे वे हो फायदा उठा सकते हैं जो वड़ी वातोंमें साववान रहते हैं, और मलीमौति सिद्धान्तको अमलमें लाते हैं।

सूक्ष्म प्रश्न यह है कि जिस खादी मंडारमें कम्बल विकते है वहाँसे फौजके सिपाहियोंके लिए कम्बल खरीदे गये। मुझसे भंडारवाली ने पूछा, "क्या इस तरह कम्बल वेच सकते हैं ?" मैंने उत्तर दिया, "बेच सकते हैं।" अगर ऐसा कर सकते हैं तो हम अहिंसक लोग हिंसक युद्धमें सहायता नहीं देते? एक तरह सिर्फ सिद्धान्त में देखें तो ऐसा उत्तर देना पड़ेगा कि "सहायता देते हैं।" और ऐसा उत्तर दें तो हम हिन्दुस्तानमें या जिस मुल्कमें युद्ध चलता हो वहाँ नही रह सकते। क्योंकि हम जो खाते हैं उससे भी लड़ाईमें मदद देते हैं। रेलके सफरसे भी देते हैं। डाक भेजते हैं तो भी देते हैं। शायद ही कोई ऐसा काम हो जिससे हम ऐसी मदद देने से वच सकें। सरकारी सिक्केके इस्तेमालमें भी मदद होती है। बात यह है कि अहिंसा-जैसे बुलन्द सिद्धान्तका सम्पूर्ण पालन कोई देहवारी कर ही नहीं सकता। युविलहकी रेखा लीजिए। उसकी हस्ती कल्पनामें ही है। सूक्ष्म रेखा भी कागजपर सीचें तो भी उसमें कुछ-न-कुछ चौड़ाई होगी हो। इसलिए व्यवहारमें सूक्म रेखा खीनकर हम अपना काम चलाते हैं। सब सीधी दोवारें युक्लिडके सिद्धान्तके मृताबिक टेढ़ी हैं। लेकिन हजारों वर्ष खड़ी रहती हैं।

ठीक यही वात ऑहसाके सिद्धान्तकी है। जहाँतक हो सके हम उसे अमलमें

ळावें । कम्बल बेचने की मनाही करना मेरे लिए आसान था। लाखोंकी बिक्रीमें कुछ हजारकी विकीकी क्या कीमत हो सकती है? लेकिन भेरी मनाही मेरे लिए शर्म की बात हो जाती। क्योंकि अपनी सच्ची रायको छिपाकर ही मै मनाही कर सकता था। मैं कहाँ मनाही की हद बॉबूं? मैं चावल-दालका व्यापारी होकर सिपाहियोंको चावल-दाल न बेर्चू ? गंघी होकर, कुनैन या अन्य दवाइयाँ न बेर्चू ? न वेचूं, तो क्यों नही ? मेरी अहिंसा मुझे ऐसे व्यापारके लिए बाघ्य करती है ? मैं प्राहककी जात-पाँत खोजकर मर्यादा बाँधूं ? उत्तर मिलता है कि मेरा व्यापार अगर समाजका पोषक है, हिंसक नहीं है, तो मुझे उसे करने में प्राहकोंकी जात-पाँतकी खोज करने का अधिकार नहीं है। अर्थात् सिपाहीको मी अपने व्यापारकी वस्तु बेचना मेरा धर्म है।

सेवाग्राम, १८ सितम्बर, १९४१ खादी-जगत्, सितम्बर, १९४१

# ५४०. अप्रमाणित लादी

जो मनुष्य अप्रमाणित खादी छेता है वह खादीका क्षेत्र नहीं जानता। खादी की कल्पना केवल दिखनारायणका दारिद्रच टालने के लिए है। जो वस्तु सचमुच इस घोर दारिद्रचको टाल सकती है, वही हिन्दुस्तानकी मालो हालत दुवस्त कर सकती है। इसीलिए अन्तमें हिन्दुस्तानको आजादी दिला सकती है। ऐसी विचारघारामें से खादीकी महिमा बढ़ी है। अगर करोड़ोंका दारिद्रच खादीसे मिटना है तो खादीपर पूरा अंकुश किसी संस्था या राज्य-सत्ताका होना चाहिए। क्योंकि करोड़ों कित्तनें जो पेटका खड्डा भरना चाहती है, वे बेचारी तो एक पैसेके लिए मी आठ घंटे कार्तेगी। ऐसे सूतसे पैदा की हुई खादी मी हाथसे तो बनी कही जा संकती है। छेकिन ऐसी खादो पहनकर हम दिद्रनारायणकी तो सेवा नहीं करते। इसलिए चरखा संघनें कित्तनोंकी मजदूरी एकदम वढ़ाई है। इसी तरह दूसरे कारीगरोंकी मी माली हालत दुवस्त करने को क्रेशिश हो रही है।

अब जो अप्रमाणित खादों बेचते हैं-वे लोग खादीके कारीगरोंकी चोरी करते हैं। ऐसी खादी लेना चोरीका माल लेना हुआ। यह तो अत्याचार है। इसलिए चरखा संघ तो ऐसे व्यापारियोंसे भी विनती करता है कि वे लोग खादीके व्यापारको छोड़कर कोई दूसरा व्यापार करें। और जनतासे यह प्रार्थना है कि वह चरखा संघके मंडार या चरखा संघने जिनको प्रमाणपत्र दिया है वहींसे खादी लें।

मुझे आशा है कि इतनी सादी बात सब खादी पहननेवाले मान लेंगे। सस्ती हो या महेंगी, जो खादी चरखा संघकी मार्फत मिल सके वही खादी मानी जाये।

सेवाग्राम, १८ सितम्बर, १९४१ खादी-जगत्, सितम्बर, १९४१

#### ५४१. पत्रः अमृतकौरको

१८ सितम्बर, १९४१

चि॰ अमृत,

यह सिर्फ यह वताने को लिख रहा हूँ कि तुम मेरे विचारोंमें हो। मुझे जो-कुछ कहना था, कह चुका हूँ। अब तुम कैसे ठीक हो सकती हो, यह तो तुम्ही जानो। पुस्तक महमूद खाँ को मेज रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सो० डब्ल्यू० ४०७८) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३८७ से भी

## ५४२. पत्र: कन्हैयालाल मा० मुंशीको

१८ सितम्बर, १९४१

भाई मुंशी,

तुम्हारा और लीलावतो, दोनोंके पत्र मिले थे। आज तार मिला। चि० सरलाने परसों पत्र लिखा था। अवतक तो वह तुम्हें मिल गया होगा।

फिलहाल तो तुम्हें त्याग-पत्र देने की जरूरत नहीं है। मैंने राजेन्द्र बाबू तथा कृपलानी, दोनोंके साथ चर्चा की। दोनोंकी राय है कि अभी तो बिलकुल जरूरत नहीं है। मैं किसोको जरा मी अँगुलो उठाने का मौका नहीं दूँगा। मुझे तो इसका बिलकुल खयाल ही नहीं आया था। तुमने मुझे लिखकर अच्छा ही किया।

सरलाके साथ जब-तब बातचीत करता रहा हूँ। बहुत समय तो मैं नही निकाल पाता, लेकिन सबेरे घूमते हुए अकसर आगे बढ़कर हम लोग बातें करते हैं। वह खूब हिल-मिल गई है। प्रार्थनामें भी रुचि लेती है। मेरी मदद भी करती है। लेकिन यह सब तो जब वह मिलेगी, तब तुम्हें सुनायेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६६९) से। सौजन्य: कन्हैयालाल मा० मुंबी

#### ५४३. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम १८ सितम्बर, १९४१

माई वल्लममाई,

तुम्हारा पत्र मिला। अब तो होमियोपैयीका इलाज पूरा कर लेना ही ठीक है। यदि उसमें थोड़ा समय लगे तो मले लगे। जब उससे फायदा होता नजर आ हो रहा है तो तुम्हें तबतक घीरज रखना ही चाहिए।

. . 'से मिले, यह ठीक हुआ। उनका कुछ ठिकाना नहीं दीखता। वालजी का मी कुछ पता नहीं चलता। बहुत भरमा गये हैं। मैं मानता हूँ कि वे भी

ठिकाने आ ही जायेंगे।

लोलावतीका मामला मैं समझ गया। जब तुमने उसका मामला हाथमें ले लिया है तो मैं क्यों चिन्ता करूँ? तुम्हें मैं उसकी चिन्तामें डालना नही चाहता था, हार्लांकि वह मेहनती और चंचल है। पास हो जाये तो अच्छा है। वह कुछ यक गई है। आशा है, मानुमती ठीक होगी। क्या लड़की चली ही जायेगी? क्या मूलामाई मुक्त हो गये? वे बहुत दुर्बल हो गये लगते हैं।

बापूके आशीर्वाद

[|गुजरातीसे ] बापुना पत्रो - २: सरदार वल्लभभाईने, पु० २५३-५४

# ५४४. पत्र: अन्नपूर्णा चि० मेहताको

१८ सितम्बर, १९४१

चि० अन्नपूर्णा,

तेरा पत्र मिला। तू वहाँ अच्छी तन्दुरस्त हो जा। यह तो मै जानता ही था कि तू सबसे हिल-मिल जायेगी।। तू ऐसी तो है ही नहीं कि किसीपर मार बनकर रहे। मै यह जानता हूँ कि तू वहाँ रहते हुए सेवा तो करेगी ही। वहाँ की आबोहवा तुझे जरूर माफिक आयेगी। वेडछी पत्र लिखती रहना। और मुझे तो नियमपूर्वक जरूर लिखना। कुछ पढ़ती रहना। हिन्दी सीखना। उर्दू भी सीखना। वर्दू भी सीखना। वर्दू भी सीखना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४२८) से

१. साधन-प्रत्नमें नाम छोड़ दिया गया है। २ और ३. डाझामार्ट व० पटेडकी दूसरी परनी और पुत्री

#### ५४५. भाषण: गांघी जयन्ती समारोहमें

सेवाग्राम [१८] सितम्बर, १९४१

खादीका उत्पादन करके सेवाग्राम कपड़ोंके मामलेमें स्वावलम्बी बन जाये और ग्रामवासी अपनी जरूरतकी चोजोंका उत्पादन स्वयं करें, यही मेरी कामना है।

शिक्षा और सेवा-कार्य साथ-साथ चलना चाहिए। मुझे प्रसन्नता है कि खादी विद्यालयमें ये दोनों कार्य हो रहे हैं। यह चीज विश्वविद्यालयोंमें दिये जानेवाले प्रशिक्षणसे भिन्न है।

गांचीको ने ग्रामवासियोंसे पूर्ण स्वच्छता और श्रुचिता लाने की ओर अधिकाधिक ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने यह याद दिलाते हुए कि खादी गरीबोंकी उद्धारक है, लोगोंसे विशेषतया खादीकी दिशामें और अधिक रचनात्मक कार्य करने की अपील की ।

[अंग्रेजीसे ] हिन्दू, २२-९-१९४१

## ५४६. पत्र: प्राणकृष्ण पढियारीको

[१९ सितम्बर, १९४१ के पूर्व]

तुमने कोई उत्साह मंग करनेवाळी जानकारी नहीं दो है। जन्म लेनेवाळे सभी जीवित नहीं रहते। मुझे इसी बातकी प्रसन्तता है कि कमसे-कम कुछ लोग अपने धर्मपर आरूढ़ रहेंगे। मेरे लिए यही उत्साहका पर्याप्त आधार है। दगा करनेवाले लोग अगर मन्त्रिमण्डल बना लें तो उससे हमें कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। कमजोर लोग हमसे अलग हो गये, इससे हमारी धर्मित बढ़ेगी ही।

दुवेकी त्यागपत्र देने की जखरत नहीं है, क्योंकि उसने सविनय अवज्ञा न

करने के बहुत उचित कारण बताये है।

[अंग्रेजीसे] ऑस्बे कॉनिकल, २०-९-१९४१

१. साधन-यूलमें "१९ सिराम्बर" किखा है, जो स्पष्ट ही मूळ है, क्वोंकि विक्रम संबर्धक अनुसार गांधीजी का जन्म-दिन १८ सिराम्बर को ही मनावा गया था।

२. इस अवसरपर आयोजित सामूहिक कराई पश्चमें गांधीजी ने भी भाग किया।

 यह रिपोर्ट दिनांक "कटक, १९ सिंतम्बर, १९४१" के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी।
 उ. उत्काळ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष प्राणकृष्ण पिट्यारीने गांधीनों को उद्दीसामें पक संयुक्त मिन्त्रमण्डळ बनाने के किए चळ रही सर्गर्मोंकी स्चना मेनो थी।

५. उड़ीसाके एक भूतपूर्व मन्त्री बोधराम दुवे

६. प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और अ० मा० कां० कमेटीसे

#### ५४७. पत्र: अमृतकौरको

१९ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम तो नियमित उतार-चढ़ावके दौरसे गुजर रही हो। हमें चलने को बराबर समतल धरातल ही मिले, यह जरूरी नही है। किसी-न-किसी दिन जुम पूरी तरह मुक्त हो जाओगी।

इस बारके सेब घटिया किस्मके हैं। देखने में बहुत उम्दा लगते हैं। लेकिन उनके कुछ हिस्से खराब हो चुके हैं। इसके लिए किसीको डाँटना मत। अगली बार किसी और किस्मके सेब मेजना। और महीनेमें एक ही बार मेजा करो। जल्दी ही संतरे मिलने लगेंगे; फिर सेवकी जलरत नहीं होगी।

सप्रेम,

बापू

#### [पुनश्च : ]

सिन्धके प्रधान मन्त्री अभी यहीं हैं। प्रेमा तीन दिनके अन्दर फिर जेल जायेगी। मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६७८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ६४८७ से भी

# ५४८. पत्र नरहरि द्वा० परीखको

१९ सितम्बर, १९४१

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तो वह विलकुल ठीक लगता है। माई भगवानजी से कहना, उनका पत्र भी मिल गया है। उन्हें वहाँसे मुक्त होकर यहाँ आ जाना चाहिए। उन्हें किसी काममें लगाने के वारेमें मैं देख लूँगा। यदि वे रहना चाहेंगे तो यहाँ उनकी जरूरत है। यह पत्र माई भगवानजीको पढ़वा देना और उन्हें रवाना करना।

बापुके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकछ (एस० एन० ९१२५) से

#### ५४९. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम १९ सितम्बर, १९४१

माई वल्लममाई,

खानबहादुर (अल्ला बख्श) के साथ मेरी जी-मरकर बातें हुई है। अब वे कराची जा रहे हैं। वहाँसे मौलानाके पास जायेंगे। मेरा तो दृढ़ मत है कि कांग्रेसको असेम्बलीसे निकल जाना चाहिए। खानबहादुरको भी, यदि वे कांग्रेसके हों तो, ऐसा ही करना चाहिए। सिन्धमें कांग्रेस लड़ाईमें मदद दे और दूसरी जगह न दे, इसका प्रमाव बहुत बुरा होगा — और हो भी रहा है। इस स्थितिको बनाये रखने से न तो देशका कोई लाग है, न सिन्धका और न हिन्दुओं या मुसलमानोंका। गलत कदमसे किसे लाग हो सकता है? यदि लड़ाई न हो, तो भी मेरा मत तो यही है कि काग्रेस सिन्धकी असेम्बलीसे बाहर निकल आये। परन्तु यह बात इस समय गीण है। तुम चाहोगे तो इस बातपर विस्तारसे चर्चा कर लेंगे। जभी तो मैने अपने मनकी बात तुम्हें बता दो है, ताकि तुम खानबहादुरको अच्छी तरह समझ सको। खानबहादुरका कहना है कि मेरी बात उनके गले उत्तर गई है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २: सरदार वल्लमभाईने, पृ० २५४

## ५५०. पत्र: अमृतकौरको

२० सितम्बर, १९४१

चि० अमृत,

आज तो इतना ही लिख सकता हूँ। राजेन्द्र बाबूके यहाँ आने के बाद बाज ही उन्हें कुछ समय दे पाया हूँ। यहाँके बीमार लोग ठीक हो रहे है। आश्रम अब मी मरा हुआ है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०७९) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी॰ एन॰ ७३८८ से मी

## ५५१. पत्र: पृथ्वीसिंहको

२० सितम्बर, १९४१

माई पृथ्वीसिंह,

तुम्हारा खत अच्छा है, प्रश्न मी अच्छा है। खादीके अमावमें किसीका दोष मैं निंह मानता हूं। सब अपनी शिक्तके अनुकूल कामं करते हैं। खादीकी समस्या किंठन है। जो लोग खादीमय नींह थे वे भी कुछ-न-कुछ तो खादी लेते हि हैं। सबसे ज्यादा खादीकी खपत मुंबईमें है। खादी धर्म है न? धर्म-मात्र किंठन वस्तु है। इतना कहकर मैं इतना कहूं कि मैं जो उसका प्रणेता हूं उसकी तपश्चर्या संपूर्ण नींह है। उसका मुझे दुःख नींह है। मैंने यथाशिक्त किया है। लेकिन अखंड चर्खा की बात जो तुमने लिखी वह कहां छोटी वात है? ऐसे साधक भी पड़े हैं ना? कोई रोज तो खादी सर्वें ब्यापक होगी हि।

अब रूसकी बात। हम कुछ नहिं कर सकते हैं। तीनोंमें मैं बहूत फरक नहिं पाता हूं। यह ठीक है कि रूसमें लोगोंके लिये काफी काम हूआ है। यह संहार हो रहा है उससे मेरे रूंबाटे खड़े निंह होते हैं। मागवतमें यादवास्थलीकी बात लिखी है वह मले काल्पनिक हो लेकिन हिककतमें सही है। जब-जब जगत्में हिंसा बढ़ जाती है तब-तब यादवास्थलीका होना हि है। इसीमें से अहिंसाका जन्म होगा, अगर कोई सच्चे अहिंसक होंगे तो। मेरा विश्वास है कि हम हैं। अहिंसाका जन्म कैसे होगा, सो तो मैं नहीं कह सकता। यह शक्ति हि अवर्णनीय है। उसके परिणामसे हि उसका परिचय हमें मिलता है। उसका नियंता ईश्वर हि है। मेरी शांति और मेरी स्थिरता इस विश्वासपर निर्मंद है। देखो रूसने क्या किया? एक समय जमेंनीका सहारा लिया, अब इंग्लंडका। अगर रूस पड़ा तो क्या करेगा, उस वारेमें कौन कुछ कह सकता है? अहिंसाको दृष्टिसे तो हम आज इस संहारके साक्षी हि रह सकते हैं। हां, मौका मिलने पर बलीदोन करने की हमारो तैयारी होनी चाहिये।

अहिंसक व्यायामपर किशोरलालमाई कुछ लिखेंगे।

बापुके , आशीर्वाद

पत्रको फोटो-नकल (जी० एन० ५६५१) से। सी० डब्ल्यू० २९६२ से मी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

## ५५२ पत्र : अमृतकौरको

२१ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

हिन्दी में लिखा तुम्हारा शानदार पत्र मिला। शानदार कहने का कारण तुम्हारी अविकल हिन्दी है।

साथमें दो पत्र मेज रहा हूँ।

जमनालाल कल आये। बहुत क्षीण हो गये हैं। नैनीतालसे आते समय भी उन्हें ज्वर था।

हाँ, तुमने जो-कुछ बताया है वह बुरा नहीं है। लेकिन जबतक तुम वहाँ से आने लायक नहीं हो जाती, मैं सन्तुष्ट होनेवाला नहीं हूँ। हर आदमी पूछता है कि तुम कब लौट रही हो और तुम्हें क्या हुआ है। जिस इलाजसे तुम्हें इतना फायदा हो रहा है, उसे जारी रखना ठीक ही है।

कहने की जरूरत नहीं कि तुम कही और नहीं जाओगी।

मैं तुम्हें यह बताना भूल गया कि तुम्हारी कलम मैंने मीराको दे दी है। वह कोई ऐसी कलम चाहती थी जो कभी रुके नहीं। उसका काम बड़ा नाजुक है। उसका कमरा तो मन्दिर बन गया है। चारों वेद उसकी मेजकी शोभा बड़ाते हैं। जिस दीवारसे लगकर मेज रखी है उसपर दो कमलके चित्रों पर 'ओम्' अंकित है। कमल भी उसीने चित्रित किये हैं। अल्ला बख्शसे मैंने कह दिया है कि अगर उन्हें काग्रेसके समर्थनके सहारे रहना है तो मन्त्रिमण्डल छोड़ देना चाहिए। छेकिन वैसा उन्हें तभी करना चाहिए जब वे मौलानाको स्थितिकी वास्तिविकताकी प्रतीति करा सकें। उन्होंने कहा कि वे भेरा दृष्टिकोण समझ गये हैं। देखें, क्या होता है।

सप्रेम,

बांपू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८०) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३८९ से मी

साधन-सूत्रमें वह शब्द देवनागरी लिपिमें ही दिवा गया है।

#### ५५३ पत्र : विजया म० पंचोलीको

·२१ सितम्बर, १९४१

चि॰ विजया,

तूबहुत लोभी है। दो लकीरें तो लिखती है और जल्दी जवाव माँगती है। यह जल्दी हुआ न? अभी-अभी तेरा कार्ड मिला। विवरणवाला तेरा जवाब मिला था। उसका जवाब भी दिया था, ऐसा मुझे याद है। अब तूजल्दी आना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१४१) से। सी० डब्ल्यू० ४६३३ से मी; सौजन्य: विजया म० पंचोली

## ५५४. पत्रं : अन्नपूर्णा चि० मेहताको

२१ सितम्बर, १९४१

चि॰ अन्नपूर्णी,

तेरी पुर्जियाँ मिलीं। तू बेडछी कमसे-कम एक कार्ड तो बरावर लिखती रहना। तुझे बिलकुल स्वस्थ होकर आना है। मूझ वगैरह ठीक लगती है, इसलिए तू झट-पट अच्छी हो जायेगी। यहाँ एक चरखा २४ घण्टे चलता है और २ अक्तूबरतक चलेगा। जमनालालजी आज आ गये हैं। थोड़े दुबले हो गये लगते हैं। फूलचन्दमाई की विषवा शारदावहन और शिवानन्द आ गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ४९२९) से

#### ५५५ पत्र : घनश्यामदास बिङ्लाको

२१ सितम्बर, १९४१

माई घनश्यामदास,

तुम्हारा खत मिला। जबतक प्रकृति बिलकुल अच्छी न हो जाय वहांसे

नहिं हटना।

मेरे खतका अर्थ अपने पर ले लिया सो तो अच्छा हि है। मै तो मेरे और दूसरोंके अनुभवसे जानता हूं कि गलतीका स्वीकारसे हमको बहूत लाम होता है। जस चोपड़े रखने में गलती होती है तो उसे सुघारकर हि आगे बढ़ते हैं, ठीक ऐसे ही नैतिक चोपड़ेमें है।

बापुके आशीर्वाद

मूल (सी० डब्ल्यू० ८०४८) से । सौजन्य : धनश्यामदास बिङ्ला

५५६. पत्र : सत्यवतीको

सेवाग्राम २१ सितम्बर, १९४१

चि॰ सत्यवती,

तू कहती है लेकिन सचमुच आना नही चाहती।

रूस और पोलांडने बीचमें कितना फरक और किस परिस्थितिमें रूसके बारेमें लिखा जायं? रूस कोई छोटी ताकत नहीं है। रूसके कामकी किम्मत मेरे पास नहीं है, ऐसा नहीं। लेकिन अब जो चल रहा है जसे मैं नहीं समझता हूं और जो मैं न समजू उसमें क्या कहूं? अगर हम अपने हेतुमें सफल होंगे तो रूसको और सबको मदद दे सकेंगे। वह समयके लिये हम सब महेनत करें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स । सीजन्य: प्यारेलाल

#### ५५७. पत्र: अमृतकौरको

२२ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। जहाँतक मुझे याद है, मैने एक दिन मी नागा नहीं किया है। पत्र मिलने में गड़बड़ क्यों होती है, यह मैं नहीं बता सकता। तुम्हें विश्वास करना चाहिए कि मैने लिखा है। और जब तुम्हें एक दिनमें दो पत्र मिलते हैं, तो तुम्हारे विश्वासकी पुष्टि हो जाती है।

जमनालालजो तुम्हारे आतिब्य और स्नेहका गुण-गान करते अवाते नहीं। तुम्हारे घरके पाँच-छह जनोंकी, जिनमें तोफा मी एक है, सेवामें लगे तीस नौकरोंका

वर्णन वे खूब मजा लेकर करते हैं।

महादेव दुर्गा और बाबलोके साथ यहाँ २७ को आयेगा। १ अक्तूबरको उसे अलवर पहुँचना है। सप्रेम.

बापू

#### [पुनश्च:]

मैंने न तो अजन्ता देखी है और न एलोरा। सर अकबरसे कहना उन्होंने मुझे कभी बुलाया ही नहीं। और अब मेरे वहाँ जाने से क्या लाभ होगा?

बापू

मूंल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८१) से ; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७३९० से मी

१. अमृतकौरका कुता

२. सर अकतर हैदरी, हैदराबाद (दक्षिण)की कार्यकारिणी परिवर्क अध्यक्ष, १९३७-४३; बादमें बाइसरायकी कार्यकारिणी परिवर्क (स्वना व प्रसारण) सदस्य

## ५५८. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

२२ सितम्बर, १९४१

त्रिय अमृतलाल,

तुम्हें बुखारसे छुटकारा मिल गया है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। आशा है, अब उससे मुक्त रहोगे। यह भी आशा करता हूँ कि तुम्हारो पत्नी और पुत्र बुखारसे पूरी तरह छुटकारा पा लेंगे।

जहाँतक विद्याश्रमका सम्बन्ध है, मैं अन्नदासे पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ। घीरेन्द्रकी योग्यता मैं जानता हूँ। अखिल भारतीय चरखा संघके विरोधमें वह कुछ नहीं करेगा। वेशक, वह जब मी चाहे, आ सकता है।

आमा जब चाहे तब आ सकती है। अगर वह आ जाती है और अपनी योग्यता सिद्ध कर देती है तो मैं उसे विवाह करने के लिए तैयार करूँगा। मैं उसके ओर कर्नुके बीच दीवार खड़ी नहीं करूँगा। यदि वह आती है तो मैं उसके साथ आने के लिए कोई आदमी ढूँढ सकता हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीको फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०३२३) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

## ५५९. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम २२ सितम्बर, १९४१

माई वल्लमभाई,

तुम्हारी गाड़ी अभी पटरीपर आई नहीं दोखती। मैं चाहता हूँ कि यदि पन्द्रह दिनमें निश्चयपूर्वक कुछ न कहा जा सके तो तुम यहाँ वा जाओ। अगर तुम्हारी स्थिति आने-जाने लायक हो गई हो तो थोड़े दिन यहाँ रह जाओ। यह भी ठीक होगा। तुम्हें जो पसन्द हो वही करो। राजेन्द्र बाबू दिनों-दिन अच्छे होते जा रहे हैं। अब वे रोज आते हैं।

महादेवका पत्र साथमें है। इसे वहाँसे जहाँ भेजना हो, भेज देना। प्रेमा कंटक तुमसे मिली होगी। उसका काम अच्छी तरह चल रहा है। अल्ला वस्त्राका क्या हुआ ? मुझे तो विश्वास है कि कांग्रेसको हाय खींच छेना चाहिए ! राजेन्द्र वावूको इसमें कुछ शक है ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

वापुना पत्रो - २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५५

५६०. पत्र: मूलशंकरको

२२ सितम्बर, १९४१

माई मूलशंकर,

तुम्हारा किया अंग्रेजी सारांश मैं बहुत जल्दीमें पढ़ गया। ठीक लगा। अल-बत्ता, इसे और संक्षिप्त किया जा सकता था। ३१ वें अनुच्छेदमें जो कहा गया है वैसा तो मैं नहीं कह सकता। मैं ऐसा कह सकता हूँ कि "सैकड़ों और हजारों गांवी निकरूंगे"। "मैं पैदा करूँगा", ये उद्गार मेरे मुँहसे नहीं निकलने चाहिए।

सिद्धान्तोंके कोई अपवाद नहीं होते। दो और दो चार ही होते हैं। मैंने अगर थोड़ी-सी भी मूल की हो तो वह मूल ही कही जायेगी। आपद् वमं जैसी अलग चीज क्यों? हाँ, ऐसे समयमें यदि कोई व्यक्ति मूल करता है तो वह अम्य मानी जा सकती है। युविष्ठिरने जरा-सा झूठ वोला था कि उनका रथचक जमीनपर आ गया। जो लोग ऑहिसाका पालन नहीं कर सकते वे लोग कायर बनने के स्थानपर हिंसासे काम लें, ऐसा कहकर मैं कोई अपवाद नहीं सुझाता।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

## ५६१. पत्र : कन्हैयालाल वैद्यको

२२ सितम्बर, १९४१

माई कन्हैयालाल,

तुमारे सब खत मैं घ्यानसे पढ़ लेता हूं। तुम्हारे वकील कौन है? कोई वकील सेवामावसे काम करने को तैयार नहीं है? अपील तो रतलाममें ही होगी? किसको होगी? न्याय मिलने की आधा है? इस अन्यायको पहूचने की कोई कुंची मिलनी चाहिये।

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

## ५६२. पत्र : अमृतकौरको

२३ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अपना नाम दे सकती हो। आज इतना ही। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३९२ से भी

## ५६३. पत्र: दत्तात्रेय बा० कालेलकर्को

२३ सितम्बर, १९४१

चि० काका,

तुम जो लिख रहे हो, वह विचारणीय तो है। मैंने विचार किया भी, और अन्तमें इस निणंयपर पहुँचा हूँ कि जमनालालजी की शक्तिका पूर्ण विकास तो गो-सेवामें ही हो सकता है। गोसेवा संघके होते हुए भी यह काम उपेक्षित रहा है। न तो हम कोई विशेषज्ञ जुटा सके और न द्रव्य जुटा सके। हाँ, क्षेत्र तैयार कर सके हैं। लेकिन यह काम तभी हो सकता है, जब एक अनुभवी व्यक्ति इसके लिए अपनेको समर्पित कर दे।

#### २. के निराकरणकी

हरिजन-कार्य रास्तेपर वा गया है, और आता जा रहा है। जो-कुछ हो रहा है, वह आवश्यक है। अन्तमें समस्याका हरू तो हरिजनोंकी जागृतिसे ही होगा।

सनातिनयों में भी काम तो हो ही रहा है, यद्यपि यह सच है कि उसका ढिंढोरा नहीं पीटा जाता। चूँकि जमनालालजी स्वयं चुस्त हरिजन-सेवक है, इसलिए वे गोसेवा करते हुए भी अनेक सनातिनयोंको पिघला सकेगे। अन्तमें, साथका पत्र' पढ़ोगे तो इस प्रश्नपर अधिक प्रकाश पढ़ेगा। पत्र वापस भेज देना। एक विशेष कारण मी है। ज[मनालाल] अधिक पिवत्र होना चाहते हैं। वे विचारोंकी पिवत्रता के मूखे हैं। सम्मव है, उनकी यह मूख गोसेवासे तृष्त हो जाये, क्योंकि गाय हरिजनोंकी अपेक्षा भी अधिक मूक प्राणी है। यदि हम उसकी सेवा न करें, तो भी वह विद्रोह नहीं करेगी, वस मर जायेगी। और हरिजनोंको तो हम विद्रोह करना सिखा रहे हैं। यों हम न भी सिखायों तो और लोग सिखाने को तैयार हैं हो। तुम्हें याद है, मारतीय परिषदमें अब्दुल हक साहबने प्रस्ताव रखा था कि हिन्दी-हिन्दुस्तानीके बदले हिन्दी-उर्द्को अपनाना चाहिए। प्रस्ताव अगर यह नहीं था, तो क्या था?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५२) से '

## ५६४. पत्र: विट्ठलदास जेराजाणीको

२३ सितम्बर, १९४१

माई विट्ठलदास,

तुम्हारा अंग्रेजी पत्र जब जाजूजी के पास आया तभी मैंने सोचा था कि तुम्हें

लिखूँ, लेकिन लिख नहीं सका। अब तुम्हारा गुजराती पत्र मिला।

तुमने अंग्रेजीमें क्यों लिखा ? अंग्रेजीमें हम अपना हृदय कमी उँडेल ही नहीं सकते। जवाहरलाल-जैसे उँडेल सकते हैं, क्योंकि उन्होंने तो वचपनसे अंग्रेजी सीखी है और इंग्लैडमें सीखी है। खैर, होगा।

तुम्हारी विचार-सरणीमें कही दोष है। अगर हमें जगह-जगह अनेक मण्डार खोलने हों, तो निश्चित रूपसे हमें एक आदमीसे ही काम लेना पड़ेगा। उसके साथ दूसरा आदमी नहीं रखा जा सकता। लगता है, तुम्हें गौबोंके मण्डारोंका अनुभव नहीं है। बेचारे गाँवके मण्डारी मदद कहाँसे प्राप्त करें? वे कही जाते हैं तो ताला लगाकर ही जाते हैं। यदि उसमें से किसीके लड़का होता है तो उसे छोड़ जाता है, किन्तु

१. यह उपलब्ध नहीं है।

२. बाब्रिक सार्वीय साहित्य परिषद्

यह अलग बात है। दक्षिण आफ्रिकामें हमारे लोग और यहूदी हजारों मण्डार चलाते हैं। उनमें एक ही आदमी होता है और एक ही आदमी पुसाता मी है। बहुवा ये लोग मण्डारके पीछे ही रहते हैं। यदि कही कामसे जाते हैं, तो मण्डार बन्द करके ही जाते हैं। मुक्किलसे पाँच सौ का तो माल होता है, उसमें नौकर कहाँसे पुसायेगा? फिर, हम तो नवयुगके, अहिंसक युगके स्वप्न देख रहे हैं न? हम नियमानुसार ही मण्डार खुले रखेंगे। सबेरेके ६ बजेसे रातके १२ बजे तक खुले नहीं रखेंगे। इंग्लैंडमें मण्डार नियमानुसार ही बन्द होते हैं। हम स्वेच्छासे ऐसा करें। अंग्रेज तो यहाँ मी वैसा करते ही है। लेकिन वे चाहे जो करें, हमें तो अहिंसा-वर्मका अवलम्बन करते हुए अपने कामकी व्यवस्था करनी चाहिए। इसलिए हमारा तो इसी दृष्टिसे सारी व्यवस्था करना उचित है।

मै मानता हूँ कि हमें स्थानका भी विचार करना चाहिए।

मै तुम्हारी यह बात मानता हूँ कि विकय की कला उत्पादनकी कलासे अलग है। और जिस प्रकार खादी-उत्पादनकी कला सामान्य उत्पादन-कलासे मिन्न है, उसी प्रकार खादी-विकथकी कला भी सामान्यसे मिन्न है। इसपर विचार करना तो हम टालते ही आये हैं। हमने इसपर छुटपुट ढंगसे विचार किया है, लेकिन वह काफी नहीं है। लेकिन जब जागे तभी सवेरा। खादी-जगत्को मैं इसपर विचार करने को प्रेरित कर रहा हूँ।

हमारा काम एक आदमीके नियन्त्रणमें नहीं चलता, लेकिन हमारे कामने अभी पूरी तरह संस्थाका रूप नहीं लिया है। इसका कारण यह है कि हमने आदमी तैयार नहीं किये। उनके लिए हमने कोई शाला नहीं खोली। अब खोली है। देखें, यह क्या करती है।

तुम्हारे पत्रका स्वर यह था कि इस प्रश्तपर कौन्सिलको विचार करना चाहिए। मेरी मान्यता है कि अभी कौन्सिल द्वारा विचार करने का समय नही आया। पहले तो तुम्हें, जाजूजी को और मुझे विचार करना चाहिए। अन्तमें तो कौन्सिलको विचार करना ही होगा।

जाजूजी ने अपने विचार प्रकट किये, इसपर अंग्रेजी [पत्र] में तुमने जो आपत्ति ' व्यक्त की, मुझे बिलकुल अनुचित लगी। मन्त्री' अगर मन्त्रीका काम करेगा, तो उसे लोगोंका मार्ग-दर्शन करना ही पढ़ेगा। उनका मार्ग-दर्शन तुम्हें पसन्द नहीं आया, यह अलग बात है। किन्तु जबतक हम किसीको मन्त्रीके रूपमें स्वीकार करते हैं, तबतक वह मार्ग-दर्शन तो अवश्य करेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९८०१) से

## ५६५ पत्र: अमृतकौरको

२४ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

कल मैंने बड़ी जल्दीमें एक पुर्जा लिख मेजा था। डाक आने से पहलेके समयका उपयोग कर रहा हूँ।

फिर सुनाई पड़ा है कि नरेन्द्रदेवका स्वास्थ्य दिनों-दिन विगड़ता जा रहा है। अगर इससे कुछ फायदा समझो तो फिर लिख सकती हो। मैं सरूपको भी लिख रहा हैं कि वह जो भी कर सकती है करे।

यह लिख चुकने के बाद उनकी रिहाईकी खबर मिली है।

१०० रपयेकी रसीद भी भेज रहा हूँ। यह राशि एन्ड्रचूज-स्मारकमें जायेगी। अगर तुम पूर्णतः रोग-मुक्त घोषित कर दी जाओ तो बहुत अच्छा होगा। विनीत माव गुण भी है और दुर्गुण भी। परिस्थितिक अनुसार ही यह तय

विनात मान गुण मा ह आर दुगुण मा। पारास्थातक अनुसार ही यह तय किया जा सकता है कि वह कव गुण है और कव दुर्गुण। तुम्हारा समाधान हुआ ?

मैने तुम्हें लिखा या कि जमनालालजी की तबीयत ठीक नहीं दिखती। उन्हें

भी ऐसा ही लगता है। नैनीतालकी यात्राने उन्हें झैंझोड़ दिया।

हाँ, तुम्हारी परिषद् द्वारा कोई गाँव हाथमें लिये जाने के वारेमें तुमने मुझे लिखा था। देखें, शायद कोई इस कामके लिए मिल जाये। तुम्हारे जीटने पर इस सम्बन्धमें बातचीत करेंगे।

कुटिया और बढ़ाई जा रही है।

'खादी-जगत्' प्रेसमें है। महाराजाके आदेशकी खबर अगले महीने ही छप सकती है, सो छप जायेगी।

सप्रेम,

वापू

[पुनश्च:]

प्यारेलाल आज या परसों तक आ जायेगा। प्रमा आ गई है। विजया कुछ दिनों के लिए आयेगी; वसुमती भी। रामदासकी बदली नागपुरको हो गई है। इसलिए नीमू और वच्चे भी कुछ दिनोंके लिए आयेंगे। इस तरह आश्रम भरा रहेगा। एक-दो नये सदस्य भी आये हैं।

यहाँ सव स्वस्य हैं।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८२) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३९१ से मी

नरेन्द्रदेवको विना शर्त २३ सितम्बरको रिष्ठा कर दिया गया था!
 ३८४

#### ५६६. पत्र: सारंगवर दासको

वर्षा, सेवाग्राम २४ सितम्बर, १९४१

त्रिय सारंगघर दास,

मेरा पत्र अपनी सुविवानुसार जब प्रकाशित करना ठीक लगे तब करो। यह तो वह है जिसकी मदद सुविचारित योजनाके साथ करनी है।

> तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४४४) से। सीजन्य: उड़ीसा सरकार

## ५६७. पत्र: अन्नपूर्णा चि० मेहताको

२४ सितम्बर, १९४१

चि॰ अन्नपूर्णा,

तू हिम्मत मत हार। यदि तेरा बुखार पूरी तरह नही गया, तो उसकी क्या चिन्ता? बुखार तो आखिर जायेगा ही। उसका सही कारण समझमें नही आया, इसिक्टए देर हो रही है। तू वहाँ की आबहवामें जरूर अच्छी हो जायेगी। और यह बात मन में बैठा छे कि तू किसीपर मार-छप तो होगी ही नहीं।

बापुके जाशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३०) से

## ५६८. पत्र: भुन्नालाल गं० शाहकी

२४ सितम्बर, १९४१

चि॰ मुन्नालाल,

तुम जो लिख रहे हो, वह विचारणीय है। सुझाव मेरे पार्स मेजना। लक्ष्मीबाईने सुरगाँवका विवरण दिया है। हम जो करेंगे, पूरी तरह विचार . करके करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी॰ एन॰ ८४८४) से। सी॰ डब्ल्यू॰ ७१५७ से मी; सौजन्य: मुन्नालाल गं॰ शाह

## ५६९ पत्र: कन्हैयालाल मा० मुंशीको

२४ सितम्बर, १९४१

माई मुंबी,

चि० सरला आज जा रही है। उसे मैजते दुःख हो रहा है और यहाँसे जाते उसका भी मन मारी है। उसका यहाँ सबसे, बच्चोंके साथ भी, खूब प्रेम हो गया है। केवल तुम्हारे और भेरे सन्तोषके लिए सरला चन्द्रवदनसे अपना सम्बन्ध तोड़ लेगी, लेकिन तोड़ेगी ईमानदारीके साथ। ऐसा करना अपने-आपमें उसका घमं है, यह बात उसके गले नहीं उतरी है। जल्दी उतर जाये, ऐसा भी नहीं है। मेरी इच्छा चन्द्रवदनको यहाँ बुलाने की है, लेकिन तभी जब तुम दोनोंकी सहमित हो। सरलाके साथ और भी बहुत-सी बातें हुई है। वे सब तुमसे कहने की अनुमित उसने दे दी है। जब तुम दोनों अथवा अकेले आओगे, तब कहूँगा। सरलाकी जब भी यहाँ आने की इच्छा हो, तो उसे प्रोत्साहित करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६७०) से । सीजन्य: कन्हैयालाल मा० मुंशी

# ५७०. पंत्र: नरहरि द्वा० परीखको

२४ सितम्बर, १९४१

चि० नरहरि,

तुम्हारे रक्तचापकी बात मुझसे चिमनलालने कही। यह तुम्हारे लिए चेतावनी है। तुम्हें आरामकी जखरत है। यदि तुम कही जाकर छिप जाओ, तो फिर जैसे-के-तैसे हो जाओगे। चेतावनीकी उपेक्षा मत करना।

बापुके आशीर्वाद

[ पुनश्च : ]

महादेवको कुछ नही लिखता, क्योंकि वह तो वहाँसे चल दिया होगा।
गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१२६) से

## ५७१. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

२४ सितम्बर, १९४१

चि॰ काका,

मेरा विचार भी वही है जो तुम्हारा है, किन्तु निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता। दूसरे पक्षको सुनने के बाद मुझे विचार बदलना भी पड़ सकता है। तुम्हें भी अपना मन उन्मुक्त रखना चाहिए। उस समय हमें जो उचित जान पड़ेगा सो करेंगे। सक्सेनाके लिखने से जरा भी डरने की जरूरत नही है। तुम खुशीसे सबसे ४ को आने का अनुरोध करो। यह ज्यादा अच्छा होगा कि जिनकी उपस्थिति आवश्यक समझो, उनसे पहले पूछ लो। ऐसे दो लोग जमनालालजी और राजेन्द्र बाबू तो होंगे न! सत्यनारायणको खास तौरपर बुलाने की जरूरत में नहीं समझत।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५३) से

#### ५७२. पत्र: कृष्णचन्द्रको

२४ सितम्बर, १९४१

चि० कु० चं०,

केले दानतर इ० के लिये मंगाना होगा। लीबु बंघ करना ठीक नहि होगा। मात या खीचडी देना पड़ेगा। दूधकी मात्रा कम की जाय। गुड़ दलीयामें हि। दानतर इ० को देना होगा। दूसरा सोच-विचारकर करना चाहिये। केले थोड़े तो मंगाना होगा।

बापुके आशीर्वाद

[ पुनश्च : ]

ताडगुड बारेमें गजाननसे पूछो। पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४४०५) से

५७३. वक्तव्यः समाचारपत्रोंको

वधीगंज

२४ सितम्बर, १९४१ ग-सप्ताहके लिए हुण्डियाँ जारी

मुझे मालूम हुआ है कि अप्रमाणित विश्वेता चरखा-सप्ताहके लिए हुग्छियाँ जारी कर रहे हैं। यह सर्वेथा अनिधिक्कत और खादीको नुकसान पहुँचानेवाला काम है। जनतासे भेरा अनुरोध है कि वह खादीके अनिधिकृत विश्वेताओंसे सावधान रहे।

[अंग्रेजीसे] हिन्दू, २५-९-१९४१

#### ५७४. तार: घनश्यामदास बिड्लाको

२५ सितम्बर, १९४१

बिड्छा अमृतनिवास मसूरो

मुझे लगता है कि सरकारको<sup>र</sup> आमन्त्रित करना ठीक नही होगा। बापू

बंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ७८६४) से। सौजन्य: वनश्यामदास बिङ्ला

## ५७५. पत्र : अमृतकौरको

२५ सितम्बर, १९४१

त्रिय पगली,

याद नहीं आ रहा कि मैंने तुम्हें श्री हेनकाँक के बारेमें लिखा या नहीं। कैसा कि तुमने लिखा है, वे अक्तूबरमें आ सकते हैं। आधा है, वे २७ को ही नहीं आ धमकेंगे। मैंने उनसे मेंटका वह समय रह करके दूसरोंकों दे दिया है।

राजा साहबके बारेमें सुनकर दु:ख हुआ। लूट-खसोटपर रोक लगाकर तुम बिलकुल ठीक काम करोगी। मैं जानता हूँ, यह सब कितना कठिन है। निश्चय ही उनकी मृत्यु उनके लिए मुक्ति होगी और तुम लोगोंके लिए मी, जो उनके कष्टोंके असहाय दर्शक बनकर रह गये हैं।

हार्लंकि यहाँसे डाक निर्धारित समयपर निकल जाती है, फिर मी जाहिर है,

तुम्हें एक साथ दो पत्र मिलते हैं।

मेरी तबीयत असाधारण रूपसे अच्छी चल रही है।

अक्तूबरके मध्यमें मैं एन्ड्रयूज-स्मारकके सिलिसिलेमें यहींसे निकलना चाहता हूँ। अमीतक कुंछ निश्चित नहीं है, लेकिन विचार कर रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८४) से; सौजन्य: अमृतकीर। जी० एतृ० ७३९३ से मी

निक्निरंजन सरकारको; देखिए "पत्र: घनश्यामदास विद्वाको", ए० ३९१।

२. देखिए पु० ३५४।

#### ५७६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम २५ सितम्बर, १९४१

माई वल्लममाई,

नानीबहन झवेरी चल वसीं। विश्वास नहीं होता, परन्तु यह ईश्वरीय कार्य है, जिसे हम समझ नहीं सकते।

मै अल्लाबह्यके बारेमें समझ गया। मैंने तो उनसे कह ही दिया है कि हमें मौलानाके निर्णयको अवस्य स्वीकार करना है। परन्तु साथ-साथ यह भी कह दिया है कि यदि वे खुद छोड़ने का औषित्य समझ गये हों, तो वही बात मौलानाको समझाकर अपना पद छोड़ दें और कांग्रेसके साथ वनवास मोगें। इसमें तो वचन-मंगका या दूसरा कोई दोष नहीं होता। परन्तु इस बातको जाने दो। जब तुम आओगे तब इसके गुण-दोषपर थोड़ी चर्चा कर छेंगे। सिन्धके विषयमें मेरी राय नई नहीं है। परन्तु दृढ़तर बनी है और सब प्रान्तोंके बारेमें छाणू होती है। मुझे कोई जल्दी नहीं है। हममें से अधिकांश उसे स्वीकार कर छें तमी उसपर अमल किया जा सकता है। "अधिकांश" में मौलाना भी आ जाते हैं।

· तुम्हारे स्वास्थ्यके लिए होमियोपैथी जितना मर्यादित समय माँगे, उतना उसे अवश्य दो। हजीराके पानीकी स्थाति तो मैंने सुनी है, किन्तु देवलालीका मुझे पता नहीं। सम्मवतः हजीरा तुम्हें अनुकूल आ जाये। वैसे प्राकृतिक चिकित्सा तो है हो,। परन्तु पहले हम मिलकर कुछ विचार-विमर्श अवश्य कर छें।

उस छोटो लड़कीकी बीमारी तो लम्बी ही खिचती जा रही है। मणिवहनके पत्रसे मालूम होता है कि शायद बच भी जाये। राजेन्द्र बावू ठीक हैं। जमनालास्त्रजी के वारे में यह तो नहीं कहा जा सकता कि उनकी समस्या सुलझ गई।

मूलामाई अच्छे हो जायें तो ठीक हो। मैं मणिको अलगसे पत्र नहीं लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

#### [ पुनश्च : ]

्र्मं देख रहा हूँ कि दीनबन्धु-स्मारकके लिए मुझे प्रवास करना पड़ेगा। अक्तू-वर्रके मध्यमें शुरू करने की इच्छा है!

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २ : सरबार वल्लभभाईने, पृ० २५५-५६

#### ५७७. पत्र: घनश्यामदास बिङ्लाको

२५ सितम्बर, १९४१

माई धनश्यामदास,

मैं सरकारकी बात तो मूल हि गया। आज तार दिया है सो समयपर पहूंचा होगा। मेरा विश्वास है कि उनको बुलाने से हमको नुकसान है और उनको मी। उनका शुद्ध प्रेम है तो वह रहेगा हि। जनता उनका सरकारी पद स्वीकार नहीं समझेगी। इसलिए हर प्रकारसे अच्छा होगा यदि व जाहरी प्रतिष्ठाका स्वीकार न करे और अपना कारोबारको प्रजाकी दृष्टिसे सुक्षोमित करें। हम सबकी सहाय लेते हैं यह सही है, लेकिन उसमें भी मर्यादा तो रहती हि है।

तुमारा स्वास्थ्य अच्छा होता होगा।

बापुके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

दीनवन्यु-स्मारकके लिये मुसाफरी करनी होगी। अक्टोबरके मध्यमें शरू करने का इरादा है। क्या दिल्ली — पिलानीसे शरू किया जाय?

बापु

मूल पत्र (सी॰ डब्ल्यू॰ ८०४९) से। सोजन्य: घनश्यामदास बिड्ला

## ५७८. पत्र: प्रभावती जकातदारको

२५ सितम्बर, १९४१

चि॰ प्रभावती,

जकातदारजी को तो मैं अंग्रेजीमें लिखता हूं। तुमको तो हिन्दीमें ही लिखू।
पिताजी की स्थितिका सुनकर दुःख होता है। तुम्हारी बहादुरीके लिये घन्यवाद।
तुमने जो घन-संग्रह किया है उसका उपयोग दिल चाहे ऐसा करो। यहांसे रुपये
मिलने के बारेमें तुम्हारे यहां आने पर विचार करेंगे। मेरी आशा है कि तुम्हारा
कारोबार सुशोमित होगा और दफ्तरका काम व्यवस्थित कर सकोगी।

बापुके आशीर्वाद

प्रमावतीबाई जकातदार चेरमन, लोकल बोर्ड मंडारा

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए ए० ३८९।

#### ५७९. पत्र: अमृतकौरको

[२६ सितम्बर, १९४१]

प्रिय पगली.

साथमें दो पत्र मेज रहा हूँ। शिक्षा बोर्डमें अपनी नामजदगी तुम्हें स्वीकार कर लेनी चाहिए।

आश्रा है, राजाङ्काण्डका निस्तार हो रहा होगा।

महादेव निश्चित रूपसे कल आ रहा है, लेकिन फिर २९ को ही अलबरको प्रस्थान कर जायेगा। आश्रममें भीड़ बढ़ती ही जा रही है। रोकना मेरे बसका नहीं है।

तुम्हें यह तो बताया ही नहीं कि सुरेन्द्र गिरफ्तार कर लिया गया और वर्षी में उसपर मुकदमा चलाया जा रहा है।

यहाँ सब ठीक है।

आशा है, तुम १५ अक्तूबर तक यहाँ आ जाओगी। मैं चाहता हूँ कि मेरी अनुपस्थितिमें तुम यहाँ रहो।

सप्रेम,

बापू

#### [-पुनश्च : ]

प्यारेलाल कल आ गया।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८५) से। सीजन्य: अमृतकौर

र. साधन-पृत्र में "२४-९-४१" है, जो किसी और की खिखावटमें है। राष्ट्र ही यह मूख है, वर्षोंकि डाककी मुहर "२६-९-४१" की है। यह बात पक पिछले पत्रमें महादेव देसाईके अगले दिन आने की सम्मावनाका जिक होने से भी सिद्ध हो जाती है; देखिए पु०३७८।

## ५८०. पत्र: गुलाम रसूल कुरैशीको

२६ सितम्बर, १९४१

चि॰ कुरैशी,

तुम्हारा पत्र मिला। वहाँ चरखेका काम खूब चलता है, यह जानकर मुझे वड़ी खुशी हुई। कानजीमाईका पान-सेवन कैसा चल रहा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०७७१) से। सौजन्य: गुलाम रसूल कुरैकी

## ५८१. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम २६ सितम्बर, १९४१

भाई वल्लमभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने कल जो लिखा था उससे मेरा विचार तो सुमने जान लिया होगा। यहाँ उतनी गरमी नहीं है जितनी तुम समझते हो। रात तो सुन्दर होती ही है। बँगलेमें मैं मच्छर तो जरूर हैं। अगर तुम सेवाग्राममें रहो और आकाशको नीचे सोओ तो मच्छर तंग नहीं करेंगे। और सब सुविधाएँ तो है ही। इसलिए यदि दो-तीन दिन यहाँ बिताओ तो अच्छा हो। देवलालोको बात मुझे जँच नहीं रहो है। हजीरा तो प्रसिद्ध है ही।

सत्यमूर्ति लिखते हैं कि असेम्बलीमें जाने की अनुमति मिलनो चाहिए। मुझे

तो यह पसन्द नही है। तुम अपनी राय बताना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे ] बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५७

१. कन्हैयालाल देसाई

२. वर्षीमें जमनाकाक बजाजका निवास-स्थान

## ५८२ पत्र: शान्तिकुमार न० मोरारजीको

२६ सितम्बर, १९४१

चि॰ शान्तिकुमार,

मैंने ब्रह्मदेश (वर्मा)के प्रवान-मन्त्रीको अपना वक्तव्य' मेजा था और अपना मत भी व्यक्त किया था। उनको बोरसे मीठा जवाव मिला है। और उन्होंने मुझे मारतीय शिष्ट-मण्डलके सामने दिये गये अपने दो माषणोंकी प्रतियाँ मी भेजी हैं। वे पत्र तो तुमने देखे होंगे। मुझे लगता है कि यदि वहाँ मी हमारे कार्यकर्ता हों, तो कुछ जरूर हो सकता है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ ४७३७) से। सौजन्य: शान्तिकुमार न॰ मोरारजी

#### ५८३. पत्र: घनस्यामदास बिङ्लाको

२६ सितम्बर, १९४१

माई घनश्यामदास,

ं तुम्हारा खत मिला। मैं तुमारी योजनासे सम्मतं हूं। ऐसी ६ संस्था होगी तो उसका असर अच्छा होना हि चाहिए। मैं यह भी मानता हूं कि आज हम मैंद्रिक्युलेशनको छोड़ नहिं सकते हैं। साथ-साथ भेरा अभिप्राय है कि हमारा अभ्यास-कम ऐसा होना चाहिए कि जो लड़के हाई स्कूल तक हि जायं उनका अभ्यास पर्याप्त हो और उसको अभ्यासके वाद बंबा या नौकरी मिल सके। मुख्य वात तो यहि है कि मुझे वस्तु पसंद है और आरंभ हो सकता है।

वापुके आशीर्वाद

#### [ पुनश्च : ]

तवीयतके वारेमें। व्यायाम जितना शरीर आरामसे कवूल कर सके इतना हि रखा जाय।

मूल पत्र (सी० डक्ल्यू० ८०५०) से। सीजन्य: घनश्यामदास विड़ला

र. भारत-वर्मा समझौतेके बारेमें; देखिए ए० २८३-८७।

368

## ५८४. पत्र: अमृतकौरको '

सेवाग्राम २७ सितम्बर, १९४१

आज समय है नही। एक खत मेजता हूं। मिसीस कजिन्सका बत वापस करता हूं।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ४२५२) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७८८४ से भी

## ५८५ पत्र: अमृतकौरको

२८ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा छोटा-सा पुर्जी मिला। तुम्हारे तीनों प्रश्नोंका उत्तर दे चुका हूँ। तुम्हें रवीन्द्रनाथ ठाकुर महिला स्मारक-समिति और शिक्षा बोडेंमें शामिल हो जाना चाहिए। हेनकॉक ११ अक्तूबरको शाम ४ बजे मेंट कर सकते हैं। मैंने कोई निश्चित तारीख नहीं दी थी। मुझे खुशी है कि तुम्हारी तबीयतमें निश्चित तौरपर सुधार हो रहा है।

सेव मिल गये हैं। अभी चले नहीं है। महीनेमें एक बार ही मेजा करो। इतनेसे खुश हो जाओगी, ऐसी उम्मीद है।

हतनस खुश हा जानागा, एसा उम्म

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०८६) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३९५ से मी

- १. प्रमावतीने २७ सितम्बर, १९४१ को अधृतकौरके नाम जो पत्र किखा था उसीपर पुनश्चके रूपमें यह पत्र किखा गया था।
  - २ मागैरेट कजिन्स

#### ५८६. पत्र: सर रॉबर्ट ई० हॉलैण्डको

२८ सितम्बर, १९४१

प्रिय रॉबर्ट,

बिदा होते समय आपने जो पत्र मुझे लिखा उसके लिए बहुत-बहुत वन्यवाद। निश्चय ही आपकी टिप्पणी और समय-समयपर आपके पत्रोंकी प्रतीक्षा रहेगी।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

सर आर० ई० हॉलैण्ड ११८० ड्रमण्ड कैनेडा

अंग्रेजीकी फोटो-नकळ (जी० एन० ५६६७) से

#### ५८७. पत्रः जे० सी० कुमारप्पाको

२८ सितम्बर, १९४१

प्रिय कु०,

ऐसा लगता है, तुमने शंकरलालको कुछ लिखा है। कारण जो भी हो, उनका स्वास्थ्य अचानक बहुत बिगड़ गया है। इसलिए उनसे पत्र-व्यवहार विलकुल बन्द कर दो।

> हृदयसे तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१५६) से

#### ५८८. पत्र: मगनलाल प्रा० मेहताको

२८ सितम्बर, १९४१

चि॰ मगनलाल,

तेरे अनुत्तीणं होने की बात मुझे परसों ही अनायास मालूम हुई। तू एक ही विषयमे अनुत्तीण नही हुआ। इससे मालूम होता है कि तुझमें कानूनको समझने की बृद्धि नहीं है। ऐसा बहुतोंके साथ होता है। ऐसे अनेक महापुरुष हो गये हैं जिनमें कुछ क्षमताएँ नहीं थी। सभी लोग गणितके पण्डित नहीं हो सकते। जिसमें जैसी क्षमता हो, वह उसीका अनुकरण करे। इसलिए मेरा अब तक्षसे आग्रह है कि त परीक्षा पास करने का लोभ छोड़ दे और केवल व्यापारमें मगन रह। कानुनका जो-कुछ थोड़ा ज्ञान हजम हो गया होगा, वह तेरे पास बना रहेगा। मैं यह अवश्य चाहता है कि तू अपना अंग्रेजीका ज्ञान पक्का कर ले। लेकिन अगर तू उससे धबराता हो, तो उसके लिए भी मेरा आग्रह नहीं है। मेरी तो यह भी इच्छा है कि किसी कृशल अध्यापकसे तेरी सब प्रकारकी परीक्षा कराऊ, और वह तुझे जो विषय सीखने के योग्य ठहराये, उसके लिए तु तैयार हो जाये। फिर मेरी यह भी इच्छा है कि तू यहाँ जल्दी आ जा और बच्चोंको रंगून के जा। उमि तो रंगूनकी ही रट लगाये रहती है। अब वह सेवाग्राम से ऊब गई है। और अप्पाकी तो शरूसे हो यहाँ अच्छा नहीं लगा। ऐसी स्थितिमें बच्चोंकी उन्नित नही होगी। इसलिए सब प्रकारसे मेरा तो सुझान है कि तू यहाँ आ जा, सलाह-मश्चितरा कर और रंगत चला जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०१९) से। सौजन्यः मंजुला म॰ मेहता

# ५८९. पत्र: रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

२९ सितम्बर, १९४१

त्रिय रथी,

तुम्हारा १४ तारीखका पत्र मिल गया था।

डॉ॰ अवनीन्द्र बाबूने चुने जाने से मुझे प्रसन्नता हुई। मेरी वधाई उनतक पहुँचा दो। यदि इस दायित्वसे बचने की कोई सूरत न होती तभी मैं इसे स्वीकार करता। इस उभ्रमें स्वामाविक इच्छा अपना बोझ बढ़ाने के वजाय कम करने की होती है।

जबतक पाँच लाख इकट्ठे नहीं हो जाते, मैं चैनसे नहीं बैठ सकता। जहाँ तक बनेगा, यात्रासे बचने की कोशिश कर्डेंगा, लेकिन पूरी राशि इकट्ठी न हुई तो उससे बचने की हिम्मत नहीं कर सकता। यह तो गुरुदेव और दीनवन्धुकी पावन स्मृतिके प्रति मेरा कर्तेंब्य है।

यहाँ आने की फुरसत निकाल पाओगे तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

तुम्हारा, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २२९२) से

## ५९०. पत्र: अमृतकौरको

२९ सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। कपूरथला की शर्तोंको हम खुशी-खुशी स्वीकार कर सकते हैं। अगर कोई ठीक ढंगका स्थानीय आदमी मिल जाये तो वहाँ मण्डार खोल सकती हो। रियासत अपनी जरूरतकी खादी आप ही क्यों [न] तैयार करे? मैं समझता हैं कि इसके लिए ठीक वातावरण नहीं है।

जमनालालजी ठीक चल रहे हैं, किन्तु मनसे अब भी दुर्वल हैं। गो-सेवा संघ के रूपमें उन्होंने अपने सिरपर बहुत बड़ा बोझ ले लिया है। आज प्रारम्भिक बैठक चल रही है। मुझे कलकी बैठकमें शामिल होना है। क्या तुम शामिल होना चाहोगी?

विश्वमारतीके जध्यक्ष

२. छेटर्स टु राजकुमारी अमृतकौर के अनुसार

यह भी खास तौरसे स्त्रियोंका ही काम है। वह कातती है, दुहती है, जनती है और घर-गृहस्थी चलाती है। लड़कीके लिए 'दुहिता' शब्दका भी तो प्रयोग होता है।

तुम्हारे नाससे यहाँ आये दो पैकेट तुम्हारे प्रतेपर मेज दिये हैं। बुलका पत्र नष्ट कर दिया है। उसने दूसरा पत्र लिखा है। मैं समझता हूँ, मामला अनुकूल ढंगसे निकट जायेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ३६७९) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी॰ एन॰ ६४८८ से मी

## ५९१. पत्र : हिन्दू महासभा, शिमोगाके मन्त्रीको

२९ सितम्बर, १९४१

मन्त्री हिन्दू महासभा शिमोगा, मैसूर राज्य

प्रिय मन्त्री महोदय,

आपके हस्ताक्षर पढ़े नहीं जा सके।

में जानता हूँ कि गणपति उत्सवके जुलूसोंमें राष्ट्रीय सण्डेका प्रयोग किया जाता रहा है।

मन्दिरोंपर राष्ट्रीय झण्डा फहराना गलत है।

कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था है, क्योंकि जाति और धर्मके मेद-मावके बिना इसके द्वार सबके लिए खुले हैं। हिन्दू धर्मोत्सवोंसे कांग्रेसका उतना ही कम या ज्यादा सरोकार है जितना कि किसी अन्य धर्मके उत्सवसे।

आपका,

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी ० एन० ६८३९) से

#### ५९२. पत्र: जीवराजको

२९ सिखम्बर, १९४१

जहाँतक खुद मेरा सम्बन्ध हैं, मेरी यह प्रतीति दिन-दिन बढ़ती जाती है कि जमीन-जायदाद रखना एक झंझट और बोझ है। यात्राकी इच्छा रखनेवालों के पास जितना कम सामान हो उतना ही अच्छा, और मैं अपने गैर-जरूरी सामानसे छुटकारा पाना चाहता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईको हस्तिलिखित डायरीसे। सौजन्य: नारायण देसाई

### ५९३. पत्रः देवदास गांधीको

सेवाग्राम, वर्धा २९ सितम्बर, १९४१

चि॰ देवदास,

तेरे बारेमें रोज पढ़ता रहता हूँ। चीफ जस्टिसने तेरा खूब विज्ञापन किया। सर तेजने तेरी ठीक ही तारीफ की है। तेरे कुछ जवाब वहें चुटीले थे। शिव-नाथमाई तेरे बारेमें खबरें देते रहते हैं। उसपर तूने खूब जादू किया है। बा तेरे बारेमें सब सुनती रहती है। मुन्नालाल रुचिपूर्वक सुनाता है। अब उसे [तुझे] जेल हो जाने का डर नहीं रहा।

बापूके आशीर्वाद

श्री देवदास गांघी हिन्दुस्तान टाइम्स बिल्डिंग नई दिल्ली

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१४१) से

## ५९४. पत्र: अन्तपूर्णा चि० मेहताको

२९ सितम्बर, १९४१

चि॰ अन्नपूर्णा,

तुख में विश्वास आता जा रहा है, यह बड़ी बात है। मेरी इच्छा है कि तू बिल कुल अच्छी हो जाये। वहाँ रहते तू नई बातें तो सीखती ही रहना। आशा है, दादीजी का मार तो हलका करती ही होगी। काम शुरू करने की जल्दी मत करना। यहाँ सब ठीक चल रहा है। तेरी याद तो बराबर आती रहती है।

नानीबहन झवेरी एकाएक हृदयकी गति बन्द हो जाने से स्वर्ग सिघार गईं। वे महान् सेविका थी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३१) से

## ५९५. पत्र: धीरूभाई भू० देसाईको

२९ सितम्बर, १९४१

चि॰ घीरुमाई.

तेरा पत्र मिला। पिताजी से कहना कि वे मुझे लिखने का विचार तक मनमें न लायें। जब वे स्वस्य हो जायें, तब पत्र लिखने के बजाय यहाँ आयें। इस बीच मैं लिखता रहेंगा, यही पर्याप्त है।

अपने अध्यक्ष-पदसे त्यागपत्र देने के बारेमें तूने लिखा था। मैं उत्तर नहीं दे पाया था। मेरा भी यही खयाल है कि इस समय तेरा त्यागपत्र दे देना ही ठीक होगा। तेरे बाद किसे नियुक्त किया जाये, इसके बारेमें तू तिनक पिताजी से और सरदारसे भी पूछना। दोनों जिस व्यक्तिका नाम सुझायें, वह लिख मेजना।

किसी शर्माके बारेमें तेरे पास कोई शिकायत आई होगी। उसकी नकल मुझे मी मिली है। वह क्या है सो मुझे बताना और उसके बारेमें जो ठीक हो सो करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

. X08

#### ५९६. उधारीसे बचो

मैं जानता हूँ कि क्या खादीमें और क्या अन्य बन्वोंमें ज्यादा विकीके लाल्च से हम ज्वाद माल वेचते हैं और पीछे नुकसान उठाते हैं। दक्षिण अफीकामें वकालत करते हुए मैं अपने सैंकड़ों ज्यापारी मुविक्कलोंका हिसाव देखा करता या। वे लोग इवनेवाली उघारीके लिए २५ प्रतिश्चतकी पहलेसे ही गुंजाइश छोड़ रखते थे। इसका परिणाम यह होता था कि वे लोग नका बहुत चढ़ाते थे। इनमें कुछ तो दिवालियेपनके शिकार होते थे। 'इंडियन ओपिनियन', 'नवजीवन', 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' चलाते हुए मैंने देखा कि उवार न वेचने से हम नुकसानसे वच गये। इसका प्राहकोंकी संख्यापर भी कोई बुरा असर नहीं हुआ। इसके सिवाय एक प्रत्यक्ष लाम यह हुआ कि जो लोग इन अखवारोंकी कद्र करते थे वे ही इन्हें खरीदते थे। लेकिन खादी और अन्य प्रकारके ज्यापारके वीच कोई मुकाविला मी नहीं हो सकता। खादी केवल पारमार्थिक दस्तु है। जो करोड़ों भूखों मरते हैं उनकी सेवाका प्रश्न खादीमें मरा है। ऐसी खादीको हम उवार क्यों वेचें?

इसिलए मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि हम खादी किसी भी हालतमें किसीको भी उदार न दें। इसपर दृढ़ताके साथ अमल करने से हम बहुत-से फिजूल खर्चोंसे वचकर खादोको कुछ सस्ता भी कर सकेंगे। साथ ही ग्राहकोंको पूर्ण संतोष भी दे सकेंगे।

चरला संघका सामान्य नियम है कि उसके मातहत किसी भी मंडारसे उघार माल न दिया जाये। मुझे डर है कि सब लोग इसका साँ फी सदी पालन नहीं कर सके। मेरा अभिप्राय तो यह है कि जिस नियमको आवश्यकता हमारो बुढि महसूस नहीं कर सकती, उस नियमके ऐलान द्वारा हम पूरा लाग भी नहीं उठा सकते। अतः मुझे उम्मीद है कि उचार न देने की नीति सब खादी-सेवक अच्छी तरहसे समझ लें, और समझकर उसका अच्छी तरह पालन करें।

खादी जगत्, सितंम्बर, १९४१

### ५९७. पत्र: विजयलक्ष्मी पण्डितको

सेवाग्राम, वर्षा ३० सितम्बर, १९४१

चि० सरप,

तेरा खत मिला। वाइस-चेन्सेलरीका समझा।

लखनऊ जेलके बारे में लोग कुछ भी कहे, जो हुआ सो ठीक हि हुआ है। लोगोंकी शिकायत होती हि रहेगी। उसकी बरदास्त करे।

चुनार जेलके कागज कुछ देखने में निहं आये। शायद तू मेजना मूल गई। जो कुछ हो मेरा नहीं अभिप्राय है जो दूसरी जेलोंके बारेमें। मूख हड़ताल तब हि हो जब स्वमान-हानि होती है। शुद्ध आंदोलनसे काफी कम हो सकता है। मूख हड़-तालकी मर्यादा बराबर समझ लेनी चाहिये। थोड़े और कैदी छुटने पर में जरूर उनको बुला लुंगा।

शायद ५ तारीखको महादेव मी देहरा[दून] जायगा। अब तेरे सब प्रश्नके उत्तर हो गये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

## ५९८. एक पुर्जा

३० सितम्बर, १९४१

बीबी सुलतानाको मैने भेरा सूत दिया है। उसे वह बेचेगी और उससे जो पैसे मिलेंगे वह दीनबंधु मेमोरियलमें दिये जायेंगे।

मो० क० गांधी

महात्मा, खण्ड ६, पू० ४८-४९ के बीच प्रकाशित उर्दू पुर्जेकी प्रतिकृतिसे

### ५९९. भाषण: गोसेवा संघकी सभामें

नालवाड़ी ३० सितम्बर, १९४१

आप अपना विघान सादा और छोटा बनावें और उसमें अनेक प्रकारके सदस्य न रखें। एक हो प्रकारके सदस्य रखें। पेट्रन तो होने ही नहीं चाहिए। जो दान देनेवाले हैं वे नामके लिए नहीं देंगे। कुछ तो अपना नाम जाहिर करना भी नहीं चाहेंगे। गुप्त दान ही देंगे।

मिन्न-मिन्न प्रकारके सदस्य रखने से कुछ लाम नहीं होगा। जो सदस्य रहेंगे, उन्हें कोई अधिकार तो होगा हो नहीं। हम अधिकार नहीं, सेवा चाहते हैं। वे प्रत्यक्ष सेवा करनेवाले होंगे। ऐसे दस-बीस सदस्योंसे मी हमारा काम चल सकता है। सिर्फ गायका दूघ, घी आदि और मृत पशुका चर्म काममें लेने की शतें हरएक सदस्यके लिए अनिवार्य होनी चाहिए। उसमें ढीलापन नहीं चलेगा। संघके कार्यके लिए एक छोटो-सी समिति नियुक्त को जाये।

दक्षिण आफिकामें ही मेरा यह मत बन गया था कि हमें मैंसके दूध-धीका भोह छोड़ना होगा। गायको रक्षासे मैंसको भी रक्षा हो जाती है। मैंसका दूध सब लोग छोड़ेंगे, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। लेकिन गायके दूधके वारेमें यह डर है। इसलिए यदि हम गोरक्षा नहीं करेगे, तो गाय और मैंस दोनोंका नाश हो जायेगा।

हम लोगोंमें एक दोष है। वैसे तो वह मनुष्य-मात्रमें पाया जाता है, किन्तु हम हिन्दुस्तानियोंमें अधिक मात्रामें है। वह यह कि जो चीज आसानीसे मिल जाती है, उसे हम जल्द अपना लेते हैं और जिसे पाने में कठिनाई होती है, उसे छोड़ देते हैं। खादी, ग्राम उद्योग आदि संस्थाओंमें लोग आराम, सस्तापन और सुंविधा 'खोजते हैं। मैंसका दूध सस्ता और मीठा रहता है, इसलिए लोग उसे ज्यादा पसंद करते हैं।

हमारे यहाँ वैदिक कालसे ही गायको महिमा गाई गई है, मैंसकी नहीं। अगर गायको वह स्थान न दिया जाता, तो उसका नाश ही हो जाता और उसके साथ भैंसका भी। हिन्दुस्तानमें गाय और मैंसका अनुपात क्या है, इसके बाँकड़े मैंने देखे हैं। दोनोंकी बहुतायत है। लेकिन भैंस या गाय एक की भी दशा अच्छी नहीं है। जबतक ग्वालेको गाय या भैंससे पैसे मिलते हैं, तबतक वह उन्हें रखता है और बादमें कसाईके हाथ बेच देता है। इनको बचाने के लिए गोरक्षावाले गाय या भैंसको खरीद लेते हैं। इस तरह जो पैसे मिलते हैं, उनसे कसाई दूसरे जानवर खरीदते हैं। इससे कुछ गायें मले बच जायें। लेकिन गोवंशका तो नाश

ही है। इसलिए सही इलाज यह है कि जो गाय बिक गई हो, उसे हम मूल जायें और गायकी नस्ल सुधारने में, गायकी कीमत बढ़ाने में, तथा गोपालोंको उनका धर्म सिखाने में पैसे खर्च करें।

कोई ऐसी शंका न करें कि मैंसके दूध-धीका सभी लोग त्याग करें, तो भैंसका तो नाश ही हो जायेगा। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, ऐसा होने की कम सम्मावना है। लेकिन ऐसा हो भी जाये, तो कोई हानि नही होगी। मैंस जंगली जानवर हो जायेगी। असल बात यह है कि बचाना हो तो गायको हो बचाया जा सकता है। उसके साथ-साथ मैंस भी बच जायेगी, क्योंकि हमारे लिए दोनोंका दूध उपयोगी है। लेकिन शास्त्रीय पद्धित छोड़कर सभी लोग गो-रक्षाके नामपर मनमाने ढंगसे काम करने लगें, तो दोनोंका नाश निश्चत है, जैसा कि हमारे देशमें और चीजोंका नाश हुआ है। उन सब चीजोंके नाशमें हमारे बजान का ही सबसे बड़ा हिस्सा था। इसलिए गोसेवा-धमंका ज्ञानपूर्वक पालन करने से पशुओंके प्रति अपना धमं हम समझेंगे और उसका पालन भी कर सकेंगे। गोपालन की जड़में हमें मनुष्येतर जीवोंके प्रति अपने धमंका ज्ञान प्राप्त होता है। लेकिन गोसेवा नाममात्रकी ही रही है, इसलिए हम सब उस धमंको मूलते जा रहे हैं।

हिसाबकी वृष्टिसे देखें तो दुनियाके ढोरोंके करीब एक चौथाई ढोर हिन्दु-स्तानमें होंगे। .छेकिन यहाँके छोगोंकी जितनी बुरो हालत है, उतनी हो बुरो हालत

यहाँके ढोरोंकी मी है।

गोसेवकको गायका ही दूध-घी छेना चाहिए, बकरीका नहीं। मै तो लाचार होकर बकरीका दूध पीता हूँ। छेकिन गोसेवा संघके सदस्यको गायका ही दूध-घी

और मृत गाय-मैसका ही चमड़ा इस्तेमाल करना चाहिए।

जहाँ गाय-मैसका इतना संहार होता है, वहाँ मरे हुए बकरेका चमड़ा तो कहाँसे मिल सकता है? आज तक तो मानव-जातिने माना है कि बकरा कतल होने के लिए ही पैदा होता है। आज दशहरा है। कलकत्तेमें आज बकरोकी बिल

कालीके चरणोंमें चढ़ाई गई होगी।

धीका प्रश्न धनिकोंके लिए कठिन नहीं होना चाहिए। जिस प्रकार वे लवं-हर, कोलनवाटर, टूथब्बर साथमें रखते हैं, उसी प्रकार उन्हें अपने साथ गायका हो भी रखना चाहिए। नहीं तो वे गोसेवाका नाम छोड़ दें। धोका प्रश्न जितना सासान है, उतना दूधका नहीं है। अल्मोड़ेमें पैसे देकर भी गायका दूध नहीं मिलता। उड़ीसामें भी वहीं स्थिति है। दूधका मावा पानीमें घोलकर उसका दूध बनाया जा सकता है। हॉलिक्सका पाउडर अच्छी चीज है, वह पचने में हत्का होता है। इसलिए हम उसका उपयोग करते हैं। लेकिन हम उसी प्रकारका पाउडर यहाँ क्यों न बनाएँ? इस विषयका शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करके हमें यहीं पाउडर बनाना चाहिए, जिससे हिमालयकी चोटीपर भी गायका दूस मिल सके।

जमनालालजी का स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं है कि मैं उन्हें फिरसे जेल जाने की इजाजत दूं। अगर वे वहाँ जाकर बीमार हो गये, तो मैं उसे बरदाश्त नहीं करूँगा। यह लड़ाई तो लम्बी जलनेवाली है। जब मौका आयेगा मैं खुद उनसे कहूँगा कि उठो, जेलमें चले जाओ। लेकिन उन्हें जेलमें न मेजने का ही मेरा आज का धर्म है। तब वे क्या करें? उन्होंने दो-तीन बातें मेरे सामने रखी — हरिजन, खादी, गोसेवा आदि। उनमें गोसेवाको मैंने पसन्द किया। शुरूसे ही इसमें जर्मना-लालजी का हाथ रहा है और जो काम आज तक हुआ है, वह निष्फल नहीं गया। फिर मी वह मेरो मित और प्रकृतिके अनुसार चल रहा था। अब वह जमनालालजी की रायसे चलेगा।

गोरक्षा तो मूक प्राणियोंकी सेवा है। आज हरिजन दुवंल हैं। लेकिन वे कल बलवान हो सकते हैं और अपने-आप प्रगित कर सकते हैं। क्योंकि मनुष्यकी सब शिवता जनमें मौजूद हैं। अगर कल हरिजन उठकर मंदिरोंका कब्जा ले लें तो मैं खुशीसे नाचूंगा। लेकिन गायमें वह शिवत नहीं है। उसे खिलाओ-पिलाओ तो वह हृष्ट-पुष्ट होगी। फिर भी वह आपके अधीन ही होगी। आप उसे मारें-पीटें, कतल करें तो भी वह आपके खिलाफ बगावत नहीं कर सकेगी। तब उसकी रक्षा करनेवाला कौन है? जमनालालजो की आध्यात्मिक तृष्णा गोमाताकी सेवासे तृष्त होगी। इस विचारसे मैंने यह कार्य उनके ऊपर पूरी तरह छोड़ दिया है। इसमें वे अपनी सफल व्यापारीकी दृष्टि भी लगायोंगे और पारमाधिक दृष्टि भी।

गोरक्षाका काम बहुत मारी है। उसके लिए शान्त चित्तसे जिन्होंने इस शास्त्रका अध्ययन किया है, ऐसे लोगोंका संग्रह करना होगा। जहाँसे माँग आवे, वहाँ हम निपुण गोसेवक मेज सकें, ऐसा दल हमारे पास हो जाना चाहिए। स्वामी आनन्द आना चाहते हैं, तो आ जायें; लेकिन वे थानामे दैठे-बैठे भी कार्य कर सकते हैं। वे अपनी सेवाका क्षेत्र निश्चित कर लें और उसी क्षेत्रमें अपनी शक्ति लगायें। इस प्रकार हिन्दुस्तानका नक्शा सामने रखकर छोटे-छोटे दस या सौ क्षेत्र बनाये जा सकते हैं और हरएक क्षेत्रका आदमी अपना हिसाब मेज सकता है। हिन्दुस्तानमें आज कई गोशालाएँ हैं। उनका निरीक्षण होना चाहिए, उनकी सुव्यवस्था होने। चाहिए। अगर किसी स्थानसे निष्णात सेवकके लिए माँग आये, तो वैसा सेवक मेजने की हमारी तैयारी होनी चाहिए।

गो-सेवक बनने के लिए पितृत्र आदमीकी जरूरत है। सिर्फ होशियार आदमी वह काम नहीं कर सकता। इस कार्यके लिए दौरा करने की जरूरत मेरी समझमें नहीं आती। एक ही स्थानमें बैठकर काफी काम हो सकता है। वर्धामें जितने दूध पीनेवाछे मिलें, उनको गायका दूध पिलायें। इतना तो अभीसे कर सकते हैं।

सर्वोदय, दिसम्बर, १९४१

## ६०० . पत्र : अमृतकौरको

३० सितम्बर, १९४१

प्रिय पगली.

यह पत्र विलम्ब-ज्लके साथ जायेगा। तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। जिन दो दिनोंका तुमने उल्लेख किया है उनमें भी मैं चूका नही हूँ। लेकिन यहाँकी डाक तो विचित्र है। ये ग्राम्य जीवनकी अस्विधाएँ हैं। इन्हें मैं हँसते-हेंसते सह लेता हूँ।

सम्मेलनकी प्रवृत्तियाँ तुम्हें कभी ठीक नहीं लगीं, इसलिए तुम्हारा उसे कुछ न देना बिलकुल सही है। मैंने तो पहले ही अपने अलग कारणोंसे 'ना' कर दिया है।

समनके बारेमें क्या-कुछ किया जा सकता है, मै देख्गा। वे जाजूजीको लिखें। अगर मै वाहर गया तो चाहुँगा कि तुम सेवाग्रामकी देख-रेख करो। लेकिन यह तभी हो सकता है जब तुम पूर्ण स्वस्य हो जाओ। अगर स्वस्य न हो पाओ तव तो मेरे लौटने तक बख्बी वही बनी रह सकती हो। यह बात पूरी तरह तुम्हारी मर्जीपर छोड़ दूरेगा। अगर गया भी तो मैं नहीं समझता कि बीस दिनमें या महीने-मरमें भी दौरा पूरा कर पाऊँगा। बहुत-कुछ मेरे स्वास्थ्य और निमन्त्रणीं पर निर्मर करेगा।

तुम्हारी कलम मैंने मीराको सदाके लिए नही दे दी है। उसे मैंने बता दिया था कि कलम तुम्हारी है और मेरे रैकमें तुम उसे सिर्फ मेरे लिखने के लिए ही छोड़ गई हो। लेकिन उस समय मेरे पास और कोई कलम थी नही। तुम्हारे **छौटने पर उसके लिए कोई और इन्तजाम कर देंगे और वह कलम वापस ले** छेंगे। अभी मैं लोलावतीकी कलम और जो कलम मोराने छौटा दो है उसका इस्तेमाल कर रहा हूँ।

मै नालवाड़ीमें नये गो-सेवा संघकी बैठकमें शामिल हुआ था। जमनालालजी के कारण बैठक बहुत अच्छी और ठीक कामकाजी ढंगको रही। ठीक समयपर

आरम्भ हुई और ठींक समयपर समाप्त हो गई।

सप्रेम.

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८७) से; सोजन्य: अमृतकीर। जी० एन० ७३५७ से भी

१. हिन्दी कवि रामनाथ 'समन'

२ और ३. साधन-एक्सें इस वाष्यमें एक शब्द बस्पष्ट है, जिसे लेटर्स हु राजकुमारी असृतकीर के षाधारपर मरकर धनुवाद किया गया है।

४. देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पू० ३७५।

५. देखिए पिछका शीर्षभा

### ६०१. पत्र: अमृतकौरको

१ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

आज सुबह एक लम्बा पत्र विलम्ब-शुल्क चुकाकर तुम्हें मेजा है। वह कल रात लिखा था।

तुम्हारा छोटा-सा पूर्जा आज मिला। तो तुम्हें तीन पत्र एक साथ मिले। उनसे तुम्हें अपने सभी प्रश्नोंके उत्तर मिल गये होंगे। हेनकाँकको ११ को मिलने का समय दे दिया है। अब उन्होंने लम्बा तार भेजकर कहा है कि उनके समाचार-पत्र के लिए तार द्वारा एक सन्देश मेज दूँ। इतना सब मै कैसे कर सकता हूँ? में कोशिश कर रहा है।

साथमें एक पत्र भेज रहा है। सप्रेम.

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०८८) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३९७ से भी

### ६०२. एक पत्र'

[१ अक्तूबर, १९४१]

प्रिय बहन,

आपके लड़केने तारसे आपकी बीमारीकी सूचना मेजी है। मुझे यह जानकर प्रसन्तता हुई कि आप उसके रिहा किये जाने पर जोर नहीं दे रही है। ईश्वर आपको शान्ति दे और आप स्वस्थ हो जायें। हमारी नहीं, परमात्माकी जो इच्छा होगी, वही होगा।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३३२) से। सौजन्य: मैसूर सरकार

रे. यह और लगका श्रीपैक नई दिल्छीमें १९६९-७० में आयोजित गांधी-दर्शनके मैसूर मण्डपमें प्रदक्षित किये गये थे।

२. देखिए नगला शीर्षक।

## ६०३. पत्र: दोड्डमतीको

१ अक्तूबर, १९४१

प्रिय दोहुमती,

पुम्हारा तार मिल गया था। तुम्हारा फैसला जानकर मुझे खुशी हुई। मैने पुम्हारी माँको लिखा है। ईश्वरकी उनपर अनुकम्मा हो।

> तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३३१) से। सौजन्य: मैसूर सरकार

## ६०४. पत्र: तैयबुल्लाको

१ अक्तूबर, १९४१

प्रिय तैयबुल्ला,

आपका और शर्माका पत्र पाकर खुशी हुई। कोई-न-कोई असम जायेगा। आप दोनोंको और जो आपके साथ हों उन सबको मेरा अभिवादन।

> हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२) से

### ६०५. सन्देश: देशी राज्योंकी जनताकी

१ अक्तूबर, १९४१

देशी नरेशों और जनताके पारस्परिक सम्बन्धोंके विषयमें मेरे विचार दृढ़ और सुनिश्चित है। मेरा निश्चित मत है कि युद्धकी गौरवमय संज्ञासे अमिहित इस कूर नरसंहारके बाद संसारमें अनिवायं रूपसे जो नई व्यवस्था कायम होगी उसमें देशो नरेशोंका अस्तित्व तमी कायम रह पायेगा जब वे जनताके ऐसे सच्चे सेवक बन बायेंगे जिनकी शक्तिका स्रोत तलवार नहीं, बल्कि जनताका स्नेह और सहमति होगी।

चूँकि मेरा यह निश्चित विचार है, इसलिए देशी राज्योंकी जनताको मेरी सलाह है कि वह घीरजसे काम लेना सीखे और लगनके साथ चुपचाप रचनात्मक कार्य करते रहकर अपनेको उन दायित्वोंको सँमालने के लिए तैयार करे जो, उसके चाहे-अनचाहे, उसपर आयेंगे ही।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह जान-बूझकर किये जानेवाले उन घोर अत्याचारोंको, जिनकी इतनी सारी खबरें मुझे सुनने को मिल रही है, सिर झकाकर स्वीकार कर ले। पीडितोंका कर्तव्य है कि उनसे जैसे इने वैसे वे इन अत्याचारोंका विरोध करें। मैं जो एकमात्र श्रेष्ठ तरोका जानता हूँ वह है लहिसा का तरोका, जिसका दूसरा नाम जागरूकताके साथ और विचारपूर्वक किया जाने-वाला कष्ट-सहन है। लेकिन मेरे व्यानमें ऐसे मामले मो आये हैं जिनमें इक्के-दुक्के लोगोंको सताया गया है और उनका घोर अपमान किया गया है। अगर यह सच हो और सताये गये लोग अहिंसाके मार्गसे अनिमज्ञ हों, तो वे अपनी समस्त हिंसात्मक शक्तिका प्रयोग करके अत्याचारोंका विरोध करें और यदि अपमान और अत्याचारके प्रतिरोवके प्रयत्नमें उन्हें अपने प्राणोंकी विल देनी पड़े तो वह भी दें। जिस प्रकार किसी चुहे द्वारा किसी खुँखार विल्लोका प्रतिरोव लगमग अहिसा माना जायेगा, उसी प्रकार वह हिंसात्मक प्रतिरोध मी अहिंसाकी कोटिमें हो रखा जायेगा। यह कहते हए मेरे मनमें सशस्त्र अत्याचारियों द्वारा सताये जा रहे एक निहत्ये बादमीका चित्र है। कोई शरीरसे चाहे जितना दुर्वल हो, यदि उसमें प्रतिरोबका संकल्प और वहादरीके साथ मर मिटने की शक्ति है, तो उसे प्रतिकृत्यसे-प्रतिकृत परिस्थितिमें भी अपनेको असहाय महस्स करने की जरूरत नहीं है।

मैं चाहूँगा कि देशो नरेश मेरे इस दावेको मान छें कि मैं उनका सच्चा मित्र हूँ। और सच्चे मित्रके नाते मैं उनते कहना चाहूँगा कि तलबारको व्यर्थताको समझ लेना ही कालके इंगितको पहचाननां है। वाइविलको उक्ति है: "तलबारका सहारा लेनेवाले व्यक्तिका अन्त तलबारसे होना निश्चित है।" इस उक्ति को सचाई अत्याशित समयसे पूर्व ही सिद्ध होने जा रही है।

[अंग्रेजीसे ] हिन्दू, ३-१०-१९४१

## ६०६ तार: मथुरादास त्रिकमजीको'

२ अक्तूबर, १९४१

मयुरादास त्रिकमजी होमी विला पंचगनी

जमनालालजी कल रवाना हो रहे हैं। तुमसे रविवारको मिलेंगे। ईश्वरको इच्छा ही हमारे लिए विघान है। तारसे हाल सूचित करो।

बापू

[अंग्रेजीसे] पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २४८

### ६०७. पत्र: मथुरादास त्रिकमजीको

२ अक्तूबर, १९४१

मेरी रायमें तुम मौतके पंजेसे छूटे हो। मेरे मनमें तो यह हर बैठ गया था कि तुम बचीगे नही। अब तो तुम बच ही गये न? चिन्ता किसी बातकी मत करना। बम्बईको फिर बैंक बेमें डूबना हो, तो मले डूब जाये। जनकपुरी जल रही थी और जनकका जब रोआँ भी नही हिला, तो हम जनकसे पीछे क्यों रहें? उनसे तो हमें उँचे उठना चाहिए न? यह कैसे होगा, सो तो भगवान् जाने। लेकिन उनके जैसा बनने का रास्ता तो वे दिखा ही गये है।

[गुजरातीसे] बापुनी प्रसादी, पृ० १८१

मश्ररादास त्रिकमजी गम्मीर रूपसे बीमार येः देखिए अगळा शीर्षका

२. बापुणी प्रसादी के भनुसार

३. मधुरादास त्रिकमजी बम्बईके मेयर थे।

### ६०८. पत्र: तारामती म० त्रिकमजीको'

सेयाग्राम २ अक्तूबर, १९४१

तुमपर चिन्ताका बड़ा भार आ पड़ा है। जमनालालजी वहाँ जा रहे हैं। एक-दो दिन रहेंगे। मथुरादाससे कहना, बापू सारे दिन तुम्हारी याद करते रहते हैं। वह धीरज धरे, ईश्वरका घ्यान करे और घवराये नहीं। और तुम तो विल-कुल मत ववराना। जीवन-मरण ईश्वरके हाथ है। लेकिन जवतक प्राण हैं तवतक सेवा है, और तबतक नाम-जप है।

[गुजरातीसे] बापुनी प्रसादी, पृ० १८१

## ६०९. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम २ अक्तूबर, १९४१

माई वल्लममाई,

अब तो तुम आने की तैयारी कर रहे होगे। मथुरादास बहुत बीमार हो गये हैं। किसीको उनके पास मेज दो तो अच्छा हो। मैंने राघाको तो लिखा है। जमनालालजी को मेजने का विचार कर रहा हूँ। आशा है, तुम्हारा ठीक चल रहा होगा। गोसेवा संघकी हालमें स्थापना हुई है। जमनालालजो के लिए यह नई साघना है।

बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च : ]

जमनालालजी कल रवाना होंगे। वहाँ होते हुए मथुरादासके पास जायेंगे। तुम्हारा पत्र मिला। महादेवको दूसरे दर्जेमें ही सफर कराना पड़ेगा। एन्ड्रबूज [स्मारक कोष]का काम कैसा चल रहा है?

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५७

रै. मथुरादास त्रिकमजीकी पस्नी

### ं६१० पत्र: मदालसाको

२ अक्तूबर, १९४१

चि॰ मदालसा,

आशा है, तू आनन्दपूर्वक होगी। यदि कोई जलझन हो तो मुझे लिखना। डाक्टर दासके लिए वहाँ जाना और काम करना लगमग असम्मव हो गया है। आशा है कि अब कुछ बहुत करने को नही रह गया होगा। खान-पानमें सावधानी बरतना। दाल, मसाले और धीमें बनी हुई चीजें मत खाना। स्वादकी चिन्ता बादमें करना। फिलहाल तो शिशुकी खातिर संयमका ही पालन करना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे] पाँचवें पुत्रको बापूके आर्शावीद, पृ० ३२१

## ६११. पत्र: मणिलाल और सुशीला गांधीको

२ अक्तूबर, १९४१

चि॰ मणिलाल और सुशीला,

लगता है, मेरी बहनके साथ मेजा पत्र तुम्हें नहीं मिलेगा। वह सेन्सरके पास है। शायद देरसे मिले, तो कह नहीं सकता।

इस समय तो सब अनियमित हो गया है। और भी अधिक अनियमित होगा। आश्चर्यंकी बात तो यह है कि इतनी भी नियमितता बनी हुई है। जहाँ रोज हजारों की हत्या हो रही है, वहाँ हमारी छोटी-मोटी अड़चनोंकी कोई कीमत ही नहीं है।

हम दोनोंकी तबीयत अच्छी है।

अब तो रामदास हमारा पड़ोसी हो गया है। फिलहाल तो शान्त मालूम होता है। तबीयत मी पहलेसे कुछ अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९२२) से

## ६१२. पत्र: पृथ्वीसिंहको

२ अक्टबर, १९४१

माई पृथ्वीसिंह,

पत्र मिला। अहिंसाका जन्म तो मनुष्य-जातिके साथ हि हुआ। हिटलर मी अपनेको तो नहिं मारता है। यह अहिंसा है अगरच बहूत थोडी। चूंकि अहिंसा आत्मा का स्वमाव है इसलिए या तो हम परेशान होकर पालन करेगा अथवा स्वेच्छासे, जैसे हम करन की कोशोश करते हैं। इतना समझो की जो सिद्ध करना है उसके मुकाबलेमें हमारा प्रयत्न मीं समुद्रके बिंदु-समान है। लेकिन बिंदु भी समुद्रका गुण रखता है इसलिये छोटो बात नहिं है। बाको तो आओगे तब।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६५२) से। सी० डब्ल्यू० २९६३ से मी; सौजन्य: पृथ्वीसिंह

### ६१३. पत्र: ब्रजकृष्ण चाँदीवालाकी

२ अक्टूबर, १९४१

चि० ज़जकुष्ण, तुमारी घोती पहनी है। खुश रहो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४८४) से

रै. यह ब्रजक्रम्ण चाँदीवाळाके नाम किले प्रभावतीके पत्रमें ही नीचे ळिख दिया गया है। ४१४

#### ६१४. पत्र: जमनालाल बजाजको

२ अक्टूबर, १९४१

चि॰ जमनालाल,

खत मिला। मुझे लगता है कि फिरोझ' तुम्हारे साथ हि जाना अच्छा होगा। वह खुद रहना चाहे तो मुझे कुछ हरज नींह है। कल आओगे तो अधिक बात कर सकेंगे।

मदालसा ठीक होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०२४) से

## ६१५. पत्र: घनश्यामदास बिङ्लाको

२ अक्टूबर, १९४१

माई घनश्यामदास,

तुमारा खत मिला। जमनालाल सब तुमपर छोड़ते हैं। वह मानते हैं कि मुझको दूसरी जगह भी ले जाना होगा। मैं अमदाबाद नींह जाना चाहता हूं। जाजंगा अगर वहांसे निमंत्रण आवेगा तो। मुझको वही ले जाना चाहिये जिघर पैसे मिल सकें। ज॰ मानते हैं कि यह मौसम है जब धनिक लोग अपने घर रहते हैं। भेरा कोई आग्रह है नींह कि मैं इस महिनेके मध्यमें हि शरू करू या दिल्ली पिलानी से। जो उचित हो वही किया जाय। महादेवसे मिलोगे, उसके साथ मधिवरा करके निर्णय किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी॰ डब्ल्यू॰ ८०५१) से। सौजन्य: वनस्यामदास बिड्ला

### ६१६. भाषण: गांघी जयन्ती सभामें

२ अक्तूबर, १९४१

कोई काम चाहे जितना छोटा और तुच्छ हो, यदि वह सेवा-मावसे और छामकी आशा न रखते हुए किया जाये तो ईश्वरकी दृष्टिमें बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। चदाहरणके लिए, अगर मंगीका काम निःस्वार्थ मावसे और सेवा-वृत्तिसे किया जाये तो वह बहुत अधिक मूल्यवान है।

गांघीजी ने श्रोताओं से गो-रक्षाके काममें, उपेक्षावश दिन-दिन नष्ट होते जा रहे गोवंशको रक्षामें सहायता देने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, अगर इस बुराईको समय रहते नहीं रोका गया तो देशके कृषि-धनके लिए इसका परिणाम बड़ा गम्भीर होगा।

अन्तमें उन्होंने उनसे चरखे और कताईका विकास करने का अनुरोध किया। मैं अपनी जयन्तीको कोई महत्त्व नहीं देता। इसके बजाय मैं इसे "चरखा-जयन्ती" कहता हूँ।

गांघीजी ने प्रामवासियोंसे कहा कि अगर आप पसन्द करें तो मैं हर रात प्रार्थनाके लिए आपके बीच आ सकता हूँ, क्योंकि इससे आपके साथ हमारा सम्पर्क बढ़ेगा; लेकिन आपको समयकी पाबन्दी रखनी पड़ेगी और नियमित रूपसे प्रार्थना करनी पड़ेगी।

[ अंग्रेजीसे ] हिन्दू, ३-१०-१९४१

# ६१७ तार: रघुनन्दन शरणको

[२ अक्तूबर, १९४१ या उसके पश्चात्]

कामना है यह अस्पताल गरीबोंकी सेवा करे।

मूल अंग्रेजीसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

१. गांधीजी ने प्रामनासियोंको उनके द्वारा प्रदक्षित सबसे अच्छी गायोंके छिए पुरस्कार दिये। २ और ३. यह रघुनन्दन शरणके २ अक्तूबर, १९४१ के उस तारके उत्तरमें या जिसमें उन्होंने छोक सेवक संव द्वारा खोळे जानेवाळे धर्मार्थं आधुर्वेदिक अस्पताळके उद्घाटनके अवसरपर गांधीजी से आशीर्वाद माँगा था।

### ६१८ पत्रः अमृतकौरको

३ अक्तूबर, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं फिर कहता हूँ कि तुम्हें नामजदगी स्वीकार कर लेनी चाहिए।

मेरा दौरेपर निकलना अनिश्चित है, यह मैं तुम्हें लिख ही चुका हूँ। मैं इस बातसे सहमत हूँ कि अगर तुम पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो जाती, या स्वस्थ हो जाने पर भी, यदि शिमलाकी आबोहना तुम्हारे अनुकूल जान पड़ती हो, तो मैं जबतक दौरेसे लौट न आक तबतक तुम वहीं बनी रहो। बल्कि अगर तुम्हें लगे कि वहाँ रहने से लाम हो रहा है, तो पूरी तरह स्वस्थ होने तक तुम्हें वहीं रहना चाहिए।

प्या॰ का मुकदमा आज सुबह सत्म हुआ। फैसला तीसरे पहर सुनाया जायेगा। मदालसाके लड़का हुआ है। सब प्रसन्न है।

सत्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४०८९) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी॰ एन॰ ७३९८ से मी

## ६१९. पत्र: एस० अम्बुजम्मालको

३ अक्टूबर, १९४१

चि॰ अम्बुजम्,

तुम्हारे चेकका उपयोग दीनबन्धु-स्मारकके लिए कर रहा हूँ। किची और उनकी पत्नीके बारेमें अच्छी खबर पाकर खुशी हुई। मौसे मैंने जबरदस्त बहादुरीके सिवा और किसी बातकी उम्मीद भी नहीं की थी। सेवाग्रामका मौसम अच्छा रहा है। तुम यहाँ जो सन्दूक छोड़ गई थी, उसके बारेमें पूछताछ कर रहा हूँ।

शिक्षा नोर्डकी सदस्याके रूपमें; देखिए "पत्र: अमृतकौरको", पू० ३९२।
 और ३. देवनागरी छिपिमें हैं।

#### सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

मैंने वह सन्दूक तभी बम्बई मेज दिया था और उसके बाद उसके बारेमें मूल गया। तुमने याद दिलाकर अच्छा किया।

सप्रेम,

बापू

श्री अम्बुजम्माल ९६, मोब्रेज रोड आलवार पेठ<sup>१</sup> मदास

٠,

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ ९६१७) से। सौजन्य: एस॰ अम्बूजम्माल

### ६२०. पत्र: मीराबहनको

३ अक्तूबर, १९४१

चि० मीरा,

तुम्हें कल श्रनिवारको शाम ५ बजे मोड़पर पहुँचना है। वहाँ एक ताँगा खड़ा मिळेगा, जो तुम्हें मदालसाके पास पहुँचा देगा।

सप्रेम,

बापू

#### [ पुनश्च : ]

ज्यादा अच्छा यही होगा कि तुम ५ बजे यहाँ आ जाओ और राजेन बाबूके सृाय चली जाओ।

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ६४८९) से; सौजन्य: मीराबहन। जी॰ एव॰ ९८८४ से भी

# ६२१. पुर्जा: आनन्द तो० हिंगोरानीको

[३ अन्तूबर, १९४१]

तुम्हें किसी भी बातपर दुःसी न होने की कला सीखनी है। इसका मतलब हुआ आनन्दकी अनुसूतिका अभाव। तुम मनकी इस समस्थितिको जिनना अधिक साघोगे, सेवा करने में उतने ही सक्षम बनोगे।

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो॰ हिंगोरानी

### ६२२. पत्र: मदालसाको

३ वक्तूबर, १९४१

चि॰ मदालसा.

कल तुझे पत्र लिखने के बाद तेरा पत्र मिला। अब तो तेरे पत्रका उत्तर देने की जरूरत नहीं है। तूने अच्छी बहादुरी दिखाई। डॉक्टर तुझे देखने जा रहा है। मुझे तो क्षमा कर देगी न? तुझे यहाँ आकर दर्शन देने है। प्रसन्न रहना। अपने खान-पानका खूब ब्यान रखना। जो डॉक्टर वहाँ जा रहा है वह आकर मुझे सब बतायेगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे] पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२१

१. आनन्द तो० हिंगोरानीने इसपर वही तारीख दर्ज की है।

२. मदाङसाके पहले प्रस्के समय आरम्ममें कुछ आयांका पैदा हो गई थी, पर शदमें सब ठीक हो गया।

## ६२३. तार: हितेषी औषघालयके मालिकको

[३ अक्तूबर, १९४१ या उसके पश्चात्]

धन्यवाद । आशीर्वाद ।

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

### ६२४. पत्र: डी० डी० साठ्येकी

४ अक्तूवर, १९४१

प्रिय डॉ॰ साठ्ये,

आपके पत्रके लिए अनेक घन्यवाद।

आपके सुझाव मेरे ध्यानमें हैं। मैं विचार कर रहा हूँ कि सम्भव क्या होगा। छोग जो देते हैं, मैं तो वही छे सकता हैं।

छोदूमाईके सुझावोंपर अमल नहीं किया जा सकता। हमें टोलियाँ बनाने की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि उन्होंने सुझाया है। हरएकको न्यूनतम परीक्षणमें खरा उत्तरना होगा। दिवाकरका सुझाव भी न्यावहारिक नहीं है। कुछ जिलोमें लोग अधिक देंगे, कुछमें कम। यह तो एक स्वैन्छिक कार्य है। यदि केवल सच्चे पुरुष और महिलाएँ ही इस कार्यके लिए जारों, तो फिर उनकी संख्या चाहे कितनी ही कम क्यों न हो, मुझे पूर्ण सन्तोष होगा।

हृदयसे आपका, मो० क० गांधी

मूल अंग्रेजीसे: डी॰ डी॰ साठ्ये पेपर्सं। सौजन्यः नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

 हितैषी भौषपालयके माल्किका वह तार ३ अक्तूबर, १९४१ का या जिसके उत्तरमें गांधीजी ने यह तार मेजा था।

# ६२५ पत्र: आर० अच्युतन्को

४ अक्तूबर, १९४१

प्रिय अच्युतन्,

तुम्हारा साफगोई-मरा पत्र पाकर खुकी हुई। बहुत-सी गलतफहमी सिर्फ अज्ञानके कारण पैदा होती है। समीको मेरा अभिवादन कहना।

> तुम्हारा, बापू (मो० क० गांधी)

श्री आर० अन्युतन् निद्यार्थी बन्दी, सेन्ट्रल जेल राजामुंद्री, आन्ध्र

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८५१) से

६२६. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम ४ अक्तूबर, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिछा।

फिर दर्द हुआ। मैं समझता हूँ कि यदि हम इसे पोषण देना बन्द कर दें तो इसके आने-जाने का सिलसिला आखिर अपने-आप ही चुक जायेगा। प्रकृतिका तरीका तो यही है। और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इसीपर चल रही हो। तले हुए कतले और इस तरहकी दूसरी चीजें नहीं लेनी हैं।

बाइबिलकी इस व्याख्याके बारेमें तुमने मुझे नहीं बताया था। लेकिन में बहुत-से सेवन्थ-डे एडवेन्टिस्टोंसे मिल चुका हूँ। इसलिए उसके उत्साहको में समझ सकता हूँ।

तुम्हारे गो-सेवा संघमें शामिल होने के बौचित्यपर हम चर्चा करेंगे।
जरूरी हो जाने पर तुम, बेशक, शिक्षा बोर्डसे त्यागपत्र दे सकती हो।
सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९०) से; स्रौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७३९९ से भी

### ६२७. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

४ अक्तूबर, १९४१

माई वल्लममाई,

अब तो हम जल्दी ही मिलेंगे। फिर भी यह एक वात लिखता हूँ। मणिवहन लिखती है कि . . . भजदूरोंके विरुद्ध मालिकोंकी तरफसे एक मुकदमेमें खडे होंगे। यह ऐसी बात है जिसपर विश्वास नहीं किया जा सकता। फिर भी मणि ऐसी मूल कैसे कर सकती है? इसलिए पहले तो मैंने . . को लिखने की सोची। फिर सोना कि तुम्हारे वहाँ मौजूद रहते हुए मेरे लिखने की क्या जरूरत है? तुम्हीं इसका निबटारा कर सकते हो। मणिकी बात ठीक हो तो . . . 'को वलाकर त्म कहना कि यदि वे खड़े हों तो मजदरोंकी तरफसे हों। मालिकोंकी तरफसे तो वे खड़े हो ही नहीं सकते। दूसरी बात यह भी है कि जहाँतक मैं समझता हूँ . . . . वकालतके घन्धेमें नहीं पड़ेंगे। उन्होंने तो देशसेवाका वत लिया है। कोई खास मुकदमा आ जाये तो ले भी लें। परन्तु यदि वे अन्य वकीलोंकी तरह प्रैक्टिस शुरू कर देंगे तब तो बहुत निन्दाके पात्र बन जायेंगे। मेरे दिमागमें यह बात साफ है कि वे प्रैक्टिसमें हरगिज नहीं पड़ेंगे। नैतिक दृष्टिसे अपनी स्थित स्पष्ट करने के लिए वे कांग्रेससे निकले हैं। इसके सिवा तो वे कांग्रेसके ही हैं। मैंने सोचा या कि वे उसंसे निकलकर मेरी तरह ज्यादा कांग्रेसी बन गये होंगे। मुझे वे सरल, हृदयकी वात 'संमर्झनेवाले; त्यांग-वृत्तिवाले और अपनी मूल सुवारनेवाले प्रतीत हुए हैं। यदि तुमपर भी ऐसी ही छाप पड़ी हो तो तुम उन्हें बुलाकर यह स्पष्ट कर दो। उनके प्रति हमारा व्यवहार यह मानकर हो कि वे कांग्रेसी हैं।

एक बात और। तुम जानते हो कि मौलाना चाहते हैं कि . . . विधान समासे हट जायें। मैं यह जरूरी नहीं समझता। राजेन्द्र बाबूने जरूरी नहीं समझा, प्रोफेसरने नहीं समझा, और मैं समझता हूँ कि तुमने मी जरूरी नहीं समझा। क्या

यह ठीक है ? क्या इसमें सुधारकी जरूरत है ?

ं बापूके आशीर्वाद

#### [पुनश्च:]

. क्या .तुम जानते हो .िक मदालसाके लड़का हुआ है ? .वह सक़ुकाल है। [गुजरातीसे ] बायुना पत्रो – २ : सरदार बल्लभभाईने, पृ० २५८-५९

रे से ५: साधन-छूतमें नाम छोड़ दिये गये हैं। इ. जे० बी० अपकानी

# ६२८. पुर्जाः नारणदास गांधीको

४ अक्तूबर, १९४१

मुझे तो यह छोटा और चुस्त मसीदा अच्छा लगता है। लेकिन तुम सब छोगोंकी सम्मति लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइकोफिल्म (एम० एम० यू०/३) से

### ६२९. पत्र: नारणदास गांधीको

४ अक्तूबर, १९४१

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। इससे पहलेका पत्र भी मिला था। तुम्हारा संविधान मुझे ठीक लगता है। इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। मेरी स्वीकृति भी उसीमें है।

वहाँ का कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। वीरू बड़े कामका सिद्ध हुआ। शायद २ अक्तूबर तक तुम लाखकी संख्यातक पहुँच गये होगे। वैसे होता वही है जो मगवान्की इच्छा होती है। कनैयो कल अपना फोटोग्नाफीका प्रशिक्षण पूरा करने कलकत्ता चला गया। शायद आमा उसके साथ आये। सब उसके पितापर छोड़ दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइकोफिल्म (एम॰ एम॰ यू॰/२) से। सी॰ डब्ल्यू॰ ८५९३ से मी; सौजन्य: मारणदास गांघी

- रे. काठियाबाद खादी **बोर्टेक संविधानका**
- २. देखिए पिछका शीवैक।

## ६३०. पत्र: अमृतकौरको

५ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। चाहे कुछ भी हो जाये, तुम सेवाग्रामकी रहोगी। और चाहे तुम सेवाग्राममें रहो या कहीं और, सेवा तो करती ही रहोगी। इसलिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। सेवाग्राममें वीमार हो जाने की सम्मावनाके वारेमें तुम्हारे मनमें जो घवराहट है उसे छोड़ दो। मैंने तय किया है कि चिन्ता नहीं करनी है, या इतनी कम करनी है जितनी समझ लो कि वा या रामसरन दासके बारेमें मैं करता हूँ।

यहाँ सव ठीक है। कलसे मौसममें ठिठुरन होनी शुरू हो गई है। सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९१) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७४०० से मी

## ६३१. पत्र: मिर्जा इस्माइलको

५ अक्तूबर, १९४१

प्रियं सर मिज़ी,

आपका पिछले महीनेकी २८का पत्र मिला। उससे पहलेका भी मिल गया था। दोनोंके लिए घन्यवाद!

पोलकके पत्रकी नकल बड़ी महत्त्वपूर्ण है। इधर मारतीय मामलोंके प्रति उसका रुख कुछ विचित्र हो गया है। उसके इस रुखके पीछे पूरी ईमानदारी है, महल इसीलिए इसे कुछ कम दुर्माग्यपूर्ण नहीं माना जा सकता। जिस वातको वह विलकुल अवास्तविक मानता है वह हमारे लिए सर्वया वास्तविक है। पाकिस्तानकी बात अवास्तविक मले हो, लेकिन मैं उसे खतरनाक मानता हूँ। वैसे वह इतनी वास्तविक है कि उसे मामूली वात समझकर उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। हो

रे. देखिय खण्ड ७५, "पत्रः ममृतकौरको", ए० र। ४२४ सकता है, सिवनय अवज्ञा भी अवास्तिविक हो, किन्तु कोई इसे अवास्तिविक कहे तो मैं उसका बुरा तो मान्ँगा हो। सर तेज बहादुरका क्षोघ अवास्तिविक नहीं है। वह भारतकी मनःस्थितिका द्योतक है। मैं तो ऐसे किसी आदमीको नहीं जानता जो इस युद्धको भारतका युद्ध मानता हो। राजनीतिक दृष्टिसे जागरूक भारतीयोंकी मावनाकी पूर्ण उपेक्षा एक खतरनाक वास्तिविकता है।

पोलककी तरह मैं मी हृदयसे यह कामना कर सकता हूँ कि ईश्वर आपको दोनों समुदायोंके बीच शान्ति-सौहार्च स्थापित करने का साधन बनाये। पोलक इस बातको, जिसे वह पहले उतनी ही अच्छी तरह जानता था जितनो अच्छो तरह में जानता हूँ, मूल गया है कि देशी नरेश स्वतन्त्र नहीं है। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं है। जिटेनकी इच्छा हो उनकी इच्छा है। उनकी अपनी कोई पद-प्रतिष्ठा नहीं है। जो पद-प्रतिष्ठा है वह वहीं है जो ब्रिटेन उनको समय-समयपर देता है। इससे कोई ऐसा समझौता करने की बात कहना जिसमें देशी नरेश भी शरीक हों, लगमग यह कहने के समान है कि उसमें अंग्रेज भी शरीक हो।

अगर आपको लगे कि यह पत्र पोलकको मेजने से कोई लाम होगा तो उसे मेज दीजिएगा। मैने तो पोलकके विचारोंके सम्बन्धमें सिर्फ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी हैं — मले ही महज इस कारण कि मुझे उसके पत्रकी नकल मेजकर आपने जो सौजन्य दिखाया उसकी यही मौंग थी।

आशा है, मेरी लिखावट पढ़ने में आपको कठिनाई नही होगी। आपको और आपके परिवारको अभिवादनपूर्वक,

> ह्दयसे आपका, मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१८६) से

# ६३२. पत्र: एल० कृष्णस्वामी भारतीको

५ अक्तूबर, १९४१

प्रिय कृष्णस्वामी,

तुम्हारा विस्तृत पत्र पाकर खुशी हुई।

जिन परिस्थितियोंका तुमने जिक किया है, उनको देखते हुए सबसे समझ-दारीकी बात यही होगो कि तुम सत्याग्रहियोंकी सूचीमें से अपना नाम कटवा लो। इससे तुम्हारी प्रतिष्ठापर तिनक भी आँच नहीं आयेगी। इस लम्बे संवर्षमें हर ईमानदार पुरुष या स्त्रीको पर्याप्त अवसर मिलेगा। अगर तुम एक वैज्ञानिकके जैसा

१.। क्रणास्त्रामी भारती तमी जेखते रिहा हुए थे। अपने २७ स्तिन्मर, १९४१ के पत्रमें छन्होंने जिखा आ कि पारिवारिक परिस्थितियोंकि कारण वे निकट भविष्यमें अपने को फिर गिरफ्तारीके किए येश करने में असमर्थ हैं।

जत्साह लेकर रचनात्मक कार्यक्रममें जुट जाखो तो मैं पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाऊँगा। इस कार्यक्रमके सहारेके विना राष्ट्रकी दृष्टिसे सविनय अवज्ञाका कोई मूल्य नहीं है।

> तुम्हारा, बापू

श्री एलं कृष्णस्वामी मारती, एम० एल० ए० एडवोकेट, मदरा, दक्षिण भारत

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ९२६८) से। सीजन्य: एल॰ कृष्णस्नामी भारती

### ६३३. पत्र: अन्नदाशंकर चौधरीको

सेवाग्राम ५ अक्तूबर, १९४१

प्रिय अन्नदा.

इस मामलेमें तुम अपने सन्तोषके लिए कुछ करो, इसकी कोई जरूरत नहीं है, क्योंिक वे पैसा भर चुके हैं। मेरा करना वाजिब था, क्योंिक यदि उनसे गलती हुई होती तो वे टालमटोल करने के दोषो बनते, और फिर मेरा व्यवहार उनके प्रति पहले-चैसा नहीं रह पाता। यदि तुम्हें यह बात न जैंचे तो इस मामलेको आगे बढ़ाओ। तुम्हें सन्तोष दिये बिना मैं तुमपर कोई रोक लगाना नहीं चाहता।

तुम्हारा, बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसं। सौजन्य: प्यारेलाल

र. अन्नदार्शकर चौभरीने अपने २८ सिंतम्बरके पत्रमें गांधीणी से अनुरोध किया था कि वे खादी प्रतिष्ठानके हिसावकी, खासकर सवीशचन्द्र दासग्रुप्त द्वारा अ० मा० चरखा संघके वैसेकि स्पर्योगकी, सौंच करें।

## ६३४. पत्र : मगनलाल प्रा० मेहताको

५ अक्तूबर, १९४१

चि० मगन,

तेरा साफ-सुथरा पत्र मिला। तेरा आत्म-विश्वास सफल हो और तूपास हो जाये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०२०) से। सौजन्य: मंजुला म॰ मेहता

### ६३५. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम ५ अक्तूबर, १९४१

माई वल्लममाई,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। ठीक है, तुम नासिक में कुछ दिन रहकर फिर यहाँ आओ। मै तो सिर्फ यह चाहता हूँ कि तुम अच्छे हो लाओ। एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत। मथुरादास बच जाये तो बड़ा अच्छा हो। मदालसा और बच्चा आनन्दमें है। मैं तो देखने नहीं गया। मेरा कलका पत्र मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २५९

## ६३६. पत्र: पोपटलाल चुडगरको

५ अक्तूबर, १९४१

माई पोपटलाल,

सारी फाइलें देखते हुए तुम्हारे पत्रपर नजर पड़ी। तुम्हें उसकी प्राप्ति-सूचना मेजने का निशान उस पत्रपर नहीं है। मुझे कुछ बुंबली-सी याद है कि मैंने माई किशोरलालसे प्राप्ति-सूचना लिखने को कहा था। लेकिन अगर प्राप्ति-सूचना तुम्हें न मेजी गई हो तो उसके आघारपर तुम यह अनुमान मत लगा बैठना कि तुम्हारे पत्रकी उपेक्षा की गई। मैंने पत्र पढ़ा था। उसमें दिये गये सुझावको अमलमें लाना फिलहाल सम्मव नहीं लगता।

बापूके आशीर्वाद

श्री पोपटलाल चुडगर बैरिस्टर, राजकोट, काठियावाड़

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०११८) से

# ६३७. पत्र: ख्वांजा खुर्शेंद आलमको

५ अक्टूबर, १९४१

भाई स्वाजा साहब,

आपका खत मिला। खादीकी हुकानमें बेचनेवाले बहूत कम दामसे काम करते हैं। इतने दामसे काम करनेवाले इस दरजेके मुसलमान वहुत कम मिलते है। यह लाचारीकी बात है। कोई अगर मिल जाते हैं वहां मुसलमान मी है। आपकी घमकी अच्छी नहीं लगती। यही सवाल आप अखवारमें भी पूछ सकते थे। सवाल अच्छा है। जवाब साफ है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

## ६३८. पत्र: अमृतकौरको

६ अक्तूबर, १९४१

त्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र समयसे मिल गया है। एक साथ तुम्हें तीन पत्र क्यों मिले, यह मैं समक्ष नही पा रहा हूँ। लेकिन हमें यह नही भूलना चाहिए कि यह एक छोटा-सा गाँव है।

तुम्हें अपना कर्मफल तो मोगना ही है, सो भी प्रसन्नतापूर्वक। ऐसा लगता है कि ठण्ड इस साल जल्दी शुरू हो जायेगी। कुटियामें इतने परिवर्तन किये जा रहे हैं कि लौटकर आने पर तुम उसे पहचान भी न पाओगी।

सप्रेम.

बापू

#### [पुनश्च:]

म[हादेव] १९ के पहले यहाँ नही आयेगा। इस समय वह मसूरीमें है। [पुनः पुनश्च:]

राजा साहब अच्छे है, यह जानकर प्रसन्नता हुई।

बा०

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९२) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७४०१ से मी

# ६३९. पत्र: अमृतलाल चटर्जीको

६ अक्तूबर, १९४१

त्रिय अमृतलाल,

कनुमाई कलकत्तामें है। अगर तुम चाहो और आमाको पसन्द हो तो उसे कनुके साथ भेज सकते हो। इस बारेमें मैं तुम्हें पहले ही लिख चुका हूँ। आका है, तुम सब सकुवाल होगे।

तुम्हारा,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०३२४) से। सौजन्य: अमृतलाल चटर्जी

१. देखिए "पत्र: अपृतकाक चटनीको", पु० ३७९।

### ६४०. पत्रः मार्गरेट जोन्सको

सेवाग्राम, वर्वा ६ अक्तूबर, १९४१

चि० कमला,

तुमने मुझे लम्बा पत्र लिखकर ठीक किया। मैं वह पत्र मेरीको मेज रहा हैं। तम परीक्षामें विशेष योग्यता-सहित उत्तीर्ण होगी, इसमें मुझे सन्देह नहीं या। भगवान् करे तुम अपना पाठ्यकम इसी तरह पूरा करो। बेशक, जब इच्छा हो तब लिख सकती हो।

वापू

[अंग्रेजीसे ] बाप - कन्वसेंशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेन्स विद महात्मा गांघी, पृ० १९७

# ६४१. पत्रः चन्दन शं० कालेलकरको

६ अक्तूबर, १९४१

चि० चन्दन,

तेरा पत्र मिला। तुम्हारा यह सम्बन्ध देश और तुम दोनोंके लिए कल्याण-कारी सिद्ध हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२६६) से

मार्गरेट जोन्स प्रस्ति-विद्याकी पहली परीक्षामें सनैप्रथम बाहे थीं।

् २. एफ० मेरी नारके अनुसार, मार्गरेट जोन्सने गांधीजी से पूछा था कि डायरी रीज न किस्कर जिस दिन कोई विशेष प्रसंग हो उसी दिन किस्ती जाये तो कैसा रहेगा।

३. चन्दनका विवाद सतीश वर्षे शंकर काष्ट्रकारसे हवा था।

### ६४२. पत्र: चक्रयाको

६ अक्टूबर, १९४१

चि॰ चक्रैया,

तुझे चकरी आई यह तो दुखकी बात है। मुझे लगता है कि उसका कारण तेरे मगजका बोज था। इसलिये तूने सब लिखा वह ठोक हि हुआ। लेकिन उसमें दुःखका कुछ कारण नहिं था।

पक्षपातकी बात सही है। उसमें दोष और किसीका नींह है। सिर्फ बा का और मेरा है। बा मेरा-तेराको छोड़ नींह सकती और न मैं बा को छोड़ सकता हूं। इसलिये आश्रमकी प्रगति रुक गयी है। लेकिन बा में और गुण बहूत है उसे मैं तो मूल नींह सकता हूं। मेरी-तेरी काटना बहूत मुक्किल है। लेकिन जो परिवर्तन बा के जीवनमें हुआ है यह छोटी बात नींह है। बा की पवित्रता कहांसे आई, उसकी सादगी, धैर्य वर्गरह उच्च कोटिके गुण हैं। इसलिए बा का पक्षपात सहन करने योग्य है। बा के पक्षपातमें जहर नींह है।

कृष्णचन्द्रको और शकरीबहृतको तो तूने अन्याय हि किया है। कृष्णचन्द्र अपने लिये कुछ नहिं करता है। उसने तो घर छोड़ा। शिक्षा छोड़ी। और आश्रममें मेहनत करता है। उसने अगर ५ आनाका लोम किया तो अपने लिये निहं। वह किसीका पक्षपात निहं करेगा। लेकिन डरके मारे कोई उसके पास कुछ करा लेवे वह दूसरी बात है। ऐसे हि शकरीबहृतका। शकरीबहृतको में कामसे मुक्त करूं तो वह तो बैठ जायगी। और उसे अच्छा लगेगा। उसकी प्रकृति तो ऐसी ही है। दुझे समजना चाहिये कि आश्रममें हम सब अपूर्ण है, तो भी अच्छे होने का प्रयत्न करते हैं। तेरा कर्तव्य यह है—तू अपने दोषोंको देख, दूसरोंके दोषोंके प्रति उदार हो ले। यह नियम हम सबके लिये हैं। मेरे मेजपर वानरकी त्रिमूर्ति देखी है न? उसने कान मूंदा है, आंख बंद है, मूंह बंद है। अर्थ यह है कि कानसे किसीका बुरा न सुन, न आंखसे देख, न खवानसे बोल। मेरी आशा है कि इतनेसे सन्तोष होगा। वार-बार पत्रको पढ़ना। तबीयत जल्दी अच्छी करना।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९११२) से। सी० डब्ल्यू० ९१८० से भी; सौजन्य: चक्रैया

### ६४३. पत्र: चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

७ अक्तूबर, १९४१

प्रिय सी० आर०,

प्रकाशम्के तारसे पता चला कि तुम, वह और गोपाल रेड्डी रिहा हो गये हो। मैंने तुम्हारे माईको कल ही लिखा है। यह पत्र मिलने के पहले ही तुम उनसे मिल चुके होगे। उनके वारेमें यह कहना विलकुल ठीक होगा कि विपत्ति अकेली नहीं आई है। आशा है, तुम्हारी ही तरह वे भी दुर्माग्य और सीमाग्यको एक ही समझेंगे।

वापू

श्री च० राजगोपालाचारी बजलुल्ला रोड त्यागराजनगर मद्रास

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९००) से; सौजन्य: सी० आर० नर्रासहम्। जी० एन० २०८१ से भी

## ६४४. पत्र: अन्तपूर्णा चि० मेहताको

७ अक्तूवर, १९४१

चि॰ अन्तपूर्णा,

तेरा पत्र मिला। तू अवीर मत हो। विस्तरमें पड़ी-पड़ी भी तू बहुत सेवा कर सकती है, कर ही रही है।

अब तो तुझे अनसूया-जैसी सखी मिल गई। वेडकी वगैरहको अच्छे पत्र ही

लिखना। याद रख, तुझे वहाँसे ठीक होकर ही लौटना है।

विजयावहन, वसुमतीवहन, पन्नालालमाई सब आज आ गये। और लोग भी आनेवाले हैं। अपना यहाँ इसी तरह चलता है।

र. टी० प्रकाशम्

- २. जी राजगोपाळाचारी ६ अनत्वर, १९४१ की रिहा हुए थे।
- ३. उनके दो पुत्रोंकी कुछ ही दिन पहले मृत्यु हुई थी।

833

कृ० चं० के पत्रमें तूने 'अमृत' लिखा है। 'जामफल' को उर्दूमें 'अमरूद' कहते हैं। और भी मूर्ले थी लेकिन याद नहीं रही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४३२) से

## ६४५. पत्र: अमृतकौरको

७ अक्तूबर, १९४१

त्रिय पगली,

आज मुझे अखिल मारतीय चरखा संघकी बैठकमें माग लेना है<sup>९</sup> और इसी

कारण यह पत्र डाक आने से पहले लिख रहा हूँ।

बाशा है, तुम पहलेसे बच्छी होगी। स्टोक्सने एक पेटी अच्छे सेब मेजे हैं। सेव बढ़िया है, लेकिन कुछ-एक रास्तेमें क्षतिग्रस्त हो गये हैं। विजया, वसुमती और पन्नालाल आज ही आये हैं। बन्य लोग भी आ रहे हैं और बहुतोंने आने की अनुमति मौगी है। आश्रम दिनो-दिन छोटा पड़ता जा रहा है। क्या तुम छोटी हो सकती हो? खैर, आश्रम तो हो ही रहा है।

सरदार १९ के पहले नहीं आनेवाले है। कमलादेवी चट्टोपाध्याय गुरुवारको आ रही है। सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९३) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७४०२ से मी

## ६४६. भाषण: अ० भा० चरखा संघकी सभामें

वर्षा ७ अक्तूबर, १९४१

आज दो-तीन मूल प्रश्नोके बारेमें मुझे कुछ कहना है। पं० जवाहरलालका पत्र आप लोगोने 'खादी-जगत्' में पढ़ा होगा। जवाहरलालकी माषा हमेशा तेज होती है। लेकिन मैं समझता हूँ, यह अच्छा पत्र है। उसमें जो बात कही गई है उसपर हमें ध्यान देना चाहिए। उनके दिलमें असन्तोष है। वे पूछते हैं कि हम क्यों ज्यादा काम नहीं कर पाये। उन्हें लगता है कि हमने पूरा विचार नहीं किया। मैं विलकुल

....

इंखिए अगळा शीवैक।

२. सैम्युबङ स्टोक्स

ऐसा तो नहीं कहूँगा। समय-समयपर हम विचार तो करते रहे हैं, आज भी करते रहते हैं। मगर इतना तो मैं भी मानता हूँ कि जितनी हमारी साधना होनी चाहिए थी, जितनी तपस्या करनी चाहिए थी, हम नहीं कर पाये। यही वात जनाहरलाल ने कही है। उनका तो नाम लेते ही जागृति और प्रेरणाकी याद आती है। पहले भी जवाहरलाल खादीकी उपयोगिता तो मानते थे। लेकिन वहाँ जेलमें वे उसे अधिक तीन्न कपसे महसूस करने लगे हैं। उनके पत्रपर हमें जरूर विचार करना चाहिए।

जगह-जगहरे जो खबरें का रही हैं उनसे पता चलता है कि खादीकी माँग बहुत बढ़ गई है। इतनी माँग है कि हम उसे पूरा नहीं कर सकते। चरखेकी भी माँग इतनी है कि हम उसे पहुँच नहीं पाते। हम क्या करें? कई जगह पहले सैंकड़ोंका काम था। अब वहाँ हजारोंतक बढ़ गया है। आपने सुना होगा, राँची (बिहार) में, जहाँ पिछली जयन्तीपर खादी बिकी सिफं ६ सौ रुपयेकी थी, वहाँ इस साल दस हजार रुपये तक बढ़ गई। मैं तो कहता हूँ कि हम जितनी खादी बना सकते हैं, बनाते जावें। खादी बनाने में हमें डरना ही नहीं चाहिए कि वह कैंसे बिकेगी। यह तो हमारी जबानसे निकलना ही नहीं चाहिए कि खादी विकती नहीं। एक दिक्कत आ सकती है कि खादी ज्यादा पैदा करने के लिए हमारे पास पूँजी कम पड़े। अगर ऐसा हो तो उसे प्राप्त करने की कोशिश होनी चाहिए।

अब हमें अच्छी तरह सीच छेना चाहिए कि हमारे कामका ढंग क्या हो। एक आदमी लिखता है कि हमारे पास सूत बहुत हो गया है। उसे कैसे बुनवायें? हममें यह शक्ति होनी चाहिए कि हम इस तरहके सूतको बुनवा दे सकें या उस सूतको लेकर बदलेमें खादी दे सकें। जितना सूत आवे वह सब हम ले सकें और उसके बदलेमें जैसी और जितनी खादी दे सकें, दे दें।

दूसरे, हममें वह शक्ति भी आनी चाहिए कि हमारा सूत इतना अच्छा ही कि उसे मामूळी बुनकर बुन सकें। कहा जाता है कि हम मिळके सूतके वरावर पक्का सूत नहीं कात सकते। एक हदतक यह बात सच है। लेकिन इससे मुझे सन्तोष नहीं है। हो सकता है कि हमारा सूत पूरी तौरसे मिळके सूतकी वरावरी न कर सके। फिर भी उस सूतसे हमारे सूतका इतना बड़ा अन्तर नहीं होना चाहिए। वह अन्तर दिन-दिन घटता जाना चाहिए। आजके हमारे सूतमें सुवारके लिए काफी गुंजाइश है। इसमें जितनी तरक्की होनी चाहिए थी उतनी नहीं हुई। अभी हमें बहुत काम करना है। खोज-बीन करके हमें लोगोंको वतलाना है कि अच्छा मजबूत सूत कैसे पैदा हो सकता है। इस विषयमें शोध करने की आवश्यकता है। इस ओर हमने काफी ज्यान नहीं दिया है। हम बहुत शिथिल रहे हैं।

हमको अपने कामका विकेन्द्रीकरण करना चाहिए। सूत जहाँ पैदा होता हो वहीं वह बुना जाना चाहिए। मध्यम वर्गके लोगोंने चरखा कातना शुरू किया तो इतना काम हो गया। इसी तरह अब अगर वे बुनाईका काम भी हाथमें ले लेवें तो बुनकरोंको हम जल्दी साथमें ला सकते हैं और आगे ले जा सकते हैं। इसकी भी हमें कोशिश करनी चाहिए।

चरखेकी माँग हर जगह बढ़ रही है। इससे भी पता चलता है कि लोग कातने की ओर झुक रहे है। मैंने तो यह फैसला ही कर लिया है कि हम जगह-जगह चरखें बाहरसे कभी नहीं मेज सकते, वे तो वहीं बनने चाहिए। मेरा कुछ ऐसा खयाल हो रहा है कि यह समस्या घनुष-तकुवा ही हल कर सकता है। वह हर जगह बनाया जा सकता है। यरवडा चरखेका अपना स्थान है और वह रहेगा। मगर वह हर जगह नहीं बनाया जा सकता। तकली हम करोड़ोंको दे सकें तो अच्छा ही है। लेकिन उसे चलानेके लिए विशेष काल, श्रम और एकाग्रताकी जरूरत पड़ती है। तकलीके द्वारा हम काफी सूत शायद तैयार मी न कर सकें। धनुष-तकृवेका ऐसा नहीं है कि उसपर चरखेंके बराबर सूत काता जा सकता है। उसे चळाना आसान है और बनाना भी आसान। वगैर बढ़ईके भी वह बनाया जा सकता है। उसका तकुआ वनाने में कुछ दिक्कत आ सकती है मगर ज्यादा नहीं। क्योंकि तकुवेका टेढ़ापन कुछ हदतक घनुष-तकुवेमें निम जाता है। एक दिन में करोड़ोंकी तादाद में वन्य-तक्वे हम बना सकते हैं। पहले-पहल लोगोंको इसकी ओर लाने में मुझे दिककत तो जरूर आयेगी, जैसी कि खादी और चरखेकी तरफ लाने में आई। मगर वह जल्दी ही दूर हो जायेगी। वस्त्र-स्वावलम्बी खादीका काम खूब फैलाना है। वह धनुष-तकुवेके द्वारा ही हो सकता है।

मैं इस वातसे सहमत नहीं हो सकता कि चन्द कारखानोंमें चरखे बनें और वहाँसे सव तरफ मेजे जायें। यदि इस प्रकार आपने चरखेका केन्द्रीकरण किया तो इसका खातमा ही हो जायेगा। चरखेकी सब चीजे जहाँ हम कातते हैं वहींपर वननी चाहिए। इसकी सम्मावना देखकर ही मैंने कहा है कि धनुष-तकुवा घर-घर चले। जबतक हमने सम्पूर्णतया इस चीजकी छान-बीन नहीं की है, तबतक हमें सिर्फ वृद्धिसे वहस न करनी चाहिए। बहस करने का अधिकार तो उसीको हो सकता हैं जिसने लगातार एक महीनेतक प्रतिदिन ९ घंटे घनुष-तकुवे पर काता हो। वह कह सकता है। इसलिए आप लोगोंसे कहता हूँ कि धनुष-तक्त्रवेके बारेमें सोचिए। केवल मेरी कल्पना है इसलिए ही नहीं। आपका अनुभव अगर उल्टा हो तो मेरे कहने से इसे न मानिए। मैंने कत्तितोंको आठ आने मजदूरी देने की बात कही थी, लेकिन तीन क्षानेसे आगे न बढ सके। अगर वही अनुभव यहाँ भी हो तो मैं क्या कर सकता हुँ ? यह शोध और प्रयोगका विषय है।

उसी तरह सूतके बारेमें भी सोची। जो भी सूत हमारे पास आ जाये उसका कपड़ा बना देने की ताकत पैदा करने की बात सोची। स्वावलम्बनका सूत तो हमें जरूर लेना चाहिए। उसके जो दाम हम ठहरायें वह उन लोगोंको मंजूर करने चाहिए-चाहे पैसेके रूपमें या खादीके रूपमें, लेकिन हमें इनकार नहीं करना चाहिए। अगर हम सूत बुनवाने का इन्तजाम नहीं कर सकते तो जवाहरलालकी माषामें कहना होगा कि "हमारी बुद्धि कुंठित हो गई है। विचार-शक्ति चली गई है।" यह तो हार

मानने की बात है। हमें हारना नहीं है।

अगर हम बुनकरोंको नही अपनायेंगे तो भी काम नहीं चलेगा। लेकिन केवल उनके भरोसे हम आगे नहीं वढ़ सकते। आज वे मिलका सूत इस्तेमाल करते हैं।

इसको हमें बदलना है। उनको हाथका सूत देना है। मेरा तो खयाल है कि यह लड़ाई लम्बी चलेगी। बाहरसे कपड़ा नहीं आ सकेगा। कपड़ेके दाम भी बढ़ जायेंगे। सिफं हिन्दुस्तानकी ही मिलें यहाँके लिए कपड़ा बनायेंगी। मगर एक समय ऐसा भी आ सकता है कि जब वे भी पूरा कपड़ा न दे सकें। इस प्रकार हिन्दुस्तानमें कपड़ा दुर्लंग हो जायेगा। चीनमें भी ऐसा मौका आया था। लेकिन चीनी लोग तो बड़े उद्यमी ठहरे। उन्होंने अपने तरीकेसे घर-घर चरखा चलाकर अपना प्रश्न हल किया। हमारा तरीका कुछ न्यारा होगा। मगर कोशिश तो उतनी ही या उससे भी अधिक ही करनी पड़ेगी। आगे चलकर लोग हमसे कपड़े माँगेंगे और हम विवश होकर कहेंगे कि हमारे पास कपड़े नहीं हैं तो वह हमारे लिए शर्मकी वात होगा।

कपासके लिए मी हमें सोचना होगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि खादीकी दृष्टिसे जिस तरह हमें कपास पैदा करनी चाहिए अगर उस तरह करें तो हम विदेशी बाजारसे स्वतन्त्र हो जाते हैं। यदि मिलोंकी दृष्टिसे कपास पैदा करेंगे तो ऐसा नहीं हो सकता। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मिलोंकी लिए और खादीके लिए कपास पैदा करने का शास्त्र परस्पर-विरोधी है। मिलोंकी सहूलियत इसमें है कि चंद स्थानोंमें एकत्रित रूपमें कपास पैदा हो। उनकी यह कोशिश रहेगी कि बिखरे स्थानोंमें कपास पैदा होती हो तो घीरे-घोरे परिस्थित बदलकर उसे एक स्थानमें पैदा किया जाये। लेकिन खादीके लिए यह जरूरी है कि हर देहातमें कपास पैदा हो। किसी देहातको अपनी कपासकी आवश्यकताके लिए दूसरे देहातपर निर्मर न रहना-पड़े। कपास एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाना खादीको नहीं पोसायेगा। हमें शीझातिशीझ यह सोचने की जरूरत है कि हिन्दुस्तानके हरएक देहातमें कपास कैसे उपजाई जा सके।

एक और बात विचारके लिए मेरे पास आई है। हमारे जो खादी मण्डार है जनमें कई छोटे-छोटे मण्डार मी है। सवाल यह है कि किफायतकी दृष्टिसे उन मण्डारोंका काम एक-एक आदमी ही क्यों न चलाये? इस सिलसिलमें यह सोचना होगा कि मण्डार कुछ परिमित समयके लिए ही खुले रहें या जितने अधिकसे-अधिक रह सकते हैं, रहें।

अगर हम खादी द्वारा सम्पूर्ण जीवन बनाना चाहते हैं तो हमें अपने मण्डारोंके लिए भी नियम बनाने होंगे। शहरोंके लिए और देहातोंके लिए अलग-अलग नियम होंगे। शहरोंके लिए भी समझता हूँ कि हम अंग्रेज दुकानदारोंका अनुकरण करें। वे अपनी सुविधाके अनुसार दुकानें खोलते हैं। रिववारको बन्द रखते हैं। ग्राहकोंकी परवाह नहीं करते। धीरे-धीरे ग्राहकोंको आदत पड़ जाती है। हम भी तो समाजमें नई आदतें डालना चाहते हैं। इसीलिए हमको भी अपनी नीतिके अनुसार नियम बनाकर दुकानका समय निश्चित कर लेना चाहिए। देहातोंके लिए भी इसी दृष्टिसे विचार करना चाहिए। दक्षिण आफिकामें हजारों बीघोंके लिए एक दुकान होती है। लोग खच्चरकी गाड़ियोंमें बैठ-बैठकर वहाँ सामान लेने आते हैं। कभो दुकानदार नहीं मिळता, क्योंकि दुकानमें एक ही आदमी होता है। लेकिन लोगोंको उसकी भी आदत हो जाती है। हमारे लिए भी यह जरूरी नहीं है कि हम अपने भण्डार दिन-भर खुले रखें। परन्तु यह चर्चाका विषय है।

इस प्रकार हमें इन सब बातोंका तफसीळवार विचार करना होगा। क्योंकि हम खादीको एक सम्पूर्ण जीवन बनाना चाहते हैं। हमारा सम्बन्ध कारीगरों, कित्तनों और बुनकरोंसे हैं। उत्पादनके क्षेत्रमें हमारा आदर्श यह है कि सबको समान वेतन मिलना चाहए। आजतक तो हमने कित्तनीसे बेगार कराई। इस तरह मजदूरीसे ज्यादासे-ज्यादा परिश्रम लेकर उन्हें कमसे-कम वेतन देने की नीति कौटिल्यके अर्थ-चास्त्रमें से निकली है। अब हमें नई नीतिका प्रवर्तन करना चाहिए। हम कित्तनोंको मी बुनकरोंके-जितना ही वेतन देंगे। रुई पैदा करनेवाले को मी बरकत होनी चाहिए। और इतना सब होने पर मी खरीददारपर कम बोझ पड़ना चाहिए। इस प्रकार हम एक समाजवादी समाजका निर्माण करना चाहते हैं। जो समाजवाद हिन्दु-स्तानको हजम हो सकेगा वह इसी प्रकारका होगा। हाँ, यह गरीबोका समाजवाद होगा, लेकिन मालदार गरीबोका। इस प्रकारके सम्पूर्ण समाजवादी जीवनका विकास करना खादीका आदर्श है।

सारांश यह कि खादीकी दृष्टिसे हमें कपासकी खेतीसे छेकर खादीकी बिकी तक सभी बातोंका विचार करना है। इस प्रकार जब हम एक स्वयं-पूर्ण समाजवादी समाजका निर्माण करेंगे तब हम विदेशी बाजारोंपर निर्मेर नही रहेंगे। एक स्वयं-पूर्ण स्वावलम्बी किसानके-जैसा हमारा समाज होगा। ऐसे किसानके लिए उसका खेत ही उसका मण्डार है। जो फलता है वह खाता है। किसी साल फसल न हुई तो मुखा रह जाता है। न किसीसे माँगता है, न किसीको लूटता है।

बस, इतनी ही बातें मुझे कहनी थीं। हमें बुनाईकी तरफ खास घ्यान देना होगा। मैं हमेशा कहता आया हूँ कि जिस तरह हमने घुनने पर जोर दिया है उसी तरह हम बनकर बनने पर भी जोर दें।

खादी-जगत्, अक्तूबर, १९४१

## ६४७. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम ८ अक्तूबर, १९४१

माई वल्लममाई,

तुम्हारा पत्र मैं समझ गया। . . . ९ से तो मिलना बहुत जरूरी है। मैं उनके पीछे अवश्य पहुँगा। मैं तुम्हें मूलामाईके मामलेमें बिलकुल नही घसीटना चाहता। उनके बारेमें जो होगा वह करूँगा।

राजाजी अभी नहीं आ सकते। उनके माईके दो जवान, अच्छे पढे-लिखे लड़के अभी-अभी गुजर गये। उनके यहाँ और भी दो-तीन आदिमयोंने बिस्तर पकड़ लिया है। इसलिए पहले तो वे बंगलीर जायेंगे। वहाँ कुछ दिन रह आयेंगे। तुम्हें भी उन्होंने समाचार तो जरूर दिया होगा। मैं भी चाहता हूँ कि तुम्हें यहाँके दो चक्कर

#### र. साधन-सूत्रमें नाम छोद दिया गया है।

न लगाने पड़ें। इसलिए मले ही तब आना जब राजाजी वगैरह आयें। सत्यमूर्ति तो १० तारीखको आ ही रहे हैं। कमलादेवी [चट्टोपाध्याय] कल आयेंगी। प्रकाशम्' जरूर आयेंगे। आसफ अली जवाहरलाल और मौलानासे मिलकर आयेंगे, इसलिए अच्छा जमघट हो जायेगा। मैं सब व्यवस्था कर लूंगा।

तुम्हारा कर्त्तंव्य तो स्वस्य हो जाना है।

इन दिनों तो आश्रमपर लोगोंने घावा बोल दिया है। लोगोंकी माँग आती ही रहती है। मैं अधिकतर सबसे इनकार करता हूँ। जगह मी कहाँ है? नई इमारतें बनती ही रहती हैं, फिर मी आश्रम मरा रहता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २: सरबार वल्लभभाईने, पृ० २६०

## ६४८. पत्र: अमृतकौरको

सेवाग्राम ९ अक्तूबर, १९४१

प्रिय पगली,

मै फिर मौनके समय लिखने के नये नियमका अनुसरण कर रहा हैं।

तो तुम्हारी खाँसी बनी हुई है। बेचारे शम्मी! मुझे पूरा विश्वास है कि खाँसीका कारण आहारकी कोई गड़वड़ी है। चिकनाई, ज्यादा स्टार्च, खट्टे फल, मारी मोजन, पशु अथवा वनस्पतिसे प्राप्त होनेवाला अधिक मात्रामें प्रोटीन, दाल, थोड़ा-सा भी मसाला, सामान्य बदहजमी — मेरी मान्यताके अनुसार यही सब उसके कारण हैं। मेंकल तो शरीरके एक अंग-मात्रका इलाज करते हैं, पूरे शरीरका नही। जबतक तुम्हारा पाचन-यन्त्र ठीक नहीं हो जाता, उस इलाजसे रोगसे स्थायी मुक्ति नहीं हो सकती।

इस महीने मैं कहीं जानेवाला नहीं हूँ। लगभग सभी दिन कार्यंक्रमोंसे भरे हैं। अगर राजाजी २० तारीखको आ जाते हैं तो बातचीतका दौर चार-पाँच दिन चलेगा।

कुटियामें काफी और व्ययसाध्य विस्तार किया गया है।

सप्रेम,

बापू

#### [पुनश्च :]

कमलादेवी आ गई हैं। सत्यमूर्ति कल आयेंगे। अमरावतीके दंगे वर्मनाक थे। वियाणीजी रिहा हो गये हैं। वे कल मुझसे मिलने आ रहे हैं।

टी० प्रकाशम्

२. बुजलाल विद्याणी, विद्यमै प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

तुम अपने जितने भी पुराने कपड़े दे सको, मीराको चाहिए। यह तो जानती ही हो कि किस प्रयोजनके लिए। इतने दिनोंसे यह बात बार-बार भूल जाता था। अगर तुम्हारा आना अभी बहुत दिनोंतक अनिश्चित हो तो इझर आते-जाते किसी आदमीके साथ भेज देना।

मूल मंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४०९४) से; सौजन्य: अमृतकौर। जी० एन० ७४०३ से भी

# ६४९. पत्र: पी० पी० एम० टी० पोन्नूसामी नाडारको

९ अक्तूबर, १९४६

प्रिय पोन्नूसामी,

तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। चक्रैयाकी तुमने जो खूब देखमाल की उसके बारेमें उसने मुझे सब-कुछ लिखा था। परमात्मा तुम्हें मुखी रखे। ईश्वरकी कृपा ही थी कि तुम और तुम्हारा साथी यात्रामें उसके साथ थे।

> तुम्हारा, बापू

पी॰ पी॰ एम॰ टी॰ पोन्नूसामी मार्फत -श्री पी॰ पी॰ एम॰ यंगैया नाडार, व्यापारी तूतीकोरिन, द॰ भारत

अंग्रेजीको फोटो-नकल (सी॰ डब्ल्यू॰ १०९६१) से। सौजन्य: टी॰ पी॰ शिवनन्दम्

## ६५०. पत्र: अमृतकौरको

१० अक्तूबर, १९४१

त्रिय पगली,

यह भी नये नियमके मुताबिक लिख रहा हूँ। तुम्हारा छोटा-सा पत्र उल्लास-कारी है। ईश्वर करे कि यह सुधार इसी तरह बराबर जारी रहे। सब सोच रहे हैं कि क्या तुम आओगी भी। मैं यही कहता रहता हूँ कि तुम आओगी, यखिप मेरे मनमें कुछ अनिधिचतता पैदा हो गई। र

- १. देखिए पु० ४३१।
- २. शेष पत्र हिन्दीमें है।

कमलादेवी आज हि जाती है। अपनी मांको मिलकर चंद दिनोंके लिये आयेगी। दा॰ दास दो-तीन दिनमें कलकत्ता जायेंगे, थोड़े हि दिनोंके लिये। सत्यमूर्ति आज आये हैं। बँगलेपर ठहरे हुए हैं।

हवा तो यहां अच्छी है। दोपहरको कुछ गरमी-सी रहती है। वाकी ठीक है।

वापुके आशीर्वाद

मूल अंग्रेजी (सी॰ डब्ल्यू॰ ४२५३) से; सीजन्यः अमृतकीर। जी॰ एन॰ ७८८५ से भी

## ६५१. पत्र: सैयद महमूदको

बुबारा नहीं पढ़ा

१० अक्तूबर, १९४१

प्रिय महमूद,

राजेन्द्र वाव्के नाम तुम्हारा पत्र पढ़ा।

एकताके विषयमें मैं तुम्हारी वातोंका हृदयसे अनुमोदन करता हूँ। लेकिन जरा कम्बलोंके वारेमें पैदा हुई गलतफहमीकी तो कल्पना करो। क्या तुमने मेरी टिप्पणी' पढ़ी? यदि मैं अनाजका ज्यापारी होर्के तो क्या मुझे फीजके लिए सरकार के हाथों गेहूँ या अगर दवाफरोश होर्के तो कुनैन वेचने से इनकार कर देना चाहिए? मान लो मैने इनकार कर दिया और किसी अन्य ज्यक्तिने वह चीज मुझसे खरीद कर सरकारके हाथों वेच दी तो मैं उत्तरदायित्वसे मुक्त कैसे हो जाकँगा? युद्ध-प्रयत्न कोई मामूली चीज नहीं है। यदि तुम यह वुनियादी वात अभी नहीं समझ रहे हो, तो जब गोला-वाल्द बनाने के लिए मेरी ज्यक्तिगत सेवाएँ या मेरी निर्जा मेहनत जबन् हासिल करने की कोशिश की जायेगी तब तुम समझ जाओंगे। तब यदि मैंने वैसा करने से इनकार करने का साहस दिखाया तो यह बुनियादी फर्क तुम्हारी समझमें आ जायेगा। तुम्हें खूब चिन्तन करके इसे समझने की कोशिश करनी चाहिए, और या तो जबतक मैं तुम्हें कायल न कर दूं या तुम मुझे कायल न कर दो, तवतक तुम्हें चूप नहीं वैठना चाहिए। सिन्वके वारेमें मौलानासे मिलकर उन्हें अपनी वात समझाओं। इस सम्बन्वमें मैं पूरी तरह तुम्हारे साथ हूँ। तुम स्वस्थ तो हो न?

सप्रेम,

वापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०७५) से

## ६५२. पत्र: आनन्द तो० हिंगोरानीको

चि॰ आनन्दै.

१० अक्तूबर, १९४१

पुम्हारी कल्पना तुम्हारी शत्रु है। तुमने ऐसा तो कुछ नही किया जिससे मैं नाराज होऊँ। फिर तुम्हें यह सोचने का क्या अधिकार था कि मैं तुमसे नाराज हूँ? कमसे-कम इतना तो करो ही कि बिना प्रमाणके कोई धारणा न बना छो। मैं तो मौकेपर था ही, सो तुम मुझसे पूछ सकते थे। फिर तो मैं जो-कुछ बताता उससे पुम्हें हुँसी आये बिना न रहती। अब "आगेसे ऐसा मत करना।"

तुम्हारी वहनकी तसवीर देना गैवारपन लगेगा। लेकिन अगर इससे पिताजी को

खुशी हो तो तुम गँवारपन मी कर सकते हो।

मेरी राय उन्हें वता देना।

सप्रेम,

बापू

श्री आनन्द हिंगोरानी मार्फत-पोस्ट मास्टर इलाहावाद, सं० प्रा०

अंग्रेजीकी माइकोफिल्मसे। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी

## ६५३. पत्र: रघुवीर सहायको

सेवाग्राम, बरास्ता वर्धा (म॰ प्रा॰) १० अक्तूबर, १९४१

प्रिय रघुवीर सहाय,

तुम्हारे खूव विस्तृत और जानकारी-मरे पत्र के लिए धन्यवाद। जो बातें मुझे विभिन्न पत्र-लेखकों के जरिये मालूम हुई थी, अपने विस्तृत पत्रमें तुमने उनकी पुष्टि की है। मैं स्थितिपर नजर रख रहा हूँ। आशा है, तुम सकुशल होगे।

> तुम्हारा, बापू

श्री रघुवीर सहाय वदायूँ, सं० प्रा०

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२०६) से

रै. यह देवनागरी लिपिमें है।

### ६५४. पत्र: हरिकृष्ण भाणजीको

१० अक्तूबर, १९४१

भाई ह० मा०,

आपका पत्र मिला। आप दिसम्बरमें अवश्य आकर मुझसे मिल जाइए। इस बीच आपको रवनात्मक कार्यमें दिलचस्पी लेनी चाहिए। कातने, पींजने और सूतकी अन्य क्रियाओंका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। हरिजन-सेवा करनी चाहिए। मुस्लिम, ईसाई और पारसीकी सेवा करनी चाहिए। आप यदि यह सब करेंगे तमी सच्चे सेवक कहला सकेंगे और तमी सविनय अवज्ञाके योग्य बनेंगे। इसके लिए सच पूछिए तो मेरे पास आने की जरूरत नहीं है।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपसें। सौजन्य: प्यारेलाल

## ६५५. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

सेवाग्राम १० अक्तूबर, १९४१

माई वल्लममाई,

यह पत्र पढ़ना और रास्ता सुझाना। सत्यमूर्ति आज आ गये हैं। वे कल अपना मामला सुनायेंगे। आशा है, तुम्हारा ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

बियाणी आ गये हैं। अमरावतीमें कहर टूट पड़ा । [गुजरातीसे]

बायुना पत्रो-'२: सरदार बल्लभभाईने, पृ० २६१

### परिशिष्ट

#### परिशिष्ट १

#### सत्याप्रहियोंके लिए निर्देश

१७ जून, १९४१

- १. रिहा हुए सत्याप्रहीको, जितनी जल्दी हो सके, फिरसे सत्याप्रह करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि किसी कारण वह ऐसा करने में असमर्थ हो तो उसे प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष अथवा प्रधान अधिकारीकी मार्फत महात्मा गांधीसे छूट पाने की अर्जी देनी चाहिए और छूट क्यों दी जाये, इसके कारण बताने चाहिए।
- २. जिस दिन किसी सम्मावित सत्याग्रहीका नाम स्वीकृतिके लिए महात्मा गांघीके पास मेजा जाये, उसी दिनसे उसे अपना निजी कारोबार बन्द कर देना चाहिए और रचनात्मक कार्यक्रमके निम्निलिखित तेरह सूत्रोंमें से किसी एक या अनेक को कार्यान्वित करने के लिए पूरे मनसे लग जाना चाहिए:
  - (क) हिन्दू-मुस्लिम या साम्प्रदायिक एकता।
  - (ख) अस्पृश्यता-निवारण।
  - (ग) नशाबन्दी।
  - (घ) खादी।
  - (ङ) अन्य ग्रामोद्योग।
  - (च) देहातोंमें सफाई और स्वच्छता।
  - (छ) नई या बुनियादी तालीम।
  - (ज) प्रौढ़ शिक्षा।
  - (स) स्त्रियोंका जत्थान।
  - (ञ) सफाई और स्वास्थ्यकी शिक्षा।
  - (ट) राष्ट्रमाषा-प्रचार।
  - (ठ) अपनी मातृभाषाके लिए प्रेम पैदा करना।
  - (ड) आर्थिक समानताके लिए कार्य।
- ३. प्रत्येक सम्मानित सत्याग्रहीसे अपेक्षा की जाती है कि वह एक डायरी रखेगा, जिसमें वह दिन-मरमें किये गये अपने कार्यका निवरण लिखेगा, और यह डायरी हर पंद्रहवें दिन सम्बन्धित प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीको पेश की जायेगी। सत्या-ग्रह करने की अनुमति केवल उन्हीं कार्यकर्ताओं को दी जायेगी जो अपने दैनिक कार्येसे अपनी योग्यता सिद्ध करेंगे।

#### १. देखिए ५० ६८।

४. सत्याप्रहियोंकी सूचियाँ पास करने पर लगाये गये नये प्रतिबन्ध संघर्षके हितमें आवश्यक माने गये हैं, क्योंकि मिवष्यमें इसके और बढ़ने और उत्तरीत्तर कठिन होते जाने की सम्भावना है। अतः जो नये सत्याप्रही आयें वे ऐसे होने चाहिए जो नई कसौटीपर खरे उत्तर सकें। कार्यालयमें इस आश्यकी शिकायतें आई हैं कि नाम पास करने में अनुचित विलम्ब किया जाता है। तथापि, अपना नाम देने-वालोंको विलम्बके कारण अधीर नहीं होना चाहिए। उन्हें बीचका समय रचनात्मक कार्यक्रम चलाने में लगाना चाहिए।

पुरानी शर्तोपर अपना नाम दर्ज करानेवाले किसी सत्याग्रहीको यदि नई शर्ते स्वीकार करना सम्मव न लगे, तो वह अपना नाम वापस लेने को स्वतन्त्र है और इस तरह नाम वापस लेना कोई बदनामीकी बात नहीं समझी जायेगी। वह देशकी जो भी अन्य सेवा कर सकता हो, करता रह सकता है। वह पहलेकी तरह कांग्रेस का सदस्य बना रहेगा।

५. नाम दर्ज करा चुकनेवाले सत्याग्रही स्थानीय निकायोंके लिए चुनाव नहीं लड़ सकते। जिन लोगोंने सत्याग्रहीके रूपमें नाम दर्ज कराने से पहले ऐसे चुनाविक लिए उम्मीदवारीके पर्चे दाखिल कर दिये हैं, उन्हें या तो उम्मीदवारीसे अथवा र सत्याग्रहसे अपना नाम वापस लेना होगा। सत्याग्रहीके रूपमें वे दोनों स्थानोंपर एकसाथ नहीं रह सकते।

६. रिहा हुआ कोई भी सत्याप्रही, जो किसी स्थानीय निकायका सदस्य है, महात्मा गांघीसे विशेष छूट पाये बिना उस निकायकी बैठकमें माग नही ले सकता। यदि वह माग लेगा तो उसका नाम सत्याप्रहियोंकी सूचीसे निकाल दिया जायेगा।

७. अपने जिलेका दौरा कर रहे ऐसे सत्याग्रही जिनकी गिरफ्तारी नही हुई है और जिनके नाम मंजूर कर लिये गये हैं, स्थानीय निकायोंकी बैठकमें माग नहीं ले सकते।

८. वर्षाके दिनोंमें सत्याग्रही, आवश्यक होने पर, अपने गाँवको छोड़ अन्य किसी गाँवमें या ग्राम-समूहमें जम सकता है और सत्याग्रह व रचनात्मक कार्य जारी रख सकता है।

९. जो सत्याग्रही गिरफ्तार नहीं हुए है उन्हें अपने जिलोंका दौरा करते हुए अथवा दिल्लीकी ओर कूच करते हुए, अपने कार्यकी पाक्षिक रिपोर्ट प्रान्तीय कार्यालयको मेजनी चाहिए। उघर, प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियाँ उनके कार्यकी समेकित रिपोर्ट पाक्षिक या मासिक रूपसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके कार्यालयको मेजेंगी।

१०. इस तरहकी शिकायतें आई हैं कि कुछ सत्याग्रही असंयत माषाका प्रयोग करते हैं। सत्याग्रहियोंको जानना चाहिए कि निन्दा और अपशब्दोंका प्रयोग, शब्द और माव दोनोंकी दृष्टिसे, सत्याग्रहके विरुद्ध है और इसलिए इससे हमेशा बचना चाहिए।

[ अंग्रेजीसे ]

व हिस्द्री ऑफ व इंडियन नेशनल कांग्रेस, जिल्द २, पृ० २७१-७२

### परिशिष्ट २

## क० मा० मुंशीका पत्र <sup>१</sup>

नैनीताल २६ मई, १९४१

प्रिय' बापू,

भाषाके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। लेकिन मेरे विचारोंने चूँकि इस विषयमें अग्रेजीमें ही स्वरूप ग्रहण किया है, अतः उन्हें इसी माध्यमसे व्यक्त करना अच्छा होगा। कल सुबहके समाचारपत्रोंमें जब मैंने श्री मोगीलाल लालाके नाम आपका पत्र पढ़ा तमीसे मेरे मनमें मारी उथल-पुथल मची है। उस पत्रमें से मैं दो छोटे-छोटे अंश उद्घृत कर रहा हूँ:

जो (कांग्रेसी) लोग (आत्म-रक्षाके लिए) हिंसक प्रतिरोधके पक्षमें है, उन्हें चाहिए कि वे काग्रेससे निकल जाग्रें और जैसा ठीक समझें वैसा आचरण करें और दूसरोंका वैसा ही मार्ग-दर्शन करे।

कांग्रेसीको ऐसे किसी भी अखाड़ेसे प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सम्बन्ध नही रखना चाहिए जहाँ हिंसक प्रतिरोधका प्रशिक्षण दिया जाता हो।

क्षमा करें, मैं स्वयको इन आदेशोंको मानने के लिए राजी नहीं कर सकता। जबसे ढाका, अहमदावाद, बम्बई तथा अन्य स्थानोमें पाकिस्तान क्रिया-रूपमें सामने आया है, यह स्पष्ट हो गया है कि इस तरहके दंगे अगले कुछ वर्षों तक हमारे जीवनका अंग बने रहेंगे। यदि युद्ध मारतकी सीमाओंतक पहुँच जाता है अथवा ब्रिटेनका व्यवस्था बनाये रखनेवाला तंत्र ढीला पड जाता है, और यदि भीतरी या वाहरी शक्तियाँ संगठित हिंसाके जरिये जबरदस्ती मारतका विमाजन करने की कोशिश करती है, तो शायद इस प्रकारके दंगे अधिकाधिक संख्यामें और अधिक उग्न रूपमें होगे। यदि गुण्डागर्दीके कारण जन-जीवन, घर, मन्दिर और औरतोंकी इज्जतके लिए खतरा पैदा हो जाता है, तो मेरी दृष्टिमें आत्म-रक्षाके लिए संगठित प्रतिरोव हमारा परम और अनिवार्य कर्तव्य होगा, फिर चाहे वह प्रतिरोध किसी भी रूपमें क्यों न हो। क्या आप अखाड़ोंको उन्ही व्यायामशालाओं में मानते है जहाँ हिसक प्रति-रोघका प्रशिक्षण दिया जाता है ? मै आपको बता दूँ कि पिछले पन्द्रह वर्षीसे अधिक समय से मेरा इस सूबेमें अखाड़ोंके आन्दोलनसे प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों तरहका सम्बन्ध रहा है। अखाड़ोंको व्यवस्थित ढंगसे चलाने के लिए जो दो सम्मेलन आयोजित किये गये — पहला बम्बईमें और दूसरा पूनामें — उनकी मैने अध्यक्षता की थी। कई अखाड़ोंके साथ मेरे अब भी अनीपचारिक सम्बन्ध है। मैं इन्हें अपनी जातिको आत्म-रक्षाकी कला सिखाने का एक आवश्यक माध्यम मानता हूँ। पिछले कई वर्षोंमें गुण्डागदींका मुकाबला करने के लिए हममें कुछ आत्मविश्वास जाग्रत करने में

१. देखिए ए० ८१-८३, १०२ और १२५।

इन अखाड़ोका बहुत बड़ा योग रहा है। कलसे बराबर बहुत कोशिश करते रहने के वावजूद, मैं खुदको यह विश्वास नहीं करा पाया हूँ कि मैंने पन्द्रह दिन पूर्व अपने जो विचार २२ मई, १९४१ के 'सोशल रिफॉर्मर'में छपे अपने एक लेखमें व्यक्त किये थे, उनमें संशोधन जरूरी है। मैं उस लेखकी एक नकल आपको मेज रहा हूँ, ताकि जरूरत पड़ने पर सन्दर्मके लिए आप तुरन्त उसे काममें ला सकें।

१९३० में आपके सम्पर्कमें आने के बादसे ही आप मेरे लिए केवल एक राज-नीतिक नेता नही, बल्कि उससे बहुत अधिक रहे है। आप हमारे पूरे परिवारके लिए पिता-तुल्य रहे हैं। आज मैं जिस थोड़ी-बहुत आध्यात्मिकताका दावा कर सकता है, उसके लिए पिछले दस वर्षोमें आप एक प्रकाश-स्तम्मकी तरह मेरा पथ आलोकित करते रहे हैं। इसीलिए मुझे यह स्वीकार करने में पीड़ा होती है कि इस अन्तर्द्धन्द्वसे उबरने के लिए मेरा रास्ता खोजना निरर्थक रहा। देशक, मै मौन रह सकता हूँ या जो-कुछ आप कहते हैं उसे चुपचाप स्वीकार कर सकता हूँ, या कांग्रेस के साथ अपना सम्बन्ध और आपका विश्वास -- जिनमें से दोनों मेरे जीवनकी बहु-मुल्य निधियाँ है - गैंवाने के भयसे आपके ही विचारों को प्रतिव्वनित करता रह सकता हूँ, या फिर हाथ-पर-हाथ घरे बैठा रह सकता हूँ। लेकिन मेरे मनमें कोई चीज ऐसा करने के खिलाफ विद्रोह करती है। मेरे लिए बाप सत्यके प्रतिरूप है, और यदि मै इस तरह मनमें शंका रखते हुए आपका अनुसरण करने का ढोंग रचता हूँ, तो मैं अपना आत्मसम्मान तथा ईश्वरसे प्रार्थना करने का अपना अधिकार सो बैठुंगा। मैं यह वचन नही दे सकता कि सभी सम्भव उपायों द्वारा हिंसासे अपनी रक्षा करने की खातिर मैं न तो संगठित प्रतिरोध करूँगा, न उसका प्रचार या संगठन कलँगा और न उसके साथ अपनी सहानुमृति ही रखुँगा। मै नहीं चाहता कि मैं अपने प्रति अथवा अपने देशके प्रति, जिसकी अखण्डता बाज खतरेमें है, वेईमान बनें। साथ ही मैं इस धर्म-संकटमें स्वयको आपकी प्रेरणा और मार्ग-दर्शनसे मी वंचित रखना नही चाहता हैं। कृपया बताइए कि मुझे क्या करना चाहिए।

मेरी पत्नी २८ तारीखको नैनीतालसे रवाना होगी, और उसने आपको लिखा भी है। मैं फिर कौसानी जा रहा हूँ। यहाँसे मैं ९ जूनको रवाना होकर ११ को बम्बई पहुँचूँगा। क्या मेरा १२ या १३ तारीखको आपसे सेवाग्राममें मिलना आपके लिए सुविधाजनक होगा? मेरी आँखोंमें अभी भी तकलीफ है, अन्यथा मैं काफी स्वस्थ हूँ। मैं व मेरी पत्नी, दोनोंकी ओरसे आपको सादर प्रणाम।

> आपका, क० मा० मुंशी

[ अंग्रेजीसे ] पिल्प्रिमेज टुफीडम, पृ० ४०९-४१०; बॉम्बे फॉनिकल, २७-६-१९४१ मी

#### परिशिष्ट ३

## एलिनर रैथबोनको रवीन्द्रनाथ ठाकुरका उत्तर<sup>१</sup>

शान्तिनिकेतन ४ जून, १९४१

कुमारी रैथबोनने मारतीयोके नाम जो खुला पत्र लिखा है उससे मुझे गहरा दु:ख हुआ है। कुमारी रैथबोन कौन है, मैं नही जानता। पर मैं यह मान लेता हूँ कि वह औसत "सदाशयी अंग्रेज" की मानसिकताका प्रतिनिधित्व करती है। उनका पत्र खास तौरसे जवाहरलालको लक्ष्य करके लिखा गया है और मुझे इसमें शक नही कि स्वतन्त्रता-सग्रामके उस महान योद्धाकी जवान यदि कुमारी रैथबोनके देशवासियो द्वारा जेलके सीखचोके पीछे बन्द न कर दी गई होती, तो वह उनके इस बिन-माँगे उपदेशका ठीक-ठीक और करारा जवाब देते। वह क्योंकि मजबूरन चुप है, इसलिए मेरे लिए, बीमार होते हुए भी, विरोधकी आवाज उठाना जरूरी हो जाता है।

इन महिलाने हमारे विवेकको इतनी अविवेकपूर्ण बल्कि घृष्ट चुनौती देकर अपने देशवासियोके ध्येयको नुकसान ही पहुँचाया है। इनकी नैतिक मावनाको हमारी इस कृतष्नतासे आधात पहुँचा है कि "अंग्रेजी चिन्तनके सोतेसे मरपूर रसपान" करने के बाद भी हममें अपने निर्धन देशके हितोंके लिए कुछ चिन्तन बचा रह गया है। अंग्रेजी चिन्तनने, जहाँतक कि वह पाश्चात्य प्रबुद्धताकी सर्वोत्तम परम्पराओका प्रतिनिधि है, निश्चय ही हमें बहुत-कुछ सिखाया है। परन्तु, इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहूँगा कि हमारे जो देशवासी उससे लामान्वित हुए है वे ब्रिटिश सरकार की हमें कुशिक्षित करने की कोशिशोंके बावजूद हुए है। पाश्चात्य ज्ञानसे हमारा परिचय किसी अन्य यूरोपीय माषा द्वारा भी हो सकता था। संसारके अन्य सभी लोगो को क्या प्रबुद्धताके लिए अंग्रेजोंकी प्रतीक्षा करनी पड़ी है?

हमारे तथाकथित अंग्रेज मित्रोंकी यह मान्यता है कि यदि उन्होंने हमें "शिक्षित" न किया होता तो हम अमीतक अंघे पुगमें ही रह रहे होते। पर यह उनका मात्र घृष्टतापूर्ण और झूठा आत्मसन्तोष है। मारतमें शिक्षाके जो सरकारी ब्रिटिश स्रोत है उनसे स्कूलोंमें हमारे बच्चोंको अंग्रेजी चिन्तनका सर्वीनम अश नही, बल्कि कचरा ही मिला है, जिसके कारण वे स्वयं अपनी संस्कृतिके पौष्टिक बाहारसे वंचित रह गये है।

यह मान भी कें कि "प्रबुद्धता" के लिए हमारे पास केवल अंग्रेजी माषा ही एक माध्यम बचा है, तो भी "उसके सोतेसे भरपूर रसपान" का कुल परिणाम यह हुआ कि १९३१ में, ब्रिटिश शासनके दो सी वर्ष बाद भी, हमारी आबादीका लगमग एक प्रतिशत माग ही अंग्रेजीका अक्षर-ज्ञान रसता था — जब कि सोवियत संधर्मे १९३२ में, सोवियत शासनके केवल पन्द्रह वर्ष बाद ही, ९८ प्रतिशत बच्चे शिक्षित

हो चुके थे। (ये आँकड़े एक अंग्रेजी प्रकाशन 'द स्टेट्समैन्स इअर वुक' से लिये गये हैं, जिसमें रूसके पक्षमें कोई गलती होना सम्भव ही नही है।)

परन्तु तथाकथित संस्कृतिसे भी अधिक आवश्यक है, अस्तित्वकी विलकुल प्राथ-मिक जरूरतें, जिनके ऊपर ही ज्ञानका ऊपरी ढाँचा खड़ा हो सकता है। दो सौ से भी अधिक सालतक हमारे राष्ट्रके कोषको अपनी मुद्ठीमें कसकर बन्द रखनेवाले और उसके साधनोंका शोषण करनेवाले अंग्रेजोंने हमारे गरीब छोगोंके लिए आखिर क्या किया है?

अपने चारों ओर नजर डालने पर मुझे अन्तके लिए विलखते मूखे नर-कंकाल नजर आते हैं। गाँवोंमें मैने औरतोंको कुछ बूँद पीनेके पानीके लिए घरतीमें गढ़े खोदते देखा है, क्योंकि भारतीय गाँवोंमें कुएँ स्कूलोंसे भी ज्यादा दुर्लम है। मुझे मालूम है कि आज खुद इंग्लैण्डकी आवादीके आगे मुखमरीका खतरा है और मुझे उससे सहानु-मूति है। लेकिन जब मैं देखता हूँ कि ब्रिटिश नौसेनाकी पूरी शक्ति किस तरह खाद्यान्नसे मरे जहाजोंको इंग्लैण्डके तटतक पहुँचाने में जुटी है और जब यह याद करता हूँ कि अपने लोगोंको मैंने मूखसे दम तोड़ते देखा है और उनके लिए पासके जिलेसे एक गाड़ी चावल तक नही लाया गया, तो अंग्रेजोंका जो रवैया अपने देशमें है और जो भारतमें है उनकी पारस्परिक विषमता देखे विना मैं नहीं रह सकता। तब अंग्रेजोंका हमें क्या इसलिए कृतज होना चाहिए कि वे अगर हमें मोजन नहीं दे सके तो कमसे-कम यहाँ कानून और व्यवस्था तो बनाये रख ही सके हैं? अपने चारों ओर नजर डालने पर मुझे देश-मरमें दंगे-फसाद होते दिखाई दे रहे हैं। वीसियों जानें चली जाती है, हमारी सम्पत्ति लुटती है, औरतोंकी वेइल्जती होती है, पर ब्रिटेनकी शक्तिशाली मुजाओंमों कोई हरकत नहीं आती। वस समुद्र-पारसे अंग्रेजोंकी यह मर्सना-भरी आवाज आती है कि हम अपना घर ठीक रखने के काविल नहीं हैं।

इतिहासमें इस तरहके उदाहरणोंकी कमी नहीं है कि पूर्णतया सशस्त्र योद्धा तक ऊँचे दर्जेकी सैन्य शक्तिके सामने पीछे हट गये हैं, और इस युद्धमें ऐसे संयोग उपस्थित हुए है जब ब्रिटेन, फ्रांस और यूनानके सबसे वहादुर सैनिकोंको भी यूरोपमें छड़ाईके मोर्चेसे हटना पड़ा है, क्योंकि अधिक ऊँचे दर्जेके शस्त्रास्त्रोंसे वे परामूत हो गये। लेकिन हमारे गरीव, निहत्थे और असहाय किसान, जिनपर अपने रोते- बिलखते बच्चोंका भी मार होता है, जब अपने घरोंको हथियारवन्द गुण्डोंसे बचा न सकने पर वहाँसे माग खड़े होते हैं, तो अंग्रेज अधिकारी हमारी कायरतापर शायद तिरस्कारपूर्वंक मुस्कराते हैं।

आज इंग्लैण्डका हर नागरिक अपने घर-वारकी दुश्मनसे रक्षा करने के लिए हियार रक्षता है। लेकिन मारतमें लाठी चलाना सीखने तक पर राजाजा द्वारा प्रतिवन्व लगा दिया गया। हमारे लोगोंको जान-वृक्षकर निःशस्त्र और पुंसत्वहीन किया गया है, ताकि वे वरावर दब्बू वने रहें और अपने हथियारवन्द मालिकोंके रहमपर जिन्दा रहें। अंग्रेज नाजियोंसे सिर्फ इसलिए घृणा करते हैं कि उन्होंने विश्वपर उनके प्रमुखको चुनौती दी है और कुमारी रैयबोन हमसे यह अपेक्षा रखती है कि हम, गुलामोंकी तरह, उनके लोगोंके हाथ इसलिए चूमें कि उन्होंने हमारे हाथोंमें हथकड़ियाँ डाल दी

है। कोई सरकार कैसी है, इसकी परख उसके प्रवक्ताओंके दावोसे नहीं, बल्कि जनता की खुशहालीमें उसके वास्तविक और प्रभावी योगदानसे होनी चाहिए।

अंग्रेज जो हमारे लिए अवांछनीय हैं और हमारे दिलोमें अपने लिए कोई जगह नहीं बना सके, इसका कारण उनका विदेशी होना उतना नहीं है जितना कि यह तथ्य है कि उन्होंने हमारे कल्याणका दायित्व लेने का दिखावा करते हुए उस महान् दायित्व के साथ विश्वासघात किया है, और अपने देशके कुछ पूँजीपतियोक्ती शैलियाँ मरने के लिए मारतके करोड़ो लोगोंकी खुशी कुर्बान की है। मेरा खयाल था कि शिष्ट अंग्रेज इन अपकारोपर कमसे-कम खामोश रहेगा और हमारी अकर्मण्यताके लिए हमारा आमार मानेगा। पर जब वह चोटके बाद अपमान भी करने लगता है और जलेपर नमक छिड़कने लगता है, तब तो शिष्टताकी सारी मर्यादा नष्ट हो जाती है।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन एनुअल रजिस्टर, जिल्द २, पू० २०२-३

#### परिशिष्ट ४

## बातचीत: क० मा० मुंशी तथा अन्य लोगोंके साथ र

१२ जून, १९४१ (सुबह ९ से ११ बजे तक)

- मुंशी: (क) युद्ध मारतकी सीमाओ तक पहुँच रहा है, और तब आन्तरिक व्यवस्थातन्त्र कमजोर पड़ जायेगा।
- (ख) पाकिस्तानका सिकय रूप सामने है और पूर्वनियोजित दंगोंके रूपमें कुछ समय तक इसी तरह रहेगा।

(ग) पाकिस्तान हमारी लाशोंपर ही स्वीकार किया जा सकता है।

- (घ) भारतकी स्वतन्त्रता और क्षेत्रीय अखण्डताके प्रश्न सैद्धान्तिक है। वास्त-विक प्रश्न तो यह है कि गड़बड़ीके आगामी सालोंमें क्या हममें अपने घरों और जान-मालकी घरेलू दंगोंसे रक्षा करने की पर्याप्त शक्ति होगी।
- (ङ) बहुत ही थोड़े कांग्रेसी आत्म-बलिदानके कार्यक्रमपर चल सकते हैं। इससे कांग्रेसमें केवल मिथ्याचार फैलेगा अथवा अन्य तत्त्व अधिक शक्तिशाली हो जार्येगे।
- (च) यदि कांग्रेसी इस तरह कोई हिस्सा नहीं ले सकते, तो वे क्या करे ? आज की सबसे तीव्र समस्यामें कोई भी कारगर भूमिका अदा करना उन्हें छोड़ देना होगा।

१. देखिप पृ० १२५। ७४ -२९ गांधीजी ने आम स्थितिके वारेमें चर्चा की।

(दोपहर १२ वजे)

गांघीजी: (क) मुझे सरकारके साथ कोई समझौता होने की आशा नहीं है। (ख) जिन्ना समझौता करेंगे, इसंकी सम्मावना नहीं है, और दंगे बढ़ते ही जायेंगे।

- (ग) आज कांग्रेसका जिस प्रकारका विद्यान है, उसके रहते दंगोमें उसका कोई स्थान नहीं हो सकता। साथ ही यदि कांग्रेस दंगोंकी स्थितिसे नहीं निपटेगी, तो वह समाप्त हो जायेगी।
- (घ) यदि मैं, चाहे थोड़े-से ही आदिमयोंके साथ, आजके रास्तेपर चलता हूँ, तो इससे यह हो सकता है कि जन-साघारण, मौजूदा तरीकोसे थक जाने पर और ऐसी स्थितिकी कल्पना की जा सकती है समस्याके समाघानके लिए मेरी खोज करे। हर हालतमें हम अपने पीछे ऐसी परम्परा छोड़ जायेंगे जो मिवव्यमें देशके लिए सहायक होगी।
- (ङ) हिंसात्मक आत्म-रक्षा अभियान संगठित करने के किसी भी प्रयाससे सरकारको कांग्रेसपर चोट करने का मौका मिल जायेगा। यह एक अखिल मारतीय समस्या है और उसे नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता।

मुंशी: मैं आपसे अलग होना नहीं चाहता। लेकिन आप मुझे वतायें कि मुझे अपनी सीमाओं और इस परिस्थितिको देखते हुए क्या करना चाहिए।

गांघीजी: जहाँतक कांग्रेसका सवाल हैं, कुछ लोगोंको स्वतन्त्र रूपसे कार्य करने के लिए कांग्रेससे बाहर हो जाना चाहिए। दंगोंमें कुछ करना इस संगठनके लिए खतरनाक होगा, क्योंकि उससे सरकारको इसे नष्ट करने का मौका मिल जायेगा। (दोपहर वाद ३ से ५ वजे तक)

राजेन्द्र बाबू तथा मथुरा बाबूने बिहारकी स्थितिका ब्योरा दिया। राजेन्द्र बाबू: (क) बिहारमें मेरा प्रमाव खत्म होता जा रहा है।

(ख) साफ बात यह है कि मुसलमान आकामक है।

(ग) हिन्दू भी उतने ही आक्रामक हैं और अपनेको संगठित कर रहे हैं।

(घ) हिन्दू महासमाका असर वढ़ता जा रहा है।

(ङ) शान्ति-सेनाकी बात कांग्रेसियोंके गरुं नहीं उतरती। उसे माननेवाले बहुत थोड़े लोग मिलेंगे।

गांचीजी: मैं मानता हूँ कि शान्ति-सेनाका विचार कांग्रेसियोंको आकर्षित नहीं करेगा। महादेवको भी अहमदावादमें अवतक अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं मिली है।

श्री गोपीचन्द मार्गवने पंजावकी स्थितिका विवरण दिया।

राजेन्द्र वावू: मेरे खयालसे ये प्रारम्मिक मुठमेड़ें हैं और यह देखने के लिए हैं कि मुसलमान समाज उनसे कहाँतक प्रमावित होता है। यह लड़ाई सम्मवतः शीघ्र ही पूरी ताकतके साथ शुरू हो जायेगी। मुंशी: यह गृहयुद्ध है। कांग्रेसको इसमें कारगर मूमिका अदा करनी चाहिए। राजेन्द्र बाबू: मुसलमानोंके अत्याचारोकी निन्दा करने के लिए एक भी मुसलमान नेता सामने नही आ रहा है और न ही वह यह कहने में शामिल होगा कि हमें अपनी कुर्बानी देनी चाहिए।

> १३ जून, १९४१ (सुबह ९-३० से ११ बजे तक)

गांघीजी: (क) कांग्रेस एक संस्थाकी हैसियतसे हिंसात्मक आत्म-रक्षा अभियान संगठित नही कर सकती।

- (ख) साथ ही, कांग्रेसके लिए यह आवश्यक हो सकता है कि वह उन लोगोंकी कोशिशोंको बढ़ावा दे जो अन्त करणसे यह मानते हैं कि यह 'लड़ाई' किसी अन्य तरीकेसे रोकी जानी चाहिए।
- (ग) वह हमेशा इस बातपर जोर दे सकता है कि ताकतका प्रयोग आत्म-रक्षाके लिए अथवा शालीन ढगसे किया जाये। उदाहरणके लिए, देवालयों, औरतों और बच्चोंको किसी मी हालतमें हाथ न लगाया जाये।

तब डॉ॰ गोपीचन्दने पंजाबकी स्थिति बताई।

पंजाबके उत्तरी हिस्सेमें मुख्यतः मुसलमान, मध्यमें सिख और पूर्वमें हिन्दू रहते हैं। इसलिए उनमें मुक्किलसे ही कोई समानता है। लेकिन असली झगड़ा तो खेति-हर और गैर-खेतिहर लोगोंके बीच है। मुसलमानोके रवैयेके बारेमें चर्चा हुई।

(दोपहर ढाई बजे)

अहिंसात्मक प्रतिरक्षाके सिद्धान्तमें, जहाँतक कि (क) अन्तर्राष्ट्रीय मामलों और (ख) घरेलू विवादोंका सम्बन्ध है, संशोधन करने के बारेमें काग्रेसी मुसलमान नेताओकी प्रतिक्रियापर चर्चा हुई।

गांधीजी: मौलानाने यह मान लिया है कि (क) में तो हिंसात्मक प्रतिरक्षा

आवश्यक है, लेकिन (ख) में उन्हें वह मंजूर नही है।

डाँ० गोपीचन्द मार्गव: आसफ अलीका कहना था कि अहिसात्मक आतम-रक्षाके बारेमें मोगीलालको लिखे गांघीजी के पत्रमें कांग्रेस-सिद्धान्तकी सही व्याख्या नही थी। कांग्रेस-सिद्धान्तका सम्बन्ध तो केवल स्वराज्य-आन्दोलनसे है, आन्तरिक मामलोंसे नही।

गांघीजी: लेकिन आन्तरिक मामलोंमें हिसात्मक प्रतिरक्षाके प्रयोगके खिलाफ

उन्होंने मौलानाका पक्ष लिया था।

मुंशी: वे नहीं चाहते कि कांग्रेसी हिन्दू हिंसात्मक तरीकेसे आत्मरक्षा करें; और वे मुसलमानोंको हिंसात्मक आक्रमणसे नही रोक सकते। इसका नतीजा यह होगा कि हिन्दू विमाजित हो जायेंगे और गृह-युद्धमें मुसलमानोंका विरोध नहीं कर सकेंगे। राजेन्द्र बाबू: जो मुसलमान कांग्रेसी इस समय जेलसे बाहर है उनसे सलाह-मशविरा किया जा सकता है।

गाघीजी : यह जरूरी नहीं है। खानसाहब शुद्ध अहिंसाके पक्षमें हैं, मौलाना भी इसके पक्षमें हैं।

बम्बईकी स्थितिपर विचार किया गया।

गांघीजी : मैने पूरे सवालपर विचार किया है। मुंशीके लिए यह रास्ता है:

- (क) यदि वे जी-जानसे अपनेको शान्ति-सेनाके कार्यमें झोंक सकें, तो वे उसे मली-माँति कियाशील बना सकेंगे।
- (ख) यदि वे ऐसा नहीं कर सकतें, तो वे कुछ महीनेकें लिए हिमालय या अन्य किसी स्थानपर जा सकते हैं, और स्थितिपर निगरानी रखते हुए यह पता लगा सकते हैं कि उनका मन किस दिशामें कार्य कर रहा है और वे पहला मार्ग अपना सकते हैं या नहीं।
- (ग) यदि दे इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि पहला मार्ग असम्भव है, तो उन्हें कांग्रेस छोड़ देनी चाहिए और हिन्दुओंको हिंसात्मक आत्म-रक्षाके लिए संगठित करना चाहिए। तुम चाहे जो मार्ग अपनाओ, हमारे व्यक्तिगत सम्बन्ध वैसे ही रहेंगे और मैं तुम्हारे बारेमें अब-जैसी ही दिलचस्पी लेता रहूँगा।

मुंशी : आप जानते ही है कि आपके साथ मेरा कितना लगाव है, अत: मै आपसे अलग होना नही चाहता। अपनी पत्नीके साथ मैं इन विकल्पोंपर विचार करूँगा और अपना फैसला आपको बताऊँगा। लेकिन एक चीज निश्चित है कि आप जैसा कहते हैं मैं उस तरह कर्म-विरत नही हो सकता। मैं वर्षोसे सार्वजनिक जीवनमें हूँ। ईश्वरकी यही इच्छा थी कि इस घड़ीमें, जबिक मैं अपने देश, समाज और संस्कृतिको खतरेमें महसूस कर रहा हूँ, मैं जेलसे बाहर रहूँ। अतः यदि अब मैं कर्त्तेच्यसे पीछे हटता हूँ तो अपनेको कभी माफ नही कर सकूँगा। (यहाँ मैं रो पड़ा।)

उसका सवाल ही पैदा नहीं होता। फिर भी यदि आप सोचते हैं कि कांग्रेस अथवा देशके हितके लिए मेरा सार्वजनिक जीवनसे अलग हो जाना जरूरी है तो मैं इसके लिए राजी हूँ कि:

(क) वापस जेल चला जाऊँ; या

(स) सब-कुछ छोड़कर केवल अपने घन्धेमें लग जाऊँ।

गांचीजी: मैं नहीं चाहता कि तुम जेल जाओ या सब-कुछ छोड़ केवल वकालत करने लगो।

मुशी: तब तो जहाँतक पहले मार्गका सवाल है, मेरी समूची आत्मा इस विचारका विरोध करती है। यदि मैं उसे स्वीकार करता हूँ, तो मुझे उसमें पूरी तरह लग जाना चाहिए और सबसे पहले अपने-आपको प्रस्तुत करना चाहिए। मेरा खयाल है कि मैं वैसा नहीं कर सकता, क्योंकि (क) मुझमें उतनी आत्मिक शक्ति नहीं है; और (ख) मैं जानता हूँ कि वैसा करना व्यर्थ होगा और ढोंगी बनकर मैं वह काम हाथमें नहीं लूँगा। मेरी अन्तर्प्रेरणा कहती है कि मेरा देश और मेरी संस्कृति खतरेमें है। उनके लिए मैं जितना भी कर सकता हूँ, संघर्ष करना चाहता

हूँ, हालाँकि मैं यह जानता हूँ कि वह बहुत अधिक नही होगा, क्योकि कोई कारगर कार्य करने के लिए मेरे पास न तो स्वास्थ्य है और न योग्यता ही है। लेकिन पहले मार्गके लिए आवश्यक आत्मिक शक्ति अजित करने के लिए मैं संघर्ष करता रहुँगा।

- (ग) बम्बईके कांग्रेसियोंको अब भी यह विश्वास है कि गांधीजी कोई चम-त्कार करेंगे और कांग्रेस सत्तामें आ जायेगी, इसलिए उन्हें अपने निहित स्वार्थ वर-करार रखने चाहिए।
  - (घ) शायद ही कोई व्यक्ति अपनी कुर्बानी देनेवाला मिलेगा।
- (ङ) कई कांग्रेसियोंने उन नये संगठनोकी सहायता की है और अब भी कर रहे हैं जो हिंसात्मक तरीकेंसे अपने क्षेत्रोकी रक्षा करते हैं।
- (च) मुसलमानोंके पास अपनी मसजिदें और अपना संगठन है। दंगोंमें शुरूके कुछ दिन हिन्दू नुकसानमें रहते है।
- ं (छ) वस्वईमें शान्ति-सेना सफल नहीं होगी, क्योंकि वह एक औद्योगिक नगर है, जहाँ एक ऐसा अपराधी वर्ग रहता है जिसे किसीकी भी जान लेने में कोई आपत्ति नही होगी।

गांघीजी: तुम्हारी स्वतन्त्रता खुद कारगर हो सकती है।

क्रुपलानी: इस दशामें यह आवश्यक है कि कुछ कांग्रेसी बाहर निकलकर वह कार्य करें जो यह संस्था नहीं कर सकती।

गांधीजी: यदि मुंशी पहला मार्ग नही अपना सकते, तो यह काग्रेसके हितमें होगा कि वे कांग्रेससे बाहर चले जायें और उन्हें जैसा करने की प्रेरणा मिले वैसा करें। मैं उनकी स्थिति स्पष्ट करने के लिए एक वक्तव्य जारी कर दूंगा। उन्हें अपने कांग्रेसी मित्रोके साथ भी विचार-विमर्श करना चाहिए और यह मालूम करना चाहिए कि काग्रेससे बाहर जाने में और प्रतिरक्षा अभियान संगठित करने में वे उनका साथ देंगे या नही।

डाँ० गोपीचन्द भागवने भोगीलालके पत्रका वह अंश पढ़कर सुनाया जिसमें

स्थानीय विकल्प सुझाया गया था।

गांघीजी का झुकाव इस विचारकी ओर था कि बम्बईके कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को इस वातपर सोच-विचार करना चाहिए कि वे हिसात्मक तरीकेसे आत्म-रक्षा करने का अधिकार चाहते हैं अथवा नहीं। राजेन्द्र वाबूने बताया कि इससे कांग्रेसकी एकता नष्ट हो जायेगी।

मुंशी इस बातसे सहमत थे और यह विचार त्याग दिया गया।

गांधीजी (मुंशीसे): तुम बम्बई जाओ और अपने मित्रों आदिसे मिलकर छौट आओ। तब हम अन्तिम रूपसे कोई निर्णय करेंगे।

मुंशी: यह एक नया विचार है। कांग्रेससे बाहर जाना इतना आसान नहीं है। इस मामलेमें मुझे अपनी पत्नीके साथ विचार-विमर्श करना होगा। गांघीजी: मैंने उससे कह दिया है कि तुम जो भी काम करो, उसमें वह तुम्हारी मदद करे।

मुंशी : लेकिन उसे शायद मेरी अपेक्षा आपके साथ रहना अधिक पसन्द हो।

गांघीजी : मैं जानता हूँ, वह तुम्हारे ही साथ रहेगी।

[अंग्रेजीसे]

पिल्प्रिमेज दु फ्रीडम, पृ० ४११-१५

#### परिशिष्ट ५

## क० मा० मुंशीका वक्तव्य र

मुझे महात्मा गांघी तया कई मित्रोंके साथ देशकी वर्त्तमान स्थितिपर विस्तार-पूर्वेक चर्चा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पूरा विचार करने के बाद मुझे लगता है कि देश-हितका यह तकाजा है कि आत्म-रक्षाके सवालपर मेरे जो विचार है उनके रहते मुझे अब और कांग्रेसका सदस्य नहीं रहना चाहिए। कोई अन्य मार्ग अपनाना न तो मेरे लिए सम्मानजनक होगा और न उससे देश अथवा कांग्रेसके प्रति न्याय होगा।

मेरे स्वास्थ्यकी दशा इस समय अनिश्चित और गिरी हुई होने के कारण, गांधीजी मेरे सत्याग्रह करने की बातपर विचार करने को तैयार नहीं है। और अपने में आवश्यक आत्मिक शक्ति न होने के कारण, मैं बम्बईमें शान्ति-सेनाका कार्य करने की सोच नहीं सकता था। साथ ही अपनी आँखोंके समक्ष खेळी जा रही इस रक्त की होळीको रोकने मे मदद न देकर अन्य किसी कार्यमें लगना मेरे लिए कर्त्तव्य-विमुखता हो होगी। मैं समझता हूँ कि यदि मैं आज ईश्वरकी अनुकम्पासे प्रदत्त प्रकाशमें अपने कर्त्तव्य-पथका अनुगमन नहीं करता, तो भारतके सामने जो अन्वकारमय दिन आनेवाले हैं उनमें मैं देशके लिए किसी भी कामका न रह जाऊँगा।

गांघीजी तथा अनेक कांग्रेसी नेताओं साथ मेरा जिस तरहका व्यक्तिगत सम्बन्ध है, उसके कारण मेरे लिए यह निर्णय किंठन हो जाता है। परन्तु, जो गांघीजी की दृष्टिमें कांग्रेसकी आस्थाका मुख्य सूत्र है, यदि मैं उसीपर मनमें शंका रखते हुए कांग्रेसमें रहा तो मैं उनके विश्वासके योग्य नहीं रहूँगा। मुझे एकमात्र सन्तोष इस बातका है कि गांघीजी ने सदाकी तरह अपनी उदारता दिखाते हुए, एक ऐसा निर्णय लेने में मेरी मदद की है जो तात्कालिक कर्त्तव्यके सम्बन्धमें मेरे अपने दृष्टिकोणके अनुख्य है।

[ अंग्रेजीसे ]

पिल्प्रिमेज दू फ्रीडम, पू० ४१६-१७

#### परिशिष्ट ६

### "श्री गांघीको स्वीकारोक्ति"।

'श्री गांधीने एक अमेरिकी समाचार-एजेन्सीके साथ अपनी मेंट-वार्तामें एक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण स्वीकारोबित की है। जब उनसे यह पूछा गया कि उनके जो अनुयायी इस समय जेलमें है उनमें से कितने उनके इस विश्वासको हृदयसे मानते हैं कि हिंसा कभी भी ठीक नहीं हो सकती, तो उन्होंने उत्तर दिया कि "मैं यह कहने पर आपत्ति नहीं करूँगा कि ज्यादातर लोग केवल नीतिके तौरपर अहिंसक है। यह मेरे आन्दोलनका सबसे कमजोर अंग है...।" श्री गांधीके सविनय अवज्ञा आन्दोलनके निष्पक्ष प्रेक्षकोंको तो शुरूसे ही ऐसा सन्देह था, और हाल में ही उनके इस सन्देहकी पुष्टि श्री मुंशी और डॉ॰ सत्यपाल जैसे लोगोंके गांधीजी के समुदाय से अलग हो जाने से हो गई है। श्री गांधीने अब स्वयं सार्वजनिक रूपसे, और पहली बार, यह मान लिया है कि अहिंसाके नारेका राजनीतिक तौरपर अनुचित लाम उठाया जा रहा है। फिलतार्थमें, उन्होने यह भी मान लिया है कि इस प्रकारसे अनुचित लाम उठाना उन्हों नापसन्द है और वस्तुत: इससे उनका आन्दोलन कमजोर होता है।

शुरूमें जब आन्दोलन छेडा गया था, तो व्यापक रूपसे यह विश्वास किया जाता था कि जो लोग श्री गांघीकी अहिंसाकी व्याख्यासे पूर्णतया सहमत है, केवल वे ही स्वयंको जेल जाने के लिए पेश करेंगे। फिर भी, जैसा कि अब हम जानते है, ज्यादातरने अपने नाम अहिंसामें अपने विश्वासके कारण नही, बल्कि "केवल नीतिके तौरपर" पेश किये। उनमें से कुछने पार्टी-संगठनमें निष्ठाकी मावनावश, और दूसरोंने सन्दिग्ध प्रयोजनोकी सिद्धिके लिए ऐसा किया। यह असंगति पैदा होने देने में सबसे ज्यादा दोष श्री गांघीका ही है और वे उससे बच नहीं सकते। सत्या-प्रहियोंके नाम मंजर करने के लिए व्यक्तिगत रूपसे वे ही जिम्मेदार है। और यह मानना भी तर्कसगत होगा कि कमसे-कम कुछ मामलोमें तो उन्होने ऐसे नामोंकी स्वीकृति दे दी जिनके बारेमें उन्हें मालुम था कि वे उनकी निर्घारित क्रतींको पुरा नहीं करते। यदि श्री गांधीका आन्दोलन ऐसे लोगोकी जेलमें मौजूदगीके कारण, जो "केवल नीतिके तौरपर" जेल गये है, कमजोर पड गया है, तो श्री गांधीने यह सिद्ध कर दिया है कि वे स्वयं ही अपने सबसे बड़े शत्रु है। या तो उन्होंने सत्याप्रहके अपने नियमोंकी व्याख्यामें ढील की है, अथवा जिन लोगोंके नाम पेश किये गये उनमें से ज्यादातरने उन्हें घोखा दिया है। इनमें से कौन-सी बात सही है, यह तो श्री गांघी ही ठीक बता सकते है।

[अंग्रेजीसे] टाइम्स ऑफ इंडिया, २९-७-१९४१

१. देखिय प्र० २१९ ।

२. जिन्होंने १४ जुलाई, १९४१ को कांग्रेस दलसे स्थागपत्र दे दिया था।

## सामग्रीके साधन-सूत्र

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद । नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली । राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली ।

राष्ट्रीय गांघी संप्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली: गांघी-साहित्य और गांघीजी से सम्बन्धित कागज-पत्रोका केन्द्रीय संप्रहालय तथा पुस्तकालय।

विश्वभारती पुस्तकालय, शान्तिनिकेतन।

साबरमती संग्रहालय, अहमदाबाद : गांघीजी से सम्बन्धित पुस्तकों और कागजातका पुस्तकालय तथा अभिलेखागार।

'कल्कि': मद्राससे प्रकाशित तमिल साप्ताहिक।

'खादी-जगत्': कृष्णदास गांधी द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक। इसका प्रथम अंक २५ जुलाई, १९४१ को प्रकाशित हुआ था।

'गुजरात समाचार': अहमदाबादसे प्रकाशित गुजराती दैनिक।

'टाइम्स ऑफ इंडिया': बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'बॉम्बे क्रॉनिकल': बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'सर्वोदय': गांघी सेवा संघके तत्त्वावधानमें प्रकाशित तथा काका कालेलकर और दादा धर्माधिकारी द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक।

'हिन्दू ': मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

उड़ीसा सरकार।

तमिलनाडु सरकार।

प्यारेलाल पेपसं : नई दिल्लीमें श्री प्यारेलालके पास सुरक्षित कागजात।

बम्बई सरकार।

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी : स्वराज्य आश्रम, बारडोलीमें सुरक्षित । मैसर सरकार।

'एन एथीस्ट विद गांधी' (अंग्रेजी) : जी० रामचन्द्रराव, नवजीवन पिक्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९५१।

'(ए) डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस' (अंग्रेजी) : रिचर्ड बी० ग्रेग, नवजीवन पव्लिर्शिग हाउस, अहमदाबाद, १९४१।

'दीनबन्धुको श्रद्धांजलियां': सम्पादक: प्रमुदयाल विद्यार्थी; प्रकाशक: पुस्तक मण्डार, लहेरियासराय और पटना (बिहार), १९४१।

'पाँचचें पुत्रको बापूके आकीर्वाद': सम्पादक: काकासाहब कालेलकर, जमनालाल बजाज ट्रस्ट, वर्षा, १९५३।

- पिल्प्रिमेज टुफीडम' (अंग्रेजी): क० मा० मुंशी; प्रकाशक: मारतीय विद्या-मवन, वस्वई, १९६७।
- 'प्रैक्टिकल नॉन-वायर्लेस' (अंग्रेजी) : किशोरलाल घ० मशरूवाला, नवजीवन पव्लिशिंग हाउस, अहमदावाद, १९४१।
- 'वापुना पत्रो-४: मणिबहेन पटेलने' (गुजराती): सम्पादिका: मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।
- 'वापुना पत्रो-२: सरदार वल्लमभाईने' (गुजराती): सम्पादिका: मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५२।
- 'वापुनी प्रसादी' (गुजराती): मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद, १९४८।
- 'वापू कंवर्सेशन्स ऐण्ड कॉरेस्पॉण्डेंस विद महात्मा गांघी' (अंग्रेजी) : एफ० मेरी बार, इन्टरनेशनल वृक हाउस लि०, वम्बई, १९४९।
- 'वापू: मैने क्या देखा, क्या समझा?': रामनारायण चौघरी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद, १९५४।
- 'वापूकी छायामें': बलवन्तसिंह, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद, १९४७। 'वापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष': हीरालाल शर्मा, ईश्वरशरण आश्रम
  - मद्रणालय, प्रयाग, १९५७।
- 'विल्डर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया . एस० श्रीनिवास अय्यंगार' (अग्रेजी) : के० आर० आर० शास्त्री, प्रकाशन विभाग, सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय, मारत सरकार, १९७२।
- 'मध्य प्रदेश और गांघीजी': सूचना और प्रकाशन निदेशालय, मध्य प्रदेश, भोपाल,
- 'महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांघी', जिल्द ६ (अग्रेजी) : डी० जी० तेंदुलकर, विट्ठलभाई के० झवेरी और डी० जी० तेंदुलकर, वम्बई, १९५३।
- '(द) हिस्ट्री ऑफ द इंडियन नेशनल कांग्रेस', जिल्द २ (अग्रेजी) : डॉ॰ पट्टामि सीतारामय्या, पद्मा पव्लिकेशन्स लि०, बम्बई, १९४७।

### तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१६ अप्रैल, १९४१ - १० अक्तूबर, १९४१)

१६ अप्रैल: गांघीजी सेवाग्राममें रहे।

१८ अप्रैल: अहमदाबादमें साम्प्रदायिक दंगे शरू।

१९ अप्रैल : गांघीजी ने 'टाइम्स ऑफ इंडिया'को वक्तव्य दिया।

२५ अप्रैल : एल० एस० एमरीके माषणके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

२७ अप्रैल: तीन दिनका उपवास तोड़ा।

१ मई: 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के सम्पादकको पत्र लिखा।

२ मई: जे॰ पी॰ त्रिवेदीकी शवयात्रामें शामिल हुए।

४ मई : साम्प्रदायिक दंगोंके दौरान अपने कर्त्तव्यका पालन करने के लिए कांग्रेसजनोंसे अपील की।

७ मई: बिहारमें हिन्दू-मुस्लिम दंगोंके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

१५ मई: 'खादी-जगत्' के विषयमें लेख लिखा।

१९ मई: श्रीनिवास अय्यंगारका निधन।

१८ मईसे २१ मई: गांघीजी ने मृदुला सारामाई और गुलजारीलाल नन्दासे बातचीत की।

२२ मई: 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको मेंट दी।

२३ मई: वर्घामें राष्ट्रीय युवक प्रशिक्षण शिविरमें भाषण दिया।

९ जून: समाचारपत्रोंको दिये वक्तव्यमें बिहारमें मुस्लिम परिवारकी हत्याकी मत्सैना की।

१२ जून : क० मा० मुंशी, राजेन्द्रप्रसाद और गोपीचन्द मार्गवके साथ बातचीत की।

१३ जून : बातचीत जारी रही।

१५ जून: समाचारपत्रोंको दिये वक्तव्यमें गांधीजी ने बताया कि क० मा० मुंशीको कांग्रेससे इस्तीफा देने की सलाह उन्होंने क्यों दी।

६ जुलाई: समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

१२ जुलाई: अब्दुल गफ्फार खाँके साथ बातचीत की।

२२ जुलाई: सरकारी विज्ञाप्तिके सम्बन्धमें 'हिन्दू'के प्रतिनिधिको मेंट दी।

२३ जुलाई: ए० एस० एन० मूर्ति को मेंट दी।

३१ जुलाई: 'टाइम्स ऑफ इंडिया' को पत्र लिखा।

१ अगस्त : वर्घामें खादी विद्यालयका उद्घाटन किया।

४ अगस्त : समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

५ अगस्त : समाचारपत्रोंको वक्तव्य दिया।

७ अगस्त : रवीन्द्रनाथ ठाकुर दिवंगत हो गये। रवीन्द्रनाथ ठाकुरको गांघीजी ने श्रद्धांजलि अपित की।

१२ अगस्त : रवीन्द्रनाथ ठाकुरके श्राद्ध-दिवसपर समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया।

२४ अगस्त : 'ए डिसिप्लिन फॉर नॉन-वायलेंस' के लिए प्रस्तावना लिखी। भारत-बर्मा आव्रजन समझौतेके सम्बन्धमें समाचारपत्रोको वक्तव्य दिया।

२९ अगस्त : अ० मा० ग्रामोद्योग संघकी बैठकमें शामिल हुए।

३० अगस्त : 'सर्वोदय' में रवीन्द्रनाथ ठाकुरको श्रद्धांजिल अपित की।

३१ अगस्त : 'प्रैक्टिकल नॉन-वायलेंस' के लिए प्रस्तावना लिखी।

१ सितम्बर: फूलचन्द कस्तूरचन्द शाहकी मृत्युपर तार द्वारा सम्वेदना-सन्देश मेजा।

५ सितम्बर: हरि विष्णु कामथको भेंट दी।

११ सितम्बर: 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको मेंट दी।

१४ सितम्बर : अल्लाबल्स, आर० के० सिषवा और बर्माके शिष्टमण्डलसे मेंट की।

१६ सितम्बर: अल्लाबस्य और आर० के० सिघवासे मेंट की।

१८ सितम्बर: विक्रम संवत्के अनुसार गांधीजी का जन्म-दिवस मनाया गया। गांधीजी ने सेवाग्राममें भाषण दिया और कताईमें शामिल हुए। अहमदाबादकी जनताके नाम सन्देश मेजा।

२४ सितम्बर: समाचारपत्रोंको दिये वक्तव्यमें अप्रमाणित खादी-विक्रेताओके विरुद्ध अनुताको सावधान किया।

३० सितम्बर: नालवाड़ीमें गोसेवा संघकी समामें भाषण दिया।

१ अक्तूबर: देशी राज्योंकी जनताको सन्देश मेजा।

२ अक्तूबर: गांघीजी का जन्म-दिवस मनाया गया। गांघीजी ने समामें भाषण दिया।

७ अक्तूबर: अ० मा० चरखा संघकी बैठककी अध्यक्षता की।

१० अक्तूबर: सेवाग्राममें।

#### शीर्षक-सांकेतिका

उत्तर: ब्रिटिश महिलाओं की अपीलका, १२७-२९; — हिन्दू के संवाददाताको, ११८; —फैंक मोरेसके प्रश्तोके, १८-२० टिप्पणी, १७२

तार: इपितखारुद्दीनको, २०९; -ओबेंदुल्ला को, १३३; (रवीन्द्रनाथ) ठाकुरको, १८२; -(जमनालाल) बजाजको, १६२, २७६, २८०, २९०, ₹00; –(गोपीनाथ) बारदलईको, १३९; -(घनश्यामदास) बिड्लाको, ३८९; -मथुरादास त्रिकमजीको, 888; —मुल्कराजको, २३; –(ईश्वरलाल) व्यासको, १३८; -(रघुनन्दन) शरण -शिवानन्दको, ३१४; को, ४१६; -श्रीनारायण जयनारायणको, २९६; -(तेजबहादुर) सत्रूको, २८; -हितैषी औषघालयके मालिकको, 820;

—हैदराबादके निजामको, २ (एक) पत्र, ४०८

पत्र: अग्निहोत्रीको, ९३-९४; — (उमावेवी)
अग्नवालको, ३१९; — (आर०) अच्युतन्को, ४२१; — (बलीबहुन म०) अडालजाको, १३५; — (जोहरा) अन्सारीको,
१४४; — (फरीद) अन्सारीको, ११५१६, १४६, ३१२; — अश्वाहमको, ११०;
— (डॉ०) अमृतुको, १०; — अमृतकौरको,
९९, १०१, १०४, १४९, १५१, १५३५४, १५५, १५५, १६३-६४, १६७-६८,
१६९, १७१-७२, १७५, १८०, १८२८३, १८४, १८६, १८८, १८९, १९१-६,

२०८-९, २१५, २१६, २२०, २२२, २२४-२५, २२७, २३३, २३६-३७, २३९, २४३, २४४-४५, २४७, २५०, २५३, २५७, २६१, २६३-६४, २६७, २६९, २७१-७२, २७३, २७९, २८०-८१, २३१, २९७, ३००-१, ३०६, ३११, ३१५, ३२१-२२, ३२३, ३२६-२७, ३३२, ३३६, ३४३, ३४५-४६, ३५१, ३५३, ३५४, ३५७, ३६१, ३६३, ३६९, ३७२, ३७३, ३७५, ३७८, ३८१, ३८४, ३८९, ३९२. ३९५, ३९८-९९, ४०७, ४०८, ४१७, ४२१, ४२४, ४२९, ४३३, ४३८-३९, ४३९-४०; -(एस०) अम्बुजम्मालको, १२३-२४, ४१७-१८; -(स्वाजा खुर्शेद) आलमको, ४२८; -(छीलावती) आसरको, ४८, ६३, ७३, १५४, १६८, २२१, ३०४, ३०८; -इफ्त-खाबद्दीनको, २१०-११; −(मिर्जा) इस्माइलको, २००, २५७, ३३३, ४२४-२५; -उत्तिमचन्द गंगारामको. २७६; -(हरिमाऊ) उपाध्यायको, १३५, २१८; -(शौकत) उस्मानीको, ३५९; →(प्रेमाबहन) कंटकको, ५५, १५९-६०; --कन्हैयालालको, १३९; -(इकबालकृष्ण) कपूरको, ३५८; -(सच्चिदानन्द) करकलको, ३२३; -(डी० पी०) करमरकरको, १३८; -(शार्दूळसिंह) कवीश्वरको, २३८; -(माघवदास गो०) कापड़ियाको, १६१; -(चन्दन शं०) कालेलकरको,

४३०; -(दत्तात्रेय वा०) कालेलकरको, २४, २६८, २९४, ३५५, ३८१-८२, ३८७; -(जे॰ सी॰) कुमारप्पाको, २२, २५८, २७१, ३०८, ३४४, ३९६; -(भारतन्) कुमारप्पाको, ८६; -(गुलाम रसूल) कुरैशीको, ३९३; -(शुएव) कुरैशीको, ७५, ११६-१७; -कृटणचन्द्रको, ३७, ५९, ६२, ७४, ९७, १०४, १०६, ११४, १२९, २०५, २१३, २१७, ६७२, ३२०, ३२६, ३४०, ३५३, ३८८, -(आर०) कृष्णमृतिको, ३४२-४३; -कोतवाल-को, २४४; -(जी० एल०) खानोल-करको, ३०२; - ख्वाजाको, ७-८; -(कस्तूरवा) गांधीको, ४९; -(देवदास) गांघीको, ५२, ८३, २६३, २७५, २८८, ३६४-६५, ४००; -(नारण-दास) गांबीको, ४९, १६०, १८५, १९३, २१२, २२३, २२५-२६, २४६, ३०६, ३३९, ४२३; -(पुरुपोत्तम) गांघीको, ४६; -(मणिलाल और सुशीला) गांघीको, १७७, ४१३; -(लक्ष्मी) गांधीको, ५०, २१४, ३६५; -(सरस्वती) गांघीको, ३४९; -(सुशीला) गांधीको, २५१-५२; -(महावीर) गिरिको, १३७; -(इन्द्रमती ना०) गुणाजीको, १; -(अरुणचन्द्र) गुहको, १२-१३, १५८, २५८; -(डी० के०) गोसावीको, १११, ११८-१९, १७०; -(अहैतकुमार) गोस्वामीको, २९०; -(प्रफुल्लचन्द्र) घोषको, ३०५, ३५८; -(अतुलानन्द) चक्रवर्तीको, ३४७: -चक्रैयाको, ४३१: ⊷(अमृतलाल) चटर्जीको, २९-३०, ३३-३४, ४५-४६, ५०-५१, ७२-७३, ७४, ८०, ८९, ९४-९५,

१०५, १४०, १५३, २०६, २४७-४८, ३७९, ४२९; -(आमा) चटर्जीको २०७;-(रत्नमणि) चटर्जीको, २२८; -(बीणा और आमा) चटर्जीको, १०६; -(शैंलेन्द्रनाथ) चटर्जीको, ५८, २३७, २९८, ३०१; -चन्देलको, १०८, २९१; -(ब्रजकृष्ण) चाँदी-वालाको, ५७, ४१४; -(के० ए०) चिदम्बरम्को, २४२; -(पोपटलाल) चुडगरको, ४२८; -(टी० एस०) चोकलिंगम्को, ३४५; -(गारदावहन गो०) चोखावालाको, १६९, २०२, २१७, २५२, २८९-९०, ३६४; -(अन्नदाशंकर) चौषरीको, ९२, २४८-४९, ४२६; -(रामनारा-यण) चौघरीको, २७९; -(मुजंगी-लाल का०) छायाको, ४७; -जकात-दारको, २७७; -(प्रमावती) जकात-दारको, ३९१; -जीवराजको, ४००; -(पुरुपोत्तम का०) जेराजाणीको, २५५; -(विट्ठलदास) जेराजाणीको, २४०, ३८२-८३ -(गुलावचन्द) जैनको, ७७-७८; -(मार्गरेट) जोन्स को, २९, १०७, १०८, ११३, १६४, २९९, ४३०; - टाइम्स ऑफ इंडिया के सम्पादकको, २५-२६; - टाइम्स ऑफ इंडिया को, २१९; -(अनन्तराय) ठक्करको, १९६; -(अमृतलाल वि०) ठक्करको, ७६-७७, १७९, १९४; -(रथीन्द्रनाथ) ठाकुरको, २११, ३३७, ३९८, -ताराचन्दको, २७३-७४; -(सी० ए०) तुलपुलेको, ९२, १७३; -(रेहाना) तैयवजीको, २६८; -तैयवुल्लाको, ४०९; -(सारंगघर) दासको, ६५, ३३०-३१, ३८५; -(सतीशचन्द्र) दासगुप्तको,

२१, १४८; -(हेमप्रमा) दासगुप्तको, ३६; -(इन्द्रवदन) दिव्येन्द्रको, २२६, २७४; -(दिलखुश)दीवानजीको, १५७, १९४-९५; -(हर्षदा) दीवानजीको, ३०३; -दुनीचन्दको, ५-६, १८४-८५; -(घीरूमाई मृ०) देसाईको, १४३, १४८, १७६, २९९, ३३५, ४०१; -(मुलामाई झ०) देसाईको, १४७; -(वालजी गो०) देसाईको, ७५, २०८, २३८; -दोड्डमतीको, ४०९; -धीरेन्द्र को, ८८-८९; -(पी॰ पी॰ एम॰ टी॰ पोन्नूसामी) नाहारको, ४३९; -(अमृतलाल) नानावटीको, २००, ३२५; -(इन्दिरा) नेहरूको, ३१४; -(रामेश्वरी) नेहरूको, ६२, ९८, १३०, १८१, २५९, २८२; -(विजया म०) पंचोलीको, २४०, २८८, ३७६; -(भगवानजी पु०) पंड्याको, ३१६, ३२४, ३३८; -(डॉ० नायूमाई) पटेल को, ५१, ३१७; -(डाह्यामाई) पटेल को, ४५: -(मणिबहन) पटेलको, ४३, . ५३-५४, ७९, २५४, ३१३, ३२२; -(वल्लभभाई) पटेलको, ४४, १०९, २६५-६६, २७८, ३१२-१३, ३५६-५७, ३७०, ३७३, ३७९-८०, ३९०, ३९३, ४१२, ४२२, ४२७, ४३७-३८, ४४२; -(प्राणकृष्ण) पढियारी को, ३७१; -(विजयलक्ष्मी) पण्डित को, ४०३; --(नरहरि द्वा०) परीखको, ११, ३८-३९, १७८, ३१६, ३७२, ३८७; -(कुंवरजी खे०) पारेखको, ९६, २२६, ३३४; -(टी०) पाल-निवेलुको, २६२; -(सी० माघवन) २६२; -पुरुषोत्तमदास पिल्लैको, त्रिकमदासको, ३४; -(सूरजराम) पुरोहितको, ३९; - पृथ्वीसिहको, ४७,

९०, २२२, ३६०, ३७४, ४१४; -(मीठूबहुन) पेटिटको, ८८, १३६; -पोखराजको, ३२०: -प्रमावतीको. २७, ५८, ७७, १००, १६२, २४५; -प्रमुलालको, १००; -बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षको, ६४: -(जमनालाल)बजाजको, १८३, १९२, २०३, २१६, २६५, २१७, २८९, २९३,४१५; -(रुक्मिणी) बजाजको, १२; -(सावित्री) बजाजको, ९८; -बलवन्तसिंहको, ७९, ३००; -(एफo मेरी) बारको, ३१७-१८: -(गोपीनाय) बारदलईको, ३७-३८, १४४-४५, १५७, -(घनश्यामदास) बिङ्लाको, ३६-३७, १०९-१०, ११४, १९७, ३५२-५३, ३७७, ३९१, ३९४, ४१५; -(जुगल-किशोर) बिड्लाको, ३२०; -(पुरातन) बुचको, ९, ११,८४, १०३, ३२४, ३३३; -बैक ऑफ नागपुर लि॰ के मैंनेजरको, २६०-६१; - ब्रह्मानन्दको, २५५; -भगवानदासको, २५९; -(हरिकृष्ण) माणजीको, ४४२; -(एल० कृष्णस्वामी) भारतीको, ४२५-२६; -(लक्ष्मी) भारती को, १७०; -(एम० जी०) मावेको, ३४२; -(तारामती) म० त्रिकमजीको, ४१२; -मथुरादास त्रिकमजीको, ४११; -मदालसाको, २६४, ४१३, ४१९; --(ना० र०) मलकानीको, २३४; → (किशोरलाल घ०) मशरूवालाको, ६१; -(नानामाई ६०) मशस्त्रवालाको, २३; -(मनुबहुन और सुरेन्द्र) मशरूवालाको, २; -(मनुबहुत सु०) मश्चरवालाको, ३४, १४१; -(एस० एम०) मसूरकरको, -महेन्द्रप्रसादको, ३३१; –(शचीन्द्रनाथ) मित्रको,

-मीरावहनको, ९, ६०, ८७, १३६, १३७, १५०-५१, १५६, २२१, २९६, ४१८; - (कन्हैयालाल मा०) मुंशीको, ३५, १०२, १६१, २५४, ३१९, ३२५-२६, ३४८-४९, ३६९, ३८६; -(अता) मुहम्मदको, ९४; -मूलशंकरको, ३८०; -(के० बी०) मेननको, ४२, ३१८; -(अन्त-पूर्णा चि०) मेहताको, ९३, ३७०, ३७६, ३८५, ४०१, ४३२-३३; -(उर्मिला म०) मेहताको, २५, ३५, ९५; -(मगनलाल प्रा०) मेहताको, ३९७, ४२७; -(शान्तिकुमार न०) मोरारजीको, २२५, २५१, ३९४; -(एस०) रंगनायकीको, १३२-३३; -(हरिलाल मा०) रंगूनवालाको, 349; –रणछोड़लालको, ५५; -(अब्दुल) रहमानको, २४८; -(ऋषमदास) राँकाको, ९७; -(चऋ-वर्ती) राजगोपालाचारीको, ४३२; -(वी०) राघवय्याको, २९२; -(सर्व-पल्ली) राघाकृष्णन्को, १९०-९१, २९२; -(जी०) रामचन्द्रनको, २८१-८२; -(जी०) रामचन्द्ररावको, ३४६; (मोतीलाल) रायको, १४२,१८७; -(डॉ॰ बी॰ सी॰) लागूको, ३३६; -(मोगीलाल) लालाको, ८१-८३; - (राममनोहर) लोहियाको, ५६; -(उमेशराव एम०) वकीलको, २०९; -(एस० जी०) वझेको, ४८; -वर्घाके डिप्टी कमिश्नरको, १७५; -वालचन्द हीराचन्दको, १२३; -विजयराघवाचारीको, १८७; -विद्या-वहनको, २४६; -विद्यावतीको, १३१; -विष्णुनारायणको, ३५९-६०; -(नट-वरलाल) वेपारीको, ११२, १२०,

१४३-४४, २०८, २४१, २४५, २७८, २९५,३०२-३; - (कन्हैयालाल)वैद्यको, ३४४, ३६२, ३८१; -(डॉ॰ एस॰ के०) वैद्यको, ५४, ५६, ७८, ९५-९६, १०३, १७९, २०३; -(वल्लमराम) वैद्यको, १३३, ३१८; -(ईश्वरलाल) व्यासको, १७३; -(जयनारायण) व्यासको, ४३, ३२१; -शकुन्तलाको, ८०; -(रघुनन्दन) शरणको, १८०; –(कँवरलाल) शर्माको, ११९;–(जीवकृष्ण) शर्माको, १३१; -(विचित्रनारायण) शर्माको, ४०; -(हीरालाल) शर्माको, २६०, २९५; -(कंचन शाहको, १७१, २७७, ३०४-५, ३३४; -(चिमनलाल वा०) शाहको, १२४, १३४-३५;-(मुन्नालाल गं०) शाहको, १४, २२, २७, ६३-६४, ८४, ११२, ११७, १२२, १४०, १७४, १८८, १८९-९०, १९२-९३, २०७, २१५, २७४, ३८६; -(शारदा फू०) शाहको, ३२२; -शिवानन्दको, ३०३; -श्रीमन्नारायणको, २४; -संमाजीको, ७; -(एस०) सत्यमूर्तिको, १३२; (लक्ष्मी) सत्यमूर्तिको, १०७; -सत्यवतीको, ३७७; -(नलिनीरं**जन**) सरकारको, ३४७; -(सुरेन्द्रनाथ) सरखेलको, ३६५; ~(रघुवीर) सहायको, ४४१; -(डी॰ डी॰) साठ्येको, ४२०; -(मृदुला) सारामाईको, ३५२; -(गणेशदत्त) सिंहको, १३०; -(डॉ० युद्धवीर) सिंहको, १२१; -(सुरेश) सिंहको, १८६; -सिकन्दरको, २५०; -(मनु) सुवेदारको, ३५५-५६; -(सतीन) सेनको, १५५; -(चारुप्रमा) सेनगुप्त को, ७२; सैयद महमूदको, ४४०;

-(मार्गरेट) स्पीगलको, १२२, १७८; -(सर रॉबर्ट ई०) हॉलैण्डको, २१२, ३९६; -(आनन्द तो०) हिंगोरानीको, ४४१; -हिन्दु महासमा, शिमोगाके मन्त्रीको, ३९९; -(एगथा) हैरिसन को, १४५-४६

पत्रका मसौदाः वर्घाके जिलाधीशके नाम, १३४

(एक) पुर्जा, ४०३, —क्वष्णचन्द्रको, १२१,
—(नारणदास) गांघीको, ४२३;
—(अमृतलाल) चटर्जीको, १,१३,१५;
—(रामनारायण) चौघरीको, ३४०,
३४१, —(जमनालाल) बजाजको,
१३४, —मीराबहनको, २३५;
—(मुन्नालाल गं०) शाहको, ३५१;
—(आनन्द तो०) हिंगोरानीको, ४१९
प्रस्तावना, २८, —'ए डिसिप्लिन फॉर नॉनवायलेंस'के लिए, २८२-८३; —'प्रैक्ट-

कल नॉन-वायलेंस' के लिए, ३०९ वातचीत: डी० के० गोसावीके साथ, ६८-७१

माषण: अ० मा० चरखा संघकी समामें, ४३३-३७; —खादी विद्यालयके उद्-घाटनके अवसरपर, २२३-२४; —गाघी जयन्तो समामें, ४१६; —गाघी जयन्तो समारोहमें, ३७१; —गोसेवा सघकी समामें, ४०४-६; —राष्ट्रीय युवक प्रशिक्षण शिविरमें, ९०-९१ मेंट: (हरि विष्णु) कामयको, ३२८-३०; -(ए० एस० एन०) मूर्तिको, २०१; -यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडियाके प्रतिनिधि को, २७०; -'हिन्दू' के प्रतिनिधिको, ८५-८६, १९८-९९, २४९, ३५०

वक्तव्यः 'टाइम्स ऑफ इंडिया'को, इ-५;
--समाचारपत्रोंको, १५-१८, ४०-४२,
११९-२०, १२५-२७, १६५-६७, २२८३२, २३२, २३५-३६, २५६, २८३८७, ३८८

वक्तव्यका मसौदा: अमृतलाल चटर्जीके लिए, १५२

सन्देश: अहमदाबादके लोगोंको, ३३५;
—देशी राज्योकी जनताको, ४०९-१०
शोक-सन्देश: रथीन्द्रनाथ ठाकुरको, २४१४२

सलाह: सिन्घके कांग्रेस शिष्टमण्डलको, १४

#### विविध

अप्रमाणित खादी, ३६८; उघारीसे बचो, ४०२; एक कूट समस्या, ३०९-११; 'खादी-जगत्', ६५-६७; गुरुदेव, ३०७; जिसे हर कोई कर सकता है, ३६५-६७; मक्त जीवराम, १४१-४२; 'रेंटिया बारस', १५०; साम्प्रदायिक दंगे, ३०-३३; सिपा-हियोके लिए कम्बल, ३६७-६८

#### सांके तिका

अ

अंग्रेज/जों, —की सम्यताके मूलमें स्वायं और भोग-छोलुपता, ८८; —की हिम्मत, ६९ अजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू, ८ अकवर, ९३, १०३ अखिल मारतीय कांग्रेस कमेटी, देखिए मारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महासमिति अखिल मारतीय ग्रामोखोग संच, २२४,

२५९, २९७, ३०६
अखिल मारतीय चरका संघ, ५, ७०,
९८, १८७, २४०, २५९, ३०६, ३६८,
३७९, ४२६ पा० टि०; —अ० मा०
ग्रामोद्योग संघ तया तालीमी संघकी
केन्द्रीय शिक्त, २२४; —और खादी
तथा चरखोंकी बढ़ती माँग, ४३३-३७;
—का उघार माल न देने का नियम,
४०२; —का एकमात्र उद्देश्य देशके
गरीबोंकी मलाई, १४२; —की गतिविधियाँ, ६५-६७

अखिल मारतीय तालीमी संघ, २२४, २५९ अखिल मारतीय देशी राज्य प्रजा परिषद्, —को स्थायी समिति, ४२ पा० टि०, ७६

अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक, ३२८ पा० टि॰, ३२९; —काग्रेसका अंग नहीं, ३३० अखिल भारतीय बोली, ३८ अखिल मारतीय महिला परिषद्, २२७

पा॰ टि॰; -द्वारा ब्रिटेनके युद्ध-प्रयत्नों में सहयोग देने से इन्कार, १२७-२९ अखिल मारतीय मुस्लिम लीग, ३१, ४१, २१२, २३८; -और कांग्रेसजन, ८२;

-और मारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, १७; -का लाहौर प्रस्ताव, पाकिस्तानके सम्बन्धमें, ३२७; -के अन्य प्रस्ताव, ३११ पा० टि० अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, ३८२ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, 6, C, 798 अखिल भारतीय हिन्दू महासमा, ३१, ४१, २५७, ३९९; -और कांग्रेसजन, ८२ अग्निहोत्री, ९३ अग्रवाल, उमा, २७०, ३१९ अग्रवाल, उमिला, ९३ अग्रवाल, राजनारायण, २७० पा० टि० अग्रवाल, शंकरलाल, ९३ अच्यतन्, आर०, ४२१ बटलांटिक चार्टर, २७० पा० टि०, ३२८ अडालजा, बलीबहुन म०, १३५ अनासितयोग, ३८ अन्नदा बाबू, देखिए चौघरी, अन्नदाशंकर अन्सारी, जोहरा, ११५, १४४, १४६ अन्सारी, डॉ॰ मु॰ अ॰, ११५, १४६ अन्सारी, फरीद, ५७, ११५, १४४, १४६, 382 अन्सारी, शौकत, ११५, १४४ अब्दुस्समद, मौलवी, २३४ अब्राहम, डॉ॰, ११० अभिमन्यु, ३०३ अमतुस्सलाम, ५५, ६२, १६३, १८३, २४०, २४३, २५३, २६१, ३११ अमरावती, -में दंगे, ४३८, ४४२ अमृतु, डॉ॰, १०

अमृतकौर, ६, १५ पा० टि०, ५८ पा० टि०, ६५, १००, १०१, १०४, १४५, १४६, १४९, १५१, १५३, १५४, १५५, १५९, १६०, १६२, १६३, १६७, १६९, १७१, १७५, १८०, १८२, १८३, १८४, १८६, १८८, १८९, १९१, १९२, १९५, २०२, २०४, २०५, २०८, २१५, २१६, ६२०, २२२, २२४, २२७, २३३, २३६, २३७, २३९, २४३, २४४, २४७, २५०, २५३, २५७, २६१, २६३, २६६, २६७, २६९, २७१, २७३, २७९, २८०, २८८, २९१, २९७, ३००, ३०६, ३११, ३१२, ३१५, ३२१, ३२३, ३२६, ३३०, ३३२, ३३६, ३४३, ३४५, ३५१, ३५३, ३५४, ३५७, ३६१, ३६३, ३६९, ३७२, ३७३, ३७५, ३८१, ३८४, ३८९, ३९२, ३९५, ३९८, ४०७, ४०८, ४२१, ४२४, ४२९, ४३३, ४३८, ४३९; -की बातिय्य-वृत्ति, २०३, ३७८; -को शिक्षा बोर्डको सदस्याके रूपमें नाम-जदगी स्त्रीकार करने की सलाह, ४१७; -ब्रिटिश महिलाओंकी अपीलके उत्तर पर हस्ताक्षर करनेवाळी मारतीय स्त्रियों में से एक, १२७ पा० टि०; -महिला समामें गरीक, ९९, १०८

अणे, मायव श्रीहरि, ३२८

अमेरिका, -- और ब्रिटिश सरकारकी मारत-नीति, ३२९; - से निरम्त्रीकरणका सिद्धान्त अपनाने का अनुरोब, २७० अम्ब, ७८

अम्बुजम्माल, एस०, १२३, ४१७; —द्वारा गांबीजी को कीमती जवाहरात मेंट, १३२-३३

बर्य्यगार, एस० श्रीनिवास, १२३ पा० टि०, १३२ पा० टि०, १३३, १९६ अय्यर, वैद्यनाय, १७९
अरिवन्द्र आश्रम, पांडिचेरी, १४०
अरुण्डेल, डॉ॰, १९६
अर्विन, लॉर्ड, २४२
अर्थेचास्त्र, ४३७
अर्जुन, ३७ पा॰ टि॰, ३८
अरुल्याक्त्र, ३५४, ३६१, ३७३, ३७५,
३८०, ३९०
असहयोग, -और कप्ट-सहन, १८१

ताबाद, ३४६ अहमद, सर मुल्तान, ३११-१२ पा० टि० अहमदाबाद, —में डंगे, ११, १२, ३०-३३, ५३, ९१, १०९, ११६, १७७, २०४,

अस्पृश्यता,-और धर्म, १७९; -और नान्तिक-

३५६ बहिंसा, ४१, १०२, १०९, १२८, १४८, १८४, २२३, ३०९, ३७४; -आत्माका स्वमाव, ४१४; -एकमात्र अचुक मार्ग, ९१: - और अंग्रेजी, ८८, ३२९; -और बात्मरक्षा, ९०, २३५, ३३०-३१; -और कांग्रेस, १६, १९, २१९; -और 'कूरान', ३८; -और पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्तके लोग, २२९-३०; -और पुलिसकी मदद छेने का प्रवन, १८१; -और रचनात्मक कार्य, १६६, २४४; -और सत्याग्रह, ३-४, ७०; -और साम्प्रदायिक दंगे, ३०-३३, १२५-२६, १५८; -और सिपाहियोंके लिए खादीके कम्बल, ३६७-६८; -का नवयुग, ३८२-८३; -का प्रचार अमलसे, १३०; -की प्रमावकारिता, १४५, ४१०; -की माँग अन्त तक विध्वाम और श्रद्धा बनाये रखना, ३१६; -के सिद्धान्तका कोई अपवाद नहीं, ३८०; -घणा करने से रोकती हैं, ३५९; -में शत्रुसे असहयोग, किन्तु उसे हानि पहुँचाना निषिद्ध, १८१;

अस्त्र, २६; —से प्राप्त स्वतन्त्रताको मददकी अपेक्षा नहीं, ३४८; —हिंसासे अधिक श्रेष्ठ, १०२

#### आ

आचार, -और विचारमें मेल आवश्यक, १४७ आगरा-जेल, -के कैदियो द्वारा मूख-हडताल, १९१

बाजाद, मौलाना अबुल क्लाम, १४, २४९, ३७३, ३७५, ३९०, ४२२, ४३८, ४४०

आत्मकथा, २७७

आत्मनिग्रह, —वही शुम जिसमें आन्तरिक आनन्दका अनुभव हो, १६३

आत्मरक्षा, -कांग्रेसियोंके लिए निषद नहीं, ३३१

अादिवासी/सियों, —की सेवार्में ठनकर बापाका योगदान, १७९

सानन्दमयी देवी, २०२, २१६, २७६ पा० टि०, २७९, ३०७ पा० टि०, ३१२ आयुर्वेद, —में गांबोजी का विक्वास नहीं, ३१३

आर्यनायकम्, आशादेवी, १३७, २७२ आलम, स्वाजा खुर्शेद, ४२८ आसफ अली, ४३८

आसर, लक्ष्मीदास, ४९, २४३, २५३; ३५६

आसर, कीलावती, ३७, ४८, ५०, ५२, ५३, ५५, ५८, ६३, ७३, ७९, ८३, ९३, १५४, १६८, २२१, ३०४, ३०८, ४०७

आस्था, <del>-</del>की शक्ति, ३३

5

इंडियन ओपिनियन, ४०२ इंडियन सोशल रिफॉर्मर, २४३ इंस्किप, सर टॉमस, २८७ इन्दुबहन, १२ इन्दुमती चिमनलाल, ८३ इन्द्र विद्यावाचस्पति, १५१ इपितखावहीन, मियाँ, ५, १६५-६७, २०९, २१०, २२०, ३२३ इलाहाबाद विश्वविद्यालय, ८ पा० टि० इस्मत, बेगम, १६५, २११ इस्माइल, मिर्जा, २५७, ३३३, ४२४ ईश्वर, -ही सम्पूर्ण, १७२, १७४; -और

पुरुषार्थं, ६६; —का दर्शन केवल सत्यके आग्रहुके ही सम्मन, २२६; —का नियम हर स्थितिमें शिरोधायं, ११६; —की अपरिकलनीय शनितकी प्रभावकारिता, ३; —की दृष्टिमें सेवा-मावसे किया गया कार्यं अधिक महत्व-पूर्णं, ४१६; —माग्यका नियासक, ३३०

ईस्वरलाल, १४१-४२ ईसा मसीह, २४२ पा० टि० ईस्ट इंडिया कम्पनी, ३१०

ਚ

उँघरू, १५०, १५६ उड़ीसा, -में दगे, ३३१ उत्तिमचन्द गंगाराम, २७६ उद्योगवाद, -के समाजीकरणका विरोध, २५८ उषा, १४९ उपाच्याय, हरिमाक, १३५, २१८ उस्मानी, शौकत, ३५९

ऊ

क दिन-टुट, २८५ पा० टि०

72

ऋग्वेद, २९६

ए

ए डिसिफ्लिन फॉर नॉन-वायलेंस, २८२, ३०९ एन्ड्रजूज, सी० एफ०, २८, १४५, ३०७, ३९८ एमरी, एल० एस०, २५, ३१, १४५, २३९; —की वकालत 'टाइम्स ऑफ इंडिया' द्वारा, २५-२६; —द्वारा कॉमन्स-समा में विये गये 'दुर्माग्यपूर्ण वक्तव्य' का उत्तर, १५-१८ एसोशिएटेड प्रेस, २९, ५२

ओ

ओझा, १३७ ओबेदुल्ला, १३३

**斬** 

कंटक, प्रेमाबहन, ५५, १५९, १६०, ३७२, 308 कजिन्स, मार्गरेट, ३९५ किनघम, जॉर्ज, ९९ कन्हैयालाल, १३९ कपूर, इकबालकुष्ण, ३५८ कपूरयला, -की महारानी, २०८; -के महा-राजा, २०३ कमला, देखिए जोन्स, मार्गरेट कमला नेहरू अस्पताल, १३१ करकल, सच्चिदानन्द, ३२३ करमरकर, डी॰ पी॰, १३८ करियप्पा, १७२, १७४, २३३ कल्कि, ३४२ कल्याणजी, १३६ कवीश्वर, शार्दूलसिंह, २३८, ३२९ कांग्रेस, देखिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

कांग्रेस बुलेटिन, ६९, ७० कांग्रेस समाजवादी दल, ३४ पा० टि०, २९७ पा० टि०; -कांग्रेसका अंग नहीं, ३२९-३० कांग्रेसजन/नों, -और अहिंसा, ९१, १२५-२६, २१९, ३२९; -और आत्म-रक्षाके लिए हिंसाका उपयोग, २३५; -का दायित्व दंगोमें, १२-१३, ३०-३३, ४१, ८१-८३, ८५-८६; -का वाडस-रायकी कार्यकारिणी परिषद्में शामिल होना अनुचित, ३२८-२९; -को अलग-अलग गुटोंमें निष्ठा रखते हुए भी व्यक्तिगत हैसियतसे कांग्रेसमें रहने का अधिकार, ३३०; -को हिंसक प्रतिरोध न करने की सलाह, ८१-८३; -द्वारा कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन करने की माँग, २४९ कांतण प्रवेशिका, १९४ काक्माई, देखिए जेराजाणी, पुरुषोत्तम का॰ काठियावाड खादी बोर्ड, ४२३ कानूगा, नन्दूबहन, ४३, ५३ कापड़िया, माधवदास गो०, १६१ कापड़िया, मोतीचन्द, १४३ कामथ, हरि विष्णु, ३२८ कॉमन्स-समा, १५, २८७, ३५० कालाकांकर, १८६ कालेलकर, चन्दन शं०, ४३० कालेलकर, दत्तात्रेय बा०, २४, २६८, २९४, ३३२ पा० टि०, ३५५, ३८१, ३८७ कालेलकर, शंकर/सतीश, ३२५, ३२६, ४३० पा० टि० किची, ४१७ कुमारप्पा, जे० सी०, २२, ८६, २५८, २७१, ३०८, ३४४, ३९६ कुमारप्पा, भारतन्, ८६ कुरान, ५७, ३११; —में अहिंसा और हिंसा, 36

कुरैशी, अहमद, २१७ कुरैशी, गुलाम रसूल, ३९३ कुरैशी, शुएब, ७५, ११६ कुलकर्णी, केदारनाथ, ४७, ९० कुसुम, १८९ कृते, २५२ कृपलानी, जे॰ बी॰, ४९, ६८, ७१, १३८, १५८, ३१५, ३२९, ३६९, ४२२ कृष्ण, मगवान, १७४ कृष्णचन्द्र, ३७, ५९, ६२, ७४, ९७, १०४, १०६, ११४, १२१, १२९, २१३, २१७, २७२, ३२०, ३२६, ३४०, ३५३, ३८८, ४३१, ४३३ कृष्णदास, १९२ कृष्णमृति, आर०, ३४२ केसकर, बालकृष्ण विश्वनाय, २९७ कैंप्टेन, गोसीबहन, २९७ कोठारी, जीवराम, १३८ कोठारी, नाथीबहन, १३८

ख

कोतवाल, २१८, २४४ कौटिल्य, ४३७

खम्माता, १४९
खरे, डॉ॰ एन॰ बी॰, —हारा कांग्रेसके
नियमोंका उल्लघन, १६१
खरे, नारायण मोरेक्वर, ८७
खाँ, अब्दुल गफ्फार, १६७, १६९, १७५,
१८२, १८३, २०४, ३०५
खाँ, सैयद मुहम्मद अहमद (नवाब छतारी),
३१२ पा॰ टि॰
खादी, —अप्रमाणित, ३६८; —एक शास्त्र,
६६, २२३-२४; —और रामनाम, ७८;
—की उन्नति अ॰ मा॰ चरखा संघ
हारा, ६५-६७; —की बढ़ती मौंग,
३७४, ४३३-३४; —की बढ़ती मौंग,

८३, ४०२; -की सफलताके लिए विकेन्द्रीकरण आवश्यक, २३४; -के अनिषकृत विकेताओसे सावधान रहने की अपील, ३८८; -में जीवन-निर्वाहके लिए दाम देने की पर्याप्त शक्ति, ३१०, ३६५-६७; -बर्दियोंके लिए, ३५९; -सर्वव्यापक, १५०, ३७४ बाबी-जगत्, २१२, ३८४, ४३३; -के तीन उद्देश्य, ६५-६७ **बादी-पत्रिका, १८५** सादी प्रतिष्ठान, २४८, ४२६ पा० टि० खादी मंडार/रों, -के कार्यका समय नियमा-नुकूल होना चाहिए, ४३६ खादी विद्यालय, ३७१, ३८३; -का उद्-घाटन, २२३ खादी-सेवक, -का मानस शास्त्रीय होना अपेक्षित, ३०९-११ खादीवाला, कन्हैयालाल, २१८ खानोलकर, जी० एल०, ३०२ खेल-कृद, -में साम्प्रदायिकताकी निन्दा, ३४२ ख्वाजा, ७, ११७

ग गरीबों, —की मुक सेवाकी आवश्यकता, १९२

गांघी, अरुण, २५१

गांची, कनु, ५३, ९७, १०१, १४३ पा०
टिंठ, १४८, १६०, २२२, २२५,
२२६, २३९, २४३, २४४, २४६,
३२६, ४२३, ४२९
गांची, कस्तूरबा, २, ७, १२, ३४, ४३,
४९, ५०, ५२, ५३, ५५, ५८, ७७,
७९, ८३, ८७, ८८, ९३, ९६, १०१,
१२९, १३६, १६०, १६१ पा० टिंठ,
१६२, २०६, २१४, २१८, २२१,
२४०, २६६, २६७, २६९, ३४९,

गांची, कान्तिलाल, ३४९ पा० टि० गांची, काशी, १९३ गांची, कृष्णदास, १४१, १९३, ३६५ गांची, छगनलाल, १४१ पा० टि०, १९३ गांची, जमना, १६०, २२२, २३९, २४४, २४६

२४६
गांवी, जमनादास, १६०
गांवी, तारा, ६३
गांवी, तेवदास, ५२, ७८, ८३, ८७, ९३,
९६, १००, २१४, २६३, २७५,
२८८, ३२४, ३६१, ३६४, ४००
गांवी, नारणदास, ४६, ४७, ४९, ८७,
१५०, १६०, १८५, १९३, २१२,

३३२, ३३९, ४२३ गांबी, निर्मेला, ३३८, ३८४ गांबी, पुरुषोत्तमदास, ४६, ८७ गांबी, प्रमुदास, १४१, १९३ गांबी, फीरोज, ४१५ गांबी, मगनलाल, १२ पा० टि०, १६०,

२२३ गांची, मणिलाल, १७७, २५१, ३२४, ४१३

गांघी, मथुरादास, ४९ गांधी, मनोज्ञा, १४१

गांघी, मो० क०, —और तीन बन्दरोंकी
मूर्ति, ३३८; —का उपवास दंगोंके
खिलाफ, २२, ४९, १४९; —की रुचि
ज्यामितिमें, २७६; —आदेश व्यक्तिकी
स्वतन्त्रतामें बाघक नहीं, १११; —के
लिए अहिंसा स्वयंमें एक साघ्य, २१९;
—को स्वयंको अवतारों या पैगम्बरोंकी
पाँतमें बिठाना पसन्द नहीं, ३७; —द्वारा
अपने वक्तव्यके अविकल प्रकाशनका
आग्रह, ५२; —द्वारा सत्याग्रहियोंकी
परीक्षा, ६८-७१
गांघी, राघा, १६०

गांधी, रामदास, १५ पा० टि०, ८३, ८७, ९३, ९६, १५०, १८२, ३०१, ३८४. 883 गांघी, लक्ष्मी, ५०, ६३, ९३, ९६, १००, २१४, २६३, ३६५ गांघी, सरस्वती, ३४९ गांघी, सीता, १७७, २५१ गांघी, सुशीला, २३, १७७, २५१, ४१३ गांघी, हरिलाल, २ पा० टि०, ३४, ९६ पा० टि०, १३५, २१८, पा० टि० गांघी सेवा सघ, ३३२ पा० टि० गिरि, महाबीर, १३७ गिरीश्वर, ९७ गिल्डर, डॉ०, २६५ गणाजी, इन्द्रमती ना०, १ गुह, अरुणचन्द्र, १२, ६४, १५८, २५८ गैलीलियो, ३०९, ३१० गोपालन, ७५, २४५ गोपालराव, ४७, २२२

गोरक्षा, ४१६; -और गायका दूब, २७४; -में जमनालाल वजाजका योगदान, ३८१-८२, ३९८-९९; -में मैसकी रक्षा मी शामिल, ४०४-६

गोसाबी, डी० के०, ६८, १११, ११८, १७० गोसेवा संघ, ३८१, ३९८, ४१२, ४२१;

—के सदस्योंके लिए हिवायतें, ४०४-६ गोस्वामी, अद्वैतकुमार, २९० ग्राम उद्योग पत्रिका, २५८ ग्रेग, रिचर्ड बी०, २८२, २८३, ३०९ ग्रेट ब्रिटेन, —से निरस्त्रीकरणका सिद्धान्त अपनाने का अनुरोध, २७०

घ

घोष, जे० एन०, ६५ पा० टि० घोष, प्रफूल्लचन्द्र, ३०५, ३५८ 귝

चक्रवर्ती, अतुलानन्द, ३४७ चक्रिया, ४३१, ४३९ चटर्जी, अणिमा, २४७ पा० टि॰ चटर्जी, अणूतलाल, १, १३, १५, २१, ३६, ५८ पा० टि॰, ८९, १०६, १५३, २०६, २०७, २४७, ३७९, ४२९; —की गति-विधियोंसे गांधीली अप्रसन्न, २९-३०, ३३-३४, ४५-४६, ५०-५१, ७२-७३, ७४, ८०, ९४-९५, १०५, १४०; —द्वारा सार्वजनिक रूपसे समा मौगने के लिए गांधीजी का मसौदा, १५२

चटर्जी, आमा, २१, ५०, ५३, ७३, १०५, १०६, १५३, २०६, २०७, २४७, ३७९, ४२३, ४२९

चटर्जी, बीरेन्द्र, २१, ४६, ५०, ७३, ८०, ९३, १५२, २०६, २५३, २९८, ३७९

चटर्जी, रणेन्द्रनाथ, २०६ चटर्जी, रत्नमणि, २२८

चटजी, रतनाण, २२० चटजी, बीणा, २१, ४६, ५०, ७३, १०५, १०६, १५३, २०६, २०७, २४८

चटर्जी, बीलेन्द्र, २१, ३०, ४६, ५०, ५८, ७३,८०,१५२, १७५, २०६, २२५, २३७, २४३, २९८, ३०१, ३२६, ३४५

चट्टोपाघ्याय, कमलादेवी, ४३३, ४३८, ४४०

चन्देल, १०८, २९१

चन्द्रवदन, २५४, ३८६ चरखा/खे, -और उसकी बढ़ती माँग, ४३३-३४; -और महिलाएँ, ३३५; -गरीबी और बेकारी दूर करने का मुख्य साघन, १५०; -चीनमें, ४३६; -मारतकी आधिक उन्नति, स्वातन्त्र्य और कौमी

एकताकी निशानी, ६६; -हर एकको काम दे सकता है, ३६५-६६; -का उड़ीसामें प्रचार, १४१; -का वैज्ञानिक ढंगसे अध्ययन करने का विद्यारियोंसे अनुरोध, २२३-२४; -से मनकी शान्ति, ७८: -से हिंसाके बीच शान्ति, १७९ चरला संघ, देखिए अखिल भारतीय चरला चरखा सप्ताह, ३८८ चर्चिल, विन्सटन, १२७ पा० टि०, २७० पा० टि०, २९४, ३५० चचिल-रूजवेल्ट घोषणापत्र, देखिए अटला-टिक चार्टर चाँदीवाला, ब्रजकृष्ण, ५७, ११६, ३१२, 888 चित्तरजन सेवा सदन, २४८ चिदम्बरम्, के० ए०, २४२

चिदम्बरम्, के॰ ए॰, २४२ चीन, —में चरला, ४३६ चृडगर, पोपटलाल, ४२८ चोर्कालंगम्, टी॰ एस॰, ३४५ चोलावाला, आनन्दमन, १६९, २०२, २१७, २५२, २८९

चोखावाला, गोरधनदास, २०२, २५२ चोखावाला, शारदाबहुन गो०, १६९, २०२, २१७, २५२, २८९, ३६४, ३७६ चौघरी, अजना, ३४०

चौबरी, अन्नदाशकर, ५१, ८९, ९२, १०५, १४८, २४७, २४८, ३७९, ४२६ चौबरी, रामनारायण, १३५, २७९, ३४०, ३४१

छ

छतारी, —के नवाब साहब सैयद मृहम्मद अहमद खाँ, ३१२ पा० टि० छाया, मुजंगीलाल का०, ४७ छोटमाई, ४२० ज

टोटेनहम, सर रिचर्ड, २२९

जकातदार, २७७, ३९१ जकातदार, प्रभावती, ३९१ जयकर, मु० रा०, २६३ जयप्रकाश नारायण, २७, ५८, ७७, १६२, १८२, ३२७ जिल्याँवाला बाग स्मारक कोष, २३, २६० जवाहरमल, १४० जस्सावाला, ३२२ जाजू, श्रीकृष्णदास, ४९, १४२, १८७, २४०, २४७, ३०६, ३३२, ३३९, ३६१, ३८२, ३८३, ४०७ जानकीप्रसाद, १४० जिन्ना, मु० अ०, २८ पा० टि०, ४१ पा० टि०, २३८ पा० टि०, ३५५ जींदके राजा, १५५ जीवराज, ४०० जीवराम, भक्त, -का निघन, १४१-४२ जेराजाणी, पुरुषोत्तम का०, २५५, ३०३ जेराजाणी, विदुठलंदास, २४०, २५५, ३८२ जैन, गुलाबचन्द, ७७ जैन, राजेन्द्रप्रसाद, २११ जोन्स, मार्गरेट, २९, १०७, १०८, ११३, १६४, २९९, ३१८, ४३०

स

झवेरमाई, २०५, ३४४ झवेरी, नानीबहन, ३९०, ४०१

ਣ

दाइम्स ऑफ इंडिया, १८, २५; —की सविनय अवज्ञा वापस लेने की अपीलका उत्तर, ३-५; —द्वारा एमरीकी वकालत, २५-२६; —द्वारा कांग्रेसियोंके विरुद्ध लगाये आरोपका उत्तर, २१९

ਠ

ठक्कर, अनन्तराय, १९६ ठक्कर, अमृतलाल वि०, ७६, ९८, १३०, १७९, १९४, ३१८ ठाकुर, डॉ० अवनीन्द्रनाथ, ३९८ ठाकुर, रथीन्द्रनाथ, २११, २४१, ३१५, ३३७, ३९८ ठाकुर, रवीन्द्रनाथ, २११ पा० टि०, २६६, २६७ पा० टि०, २७१, २७६, ३१५ पा० टि०, ३३७, ३५६, ३९८; —का एलिनर रैथबोनको उत्तर, ११८; —का स्मारक, २५६, २८१, ३९५; —की बीमारी, १८२; —को श्रद्धांलल, २४१-४२, २५०, २५६, २५७, ३०७

E

डायर, जनरल, १९६ डेविड, डॉ०, ३४६, ३५४

ढ

ढाका, —में दंगे, १२, २१, ३३ पा० टि०, ९१, ११६, २७३, ३५६

त

तपरचर्या, —से ज्ञानमें अभिवृद्धि, २२४ ताराचन्द्र, डॉ०, ८, २७३ तिलोत्तमा, ३०८ तीन बन्दरों, —की मूर्तिसे शिक्षा, ४३१ तुलपुले, सी० ए०, ९२, १७३ तुलसीदास, सन्त, २३९ तैयबजी, रेहाना, २६८, २९४, ३५५ तैयबुल्ला, ४०९

त्याग, —िबना वैरायके अचल नही, २६० त्रिकमजी, तारामती म०, ४१२ त्रिकमजी, मथुरादास, १४९, ४११, ४१२, ४२७

त्रिचिरापल्ली जिला बोर्ड, १३३ त्रिवेदी, जयशंकर, ५३ पा० टि० त्रिवेदी, मानशंकर जयशंकर, ५३, ७९

## ₹

दरिद्रनारायण, ११७, ३१०, ३६८ दवे, जुगतराम, ९६ दाँडी-कूच, ३२८ पा० टि० दामोदर, १५४ दास, डॉ॰, १५ पा॰ टि॰, २०५, ४१३, दास, डॉ॰ आशुतोष, -का निघन, २२८, 304 दास, देशबन्घू चित्तरंजन, २९४, ३५६ दास, रामसरन, ४२४ दास, सारंगघर, ६५, २६४, २६७, ३३०, ३८५ दासगुप्त, अंहण, ३६ दासगुप्त, सतीशचन्द्र, २१, २९, ३३, ३४, ३६, १४८, २४७, ४२६ पा० टि० दासगुप्त, हेमप्रमा, ३६ दिवाकर, रा० र०, ४२० दिव्येन्द्र, इन्द्रवदन, २२६, २७४ दीनबन्ध्, देखिए एन्ड्रचूज, सी० एफ० दीनबन्धु स्मारक, २८, १४५, २५६, २५७, २६६, २७३, २७६, ३८४, ३८९, ३९०,४०३,४१२,४१७; -और गुरुदेव स्मारक, २५६, २८१ दीवान, जीवनलाल, ८१, ८३ दीवानजी, दिलखुश, ४९, १५७, १९४ दीवानजी, हर्षदा, ३०३

दुखोबोर, १८१

दुनीचन्द, ५, १८४, २१० दुबे, बोघराम, ३७१ देव, धर्मयश, २८० देवकीनन्दन, १७० देवली नजरबन्दी शिविर, ३४ पा० टि० देशी नरेशों, -की स्थिति और स्वतन्त्रता का प्रक्त, ४०९-१०, ४२५ देसाई, कन्हैयालाल, ३९३ देसाई, कुसूम, २०६, २४०, २६६, २८८. 280 देसाई, खण्डुमाई, ८३ देसाई, जीवनजी डा०, १८५ देसाई, दुर्गाबहन, ९, ५१, ५३, ७५, ७७, ८३, ८७, १२२, २३८, ३१७, ३७८ देसाई, बीरूमाई मू०, १४३, १४८, १७६, २९९, ३३५, ४०१, ४२३ देसाई, नारायण, ३३२ पा० टि०, ३७८ देसाई, मूलामाई, १४३, १४७, १४८, ३३५, 390, ¥30 देसाई, महादेव, ९ पा० टि०, १८ पा० टिं0, ३८, ३९, ४५, ५१, ५२, ५५, ५७; ६०, ७३, ८७, ९२, ९३, १००, ११०, १२०, १२२, १४३, १४६, १४९, १६०, १६३, १६९, १७७, १७८, १८२, १८४, १८६, १८८, २००, २०४, २०८, २४४, २५१, २५४, २५९, २६३, २६४, २६५, २६६, २७५, २८८, ३०४, ३१७, ३२५, ३३२, ३३९, ३४३, ३५१, ३५२, ३७८, ३७९, ३८७, ३९२, ४०३, ४१२, ४१५, ४२९; -साम्प्रदायिक दंगोंसे सम्बन्धित सलाहकार समितिके अध्यक्ष नियुक्त, ८१-८३

देसाई, महेन्द्र वा॰, ७५ देसाई, रतिलाल, २८५ पा॰ टि॰ देसाई, वालजी गो॰, ७५, २०८, २३८, २५३ देहरादून प्रस्ताव, ३२७ दोड्डमती, ४०९

ध

धर्म, -और अस्पृत्यता, १७९; -का राज-नीतिक क्षेत्रमें कोई दखल नही, ३२ धर्माधिकारी, दादा, ३३२ पा० टि०, ३३८ धीरेन्द्र, ८८

न

नन्दन, १६७, १८४ नन्दा, गुलजारीलाल, ७७, ७९, ८१, ८३, 68 नमक-सत्याग्रह, ३२९ नरेन्द्रदेव, आचार्यं, २९७, ३००, ३२७, 368 नवजीवन, ४०२ नवजीवन कार्यालय, २७८, ३०२ नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, २८२ पा० टि० नवनीत (कन्नड़), ३५५ नाथजी, देखिए कुलकर्णी, केदारनाथ नाथमाई, डॉ०, ३२२ नाजीवाद, ३१, -और विश्व-प्रमुत्व, १२८ नाडार, पी० पी० एम० टी० पोन्नुसामी, 838 नानावटी, अमृतलाल, २००, ३२५ नानावटी, सरोज, २६८ नामगिरि, २१४ नायक, गजानन, ३८८ नायडू, सरोजिनी, १२७ पा० टि०, ३४३ नारद, ३२७ नास्तिकता, -का अर्थ अपने अस्तित्वको अस्वीकार करना, ३४६ निजाम, -हैदराबादके, २

निम्बारकर, १७४ निर्देलीय राजनैतिक नेता सम्मेलन, २०० पा० दि० निर्मलसिंह, ३२६ नेहरू, इन्दिरा, २७९, ३१४ नेहरू, कमला, २०२, २१६ नेहरू, जवाहरलाल, ४३, ७६, १४०, १४९, १८४, १८६, २०२, २१६, २७९, ३१४ पा० टि०, ३४३ पा० टि०, ३५२, ३८२, ४३५, ४३८; -अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके अन्तरंग अध्येता, ३२८; -की दुष्टिमें खादीकी उपयोगिता, 85-28 नेहरू, मोतीलाल, १८१, ३५६ नेहरू, रामेश्वरी, ६२, ९८, १२७ पा० टि०, १३०, १४९, १८१, २५९, २८१, २८२ नैयर, डॉ॰ सुशीला, ५०, ५५, ७७, ८८, ११७, १२१, १२२, १४९, १६२, १७५, १८२, २०२, २०४, २०६, २०९, २१४, २२१, २७१, २७२, २८०, २८१, २९५, ३५३, ३५४ नोआखली, -में तूफानसे क्षति, २०४ नौरोजी, खुर्शेदबहुन, १७२ पा० टि०, २०४, २२७, २६१, २६३, २६४, ३३२, ३५३, ३९९; -की पश्चिमोत्तर सीमा-प्रान्तमें गिरफ्तारी, २२८; -वम्बईमें नजरबन्द, २२९-३१; -यरवडा सेंट्रल जेलमें, २३२ नौरोजी, दादामाई, २२८ न्याय परामर्शदाता वकील संघ, ६ न्यु स्टेट्समैन, २६३ न्यूटन, ३०९, ३१०

प

पंचोली, विजया म०, २४०, २८८, ३७६, ३८४, ४३२, ४३३

पंजाब बकील संघ, -हारा सत्याग्रहियोंके मामलोंको पुनर्विचारके लिए प्रस्तुत करने का निश्चय, १६५ पंड्या, मगवानजी पुर, ३१६, ३२४, ३३८, ३७२ पंत, अप्यासाहब, २५७ पटवर्घन, अप्पासाहब, १६०, १७६ पटेल, डॉ॰ नाथूमाई, ५१, ३१७ पटेल, डाह्यामाई, ४५, ५४, ७९, ३७० पा० दि० पटेल, मानुमती, ३७० पटेल, मणिबहन, ४३, ४४, ५३, ५४, ७९, १०१, १०९, २५४, ३१३, ३२२, ३९०, ४२२ पटेल, रावजीमाई, ८३ पटेल, बल्लममाई, ४४, ४५ पा० टि०, ७९, १०९, २४४, २५४, २६५, २६९, २७२, २७८, २७९, २८१, २८९, २९३, ३०५, ३१२, ३१७, ३४५, ३५२, ३५६, ३५८, ३७०, ३७३, ३७९, ३९०, ३९३, ४०१, ४१२, ४२२, ४२७, ४३३, ४३७, ४४२ पटेल, विपिन, ४५ पठान, ११ पढियारी, प्राणकृष्ण, ६५, ३७१ पण्डित, रणजीत, ३४३ पण्डित, बसुमती, ११, १५, ३३३, ३८४, ४३२, ४३३ पण्डित, विजयलक्मी, १२७ पा० टि०, ३००, ३०२, ३१५, ३४३, ३८४, ४०३ पत्नालाल, ४३२, ४३३ परिग्रह, -एक झंझट, ४०० परीख, नरहरि हा०, ११, ३८, ८३, १७८, ३१६, ३३८, ३७२, ३८७ पश्चानाप, -से गम्मीर अपराधका प्रतिकार, \$50

पाकिस्तान, -की माँग, ४, ३२७, ३४८, ४२४-२५; -विरोध दिवस, ४१ पाण्डिचेरी आश्रम, १४० पारनेरकर, यशवन्त म०, ६०, ३२६ पारेख, ई० एम०, २५२ पारेख, क्रॅंबरजी खे॰, ९६, २२६, ३३४ पारेख, प्रभाशंकर, ३३९ पारेख, रामी कुँ०, ९६ पालनिवेल, टी०, २६२ पिक्चर पोस्ट, -में गांघीजी से सम्बन्धित गलत उपाख्यानोंका उल्लेख, २४२ पा० टि० पिल्लै, सी॰ माधवन, २६२ पुरी, १५६ पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, सर, २२५ पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास, ३४, १६७ पुलिस -की मदद और विहसाका प्रश्न, १८१ पुरोहित, सूरजराम, ३९ पूना-प्रस्ताव, देखिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पृथ्वीसिंह, ४७, ९०, २०४, २२२, ३६०, 308, 888 पेटिट, जायजी, ८८ पेटिट, मीठूबहुन, ८८, १३६ पै, सुशीला, १६० पोखराज, ३२० पोलक, हेनरी सॉलोमन लियन, ३२६, ४२४, 824 प्यारेलाल, १४९, १६४, २०६, ३०८, ३८४, ३९२, ४१७ प्रकाश, २९७ प्रकाशम्, टी०, ४३२, ४३८ प्रमाकर, २७१, ३०१ प्रमावती, २७, ५८, ७७, १००, १६२, १८२, १८९, २०६, २२२, २४०, २४५, २८८, ३२७, ३३२, ३३६,

३५३, ३५४, ३६४, ३८४, ३९५ पा० टि०, ४१४ पा० टि० प्रमुखाल, १०० प्रवर्तक संघ, १४२ प्रागजी, १३६ प्रेमाबाई, ३२६

फ

फॉरवर्ड ब्लॉक, देखिए अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक फारकी, १६७, २११, २२० फासिस्टवाद, ३१; -और विश्व-प्रमुख, १२८

ब

बच्छराज एण्ड कम्पनी, २५६, ३०२

बछडा-वघ, -का प्रसंग, १९७ बजाज, कमलनयन, ९८ पा० टि० बजाज, जमनालाल, ४२, ५३ पा० टि०, ७६, ७७, १३४, १५९, १६२, १६३, १६७. १६९, १७१, १७५, १८०, १८३, १८४, १८६, १८९, १९१, १९२, २०२, २०३, २०४, २०५, २०७ पा० टि०, २०८, २१६, २२४, २३३, २३६, २३७, २४४, २५०, २५३, २६५, २६६, २६९, २७०, २७१, २७६, २७९, २८०, २८९, २९०, २९३, ३०७, ३१२, ३१९, ३७५, ३७६, ३७८, ३८४, ३८७, ३९०, ३९३ पा० टि०, ४०७, ४११, ४१२, ४१५; -का गोसेवामें योगदान, ३८१-८२, ३९८-९९, ४०५, ४०६; -की अस्वस्थताके कारण जेलसे रिहाई, ११५: -रोगग्रस्त, ७९ वजाज, जानकीदेवी, ५३, ५८, ११४, १९२,

२०५, २६६, २७२, ३१९

बजाज, बनारसीलाल, १२ पा० टि० बजाज, रामकृष्ण, १३४, २३९, २६५ बजाज, रामेश्वरलाल, १२ बजाज, हिन्मणी, १२ पा० टि० बजाज, सावित्री, ९८ बज्मी, ७५ बटलर, -अवर मारत-मन्त्री, २८७ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, १९०, २९२ पा० टि० बम्बई, -में दंगे, १२, ९१, १०९, १७७ बरेटो, डॉ॰, १८२ बर्मा शिष्टमण्डल, २५७; देखिए मारत-बर्मा आव्रजन समझौता भी बर्मा शासन अधिनियम (गवर्नमेंट ऑफ बर्मा ऐक्ट), २८४, २८५ बलवन्तसिंह, ६०, ७९, १०६, २१३, ३०० बाइबिल, ४१०, ४२१ बाजपेयी, सर गिरिजाशंकर, -और मारत-बर्मा आव्रजन समझौता, २०९, २८५, 300 बापनी प्रसावी, ४११ बापु, १९७ बाबा, देखिए पटेल, विपिन बाब, ३९ बॉम्बे क्रॉनिकल, १२८ बार, एफ० मेरी, १०७, २५१, २९९, ३१७, ४३० बारदलई, गोपीनाथ, ३७, ३८ पा० टि०, १३८, १४४, १५७ बारी, अब्दुल, ४० पा० टि० बालकृष्ण, २१८ बिङ्ला, घनश्यामदास, ३६, १०९, ११४, १७९, १८२, १९७, ३५२, ३८९, ३९१, ३९४, ४१५ बिड्ला, जुगलिकशोर, ३२०

बिड्ला, रामेश्वरदास, ४७

बियाणी, बुजलाल, ४३८, ४४२ बिहार, -में दंगे, ४०-४२, ९१, ३११ पा० टि॰; -में मुस्लिम परिवारकी हत्याकी निन्दा, ११९-२० बूच, आनन्दी, ९ पा० टि०, ११ बुच, पुरातन जे०, ९, ११, ८४, १०३, ३२४, ३३३, ३३८ बुल, देखिए नौरोजी, खुर्शेदबहन बेक्स्टर, जेम्स, -की बर्मामें मारतीयोंक आव्रजन-सम्बन्धी रिपोर्ट, २८५-८६ बेसेन्ट, एनी, १९६ बैंक ऑफ नागपुर लिं॰, २६० बैकर, शंकरलाल, ६६, ६७, ३९६ ब्रह्मचर्य, २६२ ब्रह्मदत्त, २१० ब्रह्मानन्द, २५५ ब्रिटिश राष्ट्रकुल, ३५० पा० टि० ब्रिटिश सम्यता, -के मूलमें स्वार्थ तथा मोगलोलुपता, ८८ निटिश सरकार, -का सिद्धान्त 'फूट डालकर शासन करना', १६-१७, १९-२०; -द्वारा भारतीय जनताका निःशस्त्रीकरण, २६; .-द्वारा साम्प्रदायिकताको बढ़ावा, ८५ ब्रिटिश साम्राज्यवाद, -और प्रमुत्व, १२८; -के साथ फासिस्टवाद और नाजीवाद से संघर्ष, ३१

## भ

सगबद्गीता, ३७ पा० टि०, ५७
मगवानवास, २५९
मणसाली, जयकृष्ण प्रमुदास, ६०, १९१
मय, —त्याच्य वस्तु, ११०
माणजी, हरिकृष्ण, ४४२
मानुमती, २५४
मारत-बमी आन्नजन समझौता २०९ पा०
टि०, २२५ पा० टि०, २५१, २६३,

३००, ३११ पा० टि०, ३९४ पा० टि०; -एक जबरदस्त कलंक, 263-60 भारत शासन अधिनियम (गवनैमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट), २८४ भारत रक्षा अध्यादेश/कानून, ११९ पा० टि॰, २२७ मारत-मन्त्री, देखिए एमरी, एल० एस० मारती, एल० कृष्णस्वामी, ४२५ भारती, लक्ष्मी, १७० भारतीय माषा संघ, ३५५ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, --एक राष्ट्रीय संस्था, ३९९; -एमरीकी दुष्टिमें सर्वेसत्तावादी संस्था, १९; अहिंसा, ९१, १२६, ३२९; -और मारतकी स्वतन्त्रता, २३२, ३५०; -और मानी सामाजिक व्यवस्था, २५९; -और मुस्लिम लीग, १७; -और वाइस-रायकी कार्यकारिणी परिषद्का विस्तार, १९८; -और समाजवादी, १११; -और हिन्दू त्योहार, ३९९; -का दंगों के दौरान दायित्व, ३०, ४१, ८१-८३, ८५-८६; -का पूना-प्रस्ताव, १७, १९, ९२, १२५-२६, १४७, २०१, २१९, २३५; -का रुख मतदाता-सूची तैयार कराने के विषयमें, ७१; -- का सिन्ध शिष्टमण्डल, १४; -की नीतिमें कोई परिवर्तन नही, २४९; -के कोषका उपयोग राहत-कार्यके लिए, १७८; -के नियमोंका डॉ॰ एन॰ बी॰ खरे द्वारा उल्लंघन, १६१; -के रुखपर सरकारी घोषणाका असर नही, १९८; -नैतिक प्रतिनिधित्व जन-संगठन, ८५; --में स्वतन्त्र रूपसे कार्रवाईका अर्थ है विद्रोह, १११; -सविनय अवशा आन्दोलन चलाने के

लिए एकमात्र उपयुक्त सस्था, ३-४; —साम्राज्यवादको समाप्त करने के लिए इतसंकल्प, २०१

--- कमेटियाँ,-उड़ीसा/उत्कल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, ६५ पा० टि, ३७१ पा० टि०; -कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, १३८; -गजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, ३१; -तमिलनाड प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, १३३ पा० टि०; -दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी, १५१ पा० टि०, २३६; -पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी. ५ पा० टि०, १६५, २१० पा० टि०; -बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, १०, १२ पा० टि॰, ६४, १५८ पा॰ टि॰; -बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, २९९; -महा-राष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, ६२ पा० टि०; -लायलपुर जिला कांग्रेस कमेटी, २०९ पा० टि०; -विदर्भ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, ४३८ पा॰ टि०: -सिन्ध प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीको विधानमण्डल-त्यागकी सलाह, ३७३ - महासमिति, १७ पा० टि०, ७१ पा० टि॰, २१९, २२८ पा॰ टि॰, ३२९, ३७१ पा० टि०; -के सदस्योंको स्वतन्त्रतामें हस्तक्षेप करने की गांघीजी

को छूट नहीं, १९९
भागेंव, ढाँ० गोपीचन्द, ११५, १६५
भावे, एम० जी०, ३४२
भावे, बालकृष्ण, १५१
भावे, विनोबा, ४९, १७५, १७७, १८३
भावे, शिवाजी, ९९
मूख-हड़ताल, —जेलोंमें, १९१, ४०३

म्

मंजुला, ३३४ मथुरा वाबु, ४० मदालसा, २४, ९९, १८३, १९२, २६४, २६६, २८०, २९३, ३१९, ४१३, ४१५, ४१७, ४१८, ४१९, ४२२. मन् त्रिवेदी, देखिए त्रिवेदी, मानशंकर जयशंकर मन्दिर/रों, -में हरिजन-प्रवेश, १९९ मलकानी, ना० र०, २३४ मलाबार, -में तुफानसे क्षति, २०४ मशस्वाला, किशोरलाल घ०, २३ पा० टिं0, ३४, ३७, ६१, ९०, ९३, २०१ पा० दि०, २२२, २५१, २५२, २५४, २६६, ३०५, ३०९, ३७४, ४२८ मशरूबाला, गोमती, ३४, २५१ मशब्बाला, तारा, ९३, २०५, ३५६ मश्रूबाला, नानाभाई इ०, २३, २४०, २४६, २८८ मशरूवाला, मनुबहुन सु०, २, ३४, १४१ मशरूबाला, सुरेन्द्र, २ मसूरकर, एस० एम०, ३३१ महमूद, सैयद, ४४० महाराष्ट्र त्रिकेट एसोशिएशन, -को खेल-कदमें साम्प्रदायिकताके खिलाफ सलाह, ३४२ महिलाएँ, -ब्रिटेनकी और मारतकी, १२८-२९ महेन्द्रप्रसाद, ११३ माधुरी, १४३ मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, १३, १५५ मार्टिन, डॉ॰, १४९ मालवीय, मदनमोहन, १९० मित्र, शचीन्द्रनाथ, १० मिल्टन, २५५ मिश्र, महेशदत्त, २८०, २८९, २९३ मिश्रीलाल, २१८ मीरावहन, ९, ५३, ६०, ८७, १३६, १३७, १३९, १५०, १५६, १८३, २२१,

२३५, २९६, ३३२, ३७५, ४०७, ४१८, ४३९; —द्वारा वैदिक ऋचाओ का अंग्रेजी रूपान्तर, १७६ मुंशी, क० मा०, ३५, १०२, १२४, १३५, १५१, १६१, २५४, २७५, ३६९, ३८६; —और अखण्ड हिन्दुस्तान फंट आन्दोलन, ३४८-४९; —का कांग्रेससे त्यागपत्र, १२५-२७, १४३, १४७, १४९, २३६

२३६
मुंशी, लोलावती, ३६९, ३७०
मुक्तंदलालजी, ७७
मुखर्जी, डॉ॰ व्यामाप्रसाद, २५७
मुनि, २०२
मुनीमी, शाह मुहम्मद उजैर, ४०
मुनो, देखिए मेहता, वमंपाल
मुन्नराज, २३
मुसलमान/नीं, —और बहिष्कार, ३९; —को
दंगोंक दौरान हिन्दुओं द्वारा संरक्षण
दिये जाने का सुझाव, ८३
मुस्लिम लीग, देखिए अखिल भारतीय मुस्लिम
लीग
महम्मद, अता, ९४

मुहम्मद, हजरत, ३७ पा० टि०
मूडी, सर फांसिस, १९१
मूरे, मिस, २१५
मूर्ति, ए० एस० एन०, २०१
मूल्युं, —के बिना जीवन सम्मव नहीं, ११६
मेंकल, डॉ०, २६५, ४३८
मेटकॉफ, हरबर्ट ओब्री-फांसिस, ९९

मेनन, कें वी०, ४२, ४३, ४८, ७६, 386 मेहता, ५८ मेहता, अन्नपूर्णा चि०, ९३, २९१, ३०१, ३११, ३४३, ३४६, ३५८, ३७०, ३७६, ३८५, ४०१, ४३२ मेहता, उर्मिला म०, २५, ३५, ९५,३९७ मेहता, चम्पा, ३३९ मेहता, छगनलाल, ३३९ मेहता, डॉ॰, ३३४ मेहता, डॉ॰ जीवराज, १०१, १७५, २२६ मेहता, डॉ॰ प्राणजीवनदास, ३३९ पा॰ fzo मेहता, वर्मपाल, ३५ मेहता, बलवन्तराय, ७६ मेहता, मंजूला म०, २५ पा० टि०, ३५ मेहता, रतिलाल, ३३९ पा० टि० मेहता, हंसा, १०९ मेहता, मगनलाल प्रा॰, २५ पा॰ टि॰, ९५, २७३, ३३९, ३९७, ४२७ मैसूर विधान-परिषद्, -और हरिजनों द्वारा मन्दिर-प्रवेश, १९९ मोरारजी, नरोत्तम, १२३ मोरारजी, शान्तिकुमार, १२३ पा० टि०, १५४, १६८, २२५, २५१, ३६२, . 368 मोरेस, फ्रैंक, १८

य

यंग इंडिया, ४०२ यंत्रवाद, –से जगतका नाश, ६६ युद्ध, —में पहला शिकार नैतिक मूल्य, ८५
युद्ध-प्रयत्न, —और सिपाहियोंके लिए कम्बल,
३६७-६८, ४४०; —पर एमरीकी
दृष्टिमें सिवनय अवज्ञाका कोई प्रमाव
नहीं, २०
युधिष्ठिर, ३८०
युक्लिड, ३६७
युनाइटेड प्रेस ऑफ इंडिया, ५२, २७०

₹

रंगनायकी, एस०, १२३, १३२, ४१७ रंगुनवाला, हरिलाल मा०, ३५९ रघुवीर सहाय, ४४१ रचनात्मक कार्यक्रम, -और सत्याग्रही, ६८, ९३; -सविनय अवज्ञाकी नींव, १६६ रणछोड्लाल, ५५ रणजीत, १३६ रमण आश्रम, १४० रमाबाई, २०६ रहमान, अब्दुल, २४८ रौका, ऋषमदास, ९७ राधवदास, बाबा, ३५२ राघवय्या, वी०, २९२ राजगोपालाचारी, चन्नवर्ती, ४३२, ४३७, **836** राजवाडे, रानी लक्ष्मीबाई, १२७ पा० टि० राजेन्द्र, १३१ राजेन्द्रप्रसाद, २४, २७, ६५, ७१, ११९, १२३, १३०, १३८, १५८, १६२, १७०, २१०, २४५, ३०५, ३४३, ३४६, • ३५५, ३५८, ३६९, ३७३, ३७९, . ३८०, ३८७, ३९०, ४१८, ४२२,

४४०; -और विहारके दंगे, ४०-४१ रावा, ३१२, ४१२ राघाक्रप्णन्, डॉ॰ सर्वपल्ली, १९०, २९२ रानडे, रमावाई, १२३ रामचन्द्रन, २५९ रामचन्द्रन, जी०, २८१, २८२ रामचन्द्रराव, जी०, ३४६ रामचरितमानस, २३९ पा० टि० रामजी, २१७ रामनाम, -और चरला, ७८; -विकारोंको रोकने का एक ही तरीका, ३४० रामायण, ३२७ राय, मोतीलाल, १४२, १८७ राव, बी० एन०, २४३ पा० टि० राव बहादुर, १६१ राष्ट्रमाषा प्रचार समिति, वर्षा, २९८ पा० टि० राष्ट्रीय झण्डा, -मन्दिरों पर फहराना उचित नहीं, ३९९ राष्ट्रीय युवक प्रशिक्षण शिविर, ९० राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद्, १९८, ३११ पा० टि॰ रुड्या, शान्ता, २८९, २९०, २९३ रुक्मिणी, १३५ रूजवेल्ट, फ्रेंकलिन, १२८, २७० पा० टि० रूस, -का साम्राज्यवादी ताकतसे गठ-वन्धन, ३२८; -में औद्योगीकरण, २५८; -में हिंसा, ३७४ 'रेंटिया बारस', १५०, ३३९ रेड्डी, गोपाल, ४३२ रैथवोन, कुमारी एलिनर, ११८ पा० टि०

ल

लंकास्टर, एम०, १४५
लक्ष्मी, एस०, १३२
लक्ष्मीबाई, ३३६, ३८६
लागू, डॉ० बी० सी०, ६८ पा० टि०, ३३६
लाला, मोगीलाल, ८१, ८३
लिनल्थिगो, लॉड, १०
लिबरल दल, ३५ पा० टि०
लिमये, प्रो०, ११८
लुक, २३२
लेटसं दु राजकुमारी अमृतकौर, ४०७
लेनिन, बी० आई०, १८६
लैला, ७३
लोक सेवक संघ, ४१६ पा० टि०
लोहिया, राममनोहर, ५६

व

वकील, उमेशराव एम०, २०९ वझे, एस० जी०, ४२, ४८, ७६ वाइली, सर फांसिस, २६५ वाइसराय, देखिए लिनलिथगो, लॉर्ड वाइतरायकी कार्यकारिणी परिषद्, २०९ पा० टि०, ३११ पा० टि०, ३२८; —का विस्तार, १९८ पा० टि०, २३२ वालचन्द हीराचन्द, १२३ विजयराघवाचारी, १८७ विद्याबहन, २४६ विद्यावहन, २४६ विद्यावाहन, २४६ विद्यावाहन, ३४६ विद्यावाहन, ३४६

२२३-२४; -को राजनीतिसे अलग रहने की सलाह, १२१ विद्यावती, १३१, १३९ विनय, -परिस्थिति-विशेषमें गुण भी और दुर्गुण भी, ३८४ विश्वनाथदास, १९६ विश्वभारती, २५६, ३०७, ३३७, ३९८ पा० टि० विश्वयुद्ध, द्वितीय, -में इंग्लैंडकी क्षति, 60 विष्णु नारायण, ३५९ वीरम्मा, १९१, २३३ वेंकटाचलम, १३३ वेद, १३३ वेपारी, नटवरलाल, ११२, १२०, १४३, २०८, २४१, २४५, २७८, २९५, 302 वैद्य, कन्हैयालाल, ३४४, ३६२, ३८१ वैद्य, डॉ॰ एस॰ के॰, ५४, ५६, ७८, ९५, १०३, १७९, २०३ बैद्य, बल्लमराम, १३३, ३१८ व्यास, ईश्वरलाल, १३८, १७३ व्यास, जयनारायण, ४२, ४३, ७६, ३१८, 378

হা

शंकरन, १६४ शकुन्तला, ८० शमशेरसिंह, कुँवर, १५३, १६३, १८४, १९५, २०४, २३३, २४४, २४७, २७३, ३४५, ३५७, ३६१, ४३८

शरण, रघुनन्दन, ७७, १५१, १८०, २२७, ४१६ शर्मा. ४०१. ४०९ शर्मा, कॅवरलाल, ११९ शर्मा, जीवकृष्ण, १३१ शर्मा, द्रौपदी, २६०, २९५ शर्मा, विचित्रनारायण, ४० शर्मा, श्रीराम, २११ शर्मा, हीरालाल, २६०, २९५ शान्ति सेनाओं, -की स्थापना सही ढंगके लोगों द्वारा करने का सञ्जाव, ७०-७१ शान्तिनिकेतन, २४२, २५६, २७६, ३०७, ३३७ शान्तिवाद, -और सत्याग्रह, २८२ शामलाल, लाला, २१० शास्त्री, १२९ शाह, ३०१

शाह, कंचन मु॰, १४, २२, ६३, ७३, ८४, ११७, १२२, १७१, १७४, १८९, १९०, २१५, २४५, २६१, २७७, २८१, ३०४, ३३४

शाह, चिमनलाल न०, १५ पा० टि०, ५१, ५९, ९७, १०४, १४६, १७४, १९२, २१३, २१७, ३६१, ३८७ शाह, चिमनलाल बा०, १२४, १३४ शाह, फूलचन्द कस्तूरचन्द, ३०३, ३१४, ३२२, ३७६

शाह, मुन्तालाल गं०, १४, २२, २७, ६३, ७९, ८४, ९३, ११२, ११७, १२२, १३७, १४०, १७४, १८८, १८९, १८९, २१५, २७४, ३३४, ३४१, ३८६, ४००

गाह, शकरीवहन, १२९, १६९, ४३१ शाह , शारदा फु०, ३१४, ३२२ शाहनवाज, बेगम, ३१२ पा० टि० शिवजी, ३६४ शिवनाथमाई, ४०० शिवानन्द, ३०३, ३१४, ३७६ शुक्ल, चन्द्रशंकर, १२०, २४५, ३०२ शुस्टर, ३६ श्रद्धानन्द, स्वामी, ५७ पा० टि०, १५१ पा० टि० श्रीकृष्ण, मगवान, ३७ पा० टि०, ३८ श्रीनारायण जयनारायण, २९६ श्रीनिकेतन, २४२, २५६, ३०७, ३३७ पा० टि० श्रीमद्भागवत, ३७४ श्रीमन्नारायण, २४, २६४, २९४

स

संमाजी, ७
संयम, --वही वांछनीय जिसमें मनका साथ
हो, १
सक्सेना, ८८, ३८७
सती, १२२
सत्य, १०९, १२८, २२३; -की प्राप्ति
पवित्र जीवन तथा धर्मग्रन्थोंके श्रद्धापूर्ण अध्ययनसे, २६२
सत्यमारायण, मो०, ३८७
सत्यमूर्ति, एस०, १०७, १३२, ३११, ३१५,
३९३, ४३७, ४४०, ४४२
सत्यमूर्ति, लक्ष्मी, १०७

सत्यवती, ५७, ११६, १४६, ३१२, ३७७ सत्या, २९७

सत्याग्रह, —और विद्यार्थी, १२१; —और शान्तिवाद, २८२; —करनेवालों की गांघीजी द्वारा कड़ी परीक्षा, ६८-७९; —करनेवालों की दु:खको बरदाश्त करना ही हैं, ३६२; —का स्थगन दंगाग्रस्त इलाकोंमें, ८६; —की वाचार-संहिता और सत्याग्रहियोंके मामलों पर पुनविचार, १६५; —की प्रतिज्ञा, ७१; —के सम्बन्धमें 'टाइम्स ऑफ इंडिया' द्वारा गांधीजी की आलोचना, २१९; —दिवस, ३५२; —बन्द न करने की सलाह, २४९; —में युद्धके दौरान तेजी लाने की सम्भावना नही, ३१९; देखिए संविनय अवज्ञा भी

सत्याग्रह साथी, ६१

सत्याग्रही/हियों, —और रचनात्मक कार्यक्रम, ९३; —का स्वास्थ्य ठीक होना आवस्यक, ४३; —को अपरिग्रही होना चाहिए, १८१; —हारा पजाबमें पुनः सत्याग्रह करने की तत्परता, १६५-६७; —होने की क्षतें, ६८-७१; —की गिरफ्तारी युद्ध-विरोधी नारे लगाने पर, १९९; —सम्पत्तिकी रक्षा करने के बजाय प्राणों की बिल वे सकता है, १८१; —हारा पुनः सत्याग्रह, ८६

सम्रू, तेजबहादुर, २८, २०० पा० टि०, २७५, ४००, ४२५

समाजवाद, —का विकास खादीका आदर्श है, ४३७

समाजवादी, -और सत्याग्रहकी शर्ते, १११ .

सम्पत, जेठालाल, २१२ सरकार, निल्नीरंजन, ३२८, ३४७, ३८९, ३९१ सरकारी विज्ञप्ति, —का कांग्रेसके रुख पर असर नहीं, १९८ सरखेल, सुरेन्द्रनाथ, ५१, ७४, ८०, ८९, १०४, १०५, ३६५ सरोज, २९४ सर्वोंद्य, ३३२, ३६०

सर्वोदय मवन, २०१ पा० टि०
सविनय अवज्ञा, —चलाने के लिए कांग्रेस
एकमात्र उपयुक्त संस्था, ३-४; —द्वारा
ब्रिटिश सरकारको विषम स्थितिमें
डालना उद्देश्य नही, १७, २०; —पाँच
साल तक चलने की सम्मावना, १६६;
—में युद्धके दौरान तेजी आने की सम्मावना नही, ३१९; देखिए सत्याग्रह मी

साङ्गे, डी० डी०, ४२०
साबरमती आश्रम, २८२
साम्प्रदायिकता, —और खेळ-कूद, ३४२
साम्प्रदायिक दंगे/गों, —अमरावती में, ४३८,
४४२; .—अहमदाबादमें, ११, १२,
५३, ९१, १०९, ११६, १७७, ३५६;
—ढाकामें, ३०-३३, ११६, ३५६;
—बम्बईमें, १२, ९१, १०९, १७७;
—िबहारमें, ४०-४२, ९१, ११९-२०,
३११ पा० टि०; —िसन्वमें, ३५६;
—में अहिंसाका उपयोग, १२५-२६,
२५८; ं-के दौरान कांग्रेसियोंका
दायित्व, १२-१३, ३०-३३, ४१, ८१८३, ८५-८६; —के लिए सलाहकार
समितिका निर्माण, ८१-८३

सारामाई, अनुसूया, ४३२ साराभाई, अम्बालाल, ३८ पा० टि०, १९७ सारामाई, मृदुला, ३८, ७७, ७९, ८१, ८३, २७०, २७२, ३५२ सिंह, गणेशदत्त, १३० सिंह, डॉ॰ युद्धवीर, १२१ सिकन्दर, १५४, १५९, २५० सिंघवा, आर० के०, ३५४, ३६१ सिन्ध, -में सविनय अवज्ञा आन्दोलन नही, १४: -में साम्प्रदायिक दंगे. ३५६ सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी, १२३ पा० टि० सिन्हा, सिन्वदानन्द, ४० सुन्दरम्, १९१, २८१ सुन्दरलाल, पं०, ८, २७३ सुब्बारायन, डॉ०, ३४५ सुब्बारायन, राघा, १२७ पा० टि० 'समन' रामनाथ, ४० सुरेश, ३५८ सुरेशसिंह, कुँवर, १८६ सुलताना, ४०३ सुशीला, १५४, ३३४ सूबेदार, मनु, ३५५, ३५६

सेठ, सरला, ३१९, ३२३, ३२५, ३४९, ३५४, ३५७, ३६९, ३८६ सेन, सतीन, १५५ सेनगुप्त, चान्त्रमा, ७२ सेवन्य-डे एडवेन्टिस्ट, ४२१ सोबानी, उस्मान, १४९

सूरदास, २५५

सेठ, अमृतलाल, ७६

सोदाल बेलफेयर, २५४

स्टेट्स पीपुल, ४२
स्टेलिन, जोजेफ, १८१, १८६
स्टोलन, जोजेफ, १८१, १८६
स्टोलन, सैम्युअल, ४३३
स्पीगल, मागेरेट, १२२, १७८
स्लोन, टेनंट, ३१५
स्वतन्त्रता, -अहिंसाके माध्यमसे, २१९;
-और साम्प्रदायिक संस्थाएँ, ३१; -की
निशानी चरखा, ६६; -कांग्रेसका
एकमात्र ध्येय, २३२; -के मागेमें
ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा काल्पनिक
बाधाएँ, ५
स्वामिनाथन, अम्म, १२७ पा० टि०

ह

हक, अब्दुल, ३८२ हठीसिंह, गुणोत्तम, १६८, ३१४ हठीसिंह, कृष्णा, ३१४ हनुमानप्रसाद, ३५२ हरखचन्द माई, ९ हरिजन, ६८, ७१, ११२, १३०, ४०२ हरिजन, -और मन्दिर-प्रवेश, १९९; -सेवा जमनालाल वजाज हारा, ३८१-८२ हरिजन आश्रम, सावरमती, १४३ हरिजन सेवक संघ, १७९ पा० टि०, २७६, २८१ पा० टि० हरिदत्त, ५६ हसन, डॉ॰, ३२० हस्तकला, -और मारी उद्योग, २५८; -से जगतका पोपण, ६६

हाउस ऑफ कॉमन्स, देखिए कॉमन्स-समा हार्डिंग कालेज अस्पताल, दिल्ली, ३४५ हॉलैंड, सर रॉबर्ट ई०, २१२, ३९६ हिंगोरानी, आनन्द तो०, ४१९, ४४१ हिंसा, —ऑहसामें अद्धा न रखनेवालों का वर्म, १०२; —के बीच चरखेसे शान्ति, १७९ हिंन्दी-उर्दू विवाद, ४२० हिंन्दी-उर्दू विवाद, ७-८ हिंन्द्वी-उर्दू विवाद, ५२, ७७, ७८ हिंन्दू, ८५, ११८, २३६ पा० टि०, २४९, ३५० हिंन्दू/दुवीं, —को बहादुर बनने की सलाह,

११०; -द्वारा दगोंके दौरान मुसलमानो

को संरक्षण, ८३

हिन्दू कानून सिमित, —की हिन्दू स्त्रियो द्वारा सम्पत्ति ग्रहण करने से सम्बन्धित रिपोर्ट, रु४३
हिन्दू महासमा, देखिए अखिल भारतीय हिन्दू महासमा
हिन्दू-मुस्लिम एकता, —और कताई, ६६; —के लिए गांधीजी का उपवास, २२, ४९, १४९
हीरामणि, १४०
हुसैन, आकिर, ११७
हैनकॉक, ३५४, ३८९, ३९५, ४०८
हैदरी, अकबर, ३७८
हैरिसन, एगया, १२, १४५, ३२६
हैलिफैक्स, लॉर्ड, देखिए ऑविन, लॉर्ड होमियोपैयी, —में गांधीजी को विश्वास नहीं

३५६